Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

07 01 810

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

079810

श्रीः

श्रीस्वाध्याय

079810

[त्रैमासिक-पत्र]

के

संरक्षक—

बघाटमहीमहेन्द्र धर्ममार्तण्ड

राजा श्री १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर C. I. E., सोलन (शिमला)

रावजी साहब श्री १०५ मान् गिरिधारीशरणसिंह जी भरतपुर ।

सहायक—

श्रीमान् सरदार कुँवर रणदीपसिंह जी नाहन (सिरमौर)

श्रीमान् कुँवर शिवसिंह जी B. A., L-L. B. सेशन जज सोलन ।

श्रीमान् कुँवर ईश्वरीसिंहजी सुपरिण्टेण्डेण्ट कोर्ट आफ वार्ड्स उदयपुर (मेवाड़)

श्रीमान् सरदार जगजीतसिंह जी ढिल्लों B. A., L-L. B. नाभा ।

संस्थापक तथा प्रधान सम्पादक—

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्रीमान् अमृतवाग्भवजी महाराज

सम्पादक और व्यवस्थापक—

ज्योतिषमार्तण्ड ज्योतिर्विद्यारत्न दैवज्ञमणि गणकरत्न

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिश्शास्त्री

प्रकाशक —

श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना "श्रीस्वाध्याय" का उद्देश्य है।

संचालक गणों के नियम—

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपये से अधिक प्रति वर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जाएंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५०) से ३००) तक प्रति वर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जाएंगे।

सम्मान्य ग्राहक—

(३) जो सज्जन २) से अधिक ५०) रु० तक प्रति वर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के सम्मान्य ग्राहक माने जाएंगे।

श्री स्वाध्याय के नियम—

(१) 'श्रीस्वाध्याय' (जब तक त्रैमासिक रहेगा तब तक) आश्विन शुक्ल १०, पौष शुक्ल १०, चैत्र शुक्ल १० और आषाढ़ शुक्ल १० को प्रकाशित हुआ करेगा। इस त्रैमासिक संस्करण का वार्षिक मूल्य २) रु० है। एक प्रति का ॥=) और विशेषांक का मूल्य ॥।) होगा। श्रीस्वाध्याय के स्थाई ग्राहकों को हमारी "श्रीग्रन्थमाला" की सभी अद्भुत अमूल्य पुस्तकें बिना मूल्य (मुफ्त) दी जावेंगीं। ऐसी सर्वोपयोगी अमूल्य पुस्तकें कोई भी मासिक पत्र प्रति वर्ष अपने ग्राहकों को बिना मूल्य नहीं देता। यह 'श्रीस्वाध्याय' के ग्राहकों को विशेष लाभ है। पर्याप्त संरक्षक, सहायक और ग्राहक होने पर बहुत शीघ्र ही 'श्रीस्वाध्याय' को मासिक कर दिया जाएगा।

(२) जिन सज्जनों के लेख श्रीस्वाध्याय सदन की ओर से प्रार्थना पूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथा समय प्रकाशित हो जावेंगे अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकें (दो-दो प्रतियां) और विनिमय (परिवर्तन) के पत्र पत्रिकायें **सम्पादक श्रीस्वाध्याय, सोलन (पंजाब)** के पते से भेजने चाहियें।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरों में कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेख के प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढ़ाने तथा उसे लौटाने या न लौटाने का सम्पूर्ण अधिकार सम्पादक को है। जिस अस्वीकृत लेख को सम्पादक लौटाना स्वीकार करें, उसका डाक और रजिस्ट्री का खर्चा लेखक को भेजना होगा। अधूरे लेख नहीं लिये जाते।

विज्ञापन छपाई के नियम—

१ पृष्ठ या दो कालम की छपाई	२०)	प्रति अंक
आधा पृष्ठ या एक कालम की छपाई	११)	"
चौथाई पृष्ठ या आधा "	६)	"

पूरे वर्ष या चार अंकों में एक पृष्ठ की छपाई ६५) रु० होगी।

त्रैमासिक 'श्रीस्वाध्याय' के पृष्ठ का आकार २०×३० अठपेजी। कालम स्थान ८×३ इञ्च है।

आधे पृष्ठ से अधिक विज्ञापन देनेवालों को 'श्रीस्वाध्याय' बिना मूल्य भेजा जावेगा। छपाई की रकम पेशगी प्राप्त होने पर ही विज्ञापन पत्र में छापा जावेगा।

विशेष जानने के लिये **व्यवस्थापक श्रीस्वाध्याय सदन, सोलन (शिमला)** से पत्र व्यवहार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* श्रीः *

संसारमें शान्ति स्थापित करनेके लिए

भारतीय महान् आदर्शका पुनरुद्धार

श्रीस्वाध्याय

वर्ष } स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ॥ { अङ्क

स्वाध्यायकी आवश्यकता

प्रिय सज्जनों !

संसार में प्राणिमात्र शान्ति की इच्छा करता है। शान्ति से ही परमानन्द की प्राप्ति होती है। शान्ति-लाभ विना स्वाध्याय के हो नहीं सकता। स्वाध्याय से अपने आप की पहचान होती है, आत्मोन्नति के उपाय ज्ञात हो जाते हैं, अपनी अवनति के कारणों का भी भलीभांति ज्ञान हो जाता है। आत्मोन्नति ही परम धर्म है, इसी लिए उपनिषदों में "स्वाध्यायोऽध्येतव्यः।" "स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम् ॥" इस प्रकार स्थान स्थान पर उपदेश मिलते हैं। जो राष्ट्र इस पर विचार करते हैं तथा आरूढ होते हैं, वे कभी परतन्त्र नहीं हो सकते। स्वातन्त्र्य के विना शान्ति लाभ की सम्भावना ही नहीं। स्वातन्त्र्य प्राप्ति और उसकी रक्षा के लिये स्वाध्याय जैसा दूसरा कोई साधन नहीं। खोई हुई स्वतन्त्रता को स्वाध्याय ही प्राप्त करा सकता है और प्राप्त की हुई स्वतन्त्रा को सदा के लिए सुरक्षित भी स्वाध्याय ही रख सकता है। भारतीय महान् आदर्श सदा से यही रहा है कि सम्पूर्ण संसार में एक दूसरे की सद्भावना से सम्भावना करें और प्रत्येक दूसरे को शान्ति और आनन्द प्रदान करें। किन्तु ये सब बातें स्वाध्याय के विना कैसे मालूम हो सकती हैं ? इन्हीं बातों पर बहुत समय से विचार करके अन्त में हमने यही स्थिर किया कि स्वाध्याय की परम आवश्यकता है।

भारत के आदर्श सुपुत्रों !

हमने यही सब सोच समझ कर समस्त संसार में शान्ति स्थापित करने के लिए "श्रीस्वाध्याय" नामक त्रैमासिक पत्र प्रकाशित करने का निश्चय किया है।

मनुष्य लोक में सम्पूर्ण वस्तुमात्र का व्यवस्थापक मनुष्य ही माना गया है। स्वभावतः सम्पूर्ण प्रकार का नेतृत्व मनुष्य में ही होने के कारण उसी को नर कहा जाता है, किन्तु यदि वह अपने आपको पहचान न सके तो पशुप्राय होकर किसी का कल्याण नहीं कर सकेगा। उसको अपना स्वाभाविक नेतृत्व पूर्ण रूप से निभाने के लिये स्वाध्याय करना ही होगा।

श्रीस्वाध्यायके उद्देश्य

श्रीस्वाध्याय का मुख्य उद्देश्य संसार के प्राणिमात्र को अपने २ यथार्थ हित की ओर लेजाना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजकल संसार अधिकतर रुचि की ओर ही आकर्षित होता जा रहा है, उस (रुचि के शुभाशुभ परिणाम की ओर किसी का ध्यान नहीं। जब तक हित की ओर से आंखें बन्द करके रुचि के पीछे ही दौड़ लगाई जावेगी तबतक किसी का कल्याण नहीं हो सकता। इस लिये "श्रीस्वाध्याय" में आपको रोचकता की अपेक्षा हितकारिता अधिक मिलेगी। इसका अर्थ यह नहीं है कि "श्रीस्वाध्याय" रोचक या सुन्दर नहीं होगा। यह सुन्दर भी होगा, रोचक भी होगा, परन्तु हितकारिता के साथ। या यों कहिये कि श्रीस्वाध्याय का उद्देश्य केवल "सुन्दरम्" ही नहीं अपितु "सत्यं शिवं सुन्दरम्" होगा। इसी सदुद्देश्य को लेकर "श्रीस्वाध्याय" आपको सर्व प्रकार के लौकिक पारमार्थिक बन्धनों या पारतन्त्र्य से छुड़ा कर मुक्तिपद या स्वातन्त्र्य प्राप्त कराने का प्रयत्न करेगा। क्योंकि मनुष्य यदि स्वतन्त्र हो तभी सब कुछ कर सकता है। इसी कारण स्वातन्त्र्य (मोक्ष) सब से बड़ा पुरुषार्थ है। पुरुष सर्वदा जिसको चाहते हैं उसको पुरुषार्थ कहते हैं। प्रत्येक प्रकार से पुरुष आनन्द चाहता है। वह आनन्द दो प्रकार का है—व्यावहारिक और पारमार्थिक। व्यावहारिक आनन्द (इन्द्रिय विषयोपभोग) की इच्छा ही काम है; इसको सभी लोग चाहते हैं। किन्तु काम का साधन अर्थ (धन) है। द्रव्य के बिना संसार में किसी वस्तु की प्राप्ति नहीं हो सकती। धर्म (नियम) न हो तो अर्थ और काम ये दोनों पुरुषार्थ संसार में अनवस्था फैलाएंगे। इसी लिए पहला पुरुषार्थ धर्म, दूसरा अर्थ, तीसरा काम और सब से बड़ा इन तीनों पुरुषार्थों का मूलभूत होने के कारण मोक्ष (स्वातन्त्र्य) चौथा पुरुषार्थ है।

सज्जनों! हमने भी इसी कारण "श्रीस्वाध्याय" त्रैमासिक पत्र में यही चार स्तम्भ प्रधान रक्खे हैं। इनके सम्यक् ज्ञान में परम साधन इतिहास ही होने के कारण पांचवां स्तम्भ इतिहास रक्खा है। संसार के समस्त विषय इन पांचों स्तम्भों में आ सकते हैं।

दर्शन (Phylosphy), अर्थशास्त्र (Economics), ज्योतिष, गणित फलित (Astrology Astronomy) मुहूर्त, संस्कार, व्रतोत्सवादि निर्णय, दायभागादि धर्मशास्त्र निर्णय, सामाजिक व्यवस्थायें, मतमतान्तर परिचय, आयुर्वेद, भूगोल, महापुरुषों के जीवन-चरित्र, विज्ञान के चमत्कार, ग्रन्थ-परिचय, समालोचन इत्यादि विषयों पर अनुभवी विद्वानों के गम्भीर लेख इस पत्र में प्रकाशित हुआ करेंगे।

प्रति वर्ष आश्विन मास में "श्रीस्वाध्याय" का एक विशेषाङ्क प्रकाशित हुआ करेगा। विशेषाङ्क में ज्योतिश्शास्त्र सम्बन्धी गवेषणापूर्ण ठोस सामग्री रहेगी। आगामी वर्ष भर के दैनिक वेधसिद्ध सूक्ष्म ग्रहों के साथ ही त्रैमासिक व्रतोत्सव निर्णय, मुहूर्तादि निर्णय और संसार की सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक व अन्तर्राष्ट्रिय परिस्थिति एवं व्यापारिक हलचलों पर महत्वपूर्ण चमत्कारी भविष्यवाणियां भारत के धुरन्धर ज्योतिश्शास्त्र विशेषज्ञों की लिखी हुई आपको इसमें मिलेंगी। अधिक क्या, प्रत्येक दृष्टि से यह पत्र अद्वितीय और अत्यन्त उपादेय सिद्ध होगा।

प्रथम अङ्क विशेषाङ्क के रूप में आश्विन शु० १० विजयादशमी ता० ३० सितम्बर १९४१ ई० को प्रकाशित हो रहा है। यह शरदङ्क विजयादशमी तक (नवरात्रों में ही) सब ग्राहकों के पास पहुंच जायगा।

हम प्रार्थना करते हैं कि सदा से उन्नत रहा हुआ भारतीय महान् आदर्श "यावच्चन्द्रदिवाकरौ" संसार में फलता फूलता रहे। किन्तु इसका फूलना फलना "स्वाध्याय" के प्रचार में ही है। हमें आशा है कि भारत के बड़े बड़े धर्माचार्य, महामान्य नृपतिगण (राजा महाराजा), धनीमानी सेठ साहूकार, सम्माननीय वृद्ध पुरुष एवं उत्साही नवयुवक, विदुषी माताएं और बहनें सब मिल कर इस "श्रीस्वाध्याय" को प्रचारित करेंगे। हम चाहते हैं कि भारत की उन्नति की कामना करने वाले सभी भारतीय इस "श्रीस्वाध्याय को पढ़ें, पढ़ाएं तथा इस पर स्वयं आचरण करें और दूसरों से भी आचरण कराएं। यह सब सहृदय पाठकों और ग्राहकों पर ही अवलम्बित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रहण विवरण

[ले०—श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी, स्वाध्याय सदन, सोलन, पंजाब]

"श्री स्वाध्याय" में हम ग्रह योग (युति) प्रतियोग आदि के साथ ही होने वाले सूर्य-चन्द्र ग्रहणों का विवरण जिस प्रकार दिया करेंगे, उसका थोड़ा सा नमूना यहां पाठकों को भेंट कर रहे हैं।

आकाशीय चमत्कार में सूर्य-चन्द्र ग्रहण का सर्वाधिक महत्व है। क्योंकि इस चमत्कार को प्रत्येक व्यक्ति भली भांति देख सकता है। यूरोप के कई खगोलज्ञ विद्वान् तो प्रति वर्ष जहां २ खग्रास या कङ्कण सूर्यग्रहण होता है वहां २ उसी प्रदेश या महासागर में बड़े २ दूरवीक्षण यन्त्र (टेलिस्कोप) लेकर पहुंचते हैं और अन्वेषण के लिए ग्रहण की सारी स्थिति का चित्र (फोटो) भी लेते हैं। हमारे धर्मशास्त्र मंत्रशास्त्र और ज्योतिश्शास्त्र में भी ग्रहण समय या पर्व काल की अनेक विशेषताएं लिखी हैं। परन्तु यह विषय बहुत लम्बा है अतः इसका सप्रमाण पूर्ण विवेचन तो हम "श्रीस्वाध्याय" के दूसरे अङ्क (हेमन्तांक) में ही करेंगे। अभी 'श्रीस्वाध्याय' का प्रथम अङ्क विशेषाङ्क के रूप में प्रकाशित हो रहा है। इसके कुछ दिन पहले ही १५ दिन के अन्तर से चन्द्र सूर्य के दो महत्वपूर्ण ग्रहण होने वाले हैं। इनका संसार पर बड़ा भयानक प्रभाव पड़ेगा (इसके चमत्कारिक भविष्य के साथ खुलासा विजयादशमी पर प्रकाशित होनेवाले "श्रीस्वाध्याय"के 'शरदङ्क' में देखिये) एतदर्थ इन्हीं दोनों ग्रहणों का यहां कुछ थोड़ा सा विवरण (स्पर्श मोक्ष काल आदि) दिया जा रहा है।

खण्डग्रास चन्द्रग्रहण।

वर्तमान सं० १९९८ भाद्रपद शु० १५ शुक्रवार ता० ५ सप्टेम्बर १९४१ ई० को खण्डग्रास चन्द्रग्रहण होगा। यह भारतवर्ष, अफगानिस्तान, रूस, ब्रह्मदेश, चीन, जापान, श्याम, अदन, अफ्रिका, हिन्दमहासागर, प्रशान्तमहासागर के पश्चिमी भाग, उत्तरी अमेरिका के पश्चिमोत्तरीय अन्त्य भाग, आस्ट्रेलिया, एशिया और पूर्वीय यूरोप में स्वल्पग्रास दिखाई देगा। अंगुलाल्प ग्रास (बहुत थोड़ा ग्रहण) है, अतः ग्रहण मध्यकाल के समय अग्निकोण की ओर से चन्द्र बिम्ब कुछ कटा हुआ (ग्रहण लगा हुआ) दिखाई देगा। भारत में स्टेण्डर्ड (रेलवे) टाइम के अनुसार इस ग्रहण का रात्रि में स्पर्शादिकाल निम्नलिखित है—

	घं०	मि०
स्पर्श	१०	४६
मध्य	११	१७
मोक्ष	११	४५

सर्व ग्रहण (पर्वकाल) ५६ मिनिट का है।

ग्रहण मध्य काल में ग्रास का स्वरूप

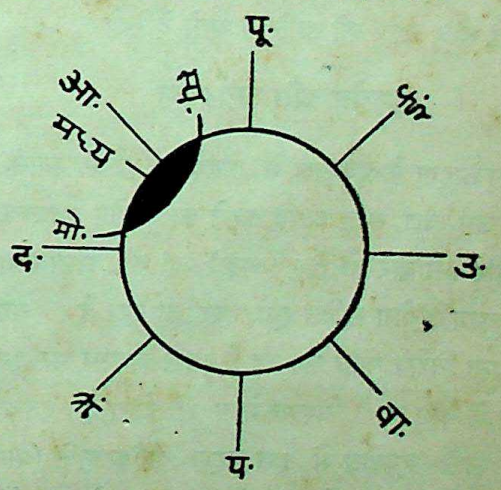

(चित्र को ऊपर आकाश की ओर उठा कर देखिये)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह चन्द्रग्रहण शत०नक्षत्र और कर्क, वृश्चिक, कुम्भ, मीन राशिवालों को दुःख शोकादि अशुभ फलदायक है। मिथुन, सिंह, तुला, मकर राशियों को मध्यम। मेष, वृष, कन्या, धनुः राशिवालों को शुभ। जिन राशिवालों को ग्रहण अशुभ हो उन्हें ग्रहण देखना नहीं चाहिए।

खण्डग्रास सूर्यग्रहण।

सं० १९९८ आश्विन कृ० ३० रविवार ता० २१ सप्टेम्बर १९४१ ई० को खण्डग्रास सूर्यग्रहण होगा।

यह एशिया, चीन, जापान, अरब, प्रशान्त महासागर, ब्रह्मदेश और भारतवर्ष में दिखाई देगा। पूर्वोत्तरीय भारत में क्रमशः ग्रास कुछ अधिकाधिक और दक्षिण पश्चिमी भारत में उत्तरोत्तर ग्रास कुछ कम दिखाई देगा। इस सूर्यग्रहण का भारतीय भूमण्डल गणित द्वारा बड़े परिश्रम पूर्वक स्पर्श मोक्षकाल बोधक एक चित्रपट (नक्शा) बनाया गया है। इस नक्शे के द्वारा भारत में प्रत्येक नगर और ग्राम के स्पर्शमोक्ष कालीन घण्टे मिनट सहज ही ज्ञात हो जावेंगे। यह चित्रपट और कुछ प्रसिद्ध २ नगरों के स्पर्श मोक्ष काल की तालिका आगे देखिये।

कुरुक्षेत्र और सूर्यग्रहण

सूर्यग्रहण के पर्वकाल में कुरुक्षेत्र तीर्थ में स्नान, दान, जप, यज्ञ, श्राद्ध आदि करने का विशेष महात्म्य है और इस बार तो पितृ (श्राद्ध) पक्ष की अमावस्या में चूड़ामणियोग सहित सूर्यग्रहण हो रहा है। यह अत्यन्त विशेष पुण्य फलप्रद है। इस अवसर पर कुरुक्षेत्र में बड़ा भारी विशाल मेला भी होता है। एतदर्थ हम पहले कुरुक्षेत्र में इस ग्रहण की आकृति (ग्रास चित्र) और स्टेण्डर्डमान (रेल्वे टाइम) से स्पर्शादि काल देकर पीछे अन्य नगरों का देंगे।

कुरुक्षेत्र में ग्रहणमध्यकाल के समय ग्रास स्वरूप
(चित्रको ऊपर आकाशकी ओर उठा कर देखिये)

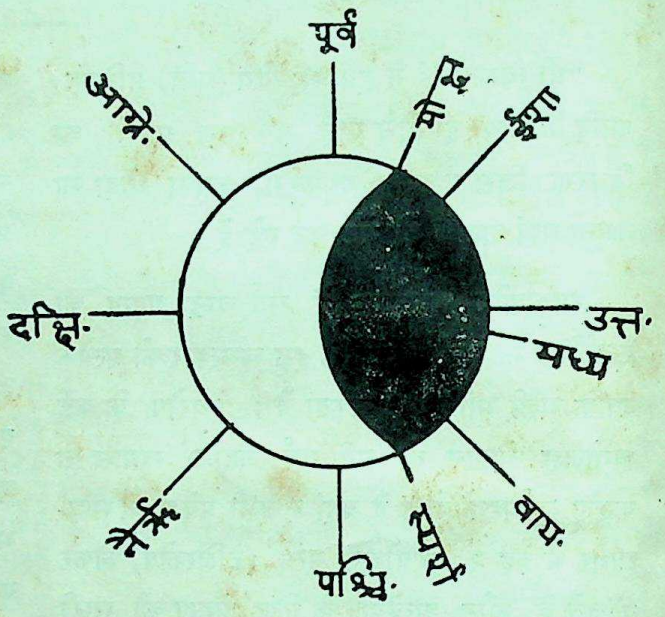

कुरुक्षेत्र में स्पर्शादि काल
(प्रातः स्टेण्डर्ड टाईम)

	घं०	मि०
स्पर्श	७	३२
मध्य	८	४०
मोक्ष	९	४८

सर्व ग्रहण (पर्वकाल) २ घंटे १६ मिनट का है।

इस सूर्यग्रहण का वेध पहले दिन ता० २० सप्टेम्बर को सूर्यास्तानन्तर ७-३२ पर आरम्भ होगा। बाल वृद्ध और रोगियों के बिना ग्रहण के वेध (सूतक) में भोजनादि करना निषेध है। ग्रहण के आरम्भ में स्नान, मध्य में हवन, मध्य के बाद दान और मोक्ष के बाद पुनः स्नान करना चाहिए। जब तक ग्रहण रहे तब तक जपानुष्ठानादि भगवद्भजन करना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ता० २१ सितम्बर १९४१ को होने वाले सूर्यग्रहण का कुछ प्रधान नगरों में स्पर्श मोक्ष काल—

नगर	स्टैंडर्ड टाइम स्पर्श घं.मि.	मोक्ष घं.मि.
पेशावर	७-२८	६-४२
श्रीनगर काश्मी.	७-२६	६-४८
मुल्तान	७-२६	६-४०
लाहौर	७-३०	६-४४
पटियाला	७-३१	६-४७
सोलन शिमला	७-३१	६-५०
भरतपुर	७-३६	६-४४
कराच	७-३३	६-२५
हरद्वार	७-३२	६-५१
दिल्ली	७-३३	६-४५
उदयपुर मेवाड़	७-३६	६-३४
जयपुर	७-३३	६-३६
जोधपुर	७-३३	६-३५
बीकानेर	७-३१	६-३८
ग्वालियर	७-३६	६-४६
बनारस	७-४०	६-५८
प्रयाग	७-३६	६-५६
कानपुर	७-३६	६-५१
आगरा	७-३५	६-४६
उज्जैन	७-३६	६-३६
बड़ौदा	७-४१	६-३०
अहमदाबाद	७-३८	६-३०
कलकत्ता	७-४८	१०-१०
बम्बई	७-४७	६-२३
पूना	७-४८	६-२२
पटना	७-४१	१०-२
हैदराबाद दक्षि.	७-५३	६-३२
मद्रास	८-१२	६-२५

सं० १९९८ आश्विन कृ० ३० रविवार ता० २१ सितम्बर १९४१ ई० के

भारतीय भूमण्डल सूर्यग्रहण का चित्रपट (नक्शा)

इस भारत के चित्रपट (नक्शे) में —— ऐसी टेढ़ी रेखा स्पर्शकाल की और ..... यह त्रुटित रेखा मोक्षकाल सूचक है। नक्शे में स्पर्श मोक्षकाल स्टेण्डर्ड टाइम के अनुसार दिया गया है।

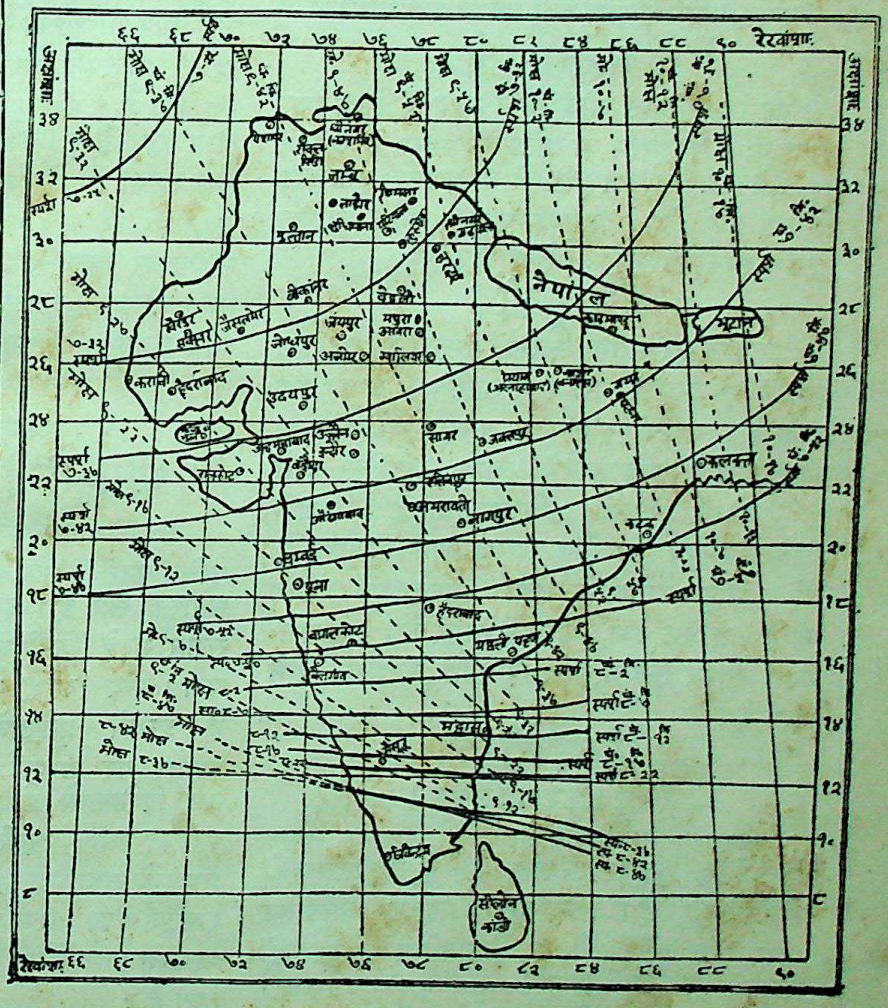

यह सूर्यग्रहण उ० फा० नक्षत्र और मिथुन, कन्या, तुला, कुम्भ राशि वालों को दुःख शोकादि अशुभ फलदायक है। वृष, सिंह, मकर, मीन राशियों को मध्यम। मेष, कर्क, वृश्चिक, धनुः राशिवालों को शुभ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीग्रन्थमालाका प्रथम पुष्प

श्रीपञ्चस्तवी

(श्रीमद्धर्माचार्य भगवत्पाद प्रणीत)

यह एक अत्यन्त प्राचीन तथा भक्तोंके सम्पूर्ण मनोरथोंको पूर्ण करने वाला श्रीमहामायाका स्तोत्र-रत्न है। लाखों भक्तोंने अनुभव किया है और आगे भी करेंगे कि यह स्तोत्ररत्न संसारमें अद्वितीय है।

पूज्यपाद सर्वतंत्रस्वतन्त्र महामहिम श्रीमदमृतवाग्भवाचार्य प्रणीत कुछ प्रकाशित तथा अप्रकाशित ग्रन्थरत्न

श्रीपरशुरामस्तोत्र

यह एक अत्यन्त ओजस्विनी भाषा में लिखा हुआ भगवान् श्रीपरशुराम का स्तोत्र है। भारत के अनेकों पत्र पत्रिकाओं ने तथा विद्वानों ने इसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसाकी है। राष्ट्रभाषानुवाद सहित सचित्र द्वितीय संस्करण छप कर तैयार है।

श्रीराष्ट्रालोक

अत्यन्त सरल तथा सरस संस्कृतभाषामय इस ग्रन्थके अध्ययनसे नस २ में राष्ट्रप्रेम व उत्साह भर जाता है। राष्ट्रिय व्यक्तियोंके सम्पूर्ण कर्तव्य, राष्ट्र को स्वतन्त्र व उन्नत करनेके उपाय, राष्ट्र किसे कहते हैं? उस पर किसका अधिकार होता है? इत्यादि विभिन्न राष्ट्रिय विषयोंका सम्पूर्ण ज्ञान होजाता है। बड़े २ राष्ट्रिय नेताओंने इसकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। अधिक क्या, गागरमें सागर है। राष्ट्रभाषानुवाद सहित द्वितीय संस्करण शीघ्र प्रकाशित होने वाला है।

श्रीसप्तपदीहृदय

(राष्ट्रभाषानुवाद सहित)

भारतीय आर्यविवाह संस्कारमें सप्तपदी नामक क्रिया कितनी सुन्दर एवं महत्वपूर्ण है यह तो पाठकों को विदित ही है। किन्तु इस सप्तपदीका वास्तविक रहस्य आज तक किसी भी विद्वानने खोल कर नहीं लिखा। "एकमिषे" इत्यादि सूत्रोंके यथार्थ रहस्य को खोल कर भारतीय आदर्शके राष्ट्रिय रूपमें यह श्रीसप्तपदीहृदय नामक ग्रन्थ लिखा गया है। विशेष क्या आदर्श-दाम्पत्य जीवनका तत्व इस पुस्तकमें भरा पड़ा है।

श्रीआत्मविलास

(सुन्दरी राष्ट्रभाषा व्याख्या सहित)

मनुष्यमात्र के लिए परम कल्याणकारी व सन्मार्ग प्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थ-रत्न है, जिसके प्रकाशित होते ही दार्शनिक जगतमें हलचलसी मचगई, और सैकड़ों प्रतियां हाथोंहाथ लग गईं। इस ग्रन्थको पढ़नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शान्त होता है, संसार बाहर भीतर सम्पूर्णरूपसे आनन्दमय प्रतीत होता है। अतः यदि आप भी आत्मा क्या है? परमात्मा क्या है? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है? हम क्या हैं? और हमें क्या करना चाहिये? दर्शन किसे कहते हैं? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहां होता है? उनकी उपपत्ति क्या है? आदि २ आध्यात्मिक गूढ़ रहस्योंसे भलीभांति परिचित होकर आत्म-साक्षात्कार करना चाहते हैं तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजिये। आपके सभी सन्देह दूर होकर अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा। मूल्य २) रु० मात्र।

शीघ्र प्रकाशित होनेवाला

श्रीराष्ट्रालोकका

श्रीराष्ट्रसंजीवन संस्कृतभाष्य

इसके विषयमें संक्षेपसे ही हम पाठकोंको सूचित करते हैं कि यह ग्रन्थरत्न सम्पूर्ण साहित्य-सागरका सार है। इसके जोड़का ग्रन्थ आज तक संसार भरके किसी भाषाके साहित्यमें नहीं लिखा गया। ग्रन्थ क्या है, सम्पूर्ण राष्ट्रिय विषयोंका हृदय है। ग्रन्थमें प्रणेताने स्वाभाविक पूर्ण विज्ञानके आधार पर सम्पूर्ण मानव कर्तव्य तथा स्वभावका उस विशेषतासे प्रतिपादन किया है कि जो एक अत्यन्त नवीन, सुललित, स्वभाव शुद्ध तथा प्रकृति सिद्ध हो सकती है। इस ग्रन्थका स्वाध्याय प्रत्येक राष्ट्रहितैषीका परम प्रधान कर्तव्य है। न पढ़ने वाले आजन्म पछतायेंगे। कईसौ पृष्ठोंमें यह ग्रन्थ समाप्त हुआ है।

सूचना—श्रीआत्मविलासको छोड़ कर शेष सभी मुद्रित पुस्तकें "श्रीस्वाध्याय" के ग्राहकोंको बिना मूल्य दी जावेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पता—श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रैमासिक

श्रीः

श्रीस्वाध्याय

[हेमन्ताङ्क]

वर्ष २
सं० १९९९

संख्या २
पौष

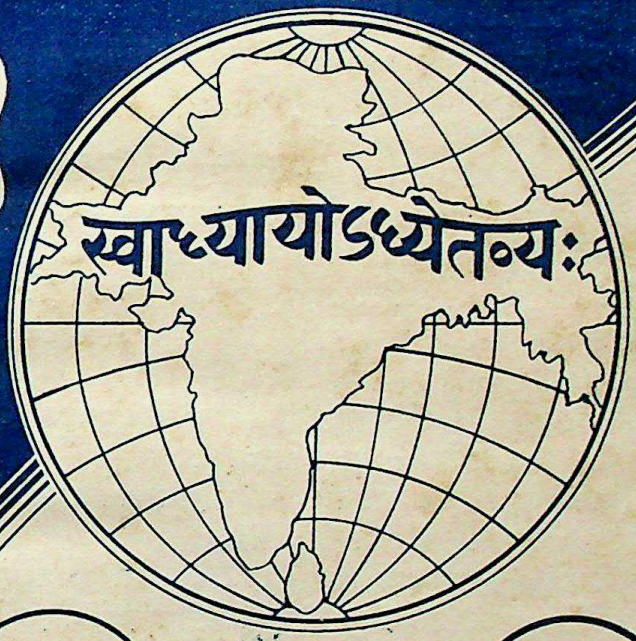

वार्षिक मूल्य २।-)

इस अङ्क का मूल्य ।।=)

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कांगड़ी गुरुकुल में टमार्च सन् १९४३ को प्राप्त

प्रसादः

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१ श्रीस्वाध्यायके नियम उद्देश्य आदि	२
२ श्रीस्वाध्यायको भारतीय विचक्षणवर्ग किस दृष्टिसे देखता है [नई सम्मतियां]	४
३ स्वाध्यायकी आवश्यकता, [कविता] ले०—श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज	७
४ भारतकी भारती कौनसी होगी ? [सम्पादकीय]	८
५ जीवनकी एक झांकी, लेखक श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज	१०
६ भगवती श्रीसीता, ले०—विद्यावागीश वि० भू० श्री पं० दीनानाथ जी शर्मा सारस्वत शास्त्री	१५
७ दीप-शिखा [कविता] कवयिता—श्री पं० परमानन्दजी विद्यालङ्कार	१६
८ बृहस्पति और ममता, ले०—महामहोपदेशक शास्त्रार्थमहारथी श्री पं० माधवाचार्य जी शास्त्री	२०
९ भारतीय ज्यौतिष-प्रणाली, ले०—ज्योतिर्विद्यारत्न श्री पं० कृष्णचन्द्र जी ओझा केतकी-पञ्चाङ्गकर्ता	२२
१० मकर संक्रान्तिका फल, ले०—सम्पादक	२७
११ पहले भूदेव [कविता] कवयिता—श्री पं० कुलशेखर जी	२७
१२ कालाय तस्मै नमः, दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र, ले०—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी	२८
१३ शुक्रोदयास्त, ले०—ज्योतिर्विद्यारत्न श्री पं० कृष्णचन्द्र शर्मा ओझा केतकी पञ्चाङ्गकर्ता	३३
१४ श्रीमहाशिवरात्रि, ले०—श्री पं० बलजिन्नाथ जी शास्त्री बी० ए०	३५
१५ शिवप्रशस्ति, ले०—श्री पं० मोहन शर्मा जी विशारद भूतपूर्व सम्पादक 'मोहिनी'	३८
१६ होलिकादहन और उसका परिणाम, ले०—सम्पादक	३९
१७ त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय, ले०—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी	४०
१८ स्वाध्याय-पत्र-प्रशंसा, [कविता] कव०—राजकुमारगुरु वि० भू० श्री पं० तारादत्त जी राजज्यौतिषी	४२
१९ त्रैमासिक ग्रहयोग-प्रतियोग चमत्कार, ले०—श्री हरदेवशर्मा त्रिवेदी	४३
२० श्रीराम-नवमी, ले०—श्री पं० लक्ष्मीदत्तजी कथावाचक महोपदेशक कीर्तनकलानिधि	४६
२१ त्रैमासिक भविष्य और राशिफल, ले०—श्री हरदेवशर्मा त्रिवेदी	४७
२२ त्रैमासिक मुहूर्त्तादि विचार, ले०—श्री पं० जगन्नाथप्रसाद जी ज्यौतिषी (जगनजी)	५०
२३ वर्तमान विश्व-व्यापी संग्राम और ज्यौतिष, ले०—श्री पं० विशुद्धानन्द जी गौड़ ज्यौतिषाचार्य	५३
२४ भारतीय सभ्यता और फासीवाद, ले०—श्रीमती सौ० कमलारानी एम० ए०	५७
२५ शिक्षाका भारतीयी-करण, ले०—व्याकरणाचार्य श्री पं० मनोहरलालजी शास्त्री गौड़ एम० ए०	५९
२६ त्रैमासिक महर्घ समर्घ (तेजीमन्दी) विचार, ले०—ज्यौतिषालङ्कार श्री पं० आनन्दस्वरूपजी दैवज्ञरत्न	६१
२७ त्रैमासिक व्यापार-विमर्श (तेजीमन्दी) ले०—श्री पं० बिहारीलाल जी दैवज्ञ	६२
२८ हेमन्त	६४
२९ स्वास्थ्य-रक्षा, ले०—श्री स्वामी रघुवीरदास जी ब्रह्मचारी	६५
३० होलिकोत्सव [कविता] कवयिता—श्री सिद्धगोपाल जी	६६
३१ वसन्तोत्सव कैसे मनाया जाय ? ले०—श्री पं० बनारसीदासजी चतुर्वेदी भूतपूर्व सं० 'विशालभारत'	६७
३२ वासन्ती (आषाढ़ी) नवसस्येष्टि, होलिका, ले०—श्री अवनीन्द्रकुमार जी विद्यालङ्कार	७१
३३ आर्य जातिका जन्मस्थान, ले०—श्री पं० बलजिन्नाथ जी शास्त्री कौल बी. ए.	७६
३४ व्यापारिक तेजीमन्दी और ज्योतिष, ले०—श्री प्रो० बी० सी० महता म्यूनिस्पल कमिश्नर	८२
३५ आभार-प्रदर्शन, ले०—सम्पादक	८३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ श्रीः ❀

श्रीस्वाध्याय

[त्रैमासिक-पत्र]

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—

बघाटमहीमहेन्द्र धर्ममार्तण्ड

राजा साहब श्री १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर C. I. E. सोलन (शिमला)

रावराजा साहब श्री १०५ मान् गिरिधारीशरणसिंहजी भरतपुर।

सहायक—

श्री १०५ मती मांजी महाराणी साहिबा (सिरमौरीजी) बघाटराज्य।

श्रीमान् सरदार कुँवर रणदीपसिंहजी नाहन (सिरमौर)

श्रीमान् कुंवर शिवसिंहजी B. A., L-L. B. सेशन जज सोलन।

श्रीमान् कुँवर ईश्वरीसिंहजी सुपरिण्टेण्डेण्ट कोर्ट आफ वार्ड्स उदयपुर (मेवाड़)

श्रीमान् सरदार जगजीतसिंहजी ढिल्लों B. A., L-L. B. नाभा।

सम्पादक और व्यवस्थापक—

ज्योतिषमार्तण्ड ज्योतिर्विद्यारत्न दैवज्ञमणि गणकरत्न

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिश्शास्त्री

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना "श्रीस्वाध्याय" का उद्देश्य है।

संचालक गणोंके नियम—

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जाएँगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५०) से ३००) रु० तक प्रति वर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जाएँगे।

सम्मान्य ग्राहक—

(३) जो सज्जन २।–) से अधिक ५०) रु० तक प्रति वर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के सम्मान्य ग्राहक माने जाएँगे।

श्रीस्वाध्यायके नियम—

(१) 'श्रीस्वाध्याय' (जब तक त्रैमासिक रहेगा तब तक) आश्विन शुक्ल १०, पौष शुक्ल १०, चैत्र शुक्ल १० और आषाढ़ शुक्ल १० को प्रकाशित हुआ करेगा। इस त्रैमासिक संस्करणका वार्षिक मूल्य २।–) है। एक प्रतिका ॥≈) नमूना बिना मूल्य नहीं भेजा जाता। श्रीस्वाध्यायके स्थाई ग्राहकोंको हमारी "श्रीग्रन्थमाला" की सभी अद्भुत अमूल्य पुस्तकें बिना मूल्य (मुफ्त) दी जावेंगी। ऐसी सर्वोपयोगी अमूल्य पुस्तकें कोई भी मासिक पत्र प्रतिवर्ष अपने ग्राहकोंको बिना मूल्य नहीं देता। यह 'श्रीस्वाध्याय' के ग्राहकोंको विशेष लाभ है। पर्याप्त संरक्षक, सहायक और ग्राहक होने पर बहुत शीघ्र ही 'श्रीस्वाध्याय' को मासिक कर दिया जायगा।

(२) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय सदनकी ओरसे प्रार्थना पूर्वक मँगवाये जाएँगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथा समय प्रकाशित हो जावेंगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियाँ और विनिमय (परिवर्तन) के पत्र पत्रिकायें सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (पंजाब) के पतेसे भेजने चाहिएँ।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढ़ाने तथा उसे लौटाने या न लौटाने का सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। जिस अस्वीकृत लेखको सम्पादक लौटाना स्वीकार करें, उसका डाक और रजिस्ट्रीका व्यय लेखक को भेजना होगा। अधूरे लेख नहीं लिये जाते।

विज्ञापन छपाईके नियम—

१ पृष्ठ या दो कालमकी छपाई	२०)	प्रति अङ्क
आधा पृष्ठ या एक कालमकी छपाई	११)	,,
चौथाई पृष्ठ या आधा ,, ,,	६)	,,

पूरे वर्ष या चार अंकोंमें एक पृष्ठकी छपाई ६५) रु० होगी।

त्रैमासिक 'श्रीस्वाध्याय' के पृष्ठका आकार २०×३० अठपेजी। कालम स्थान ८×३ इञ्च है।

आधे पृष्ठसे अधिक विज्ञापन देनेवालोंको 'श्रीस्वाध्याय' बिना मूल्य भेजा जावेगा। छपाईकी रकम पेशगी प्राप्त होने पर ही विज्ञापन पत्रमें छापा जावेगा।

विशेष जानने के लिए—
व्यवस्थापक श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)
से पत्र व्यवहार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्याय

(त्रैमासिक पत्र)

श्रीस्वाध्याय—अत्यन्त लोकप्रिय हो रहा है। कारण—

श्रीस्वाध्याय—मोक्ष रहस्य तथा दार्शनिक मतमतान्तरोंका परिचय करानेमें अद्वितीय पत्र है।

श्रीस्वाध्याय—धर्मके मर्म समझनेमें अत्यन्त सुन्दर सरल रीतिसे सहायता करता है।

श्रीस्वाध्याय—द्रव्योपार्जन तथा संरक्षण करनेके अनेक प्रकारोंको बतलाता है।

श्रीस्वाध्याय—सांसारिक सुख, स्वास्थ्यसाधन तथा कला-कौशलका तत्त्व प्रकाशित करता है।

श्रीस्वाध्याय—भारतीय इतिहास प्रकाशित करनेका असाधारण साधन है।

श्रीस्वाध्यायको—भलीभांति पढ़ने और समझनेसे मनुष्य स्वावलम्बी, निर्भय, उदार, आर्य एवं व्यवहारकुशल होकर संसारयात्रामें विजयी हो सकता है।

श्रीस्वाध्यायने—अपने प्रथमाङ्कके साथ ही आगामी वर्ष भरके भारतीय वेधसिद्ध दैनिक सूक्ष्मग्रह तथा शर, क्रान्ति, योग प्रतियोग आदि प्रचारित करनेका दृढ़ निश्चय करके महान् लोकोपकार किया है।

श्रीस्वाध्यायके लिए—भारतके प्रसिद्ध विद्वानोंकी सुन्दर २ सम्मतियां और महापुरुषोंके आशीर्वाद प्राप्त हो रहे हैं।

श्रीस्वाध्यायसे—भारतीय महान् आदर्श तथा हमारी प्राचीन विद्याओंका पुनरुद्धार होगा।

श्रीस्वाध्यायका—पठन पाठन प्रत्येक प्रकारके उन्नति मार्गका प्रबोधन करायेगा।

श्रीस्वाध्यायमें—राष्ट्रको स्वतन्त्र करनेके प्रत्येक वैध उपायोंके साथ दर्शन, अर्थशास्त्र, ज्यौतिष-गणित-फलित-मुहूर्त, संस्कार, व्रतोत्सवादि निर्णय, दायभागादि धर्मशास्त्र निर्णय, सामाजिक व्यवस्थाएँ, संसारकी सामाजिक-धार्मिक-राजनैतिक व व्यापारिक परिस्थितिपर महत्त्वपूर्ण चमत्कारी भविष्य-वाणियां, आयुर्वेद, भूगोल, खगोल, महापुरुषोंके जीवन-चरित्र, विज्ञानके चमत्कार, ग्रन्थ-परिचय समालोचन इत्यादि विषयों पर अनुभवी विद्वानोंके गम्भीर लेख प्रकाशित होते हैं।

पता—व्यवस्थापक श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (पंजाब)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्यायको—

भारतीय विचक्षणवर्ग किस दृष्टिसे देखता है—

'श्रीस्वाध्याय' पर प्राप्त हुई सम्मतियोंमेंसे भारतके सम्मानित धुरन्धर विद्वानों एवं पत्रोंकी कुछ सम्मतियाँ प्रथम और द्वितीय वर्षके गताङ्कोंमें क्रमशः प्रकाशित की गई थीं। उसके अनन्तर 'शारदङ्क' पर प्राप्त हुई अनेकों सुप्रसिद्ध साहित्यमहारथियों और प्रमुख पत्रोंकी सम्मतियोंमेंसे कुछ-एकका संक्षिप्त भाग यहाँ और देखिए—

पत्रकार जगत्के सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध विद्वान् अखिल-भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनके भूतपूर्व अध्यक्ष दैनिक 'आज' एवं मासिक 'कमला' के प्रधान सम्पादक साहित्यमहारथी स्वदेशभक्त श्रीयुत बाबूराव विष्णु पराड़कर महोदय बनारससे लिखते हैं—

"श्रीस्वाध्यायके प्रथम वर्षके सब और द्वितीय वर्षका प्रथमाङ्क मैंने देखा है। वस्तुतः यह त्रैमासिक अपने ढंगका निराला है। आर्य-संस्कृतिके प्रायः प्रत्येक अङ्ग पर इसमें प्रकाश डाला जाता है। अधुना भारतीय शिक्षित समाज केवल पाश्चात्त्य विचारोंमें डूबासा मालूम होता है। अपनी अधोगति और पाश्चात्त्योंकी उर्ध्वगतिको देखकर स्वभावतः शिक्षित-समाज समझता है कि हमारी संस्कृति ही दोषपूर्ण और उनकी गुणान्वित है। इसका परिणाम होता है आत्म-ग्लानि और परानुकरणेच्छा। पर यथार्थतः हमारी दुर्दशाका कारण है हमारा अपनी संस्कृतिसे दूर जाना। पाश्चात्त्य संस्कृतिके दोष नित्य प्रकट हो रहे हैं। वह गीतोक्ता 'आसुरी सम्पत्ति' है। उससे हमें स्वयं बचना और दुनियाँको बचाना है। यह काम अपनी प्राचीन संस्कृतिके अनुशीलन और मननसे ही हो सकता है। "श्रीस्वाध्याय" इसमें समाजका मार्ग-दर्शक हो, यही परमात्मासे प्रार्थना है।"

❀ ❀ ❀ ❀

श्रीयुत भूपेन्द्रनाथ वन्द्योपाध्याय एम० ए०, लाइब्रेरियन पब्लिक-लाइब्रेरी प्रयागसे लिखते हैं—

"श्रीस्वाध्यायको मैंने बहुत ही मनोयोगके साथ पढ़ा। .....चतुर्वर्ग अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष और ऐतिहासिक, सामाजिक, सामयिक एवं पुरातत्त्वानुसन्धानादि विविध-विषयोंके सुन्दर सुन्दर मौलिक लेख इसकी अपनी खास विशेषता है। .....मैं आशा करता हूं कि यह विविधज्ञान समन्वित पत्र उत्तरोत्तर उन्नतिके शिखर पर पहुँचेगा एवं सर्वप्रिय बन जावेगा।"

❀ ❀ ❀ ❀

हिन्दी संस्कृत और बंगला साहित्यके सुप्रसिद्ध विद्वान् 'विश्वभारती पत्रिका' के सुयोग्य सम्पादक श्री पं० हजारी-प्रसादजी द्विवेदी, हिन्दी-भवन शान्तिनिकेतत (बंगाल) से लिखते हैं—

"मैंने 'श्रीस्वाध्याय' बड़ी रुचिके साथ पढ़ा। .....इस पत्रमें मेरे मनन योग्य कई लेख हैं और वे मुझे बहुत पसन्द हैं। .....मुझे फिर एक बार अपने महत्त्वपूर्णपत्र (स्वाध्याय) के लिए बधाई देने दीजिए।"

❀ ❀ ❀ ❀

सफल पत्रकार, हिन्दी साहित्यके सुयोग्य विद्वान्, श्री प्रवासीलाल वर्मा मालवीय 'साधना' सम्पादक आगरासे लिखते हैं—

".....पंजाब जैसे हिन्दीके लिए ऊसर प्रान्तसे 'श्रीस्वाध्याय' जैसा उत्तम पत्र निकालना अवश्य ही आपके अथक अध्यवसायका परिचायक है। पत्रके सभी लेख गम्भीर, ज्ञानवर्द्धक और उपादेय हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्वालियरके सुप्रसिद्ध राष्ट्रिय साप्ताहिक पत्र 'जीवन' के स० सम्पादक श्री शशाङ्क लिखते हैं—

".....धर्म और दर्शनके गूढ़ सिद्धान्तों और विश्वासोंको आधुनिक रूपसे जनताके सामने रख कर आप हिन्दीकी सेवा तो कर ही रहे हैं, साथ ही प्रकाशका उज्ज्वल भाण्डार देकर हम लोगोंका अज्ञान अन्धकार दूर कर रहे हैं, इसके लिए आप बधाईके पात्र हैं।"

❀ ❀ ❀ ❀

स्व० लोकमान्य तिलक द्वारा संस्थापित महाराष्ट्रका सुप्रसिद्ध राष्ट्रिय अर्ध-साप्ताहिक-पत्र 'केसरी' अपने ता० २५ दिसम्बरके अङ्कमें लिखता है—

"त्रैमासिकाची भाषा हिन्दी असली तरी ती मराठी जाणणाऱ्याना समजण्या इतकी सोपी हिन्दी आहे। त्रैमासिकांतील विषय धार्मिक व आर्यसंस्कृति आणि शास्त्र, विद्या, कला यांच्या विवेचनात्मक असे असतात। यांत आध्यात्मिक, धार्मिक, आर्थिक, ऐतिहासिक आणि आरोग्य विषय असे विभाग पाडले असून त्या त्या विभागाला धरून प्रत्येक अङ्कांत पांच ही प्रकारचे विषय चर्चिले जातात। आरोग्य विभागांत आयुर्वेदाची चर्चा, आर्थिक विभागांत तेजी मंदीची चर्चा, धार्मिक विभागांत तीन महीन्यांत येणारे उत्सव, व्रतें, जयन्त्या, इत्यादिकांची माहिती असें विविध उपयुक्त लेख असून ज्योतिषविषयक लेखांत तीन महीन्यांतील ग्रहांच्या युत्या, प्रतियोग, दृष्टियोग, अस्तोदय वगैरेंचा ही विचार असतो। अशा भरपूर माहितीच्या लेखांनी भरलेलें आणि आर्य संस्कृति व ज्ञान विज्ञान यानां पोषक असें हें त्रैमासिक अवश्य संग्रहणीय आहे।"

❀ ❀ ❀ ❀

मध्यभारतका सुप्रसिद्ध सांस्कृतिक साहित्यिक मासिकपत्र 'विक्रम' अपने मार्गशीर्ष मासके अङ्कमें लिखता है—

"हिन्दीमें त्रैमासिकोंकी संख्या बहुत कम है। नागरी-प्रचारिणी, हिन्दुस्तानी, भारतीय-विद्या आदि कतिपय पत्रोंको छोड़ अधिक नहीं है। सोलनसे प्रकाशित होने वाला 'श्रीस्वाध्याय' उर्दूके गढ़ पंजाबके पर्वतीय प्रदेशसे वर्ष भरसे निकल रहा है। सोलन, शिमलाशैलकी एक सुन्दर राजधानी है। वहांके महाराजा विद्या-व्यसनी हैं, पण्डितोंके पूजक हैं, स्वयं सहृदय और उदार हैं, 'स्वाध्याय' उन्हींकी छायामें पनप रहा है। आचार्य श्री अमृतवाग्भवजीकी योजना और कृपा-प्रसादसे प्रेरित हो पं० हरदेवजी त्रिवेदी इस पत्रका सुरुचिपूर्ण सम्पादन करते हैं। सम्पादकीय तथा ज्योतिष-सम्बन्धी विविध साहित्यको लेकर यह पत्र विद्वानोंसे सर्वसाधारण तकके लिए उपयोगी साहित्य लेकर निकलता है। 'स्वाध्याय' में प्रायः सम्पूर्ण ही स्वाध्यायका विषय रहता है। .....यह अपने विषयका सुन्दर त्रैमासिक है। सम्पादककी विद्वत्ता, श्रमशीलताकी उस पर पूरी छाप है।"

❀ ❀ ❀ ❀

टिहरी राज्य (गढ़वाल) के राजगुरु संस्कृत साहित्य एवं तंत्रशास्त्रके प्रकाण्ड प्रण्डित वयोवृद्ध विद्वान् श्री पं० हरिदत्तजी शास्त्री देहरादूनसे लिखते हैं—

"श्रीस्वाध्यायका शरदङ्क पढ़ा। नभोमण्डलके योग प्रतियोग आदि निबन्धने 'स्वाध्याय' शरदङ्कको शरत्कालकी शशाङ्क शोभा दे दी है। यद्यपि भारतवर्षमें कितने ही मासिक-पत्र देखनेमें आते हैं और वे सुन्दर भी हैं परन्तु 'स्वाध्याय' का लक्ष्य केवल भारतीय मानव समुदायके लिए ही नहीं अपितु समस्त सभ्य संसारको शाश्वत शान्ति प्राप्त कराना है। .....इस पत्रमें ज्योतिश्शास्त्रके मार्मिक विषय और विशुद्ध प्राच्य इतिहास तथा राजधर्मको अच्छा स्थान दिया गया है। इसमें महाराजा सोलन नरेशकी उदारता और उच्च सद्भावनाकी प्रशंसा है, ..."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्यायमें क्या क्या होगा ?

विज्ञ पाठकोंको 'श्रीस्वाध्याय' के उद्देश्य तथा नीतिका ज्ञान तो भली भांति हो ही गया है। इसमें जो मोक्षादि पांच प्रधान स्तम्भ रक्खे गये हैं—उनके अन्तर्गत किन २ विषयों पर लेख लिखे जा सकते हैं ? इसकी एक संक्षिप्त सूची हम नीचे दे रहे हैं। इस तालिका द्वारा हमारे विद्वान् लेखकोंको विषय चुननेमें सुविधा होगी।

मोक्षस्तम्भमें—

भारतीय दर्शनोंका संक्षिप्त परिचय। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त (शाङ्कर रामानुज निम्बार्क माध्व श्रीकण्ठ भास्कर आदि मतोंका संक्षिप्त सार) शैव (त्रिक प्रत्यभिज्ञा पाशुपत आदि मतोंका संक्षिप्त परिचय) शाक्त (दक्षिण वाम कौल तन्त्र सिद्धान्त त्रैपुर आदि मतोंके संक्षिप्त परिचय) पारमार्थिक मोक्ष, व्यावहारिक मोक्ष आदि आदि।

धर्मस्तम्भमें—

वेदोंका स्वाध्याय। राष्ट्रिय शिक्षा। घरेलू शिक्षा। स्त्री शिक्षा। धर्म रहस्य। धर्ममें स्मृतियोंका स्थान। कल्प सूत्र। स्त्रीधन। दत्तक-दाय। दाय-भाग। प्रायश्चित्त विधान। पर्व व्रतोत्सवादि निर्णय। मुहूर्त्तादि निर्णय। पर्व किस प्रकार मनाये जायें। पर्व और त्यौहारोंका राष्ट्रिय महत्त्व। पर्व मनानेमें धार्मिक दृष्टिसे हानि लाभका विचार। ज्योतिश्शास्त्रानुसार तात्कालिक शुभाशुभ योग और भविष्यवाणियां। राशिफल। खगोलके ग्रह नक्षत्रादिकोंका परिचय।

अर्थस्तम्भमें—

अर्थ शास्त्र। चाणक्यके विचार। घरकी व्यवस्था। पारिवारिक आय व्यय। राष्ट्रको समृद्ध करनेके उपाय। यातायातमें अर्थ प्राप्ति। व्यापार। ज्योतिश्शास्त्रानुसार महर्घ समर्घ (तेजी मंदी) विचार। खानोंसे अर्थ प्राप्ति। आर्थिक दृष्टिसे कलाओंका विचार। पर्व और आर्थिक दृष्टि। युद्धसे आर्थिक हानि लाभ। कृषि (धान्य, फल, शाक-भाजी, ईख, कपास आदिके उत्पादन) से अर्थ प्राप्ति आदि आदि।

कामस्तम्भमें—

आयुर्वेद। शरीरके सभी अवयवोंको सुन्दर सुदृढ़ स्वस्थ ओजस्वी बनानेके उपाय। दीर्घजीवी बननेके उपाय। रसोईघर। कलाकौशल। घरकी स्वच्छता और पवित्रता। बच्चोंका पालन पोषण। भृत्योंके साथ व्यवहार। पशुपालन आदि आदि।

इतिहासस्तम्भमें—

इतिहास जाननेके साधन (ताम्रपत्र दानपत्र मुद्रा शिलालेखादि) संस्कृत-साहित्यका इतिहास। भारतीय ग्रन्थ और ग्रन्थाकारोंके परिचय। भौगोलिक परिचय (देशकी सीमायें नदियां पर्वत तीर्थ नगर ग्राम आदि) प्राचीनकालमें भूमण्डलके समस्त देश प्रान्त नगरादिकोंके जो नाम और सीमा थी उनके वर्तमान नाम और सीमाका विवेचन। महापुरुषों (दानवीर युद्धवीर धर्मवीर मृत्युवीर शास्त्रार्थवीर विशिष्टविद्वान् भगवद्भक्त राष्ट्रभक्त सिद्ध सती ज्ञानी आदि) के जीवन चरित्र। प्रत्येक वस्तु पर ऐतिहासिक दृष्टिसे विचार।

विशेष—

इसके अतिरिक्त 'श्रीस्वाध्याय' में कुछ सामयिक लेख भी रहेंगे। प्रत्येक अङ्ककी त्रैमासिक अवधिमें जो जो विशेष पर्व त्यौहार या जिन २ अवतारों एवं महापुरुषोंकी जयन्तियां आवेंगी उन उन पर विशेष रूपसे प्रकाश डाला जावेगा। आगामी अङ्क (वसन्ताङ्क) के लिए विद्वान् महानुभाव सर्व प्रथम निम्न विषयों पर सुविचारपूर्ण लेख भेजनेकी अवश्य कृपा करें।

अक्षय तृतीया। श्री भगवान् परशुरामका जीवन-चरित्र। परशुरामकी जन्मभूमि कहां थी ? वर्तमान भारतमें परशुरामके स्थान कहाँ कहाँ हैं ? परशुरामके माता पिता—रेणुका जमदग्नि—के स्थान कहाँ कहाँ हैं ? परशुरामकी पितृभक्ति। दानवीर परशुराम। युद्धवीर परशुराम। भगवान् श्री आद्य शङ्कराचार्यका जीवनचरित्र। श्री नारायण भट्टका जीवनचरित्र। छत्रपति शिवाजीका संक्षिप्त जीवनचरित्र। भक्तवर सूरदासका संक्षिप्त जीवनचरित्र। नृसिंहावतार, आदि २।

सब लेख माघ शु० १५ ता० २० फरवरी १९४३ पर्यन्त "सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (पञ्जाब)" इस पते पर पहुँचना आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः। ❀ श्रीः ❀ स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम्।

श्रीस्वाध्याय

[हेमन्तांक]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम्।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति॥ [राष्ट्रालोक]

वर्ष २ | सोलन, पौष शु० १० शुक्रवार सं० १९९९ वि० | संख्या १२

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै॥
—अ० वा० आचार्य

स्वाध्यायकी आवश्यकता

स्वातन्त्र्यसे इस विश्वमें यदि आप रहना चाहते
संसारके सब सौख्य भी उपभोगना यदि चाहते।
सम्मानको निज पूर्वजोंके विश्वविजयी चाहते
तो रहें श्रीस्वाध्यायका स्वाध्याय करना चाहते॥
राष्ट्राऽवमान सहते स्वाध्याय छोड़ देते
स्वाधीनता न गहते धिक् पारतन्त्र्य लेते।
हे भारतीय वीरों! क्या योग्य आपको है
आदर्श पूर्वजोंका क्यों आप छोड़ते हैं॥
—अ० वा० आचार्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतकी भारती कौनसी होगी ?

कलितकलिकलानां कल्पिताङ्कं खलानां
कलयत कविलोकाः । कौतुकं कीदृगेतत् ।
कविकुलकलिताभिः कीर्तनीयां कलाभिः
कटु कथयति काकः काकलीं कोकिलानाम् ॥
—अ० वा० आचार्य

[कलिकी कलाओंका कलन (अभ्यास) खलजनोंको करना बड़ा सरल होता है, यह निश्चय है। क्योंकि यह उन का स्वभाव है। वे कैसे कैसे कौतुकोंकी रचना करते रहते हैं। उस कौतुककी भूमिका भी वे ही निर्माण करते हैं। हे ! (श्री स्वाध्यायके प्रेमी) विद्वान् पाठको ! आप भी थोड़ा इसको देखिये। कविकुलोंकी सम्मानित कलाओंसे कीर्तनीय कोकिलों-के काकली (मधुर शब्द) को काक कटु कहता है।]

प्रत्येक पुरुष अपना अपना मत प्रकाशित करने में पूर्ण स्वतन्त्र होना चाहिए। स्वतन्त्रता मनुष्यमात्र का जन्मसहज अधिकार है, ये बातें सर्वथा सच हैं। किन्तु उस स्वतन्त्रताका सदुपयोग करना अविद्वान् के हाथकी बात नहीं। विद्वान् भी यदि अनार्यजुष्ट पथके पथिक हों तो उस स्वतन्त्रताका सर्वदा दुरुपयोग ही होगा। दुरुपयुक्त स्वतन्त्रता प्रादेशभर भी देशका हित नहीं कर सकती। सुशिक्षाको छोड़कर संसारमें आर्यत्व प्रतिष्ठाका उपायान्तर कोई नहीं। सुशिक्षित पुरुष ही आर्य हो सकते हैं, कुशिक्षित नहीं। कुशि-क्षित पुरुषोंसे लोककल्याणकी आशा करना बालूसे तेल निकालनेसे भी कठिन है। कान्यकुब्जनरेश गोविन्दचन्द्रके दैशिकेन्द्र महाकवि राजशेखरने अपनी काव्यमीमांसामें कितना सुन्दर लिखा है। वे कहते हैं—

"वरमकविर्न पुनः कुकविः स्यात्"

[अशिक्षित होना कुशिक्षित होनेसे कहीं अच्छा है, किन्तु कुशिक्षित होना अतीव निन्द्य है।]

सुशिक्षित होने के लिए स्वराष्ट्रशिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। श्रीराष्ट्रालोकमें कितना सुन्दर लिखा है—

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ॥

[अपनी सम्यक् उन्नति करनेकी इच्छा रखने वाले पुरुषको चाहिए कि स्वराष्ट्र शिक्षाका ग्रहण करे। उस शिक्षासे प्रत्येक पुरुष दूरदर्शिताको प्राप्त कर लेता है। फिर उसे कभी खेद का अवसर नहीं आता।]

किसी भी विषय पर मत प्रकाशित करनेसे प्रथम उस विषयका पूर्ण स्वाध्याय करना प्रत्येक पुरुषके लिए हितकर है। स्वाध्याय भी सम्प्रदायपूर्वक यथा-विधि स्वाध्यायके मर्मज्ञ सदाचारी आचार्यसे ही होना चाहिए। अन्यथा हित नहीं हो सकता। किसी भी विषय पर प्रवचन करनेके लिए अकृतस्वाध्याय को अधिकार ही नहीं प्राप्त होता। इस बातका वर्णन कितनी सुन्दर रीतिसे उपनिषद्में प्रतिपादन किया है। देखिये—

"वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति"

[गुरुसे साङ्ग सरहस्य वेदका स्वाध्याय करनेके अनन्तर आचार्य कोटिमें प्रविष्ट पुरुष अपने शिष्योंको अनुशासन करे।]

अनूचान ही आचार्य हो सकता है तथा उसीको अन्तेवासियों (शिष्यों) को अनुशासन करनेका अधि-कार भी होता है।

कोकिल-काकलीको काक भले ही कटु कहें, किन्तु काकमत कुत्सितताको छोड़ कभी वन्द्यता धारण नहीं कर सकता। पाठकवृन्द ! बड़े खेद के साथ आज हमें ये पंक्तियाँ लिखनी पड़ रही हैं। कोकिल भी काकोंके कहने पर उन्हींके स्वरमें स्वर मिलाते हुए कहने लग पड़े हैं कि कोकिल-काकली कटु है, ऐसी आजकी परिस्थिति है। भारतकी भारतीसे अनभिज्ञ पाश्चात्य शिक्षा विदूषित 'हिन्दुस्तानी' भाषाके पक्षपाती भारत की राष्ट्रभाषाके सिंहासन पर ब्राह्मी भारतीको सुशो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भित नहीं समझते। देवनगरके राष्ट्रमार्गोंको पदपद्मों से सुशोभित करनेवाली ब्राह्मी भारती उन्हें कुरूप तथा अप्रिय दिखाई देती है। असुरनगरके टेढ़े मेढ़े गली-कूंचोंमें पदोंपर पद डालती हुई खरोष्ट्री सुरूप तथा प्रेमास्पद उन्हें दीखती है। पारतन्त्र्यसे निगड़ित राष्ट्रोंमें ऐसा होना आश्चर्य नहीं। वहां तो—

अद्यात् काकः पुरोडाशं श्वा च लिह्याद्धविस्तथा।

[कौवा यज्ञका पुरोडाश खाता है तथा कुत्ता हवनीय द्रव्यका स्वाद लेता है।]

ऐसी परिस्थिति अवश्यम्भावी ही है। यावत्पर्यन्त प्रभाविनी राष्ट्रशक्ति उन्हें ऐसा नहीं कह सकती कि—

त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः।
यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ॥

[तीनों लोकोंका नेता इन्द्र हो, हविर्भाग देवताओंको मिले। तथा यदि आपको जीवित रहनेकी इच्छा है तो पाताल को चले जाएं।] तावत्पर्यन्त सुव्यवस्थितता तथा शक्ति कहां हो सकती है ? अस्तु।

भारतीय भारती सुरभारती है। उसके पदचिह्न खरोष्ट्री कभी नहीं हो सकते, नाहीं खरोष्ट्री पदचिह्नों पर चलना वह हितकर तथा रुचिकर समझती है। सुरभारतीके पदचिह्नतो सर्वदा देवनागरी ही हो सकते हैं तथा देवनागरी पदचिह्नों पर ही चलना उसे रुचिकर तथा हितकर भाता है। 'हिन्दुस्तानी' बोली खरोष्ट्री है। देवनगरके मार्गों पर उसे चलाना उन मार्गोंको दूषित करना है। किन्तु कुशिक्षित पुरुष ब्राह्मी-भारतीका मुकुट खरोष्ट्रीके मस्तक पर रखा देखना रुचिकर समझ रहे हैं। "विनाशकाले विपरीत बुद्धिः"। हन्त! भगवल्लीला अपार है।

सुरभारती-प्रचुर भारती (वर्तमान भारतकी राष्ट्रभाषा हिन्दी) में लेख पढ़ना तथा प्रवचन सुनना कई अशिक्षित तथा कुशिक्षितोंको अवाञ्छनीय तथा व्यर्थ प्रतीत होता है। वे कहते हैं कि ऐसी भाषा जनसाधारणके लिए कठिनतम है। उनके मतमें असुरभारती-प्रचुर खरोष्ट्री 'हिन्दुस्तानी' बहुत सरल तथा सफल है। उन्हें मुखमें भरा हुआ अमृतका घूँट थूक कर खारा पानी पीनेके लिए ढूँढना भा रहा है। इसी कारण जब भी कभी कोई अंग्रेजीमें व्याख्याता व्याख्यान दे रहा हो तो कभी भी उसको उलहना नहीं देते कि आपकी अंग्रेजी बोली कठिन थी, प्रत्युत ऐसा कहनेमें लजाते हैं। वे सीधे घर जाकर कोश (डिक्शनरी) में उन कठिन शब्दोंका अर्थ ढूंढ कर अपनेको ज्ञानवाला सिद्ध करते हैं। इसी प्रकार उर्दूमें व्याख्यान देने वाला जब अर्बी फारसी के बड़े बड़े अप्रसिद्ध शब्द चुन-चुनकर उनका अपने व्याख्यानमें (भारतमें) दुरुपयोग करता है तो उसको बड़ा (आलिम) विद्वान् समझा जाता है, तथा उसके उपयुक्त उन शब्दोंको 'हम नहीं समझे' ऐसा कहनेमें लज्जाका अनुभव करते हुए उन शब्दोंका अर्थ ढूंढते फिरते हैं। हन्त! परतन्त्र भारत! तेरी कियती दुर्दशा है। ये कुशिक्षितोंके चमत्कार अशिक्षितोंमें तथा कुशिक्षितोंमें चल सकते हैं, किन्तु 'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी पाठक भली भांति जानते हैं कि सुशिक्षितोंको ये कभी अपने जालमें नहीं फांस सकते। भारत सदा के लिए कभी भी परतन्त्र नहीं रह सकता। वह स्वतन्त्र हो कर रहेगा। कोकिल दुष्ट करटोंकी कटु बोलीको कभी मधुर नहीं कह सकता तथा अपनी मधुर काकलीको काकोंके कहने पर कटु मानकर कभी नहीं छोड़ सकता, वह स्वतन्त्र हो अथवा परतन्त्र। कोकिल बगुलोंके घर्घरको अथवा काकोंके कांव २ को कभी रुचिकर या हितकर नहीं समझ सकता। देवनगर भारतमें देवनागरी पदचिह्नों पर भारतकी राष्ट्रभाषा भारती ही सर्वदा विहार करेगी। कुशिक्षित तथा अशिक्षित उससे प्रसन्न हों अथवा अप्रसन्न इसकी कोई चिन्ता नहीं। महावैयाकरण तथा महाकवि भर्तृहरिने कितना सुन्दर लिखा है—

लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीड़यन्
पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दितः।
कदाचिदपि विश्वसन् शशविषाणमासादयेत्
न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्॥

[सम्भव है कि प्रयत्नसे पीड़ने पर बालूमेंसे तेल निकल आए, प्यासका मारा मृगमरीचिकामें पानी भी पी सके, विश्वास रखने पर कदाचित् शश-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवनकी एक झाँकी

गताङ्कोंमें पूज्यपाद श्री १०८ आचार्य चरणोंके अलग अलग कई विषयों पर मौलिक लेख निकल चुके हैं। उनलेखों से सन्तुष्ट होकर कई प्रेमियोंने वारम्वार उनकी जीवनीके सम्बन्धमें प्रश्न किये हैं, किन्तु उनकी जीवनी उन्हींके अतिरिक्त प्रायः और कोई नहीं जानता। हमने भी कई बार उनसे अपनी आत्मकथा प्रकाशित करनेके लिए प्रार्थना की, परन्तु वे अस्वीकार ही करते गये। अपने प्रेमी भक्तोंके अत्याग्रहके कारण आत्मजीवनके कुछ अंशों पर प्रकाश डालना अब उन्होंने मान लिया है। उसीके अनुसार उनका यह लेख यहां प्रकाशित हो रहा है। 'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी पाठक इससे लाभ उठाएँगे ऐसी आशा है। —सम्पादक]

गताङ्कोंमें हमारे लेखोंको पढ़कर 'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी पाठक हमें आत्मकथा प्रकाशित करनेका बहुत अनुरोध कर रहे हैं। किन्तु आत्म-कथा सम्पूर्णरूपसे प्रकाशित करना अभी हमारे वशकी बात नहीं। इसके कई कारण हैं। उन कारणोंको प्रकट करना भी अभी उचित प्रतीत नहीं होता। समय आनेपर वह सब स्वयं ही हो जायगा। हां, कुछ अंश आत्म-जीवनके ऐसे अवश्य हैं जिनको प्रकट करनेसे लोकोपकार अवश्य होगा। किन्तु पाठकोंसे विनम्र भावसे एक निवेदन अवश्य है कि उन्हें जो उससे लाभ हों वह पत्र द्वारा हमें अवश्य लिख भेजें। पाठकवृन्द! अब हम आत्म-जीवनकी एक घटना यहां लेखबद्ध कर रहे हैं।

लगभग पौने पांच वर्षकी अवस्था थी, शिवमहिम स्तोत्र कण्ठ हो गया था, प्रतिदिन सायङ्काल सन्ध्या समयमें ठाकुरजीके पास बैठना पड़ता था। घरवालों ने कुछ स्तोत्र तथा कुछ चुने हुए श्लोक कण्ठ करा रक्खे थे। शिवरक्षा, रामरक्षा, गङ्गालहरीके कुछ श्लोक तथा श्रीपञ्चस्तवीके कुछ श्लोक और इधर उधरके कुछ देवताओंके ध्यानादि प्रचुर मात्रामें कण्ठ हो गये थे। और न जाने कहाँ कहाँके श्लोक थे, पर कई अन्यान्य मुक्तक श्लोकादि भी पढ़ा अवश्य करते थे। मातामहालयमें तथा अपने घरमें दोनों ही स्थानोंमें सन्ध्या समयमें मङ्गलदीप जगाने पर उसे प्रणाम करना होता था अनन्तर अपनेसे बड़े सभी लोगोंको वहाँ जो भी उपस्थित हों, प्रणाम करना पड़ता था। भारतीय सभ्यतामें जिनका लालन-पालन हुआ है वे सभी इस प्रथासे परिचित हैं। आज भी यह प्रथा भारतके सभी प्रान्तोंमें थोड़ी बहुत पाई जाती है। इसी प्रकार प्रातःकाल नींदसे जागते ही कुछ स्तोत्र पढ़ने होते थे, उसे हमारे यहां प्रातःस्मरण कहा जाता है। हां, सायङ्कालके पढ़नेके स्तोत्रोंसे प्रातःकाल पढ़नेके स्तोत्र अन्य ही होते थे। शिवमहिम स्तोत्र सायङ्काल पढ़ना होता था। यह स्तोत्र अत्यन्त सुप्रसिद्ध है। काश्मीरमें इसका प्रचार प्रचुर मात्रामें पाया जाता है। पुष्पदन्त नामक गन्धर्वराजने इस स्तोत्रका निर्माण किया है। स्तोत्रके अन्तिम श्लोकोंसे यह बात स्पष्ट है। इसके ऊपर ऐतिहासिक दृष्टिसे विचार फिर कभी किया जायगा।

का सींग भी ढूंढ ले सके, किन्तु प्रतिनिविष्ट मूर्ख (कुशिक्षित) लोगोंके चित्तको प्रसन्न करना सम्भव नहीं।] अस्तु।

अन्तमें हमारी प्रार्थना है कि हमारे इस लेखको 'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी पाठक भली भांति स्वाध्याय करके राष्ट्रभाषाके सम्बन्धमें अपना मत स्थिर करने का प्रयत्न करेंगे।

भगवती श्रुतिकी आज्ञा है कि—

"स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्।"

[आत्मकल्याणकारक शिक्षा ग्रहण करना तथा उसका प्रचार करनेमें कभी प्रमाद नहीं करना चाहिए।] शिवमस्तु। —सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिनकी बात है, गर्मी के दिन थे, पूज्य पिताजी घर आये ही थे, हम लोग छत पर बैठे थे। उन्होंने प्यारसे मुझे कहा "महिमन् सुनाओ" मैं भी स्तोत्र सुनाने लगा। वाणी तुतली थी, उच्चारण वर्णोंका स्पष्ट नहीं था, फिर भी स्तोत्र पढ़नेमें बहुत आनन्द आया करता था। कुछ श्लोक सुना दिये। अनन्तर मैंने कहा "इसका अर्थ क्या है ? पिताजी !" पिताजीने कहा "बड़े होने पर बता देंगे" मैं चुप होगया। किन्तु इससे चित्त शान्त नहीं हुआ। चित्त अर्थ जाननेके लिए अत्यधिक व्याकुल हो रहा था। बड़ा बननेकी इच्छा भी बहुत बढ़ रही थी। पिताजी की बड़ी-बड़ी मूछें देखकर मैं भी मन ही मन विचारता था कि मैं भी मूछें बढ़ जानेपर बड़ा हो जाऊंगा। अहा ! बचपन कैसा विलक्षण होता है; उसकी रमणीयता अज्ञानसे ही खिल उठती है। बचपनमें जिन बातोंका बड़ा महत्त्व होता था आज उनके स्मरण आनेपर हँसीसी छूट पड़ती है, अस्तु।

रात हुई। घरके सब लोग सो गये। मैं भी अपने छोटेसे मंजे पर लेट गया, किन्तु नींद चिर समय पर्यन्त नहीं आई। मैं विचार कर रहा था—क्या महिमन्का अर्थ बच्चोंको नहीं आ सकता ? क्या वह बड़ा होनेपर ही आ सकता है ?—कई प्रकारके विचार किये कुछ स्थिर न हो सका। अन्तमें नींद कब आई यह ज्ञात ही नहीं हुआ। किन्तु मैं गाढ़ निद्रामें आनन्दमग्न हो गया था। बचपनकी नींद कितनी मीठी होती है इस बातको सभी जानते हैं, किन्तु उसको व्यक्त करना उसकी मिठासको न्यून करना है। सोते सोते एक स्वप्न देखा—

मैं छोटासा ही हूँ। एक नदीके कूल पर खड़ा हूँ। नदी बहुत बड़ी है, पानी उसका बड़े वेगसे बह रहा है, जल बहुत ही निर्मल है। थोड़ा पानी मैंने पीया। बड़ा मीठा और निर्मल जल पीनेसे चित्त अत्यन्त प्रसन्न हो रहा था। पानी पी कर मैं तटके ऊपर चढ़ आया, वहां देखा कि एक बड़ी-बड़ी मूछें तथा लम्बी डाढ़ीवाला बूढ़ा खड़ा है। लम्बे-लम्बे सुनहले तथा श्वेत सिरके बाल पीठपर लटक रहे थे। डाढ़ी भी श्वेत सुनहली घनी तथा लम्बी थी। मूछें भी पाण्डुता तथा पीलापन धारण कर रहीं थीं। वे एक धोती पहने थे। कन्धे पर केवल एक अंगोछा ही था। पास ही एक मिट्टीकी गागर पड़ी थी, एक कमण्डलु भी पास ही पानीसे भरा धरा था। वे दोनों हाथ ऊपर किये हुए सूरजकी ओर देख रहे थे। साथ ही मुखसे कुछ पढ़ भी रहे थे। उन्होंने अब मेरी ओर देखा। देखकर सस्मित मुखसे मुझसे कहा—"तुम कुछ पढ़े हो ?" मैंने कहा—"जी, हां ! शिवमहिमन् पढ़ा हूँ और भी बहुतसे श्लोक तथा स्तोत्र जानता हूँ।" उन्होंने कहा—"सुनाओ" मैंने कहा—"आप जो श्लोक सुनानेको कहेंगे वही सुना दूंगा।" इसपर उन्होंने कहा—"अच्छा 'मनः प्रत्यक् चित्तं' यह श्लोक सुनाओ।" मैंने भी सुना दिया। इस समय हम दोनों ही धरातल पर बैठे थे। नदी तथा आसपासके प्रदेशकी शोभा देख रहे थे। वे धीरे २ चुपचाप शून्यसे हो रहे थे। मैंने देखा उनकी आँखों से छलछलाता अश्रुप्रवाह मूंछों और डाढ़ीको धो रहा था। मुखपर आनन्दकी उज्वलता तथा स्निग्धता बढ़ रही थी। इस समय उनका मुख कन्दूरीफलके समान लाल हो रहा था। मैं एक टक लगाये उनकी ओर देख रहा था। मेरे मनमें आया मैं इनसे एक बार महिमन्का अर्थ पूछकर देखूं। ये तो डाढ़ी मूछोंवाले हैं, बड़े हैं, ये अवश्य ही अर्थको जानते होंगे। वे सहसा ठहाका मारकर हँस पड़े। फिर कहने लगे—"अहा ! तुम बहुत सुन्दर पढ़ते हो तुम्हारा श्लोक पाठ सुनकर यह नदी और यह जंगल भी प्रसन्न हो रहा है।" मैंने कहा—"बाबाजी ! इस नदीका नाम क्या है ?" उन्होंने कहा—"क्रमु" मैंने कहा—"आप कहां रहते हैं ?" उन्होंने कहा—"इसीके तीर पर।" फिर मैंने कहा—बाबाजी ! क्या महिमन्का अर्थ बच्चोंको नहीं बतलाया जाता ?" उन्होंने कहा—"क्यों नहीं।" मैंने कहा—"मेरे पिताजी ऐसा कहते हैं।" वे फिर गम्भीरभावसे कुछ हँसे और कहने लगे—"तुम्हारे पास महिमन् की पोथी है न ?" मैंने कहा—"नहीं हमको बिना पोथीके ही पढ़ाया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने कहा–"पोथी पढ़ सकते हो ?" मैंने कहा–"हां पढ सकता हूं।" उन्होंने पूछा–"तुम कै वर्षके हुए ?" मैंने कहा– "दो महीनेके अनन्तर छठा वर्ष लग जायगा।" उन्होंने कहा–"ओह ! तब तो तुम अर्थ अवश्य समझ सकते हो। देखो ध्रुव तो पाँच ही वर्षका था जब वह भगवान्के दर्शनोंके लिये जंगलमें चला गया था।" ऐसा कहकर फिर वे चुप हो गये। मैं देख रहा था, वे पुनः शून्यसे हो रहे थे, आँखोंसे आंसू बह रहे थे, मुख वैसा ही लाल और आनन्दसे स्निग्ध हो रहा था। थोड़े समयके पश्चात् वे सचेत हो गये और मुझे अङ्कमें लेकर मुख चूमने लगे। उनकी डाढ़ी और मूंछोंके चुभनेसे मैं घबरासा गया था। वे कभी शिर पर हाथ फेरते थे, कभी मुख पर, कभी सारे ही शरीर पर, कभी गलेसे चिपटा लेते थे। मैं अङ्कमें ही था, किन्तु अर्थ अभी बताया ही नहीं था। उनकी मूंछोंका बाल मेरे गालमें चुभ गया, नींद खुल गई, सपना टूट गया। प्रातःकाल हो गया था, सूरज निकल रहा था। मैं जाग पड़ा, स्वप्नकी बातोंको स्मरण कर रहा था। एक-एक करके सब बातें स्मृति पटल पर आ गईं; किन्तु यह क्या हो गया यह कुछ समझमें नहीं आया। समवयस्क साथी भी जाग रहे थे। हम अब नित्यके खेल-कूदमें फिर लग पड़े, किन्तु स्वप्नकी बातोंसे चित्त और भी अशान्त तथा उद्विग्नसा रहने लग गया था। मैं जितनी भी वस्तुओंको घरमें देखता था या जिन कुटुम्बियोंको देखता था, उनमें से किसीके साथ भी मुझे प्रेम नहीं था। कोई भी मुझे अपना प्रतीत नहीं होता था। इसी कारण मैं बहुत थोड़ा बोला करता था। सभी परायेसे लगते थे। किसी किसी दिन घण्टों तक एक ओर बैठकर मन ही मन कुछ सोचा करता था। किन्तु घरवाले इसका रहस्य नहीं समझ सकते थे। नाहीं मैंने कभी किसीसे कहा। समय आने पर इसका रहस्य भी लोगोंको ज्ञात हो जायगा, अस्तु।

उस दिन सायङ्काल मैं देवदर्शनके लिए अपने पिताजी के साथ गया था। चार-पांच मील दूर उस स्थान पर घोड़ागाड़ीसे ही गये थे। वहां भगवतीके दर्शन किये, फूल-पैसा चढ़ाया। पुजारीने माला प्रसादरूपमें मेरे गलेमें डाल दी। मैंने भी मन ही मन प्रसन्न होकर भगवतीसे प्रार्थना की। उस दिन मङ्गलवार था। वह प्रार्थना यह है–

दुर्गे ! स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि ! का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥

[हे दुर्गे ! आपका स्मरण भयभीत हो कर यदि कोई भी करे तो उसका भय आप दूर कर देती हो। आप उस समय यह कभी नहीं सोचती हैं कि यह मनुष्य है अथवा पशु पक्षी। यह विद्वान् है अथवा मूर्ख, आप जात-पाँतको कभी नहीं देखती हैं। केवल देखती हो कि यह जन्तु भयभीत है और मेरा स्मरण कर रहा है। स्वस्थ दशामें जो आपका स्मरण करते हैं उन्हें परम कल्याणकारक मतिका आप प्रदान करती हैं। सभी प्रकारके लोगोंका तथा सभी प्रकारका परम कल्याण करनेके लिए आपसे अन्य इस संसारमें कौन समर्थ है। दारिद्र्य, दुःख तथा भयको दूर भगा देना यह तो आपका सहज स्वभाव ही है। कारण आपका चित्त सर्वदा दयासे भरा रहता है।]

यह प्रार्थनाका महामन्त्र भी प्रतिदिनके स्तोत्र पाठमेंसे ही था। उस समय अर्थज्ञान न होने पर भी इतना अवश्य ज्ञात था कि यह भगवतीकी प्रार्थना है, तथा इसके पढ़नेसे जगज्जननी प्रसन्न होती हैं। मनमें उसी स्वप्नकी सारी घटनाका विवेचन कर रहा था। भगवतीके मन्दिरकी परिक्रमा की। बाहर की पैड़ी पर क्षण भर बैठकर फिर गाड़ीमें चढ़कर घरको चल पड़े। मार्गमें पिताजीसे मैंने कहा—"मैंने महिमन्की पोथी लेनी है।" पुस्तक-विक्रेतासे तीन आनेकी पुस्तक क्रय कर ली। इस पुस्तकका मुद्रण वेङ्कटेश्वर मुद्रणालय बम्बईमें हुआ था। इसमें भाषामें भी अर्थ था। मैं बहुत प्रसन्न हुआ। मैंने कई बार अर्थसहित महिमन् पढ़ा है। स्वप्नके उस श्लोकका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ करते समय स्वप्नकी घटना प्रत्यक्ष सम्मुख खड़ी हो जाती थी, तथा इतनी तन्मयता हो जाती थी कि क्या कहूँ। उसका वर्णन वाणीसे परेकी वस्तु है। उस स्वप्नकी घटनाका उद्गम आज पर्यन्त मैंने किसीके पास नहीं किया। किन्तु 'क्रुमु' के विषयमें जाननेकी बड़ी उत्कण्ठा थी। कई लोगोंसे पूछा किन्तु 'क्रुमु' का संकेत कुछ नहीं मिलता था। अनन्तर कुछ मास बीत चुके थे। एक दिन महिमन्का पाठ कर रहा था घरके कई लोग वहीं बैठे थे, पाठ करते-करते जब उस श्लोकको पढ़ा तो वही स्वप्न सम्मुख हो गया। अब मैं बारम्बार उसी श्लोकको दुहराने लगा। तीन चार बार पढ़कर चुप हो गया। तथा सहसा ओजसे (जोरसे) हँसने लगा और फिर चुप हो गया। भगवान् जाने घरवाले क्या समझे होंगे। मेरा मुख लाल हो गया था। अनन्तर जब मैं सचेत हुआ तो देखा मैं आस्तरण (बिछौने) पर पड़ा हूं। मुझे बड़ा भारी ज्वर हो रहा था। पिताजी नाड़ी देखकर कह रहे थे—"ज्वर बहुत है।" किन्तु मुझे उस समय भूख लग रही थी, मैंने थोड़ा पानी ही पी लिया। स्वप्नके बाबाजी तथा नदी की स्मृतिसे चित्त व्याकुल हो रहा था, अस्तु।

तीन चार दिनके अनन्तर ज्वर ठीक हो गया, परन्तु व्याकुलता भीतर ही भीतर वैसी ही थी। पिताजीने समझा 'इसको कोई भय हो गया है' कारण मैं नींदमेंसे सहसा चौंक उठता था तथा कुछ बड़बड़ाता था। उन्होंने कुछ पाठ करके मंत्रसे अभिमंत्रित भस्म मेरे शरीरमें लगाई थी, साथ ही मुझे कहा था कि—"श्मशानेष्वाक्रीड़ा" इस श्लोकका पाठ करते जाना फिर सब भय दूर हो जायगा। साथ ही धूप आदि भी जलाई थी। इस कारण अब मैंने भी उस घटना का चिन्तन छोड़ दिया था। किन्तु उस घटनाके चिन्तनने मुझे नहीं छोड़ा। ध्रुव-चरित सुन लिया था। मेरी मातामहीने सविस्तर उसकी कथा सुनाई थी। 'क्रुमु' का संकेत उससे भी न मिला। दो बार भाग निकलनेका भी प्रयत्न किया था, किन्तु असफल रहा। साढ़े नौ वर्षकी अवस्थामें सिन्धु महानदीके दर्शन किये थे, उसका पानी पीनेके अनन्तर उसके तीर पर खड़े खड़े उसी पुराने स्वप्न की घटना पर विचार किया था। किन्तु अब भागनेका साहस नहीं था। पढ़नेमें भी जी नहीं लगता था बुद्धि तीव्र होनेके कारण पाठ शीघ्र कण्ठ हो जाया करता था यह बात अलग है। अस्तु।

अब भी सम्पूर्ण महिमन् स्तोत्रमें मेरे सर्वाधिक प्रिय उस श्लोकके पाठके समय मुझे महान् आनन्द आया करता है और वह स्वप्न नया हो उठता है। किसी भी भयप्रद स्थानमें "श्मशानेष्वाक्रीड़ा" का पाठ भी मैं किया करता हूँ। उससे मुझे पर्याप्त लाभ हुआ है। 'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी पाठक भी उसके पाठसे लाभ उठा सकते हैं। वह श्लोक इस प्रकार है—

श्मशानेष्वाक्रीड़ा स्मरहर ! पिशाचाः सहचराः
चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तॄणां वरद ! परमं मङ्गलमसि॥

[हे! अशुद्ध वासनाओंको भगाने वाले परमात्मन्! परशम्भो! आप श्मशानोंमें विहार करते हैं। आपके सहचर हैं पिशाच, आप सारे शरीर पर चिताभस्म लेपते हैं। मनुष्य-शिरकपालोंकी मालाएँ आप धारण करते हैं। इस प्रकार आपकी रहन-सहन घिनौनी अमङ्गल सी है, किन्तु आपका सारा ही आचरण यद्यपि अमङ्गलरूप ही है तो भी आपके स्मरण करने वालोंके लिए आप परम मङ्गलरूप हो जाते हो। कारण आप भक्तोंको वरदान दिया करते हो। अतः आपका आचरण महान् अमङ्गलरूप यदि किसीकी दृष्टिमें है तो रहता रहे, हमारे लिए तो आप परम मङ्गलरूप ही हैं; क्योंकि हमें आप मनमांगा देते रहते हो।]

स्वप्नके बाबाजीका तथा 'क्रुमु' का दर्शन पुनः कभी नहीं हुआ, किन्तु आजसे लगभग सातवर्ष पूर्वकी बात है, एक बन्नूका रहने वाला ब्राह्मणकुमार लाहौरमें मिला था। उसके साथ बात-चीत हो रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी । उसने बन्नू आनेके लिए प्रार्थना की। उसपर मैंने कहा—"तुम्हारे यहाँ की जलवायु कैसी है ?" उसने उसी प्रसंगमें कहा कि—"हमारे नगरके पास ही 'कुर्रम' नदी बहती है उसका जल बहुत ही अच्छा है।" 'कुर्रम' नदी सुनते ही सहसा बचपनकी स्वप्न-स्मृति जाग उठी । अपने मन ही मन मैंने 'कुर्रम' को अपनी 'कुमु' मान लेनेका साहस किया है। कई बार उसके दर्शन करनेका विचार किया; किन्तु अद्यापि सफल नहीं हुआ हूँ । एक वैदिक मन्त्रमें नदियोंके नामोंके साथ 'क्रुमु' नाम भी आया है। किन्तु यह 'कुर्रम' ही है अथवा और कोई इसके सम्बन्धमें विद्वानोंका निर्णय क्या है यह ज्ञात नहीं। मेरा अपना विचार तो मैंने प्रकट कर ही दिया है। अस्तु।

लीजिए अब वह मेरा सर्वाधिक प्यारा श्रीशिव-महिमस्तोत्रका श्लोक भी सुन लीजिए—

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः।
यदाऽऽलोक्याह्लादं हद इव निमज्ज्याऽमृतमये
दधत्यन्तस्तत्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ॥

[संयमी पुरुष मनको पश्चिम मुख चित्तमें उन सभी प्रकारके अनुकूल विधानोंसे स्थिर करनेके अनन्तर प्राणवायुको वशमें कर लेते हैं । अनन्तर वे योगी शान्तचित्त होकर किसी अनिर्वचनीय रहस्य-भूत तत्त्वका अपने आपमें साक्षात्कार प्राप्त करते हैं, जिसके साक्षात्कारसे एक महान् विलक्षण आनन्द प्राप्त होता है, मानो अमृतसे भरे बड़े भारी ह्रद (प्राकृतिक अगाध तलाव) में डुबकी ही लगा ली हो । इस समय उनके शरीरके रोमरोममें हर्ष हो रहा होता है, तथा आनन्दाश्रुओंसे उनकी आंखें डबडबाई रहती हैं। इस प्रकारके असीम आनन्द-सागरमें बारम्बार डुबकियां लगाते हुए वे जिस अगाध रहस्यभूत वस्तुतत्त्वको अपने आपमें धारण करते हैं, हे भगवन्! वह वस्तुतत्त्व आप ही हैं। ऐसा उन तत्त्वदर्शी परम शान्तिमान् परिपूर्णानन्द-निमग्न महात्माओंका निश्चय है।]

'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी पाठकों! यह श्लोक मेरे हृदयका जीवन सर्वस्व है । मैंने इसका आनन्द प्रत्यक्ष स्वयं अनुभूत किया है। बचपनमें स्वप्नके बाबाजीकी दशा जो क्रुमुके तीर पर स्वयं मैंने देखी है वह अब कभी कभी स्वयं अनुभूतिमें आने लग गई है । किन्तु बाबाजीका पुनः दर्शन न होना बड़ा अखरता रहता है । अहा! वह क्रुमुका तीर कितना रमणीय था। अहा! वे बाबाजी कितने दर्शनीय थे। उनका अपने उत्सङ्गमें लेकर मुझे चूम चूमकर प्यार करना कभी भी मैं भूल नहीं सकता।

वाह! वाह!! मैं भी महान् धन्य हूँ। इस लेखसे पाठक भी अवश्य लाभ उठाएँ। यह बात आज मैंने सर्व प्रथम प्रकट की है । मेरे जीवनमें बीसियों ऐसी घटनाएँ घटी हैं कि उनके स्मरणमात्रसे मैं भी आश्चर्य चकित हो जाता हूं। यथावसर उनपर प्रकाश डाला जायगा। शिवमस्तु।

—अ० वा० आचार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवती श्रीसीता

[लेखक—विद्यावागीश वि० भू० श्री पं० दीनानाथजी शर्मा सारस्वत शास्त्री]

गताङ्कमें 'श्रीसीता जयन्ती' पर प्रकाश डालने की प्रेरणा की गई है; परन्तु हम उसमें श्रीसीताकी उत्पत्ति विषय पर कुछ विचार 'श्रीस्वाध्याय' के पाठक महोदयोंकी सेवामें उपस्थित करते हैं।

गत दिनोंमें एक उत्सवमें श्रीदलपति शास्त्री नामक किसी उपदेशकने सीतोत्पत्ति के विषयमें एक नई बात कही कि—"सीता भूमिसे उत्पन्न नहीं हुई, किसीने उसे खेतमें डाल दिया था; जनकने उसे वहां पड़ा पाया, उठा लिया और अपनी लड़की बना लिया।" उक्त महाशयने रामायणकी कथा करते हुए यह बात कही।

हम भी आज इस पर कुछ लिखना उचित समझते हैं। बाल्मीकि रामायणमें उक्त बात किस स्थलमें कही गई है, यह उस महाशयने नहीं बतलाया। वास्तवमें उसकी उक्त कल्पना निर्मूल है। रामायणके मतमें सीता पृथिवीसे ही उत्पन्न हुई है। वह मानुषी नहीं, किन्तु अयोनिजा देवी है। देखिये—

सबसे पूर्व प्रष्टव्य यह है कि—जनकको सीता भूमि पर पड़ी मिली; रामायणानुसार उसे वहां कौन फैंक गया, और क्यों फैंक गया? क्या आजकलकी भांति उस समय भी किसी विधवा स्त्रीने विवाहकी आज्ञा न होनेके कारण कामान्ध बनकर जार कर्मसे लड़कीको पैदा किया, फिर अपने कलङ्कित होने के डरसे उसे खेतमें गिरा दिया? अथवा किसी २०-२४ वर्षकी कुमारीने तब आजकलकी भांति विवाहमें देरी देखकर कामुक हो व्यभिचार द्वारा किसी लड़कीको जन्म देकर अपने बचावके लिये उसे भूमि पर डाल दिया? अथवा अधिक कन्याओंको उत्पन्न होता देखकर किसीने खिन्नतासे अन्तिम कन्याको भूमि पर गिरा दिया? अथवा कन्योत्पत्ति में अपमान देखकर किसीने उसे खेतमें डाल दिया?

इनमें व्यभिचार पक्ष तो निर्मूल है, क्योंकि राजा जनक स्वयं धर्मात्मा थे, व्यभिचारी नहीं। तब उनकी प्रजामें व्यभिचार सम्भव नहीं, क्योंकि—

राज्ञि धर्मिणि धर्मिष्ठाः पापे पापाः समे समाः।
लोकास्तमनुवर्तन्ते यथा राजा तथा प्रजा॥
यथा हि कुरुते राजा प्रजा तमनुवर्तते
(बाल्मीकि० ७।४३।१६)

यद्वृत्ताः सन्ति राजानस्तद्वृत्ताः सन्ति हि प्रजाः
(बाल्मीकि० २।१०६।६)

इत्यादि प्रमाणोंसे हमारा ही पक्ष पुष्ट है।

इस प्रकार राजा जनकके व्यभिचारी न होनेसे उसकी प्रजा भी व्यभिचारिणी सिद्ध न हुई। शास्त्र की आज्ञा न होनेसे यद्यपि उसके राज्यमें विधवा विवाह नहीं हुआ करता था; तथापि उसके राज्यमें व्यभिचार कहीं नहीं माना गया, अतः व्यभिचार की शङ्का तो निर्मूल ही सिद्ध हुई। इधर रामराज्यमें जबकि धार्मिकता होनेसे—

'नार्यश्चा ऽविधवा नित्यं भविष्यन्ति पतिव्रताः'
(१।१।६१)

विधवाओं का अभाव दिखलाया गया है।

तस्मिन् पुरवरे हृष्टा धर्मात्मानो बहुश्रुताः (१।५।६)
कामी वा न कदर्यो वा नृशंसः पुरुषः क्वचित्
(१।५।८)
सर्वे नराश्च नार्यश्च धर्मशीलाः सुसंयताः (१।५।६)
न क्षुद्रो वा न तस्करः न चावृत्तो न सङ्करः (१।५।१२)

इस प्रकार दशरथ राजाके भी धार्मिक राज्य होनेसे तत्रत्य नरनारियोंका धर्मात्मा होना, कामी न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होना, निर्दयी, चोर तथा सङ्करता रहित होना बतलाया गया है। इसी प्रकार उसके पड़ौसी धार्मिक जनकके राज्यमें भी विधवाओंका न होना, तथा नरनारियोंका कामी एवं निर्दयी न होना स्वाभाविक है।

यह बात भी अवश्य विचारणीय है कि व्यभिचारसे विधवाएं पुत्र पुत्री स्वयं तो उत्पन्न नहीं कर सकती, वहां पर पुरुषसङ्गकी ही आवश्यकता होती है। परन्तु जबकि वहांके पुरुष धार्मिक थे, स्वैराचारपरायण नहीं थे; तब विधवाएं भी स्वैरिणी कैसे हो सकतीं। छान्दोग्य उपनिषद्में महाराजा अश्वपति की घोषणा प्रसिद्ध है—

'न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
ना ऽनाहिताग्निर्ना ऽविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥
(५।११।५)

इस पद्यका चतुर्थपाद विचारणीय है कि—मेरे राज्यमें कोई स्वैरी अर्थात् व्यभिचारी पुरुष ही नहीं है; तब स्वैरिणी अर्थात् व्यभिचारिणी स्त्री ही क्योंकर हो सकती है? इससे स्पष्ट है कि—स्त्रियोंके व्यभिचारमें पुरुष समाज ही दोषी हुआ करता है। अश्वपतिके राज्यकी भांति धार्मिक जनकके राज्यमें भी धार्मिकताके कारण, व्यभिचारी पुरुष न होनेसे, व्यभिचारिणी स्त्रियोंका अभाव स्वतः सिद्ध हो गया।

तब फिर जनकके राज्यमें व्यभिचारसे लड़की कैसे उत्पन्न हो सकती है? उसके राज्यमें निर्दयता न होनेसे निर्दयतापूर्वक लड़कीको कौन गिराता? उन दिनों धन-समृद्धि भी पर्याप्त थी; तब कन्याओंकी बहुतायत में भी भला किसको विषाद हो सकता था? यदि उसके राज्यमें कन्याओंकी उत्पत्तिमें अपना अपमान माना जाता; तब जनकके भाई कुशध्वजने भी अपनी लड़कियोंको क्यों नहीं मरवा डाला? यदि कन्याओंको वहां पर मार दिया जाता था, तो वहां पर उत्पत्ति कैसे हुआ करती थी?

जबकि उसके राज्यमें निर्दयता नहीं थी; तब किसीने अपनी लड़कीको कैसे फैंक दिया? इधर राजा जनक ऋतुमती कन्याविवाहके पक्षपाती न थे। तभी तो उन्होंने सीताका विवाह छठे ही वर्षमें कर दिया था। (इस विषयमें हम फिर कभी लिखेंगे) तब राजदण्डके भयसे उसके राज्यमें भी ऋतुमतीत्व से पूर्व ही कन्याओंका विवाह स्पष्ट है। तब फिर किसी भी कुमारीके विवाहसे पहले ऋतुमती न होनेसे ऋतुमूलक कामभावके उदय न होनेके कारण, और ऋतुमतीत्वमें पतिराहित्य न होनेसे तन्मूलक व्यभिचार हो ही नहीं सकता। इस प्रकार वादियोंकी सभी सम्भावनाएं कट गईं। इधर श्रीरामचन्द्र जैसा मर्यादा पुरुषोत्तम—जो धर्मशास्त्रसे अविरुद्ध आचार वाला हो, तथा लोकापवादसे डरने वाला हो (यह बात सीता निर्वासनमें प्रत्यक्ष है) वह व्यभिचारसे उत्पन्न हुई अज्ञात कुलशील कन्याको पत्नी रूपमें कभी स्वीकार नहीं कर सकता।

इधर राजा जनक बड़ा धार्मिक, शास्त्रज्ञाता तथा शास्त्रानुसार चलने वाला था। वह वर्णव्यवस्था जन्म से मानता था। तभी तो विद्वान् एवं सुकर्मा होते हुए भी उसने अपने आपको ब्राह्मण कभी नहीं कहा, किन्तु जन्मसे क्षत्रिय होनेसे अपने आपको क्षत्रिय ही माना। तब भला वह सङ्करता को क्यों चाहता? अज्ञात, कुलशील तथा किसीसे गिराई हुई, व्यभिचारमूलक उत्पत्तिकी शङ्का वाली लड़कीको अपनी पुत्री कैसे बनाता?

वास्तवमें सीताको पृथिवीमें किसी पुरुष वा स्त्रीने नहीं गिराया था। किन्तु वह पृथिवीसे उत्पन्न हुई थी। यदि वह किसीके द्वारा गिराई जाती; तब उसे रामायणमें 'अयोनिजा' न कहा जाता, किन्तु 'योनिजा' ही कहा जाता। परन्तु रामायणमें उसे भूतलोत्पन्न होनेसे 'अयोनिजा' कहा गया है। जैसा कि—बालकाण्डमें—

अथ मे कृषतः क्षेत्रं लाङ्गलादुत्थिता ततः (१।६६)
क्षेत्रं शोधयता लब्धा नाम्ना सीतेति विश्रुता।
भूतलादुत्थिता सा तु व्यवर्धत ममात्मजा॥
वीर्यशुल्केति मे कन्या स्थापितेयमयोनिजा।
भूतलादुत्थितां तां तु वर्धमानां ममात्मजाम् (१।६६।१५)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुता मयोनिजां सीतां दद्यां दाशरथेरहम्। (१।६६।२७)

यह जनकका वाक्य है। यहां पर सीताकी भूतल से उत्पत्ति तथा अयोनिजता स्पष्ट ही है।

न केवल बालकाण्डमें ही यह कहा गया है, अपितु अयोध्याकाण्डमें भी। नाहीं केवल जनकने प्रत्युत सीताने भी अपनी उत्पत्ति पूर्व प्रकारसे ही कही है। जैसे कि—

तस्य लाङ्गलहस्तस्य कृषतः क्षेत्रमण्डलम्।
अहं किलोत्थिता भित्त्वा जगतीं नृपतेः सुता॥
(२।११८।२८)

यहां पर भी सीताका पृथ्वी फाड़कर निकलना स्पष्ट ही है।

अयोनिजां हि मां ज्ञात्वा (२।११८।३७)

यहां पर सीताका अयोनिज होना स्पष्ट है।

न केवल पूर्व काण्डोंमें अपितु—सुन्दरकाण्डमें भी यही कहा है।

सुता मैथिलराजस्य सीता भर्तृदृढव्रता।
उत्थिता मेदिनीं भित्त्वा क्षेत्रे हलमुखक्षते (५।१६।१६)

मीमांसकोंने तात्पर्य निर्णयार्थ—

उपक्रमोपसंहारावभ्यासोऽपूर्वता फलम्।
अर्थवादोपपत्ती च लिङ्गं तात्पर्यनिर्णये॥

यह लिङ्ग माने हैं। इनमें अभ्यासका अर्थ है—बार बार कहना। जिस बातमें वास्तविकता होती है, अथवा ग्रन्थकारको जो बात विवक्षित होती है, उसे वह कई बार दोहराता है। सीताका भूमिसे उत्पन्न होना वा अयोनिज होना ग्रन्थकारने कई बार दोहराया है। परन्तु उक्त उपदेशकका कथन ग्रन्थकारने एक बार भी नहीं कहा। इस कारण उक्त उपदेशक का पक्ष निर्मूल ही सिद्ध हुआ।

न केवल पूर्व काण्डोंमें प्रत्युत युद्धकाण्डके ११८।१५ पद्यमें भी यही बात दोहराई गई है। इसी प्रकार उत्तरकाण्डके ६८।७ श्लोकमें भी भगवान् राम ने पृथ्वीको अपनी 'सास' कहा है। 'सास' उसे तभी कहा जासकता है जबकि श्रीरामकी स्त्री सीता पृथिवीकी लड़की हो। यदि सीता किसी मानुषी की लड़की हो; तब 'पृथिवी' रामकी 'सास' कभी भी न कही जासकती। तब वादीकी सब विप्रतिपत्तियाँ निराकृत हो गईं।

पहले हम कह चुके हैं कि—मीमांसकोंने उपक्रम और उपसंहारको भी तात्पर्यनिर्णायक माना है। इसके अनुसार रामायण प्रणेताने उपक्रममें भी सीताका पृथिवीसे आविर्भाव माना है, उपसंहारमें भी उसने सीताका भूतलमें ही तिरोभाव माना है। जैसेकि सीता स्वयं कहती है—

यथाऽहं राघवादन्यं मनसापि न चिन्तये।
तथा मे माधवी देवी विवरं दातुमर्हति॥ (७।९७।१४)
तथा शपन्त्यां वैदेह्यां प्रादुरासीत्तदद्भुतम्।
भूतलादुत्थितं दिव्यं सिंहासनमनुत्तमम्। (१७)
तस्मिंस्तु धरणी देवी बाहुभ्यां गृह्य मैथिलीम्।
स्वागतेनाऽभिनन्द्यैनामासने चोपवेशयत् (१९)
तामासनगतां दृष्ट्वा प्रविशन्तीं रसातलम्।
पुष्पवृष्टिरविच्छिन्ना दिव्या सीतामवाकिरत्॥(२०)

इन पद्योंमें सीताका पृथिवीमें विलीन होजाना स्पष्ट है।

इस प्रकार उपक्रम एवम् उपसंहारकी एकतासे भी सिद्ध होता है कि—रामायणकारको सीताकी पृथिवीतलसे ही उत्पत्ति अभीष्ट है। पृथिवी पर किसीके द्वारा सीताके गिराये जानेका उल्लेख न तो श्रीवाल्मीकिने किया है, न ही अन्य किसी प्राचीन ने। सीता रावणके घर रहकर भी मन तथा शरीरसे शुद्ध रही। फिर भी रामके द्वारा स्वीकृत कर लिये जानेके कारण उसका प्रबल लोकापवाद हुआ था। तब अज्ञातकुलशीलताकी अवस्थामें अथवा भूमि पर गिराये जानेकी अवस्थामें यदि राम सीताके साथ विवाह करते तो इस अवसर पर भी लोकापवाद अनिवार्य था। लोकापवाद-भीरु राम वैसा विवाह कभी न करते। परन्तु रामायण में उस अपवादका संकेत भी कहीं नहीं। तब वादीका पक्ष निर्मूल है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह बात भी विचारयोग्य है कि—यदि सीता किसी मनुष्यसे उत्पन्न होती तो मैथुनयोनि होनेसे वह छठे ही वर्षमें विवाहयोग्य न होती; परन्तु रामायणकारने छठे ही वर्षमें उसका विवाह लिखा है [इसे हम फिर कभी लिखेंगे] तब स्पष्ट है कि—वह भूमिसे उत्पन्न हुई थी। इसलिये अमैथुनयोनि थी। मैथुनयोनि और अमैथुनयोनिका उत्पत्तिके समयमें बढ़नेका, तथा डीलडौलका समानक्रम नहीं होता। स्त्रीके गर्भाशयमें परिमितता होती है, उसमें ऊष्मा भी सीमित होती है। परन्तु पृथिवीमें अपरिमितता होती है, और ऊष्माकी बहुतायत होती है। इसीलिये तो पूर्वोक्त श्लोकोंमें सीताकी भूतलसे उत्पत्ति होते ही विशिष्ट वृद्धि कही गई है।

जब सृष्टिके नियमसे विलक्षण उत्पत्ति हुआ करती है तब उसमें सृष्टिनियम सीमित वृद्धिक्रम भी नहीं हुआ करता; किन्तु उसमें विलक्षण ही क्रम रहा करता है। इस विषयमें जरायुजसे विलक्षण उद्भिज्ज सृष्टिका वृद्धिक्रम विचारने पर हमारी बात समझा देगा। इस विषयमें आर्यसमाजके प्रवर्तक स्वामी दयानन्दका प्रमाण देना भी उपयुक्त होगा। वे सत्यार्थप्रकाशके आठवें समुल्लासके १३८ पृष्ठमें लिखते हैं—'आदि सृष्टि मैथुनी नहीं होती'। १३९ पृष्ठमें यह लिखते हैं कि—'आदिमें अनेक..... मनुष्य उत्पन्न हुए.....युवावस्थामें'।

इससे सिद्ध हुआ कि—अमैथुन सृष्टि उत्पत्तिके समय में ही डीलडौल वाली अथवा यौवनवाली होती हैं। तभी तो सीता छठे वर्षमें विवाहयोग्य मानी गई। उस कालके बीतने पर—

पतिसंयोगसुलभं वयो दृष्ट्वा तु मे पिता।
चिन्तामभ्यगमद् दीनो वित्तनाशादिबाधतः (२।११८।३४)

उसके पिताकी इस श्लोकमें कही हुई चिन्ता सङ्गत ही है। इससे सीता अमैथुनयोनि है—यह सिद्ध हो गया। नहीं तो छठे वर्षमें ही वह युवति कैसे हो जाती।

अमैथुनयोनिके जन्मसे ही युवति होनेका एक और प्रमाण लीजिये। महाभारतके वनपर्वमें द्रौपदी की उत्पत्ति विषयमें लिखा है—

द्रुपदस्य सुता ह्येषा वेदिमध्यात् समुत्थिता।
अयोनिजा महाभागा स्नुषा पाण्डोर्महात्मनः।
(२७३।५)

यहां पर द्रौपदीको यज्ञकुण्डसे उत्पन्न एवं अयोनिज (अमैथुनयोनि) माना गया है।

कुमारी चापि पाञ्चाली वेदीमध्यात् समुत्थिता।
श्यामा पद्मपलाशाक्षी.....चारुपीनपयोधरा।
(आदिपर्व० १६६।४४-४५)

यहां पर उस द्रौपदीकी उत्पत्ति पयोधरसहित मानी गई है, अर्थात् उत्पत्ति कालमें ही अमैथुनयोनि द्रौपदीको युवति माना गया है। इसी प्रकार स्वा० दयानन्दने भी अमैथुनयोनिको उत्पत्तिके समय से ही यौवनयुक्त माना है—यह हम पहले लिख ही चुके हैं।

फलतः सीता यदि मैथुनयोनि होती, किसी मनुष्यसे ही पृथिवी पर गिराई गई होती; तब छठे ही वर्षमें वह युवति न हो जाती, मानुष सृष्टिक्रमानुसार ११–१२ वर्षसे आगे ही उसका यौवन फूटता है। पर जब उसका छठे ही वर्षमें यौवन दिखलाया गया है; तब यह स्पष्ट है कि—वह भूतल से निकली थी—और अमैथुनयोनि एवं अमानुषी थी, किसी मनुष्यने उसे नहीं गिराया। किसी मनुष्य ने उसे गिराया था—इसमें न श्रीवाल्मीकिकी सम्मति है, न ही किसी और प्राचीनकी। तब यह उक्त उपदेशककी निज कपोलकल्पना ही सिद्ध हुई, और पूर्व मीमांसासे वह निराकृत हो गई।

अब केवल एक ही प्रश्न रहता है कि—पृथिवीसे उत्पत्ति कैसे हो सकती है? इसमें यह जानना चाहिये कि—जहां पर कर्मवश पांच भूतोंका विशिष्ट मिश्रण होजाए; वहीं उत्पत्ति हो जाया करती है। स्त्रीको जो गर्भ हो जाया करता है; उसमें भी कर्मवश शुक्रशोणितमें पांच भूतोंका विशिष्ट संमिश्रण तथा उसमें आत्मसम्पर्क हो जाता है। विशिष्ट मिश्रण न होने पर उसे भी गर्भ नहीं होता। इस प्रकार सिद्ध हुआ कि—जहां जहां वह मिश्रण विशेष हो जाता है, वहां वहां उत्पत्ति भी हो जाया करती है। इसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैज्ञानिकोंकी भी सम्मति है। वे पांच भूतोंके मिश्रण विशेष हो जाने पर स्वयं ही वहां पर चैतन्य प्राप्त होजाना मानते हैं।

यद्यपि पांच-भूतोंका मिश्रण-विशेष स्त्री गर्भमें ही होता है, तथापि अपवाद न्यायसे अन्यत्र भी कहीं कदाचित् होजाया करता है। तभी वैशेषिक-दर्शनके "शरीरं द्विविधं योनिजमयोनिजं च" (४।२।५) इस सूत्रमें अयोनिज शरीर भी माना गया है। स्वामी दयानन्दके भी मान्य प्रशस्तपाद-भाष्यमें "तत्र अयोनिजम् अनपेक्ष्य शुक्रशोणितं देवर्षीणां शरीरं धर्मविशेषसहितेभ्योऽणुभ्यो जायते" पृथिवीनिरूपणके इस स्थलमें भी देव वा ऋषियोंका धार्मिक परमाणुओंसे उत्पन्न होना माना गया है। सीता भी मानुषी नहीं थी, किन्तु दैवी थी, अतः उसका अयोनिजत्व उक्त सूत्रसे सिद्ध हो ही गया।

इसी प्रकार वैशेषिकदर्शनमें एक अन्य सूत्र भी है—'धर्मविशेषाच्च' (४।२।७) इसका यही आशय है कि अदृष्टवत् आत्मसंयोगसे ही परमाणुओंमें चेष्टा होती है। उसी चेष्टासे वे मिलकर द्व्यणुकादिक्रमसे अयोनिज देव वा ऋषियोंके शरीरोंको बना देते हैं। इस विषयके उक्त दर्शनमें अन्य भी सूत्र हैं; परन्तु विस्तार भयसे उनका उल्लेख नहीं किया गया।

फलतः अमानुषी देवी सीताकी भूतलसे उत्पत्ति संगत ही है। तब फिर श्रीदलपति शास्त्री नामक उपदेशककी कल्पना निर्मूल ही हुई। उसी देवयोनिग सीताकी जयन्ती ही नियत दिनमें अभीष्ट है; जिसका निर्वाचन 'श्रीस्वाध्याय-सम्पादक' महोदयने किया है।

दीप-शिखा

कवयिता :—
श्री पं० परमानन्दजी
विद्यालङ्कार

प्रबल पवनसे व्याकुल होकर
कांप रही थी दीप-शिखा।
उसे दीखता था अब बीता
जितना मेरा समय लिखा॥
किसी आड़को ढूंढ रही थी
अपना तन दुबकाने को।
न थी सहारा कोई पाती
अपनी जान बचाने को॥
जिस कागजको भस्म किया था
उसने अपने यौवनमें।
जिसके भाई-बन्धुको समझा
भोजन-सम था निज मनमें॥
उसको सम्मुख देख उसीके
आगे करुण पसारा हाथ।
'क्या मुझको तुम शरण न दोगे?'
यह बोली आंसूके साथ॥
कागज हँस करके तब कहता
'नहीं हमारा तुमसे मेल।
काम निकल जाने पर हमको
खाना हुआ तुम्हारा खेल॥
आज कष्टमें पड़ करके तुम
हमको कहने लगे सहाय।
मित्र मान कर तुमको रहना
हमको कभी नहीं पौसाय॥'
गिड़गिड़ाय कर दीप-शिखाने
कहा मुझे यह भिक्षा दो।
मित्र बनाओ जगमें सबको
मुझे देख यह शिक्षा लो॥
छोटे-बड़े सभी हित-चिन्तक
कष्ट पड़े पर आते काम।
तुच्छ किसीको नहीं समझना
दुर्बल हो या बलका धाम॥'
इतनेमें झोंकेने आकर
दीप-शिखाका किया विनाश।
कागजने झोंकेसे पूछा
'क्यों दीनोंका करते नाश?
पावकके तुम मित्र कहाते
फिर क्यों ज्वालासे है द्वेष?'
अट्टहास कर कहा वायुने
'हरे दीनके मैंने क्लेश॥'

बल-हीनोंका जन्म वृथा है, अपनेको वह लगता भार।
जीना चाहो शक्ति बढ़ाओ, शक्ति-युक्तका है संसार॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बृहस्पति और ममता

[लेखक— महामहोपदेशक शास्त्रार्थमहारथी श्री पं० माधवाचार्यजी शास्त्री]

पुराणों पर एक यह भी आक्षेप किया जाता है कि उनमें बृहस्पतिका ममतासे बलात्कार करना लिखा है। कहा जाता है कि बृहस्पतिने अपने बड़े भाई उतथ्यकी धर्मपत्नी ममतासे सगर्भावस्थामें ही बार बार हटाने पर भी हठात् मैथुन किया, जब गर्भस्थ बालकने बृहस्पतिका वीर्य अन्दर न जाने दिया तो उसके बाहिर गिरते ही उससे 'भरद्वाज' मुनिकी उत्पत्ति हुई, एवं बृहस्पतिने क्रुद्ध होकर गर्भस्थ बालकको जन्मान्ध हो जानेका शाप दिया, जिससे दीर्घतमा ऋषि उत्पन्न हुए। यह कथा अत्यन्त अश्लील, धर्म विरुद्ध, एवं असम्भव है। हम क्रमागत शैलीके अनुसार इस पर भी विचार करते हैं।

वैदिक-स्वरूप

(क) यदस्यै वाचो बृहत्यै पतिस्तस्माद् बृहस्पतिः।
(जैमिनि उपनिषद् २।२।५)

(ख) बृहस्पतिरिव बुद्ध्या।
(मन्त्र ब्राह्मण २।४।१४)

(ग) द्वितीयां जायामश्नुते।
(तैत्तिरीय १।३।१०।३)

(घ) तामन्तर्हिताश्ँरेतः सिग्भ्यामुपदधाति।
(शतपथ ७।४२।२४)

(ङ) यद् वै रेतसो योनिमतिरिच्यते ऽमुया तद् भवति।
(शतपथ ६।३।३।२६)

(च) भारद्वाजं वै बृहत्।
(ऐतरेय ८।३)

(छ) दीर्घतमा मामतेयो जुजुर्वान् दशमे युगे।
(ऋग्वेद अष्टक २ अनु० ३ व० १)

अर्थात्— (क) इस श्रेष्ठ वाणीके पतिको बृहस्पति कहते हैं (ख) बृहस्पतिकी भांति बुद्धिसे [संगत होता है] (ग) दूसरी स्त्रीको प्राप्त होता है (घ) उस अन्तर्हिता=सगर्भा [ममता] को वीर्य सेचनके लिये उपधान करता है (ङ) जो वीर्य योनिसे अतिरिक्त= बाहिर पड़ता है वह उस [सगर्भा ममता] के कारण होता है। (च) बृहत् ही भारद्वाज है (छ) दशमयुग= सृष्टिके आरम्भसे दो चतुर्युगी व्यतीत होकर आने वाले त्रेतामें—ममताका बेटा, दीर्घतमा नामक ऋषि मन्त्रद्रष्टा हुआ।

पौराणिक-स्वरूप

अन्तर्वत्न्यां भ्रातृपत्न्यां मैथुनाय बृहस्पतिः।
प्रवृत्तो वारितो गर्भं शप्त्वा वीर्यमवासृजत् ॥ ३६ ॥
तं त्यक्तुकामां ममतां भर्तृत्यागविशङ्किताम्।
नामनिर्वचनं तस्य श्लोकमेनं सुरा जगुः ॥ ३७ ॥
मूढे ! भरद्वाजमिमं भरद्वाजं बृहस्पते !
या तौ यदुक्त्वा पितरौ भरद्वाजस्ततस्त्वयम् ॥ ३८ ॥
चोद्यमाना सुरैरेवं मत्वा वितथमात्मजम्।
व्यसृजन्मरुतोऽबिभ्रन्दत्तोऽयं वितथेऽन्वये ॥ ३९ ॥
(श्रीमद्भागवत ९। २०)

अर्थात् गर्भवती भाईकी स्त्रीके साथ बृहस्पति मैथुन करनेके लिये प्रवृत्त हुआ (गर्भस्थ बालकने) निषेध किया (अतः उसको अन्ध हो जानेका) शाप देकर (बाहिर ही) वीर्य छोड़ दिया ॥३६॥ पतिके त्याग देनेके भयसे ममताने उस (प्रस्खलित वीर्य द्वारा उत्पन्न हुए बालक) को छोड़ना चाहा, तब देवताओंने ममताके प्रति उस (सद्योजात शिशु) के नामका निर्वचन भूत यह श्लोक पढ़ा ॥३७॥ हे मूर्खे ! दोसे उत्पन्न होने वाले इस बालकका तू पालन कर। हे बृहस्पते ! तू भी इस 'द्वाज'=दूसरेके क्षेत्राश्रयसे अन्य वीर्यजात—बालकका पोषण कर। इस प्रकार परस्पर कहते हुए ममता और बृहस्पति दोनों ही उस बालकको छोड़ कर खिसक गए; इस लिए इसका नाम 'भरद्वाज' ऐसा प्रसिद्ध हुआ ॥३८॥ देवताओंके कहने पर भी ममताने इस बालकको वितथ=व्यर्थप्रायः=

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
079810

अनावश्यक=निरर्थक एवं व्यभिचार-जात जान कर छोड़ दिया, (तब इस अनाथको) मरुत् नामक देवताओंने प्राप्त करके भरतके वंशमें दे दिया ॥३६॥

वास्तविक भाव

उपर्युक्त दोनों स्वरूपोंकी तुलना करने पर प्रत्येक साक्षर इस आख्यानकी वैदिकताका भली भांति अनुमान कर सकता है। कई क्षुद्रबुद्धि जन इस कथासे नियोग भी सिद्ध करना चाहा करते हैं, परन्तु उन्हें यह विदित नहीं कि इससे तो उनके माने हुए नियोगकी उल्टी धज्जियां उड़ जाती हैं। क्योंकि उन के यहाँ नियोगका लक्षण यही तो है कि 'सन्तानके लिये पतिकी आज्ञासे या उसके मरने पर किसी पर पुरुषसे इच्छापूर्वक भोग करना' उक्त कथामें इन तीनों बातोंका सर्वथा अभाव है। क्योंकि सन्तान तो पूर्व ही ममताके गर्भमें विद्यमान थी। पति-आज्ञाका इसमें लेशमात्र भी नहीं और ममता अन्त तक इस कार्यके सर्वथा प्रतिकूल ही रही है। अतः इसे खुला व्यभिचार या बलात्कार ही कह सकते हैं। यदि उनकी सम्मतिमें नियोग भी इसीका नाम है तब तो उनके इस धार्मिक कृत्यपर सौ २ बार बलिहारी! आशा है कि प्रतिवादी अब इससे नियोग सिद्ध करनेका साहस नहीं दिखायेंगे। रहा इसकी वास्तविकताका विचार, सो हम वैदिक शब्दोंमें ही प्रकट करते हैं। वेदोंमें लिखा है कि—

बाग्वै बृहती। (शतपथ १४।४।१।२२)

अर्थात्—यह वाक् ही बृहत् कही जाती है।

पतिः पालयिता (निरुक्त अ० १० खं० २१)

अर्थात्—पति रक्षकको कहते हैं। सो पुरुषका मन ही बृहस्पति कहलाता है, क्योंकि 'यन्मनसाऽनुमनुते तद् वाचा वदति' इस श्रुतिके अनुसार पहिले मनमें जो भाव उदित होता है वही पश्चात् वाणीसे बोला जाता है अतः मन ही वाणीका पति कहला सकता है, इसका ज्येष्ठ भ्राता जीवात्मा ही उतथ्य है, 'तथ्य' शब्दका अर्थ सत्य है और 'उ' शब्द वितर्कद्योतक है। अर्थात् जिसकी सत्यतामें वितर्क हो वह 'उतथ्य' कहा जाता है। अतः यह जीव जीव रूपेण सत्य है किं वा "ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति" के अनुसार ब्रह्मरूपेण सत्य है? ऐसा विचार जीवात्माके विषयमें निरन्तर बना रहता है। द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, आदि सिद्धान्त इसी एक 'उ' की करामात है। 'ममता' शब्दकी विशेष व्याख्या करनेकी आवश्यकता नहीं, क्योंकि प्रचलित भाषामें भी किसी वस्तुमें विशेष आसक्त होना या उसमें रागाधिक्य रखना ममत्व=ममता किंवा मामता कही जाती है, जो कि मायाका ही विशद स्वरूप है। 'दीर्घतमा' का अर्थ घोर अन्धकार है, जिसे दूसरे शब्दोंमें अज्ञान या मोह कहा जा सकता है। इसी प्रकार 'वीर्य' शब्द भी पराक्रमका पर्याय है। अतः आध्यात्मिक पक्षमें इसका सीधा अर्थ यही होगा कि जीवात्मा रूप तथ्यकी स्त्री ममता ममत्वयुक्त, तादृश वृत्तिके गर्भमें मोह रूप दीर्घतमा थे। बृहस्पति रूप मनने इस वृत्तिमें अपने वीर्य (सामर्थ्य) का संचार करना चाहा परन्तु जब तक ममताके गर्भमें मोह घुसा बैठा हो तब तक मानसी शक्तिका संचार होना सर्वथा कठिन है। वेदमें इसी भावको इस प्रकार प्रकट किया है—

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।

(यजुः ४०। १२)

अर्थात्—जो मनुष्य अविद्याके चंगुलमें फंस जाते हैं वह घोर अन्धकारको प्राप्त होते हैं। अतः मनके सहस्र बार प्रयत्न करने पर भी ममतागर्भस्थ मोह मानसिक बलका प्रवेश नहीं होने देता। कदाचित् वह मन रूप बृहस्पति यथा तथा अपने वीर्य-(सामर्थ्य) को ममतावृत्तिके सन्निधानमें भी प्रस्खलित करदे—फैलादे, तो उससे आत्मज्ञान रूप 'भरद्वाज' उत्पन्न होता है। क्योंकि 'आत्मज्ञान' मन और वृत्ति इन दोनोंके पारस्परिक सङ्घर्षका परिणाम है। अतः यह 'द्वाज' कहा जाता है। उत्पन्न हुए आत्मज्ञानका यमनियमादि-साधनों द्वारा ही परिपोषण होता है, अतः यही भरद्वाजका देवताओं द्वारा रक्षित होनेका अभिप्राय है, यही इस कथाका आध्यात्मिक भाव है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय ज्यौतिष प्रणाली

[लेखक—ज्योतिर्विद्यारत्न श्री पं० कृष्णचन्द्रजी ओझा केतकी पञ्चाङ्गकर्ता]

धर्मशास्त्रीय सभी विषयोंका निर्णय भारतीय शास्त्र पद्धतिके अनुसार यदि देखा जाय तो वह केवल ज्यौतिषशास्त्र से ही निश्चित होता है । इसका कुछ विवरण गताङ्कमें आ चुका है । ज्योतिष-शास्त्रकी रचना आकाशीय ग्रह ताराओंकी स्थिति पर ही निर्भर है । यह शास्त्र कालज्ञानका साधन होनेसे हमारे आर्य ज्योतिर्वेत्ताओंने ग्रह ताराओंकी स्थितिका ज्ञान अति उच्चतम कर रक्खा है इसमें कोई सन्देह नहीं। कालान्तरमें ग्रन्थोक्त गणितमें अन्तर हुआ ही करता है यह गणेशदैवज्ञका कथन गताङ्कमें आचुका है, तथापि कुछ विस्तृत विचार इसपर करना आवश्यक है । अब हमें यह देखना चाहिये कि ग्रहलाघव किस भूमिकाको लेकर निर्माण किया गया

श्रीकेशवः स्फुटतरं कृतवान्हि सौरा-
र्यासन्नगे तदपि षाष्ठिमिते गताब्दे ।
दृष्ट्वा श्लथं किमपि तत्तनयो गणेशः
स्पष्टं यथा ह्यकृत दृग्गणितैक्ययत्र ॥
कथमपि यदिदं चेद्भूरिकाले श्लथंस्या-
न्मुहुरपि परिलक्ष्येन्दुग्रहादृक्ष्ययोगात् ।
सदमलगुरुतुल्यप्राप्तबोधःप्रकाशः
कथित सदुपपत्या शुद्धिकेन्द्रे प्रचाल्ये ॥ (ग्र. ला.)

उक्त वचनमें गणेश दैवज्ञने स्पष्ट कह दिया है कि मेरे पिताने गणित स्थूल हुई देखकर स्पष्ट बनाई, परंतु मैंने उसमें (पिताजीकी गणितमें) ६० साठ ही वर्षमें अन्तर देखा, इसलिये अन्तरको निकालकर मैं इस ग्रन्थकी रचना करता हूँ । अब यहाँ यह देखना चाहिये कि ग्रन्थकारने आगामी विद्वानोंको संशोधन की आज्ञा दे रखी है या नहीं, उपरोक्त दूसरे श्लोकमें स्पष्ट कह दिया है कि मैंने ग्रहगणित शुद्धकी है किन्तु कुछ कालान्तरसे इसमें भी अन्तर होगा सो आगामी भावी पीढ़ीके विद्वान् बन्धु उसको शुद्ध करलें।

हमारे भारतीय विद्वानोंमें हठ दुराग्रह या पक्षपात किञ्चिन्मात्र भी नहीं था, गणेश दैवज्ञ अपने पिताके ग्रन्थमें अन्तर बताकर "उसको मैंने शुद्ध किया" ऐसा जो कहते हैं यह कितना स्पष्ट और परम्परा प्रणालीके अनुसार है । उपर्युक्त श्लोकोंसे पहले "ब्रह्माचार्यवसिष्ठादि" श्लोकोंमें भी यही प्रणाली सिद्ध की है और उसी प्रणालीके अनुसार ग्रहलाघव निर्माण किया गया है यह स्पष्ट है। आगे गणेश दैवज्ञने कौनसा ग्रह कितने अन्तरसे किस सिद्धान्तका लेनेसे दृक्तुल्य मिलता है यह कहा है, यथा—

सौरोऽर्कोपि विधूच्चमङ्ककलिको नाब्जो गुरुस्त्वार्यजो-
ऽसृग्ग्राहू च कज ज्ञकेन्द्रकमथार्ये सेषुभागः शनिः ।
शौक्रं केन्द्रमजार्यमध्यगमिति मे यान्ति दृक्तुल्यतां
सिद्धैस्तैरिह पर्वधर्मनयसत्कार्यादिकं त्वादिशेत् ॥
(ग्र. ला.)

भावार्थ—इस श्लोकमें भी गणेश दैवज्ञ कहते हैं कि सूर्यसिद्धान्तका सूर्य और चन्द्रोच्च ठीक हैं, नौ कलासे न्यून चन्द्र सूर्यसिद्धान्तसे, पांच अंशसे अधिक शनि आर्यसिद्धान्तसे, शुक्रकेन्द्र यह ब्रह्मसिद्धान्त और आर्यसिद्धान्त इनके मध्य-प्रमाणसे लेनेसे ग्रह दृक्तुल्यताको प्राप्त होते हैं, ऐसी गणितसे ग्रहणादि पर्व व्रतादि धर्मकार्य विवाहादि मंगल कार्य इत्यादि करने चाहियें।

इसके अनुसार गणेश दैवज्ञ तथा उनके पिता केशव दैवज्ञ शुद्ध सूक्ष्म दृक्तुल्य गणितके ही स्वाभिमानी थे, यह स्वयं सिद्ध बात है । अब गणेश दैवज्ञ ने सिद्धान्तकारोंका उल्लेख करके कहा है कि— "जैसे २ प्राचीन सिद्धान्तोंकी गणित स्थूलप्राय होने लगी वैसे २ उनके आगेके विद्वानोंने उसे शुद्ध किया है।" क्या गणेश दैवज्ञकी यह बात वास्तवमें ?सत्य है इसे देखना चाहिए। आज सूर्यसिद्धान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो हैं, आद्यसूर्यसिद्धान्त और द्वितीय सूर्यसिद्धान्त। दोनों का आशय निम्न है—

शास्त्रमाद्यं तदेवेदं यत्पूर्वं प्राह भास्करः।
युगानां परिवर्तेन कालभेदोऽत्र केवलः॥ (सू. सि.)

शास्त्र वही पूर्वका है जोकि सूर्यने कहा है, परन्तु युगमानके परिवर्तनसे केवल जहाँ काल भेद हुआ वहाँ गणितमें भेद पड़ना स्वाभाविक बात है। इसीलिए सूर्यसिद्धान्तमें ही आगे कहा है—

तत्तद्गतिवशान्नित्यं यथा दृक्तुल्यतां ग्रहाः।
प्रयान्ति तत्प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरात्॥ (सू. सि.)

जिस २ गति द्वारा चलने वाले ग्रह जिस गणितसे दृक्तुल्यताको प्राप्त हों ऐसी स्पष्ट करनेकी रीतिको आदरसे कहता हूं।

इसपरसे दृक्तुल्य आवे ऐसा स्पष्टीकरण श्री-सूर्यको मान्य था इसमें सन्देह नहीं। इसीलिए कालान्तरसे होने वाले अन्तरको लक्ष्यमें रखकर ही सूर्यसिद्धान्तमें बीजोपनयनाध्याय दिया है और बीज संस्कारको प्रतिपादित किया है। यथा—

चक्रानुपातजो मध्यो मध्यवृत्तांशजः स्फुटः।
कालेन दृक्समो न स्यात्ततो बीजक्रियोच्यते॥ (सू.सि.)
बीजंनिःशेषसिद्धान्त रहस्यंपरमं स्फुटम्।
यात्रापाणिग्रहादीनां कार्याणां शुभसिद्धिदम्॥ (सू.सि.)

उपरोक्त श्लोकोंमें तथा और भी उस अध्यायमें सूर्यांश पुरुष मयासुरको कहते हैं कि तेरी प्रीतिके लिए मैंने यह बीज तेरेको कहा है, इसे गुप्त रखना अगड़ं-बगड़ं कहीं नहीं कह देना। शिष्यकी परीक्षा करके यदि वह शिष्य गुरुभक्त हो सुशील हो उसीको कहना और वह ब्राह्मण हो, दूसरेको नहीं देना, सम्पूर्ण सिद्धान्तोंका यह रहस्य है, इस बीजका संस्कार देनेसे ग्रह दृक्तुल्यताको प्राप्त होते हैं और यह बीज देकर आये हुए ग्रहोंसे यात्रा विवाह आदि शुभ कार्य करने चाहियें जिससे वह सिद्धिको प्राप्त होवें। सूर्यांशपुरुषका आदेश है कि दृक्तुल्य गणित ही धार्मिक क्रियाओंके लिए ग्राह्य है, ऐसा उपरोक्त उनके वचनोंसे सिद्ध होता है।

ऐसे ही ब्रह्मगुप्तने भी अपने बताए ब्रह्मगुप्त-सिद्धान्तमें कहा है। यथा—

ब्रह्मोक्तं ग्रहगणितं महताकालेन यत्खिलीभूतम्।
अभिधीयते स्फुटं तज्जिष्णुसुतब्रह्मगुप्तेन॥ (ब्र.गु.सि.)

ब्रह्माकी कही हुई गणित अधिक समय बीत जाने पर स्थूल होगई है, उसको जिष्णुके पुत्र ब्रह्मगुप्तने सुधारकर स्पष्ट किया है। ब्रह्मगुप्त भिन्नमाल (श्रीमाल) में शक ५०५ के मध्यमें हुआ है।

इत्थं मांडव्य! संक्षेपादुक्तं शास्त्रं मयोदितम्।
विस्रस्ती रविचन्द्राद्यैर्भविष्यति युगे युगे॥ (वशिष्ठसि.)

भावार्थ—हे मांडव्य! सूर्यांश पुरुषने मयासुर को कहा हुआ यह शास्त्र संक्षेपमें कहा है, सूर्य चन्द्र आदिसे युगयुगमें विस्रस्ती (शिथिलता) होगी।

तात्पर्य यह है कि सूर्य चन्द्र आदि ग्रहोंके कारण इस शास्त्रकी युग युगमें शिथिलता होगी। अर्थात् इस शास्त्रमें कहे हुए भगणोंसे आए हुए ग्रह कालान्तरमें दृक्तुल्यताको प्राप्त नहीं होंगे। इसलिए वह अन्तर वेध द्वारा जानकर उसका संस्कार ग्रहोंमें करनेसे ग्रह दृक्तुल्यताको प्राप्त होंगे। इसी वचनानुसार ब्रह्मगुप्त आदि विद्वानोंने अपने २ समयमें अन्तरको वेधोंसे जानकर मुनिप्रणीत ग्रहोंमें उसका संस्कार कर अपने २ ग्रन्थ बनाये हैं। ब्रह्मगुप्त-सिद्धान्तमें और भी कहा है कि—

संसाध्य स्पष्टतरं बीजं नलिकादियन्त्रेभ्यः।
तत्संस्कृतग्रहेभ्यः कर्तव्यौ निर्णयादेशौ॥ (ब्र. गु. सि.)

नलिकादि यन्त्रों द्वारा बीजको सिद्ध करके और वह बीज-संस्कृत ग्रहोंसे धर्मनिर्णय और आदेश करना चाहिए, ऐसा ब्रह्मगुप्तने स्पष्ट कहा है—

यान्ति संसाधिताः खेटाः येन दृग्गणितैक्यताम्।
तेन पक्षेण ते कार्याः स्फुटास्तत्समयोद्भवाः॥
(दामोदर पद्धति)

जिस पद्धति द्वारा ग्रह साधन करके दृक्तुल्यता आती हो ऐसे पक्षसे मनुष्योंने अपने धार्मिक, जातकादि कार्य करने चाहिएं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यात्राविवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम् ।
स्यात्प्रोच्यते तेन नभश्चराणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैक्यकृद्या ॥
(सिद्धान्त शिरोमणि)

भास्कराचार्य अपने सिद्धान्तशिरोमणि में कहते हैं कि—यात्रा विवाह आदि धार्मिक विधियोंके लिए जब ग्रह दृकतुल्य स्पष्ट लेंगे तब ही फल उसका स्पष्ट होगा। वह ग्रह कैसे हों कि आकाशमें दृक्तुल्यता को प्राप्त होते हों।

"यदा पुनर्महता कालेन महदन्तरं भविष्यति तदा महामतिमन्तो ब्रह्मगुप्तादीनां समानधर्माण एव-उत्पत्स्यन्ते। ते तदुपलब्ध्यनुसारिणीं गतिमुररीकृत्य शास्त्राणि करिष्यन्ति। अत एवायं गणितस्कन्धो महामतिमद्भिर्धृतः सन्ननाद्यनन्तेऽपिकाले ऽखिलत्वं न यातीत्युक्तम्।"

भावार्थ—जिस समय अधिक समय व्यतीत होने पर अधिक अन्तर हो उस समय महान् बुद्धिमान् गणक ब्रह्मगुप्तकी भांति प्रत्यक्ष वेधोंद्वारा गतियोंको स्वीकार कर ज्योतिषशास्त्रका जीर्णोद्धार करेंगे। इसी प्रणालीके अनुसार जातकसारमें भी लिखा है—

जातकादिषु सर्वत्र ग्रहैर्ज्ञानं प्रजायते ।
तस्माद्गणितदृक्तुल्यात्स्वतन्त्रात्साधयेद्ग्रहान् ॥

भावार्थ—जातक आदि सर्वत्र ग्रहोंके ज्ञानार्थ जिस गणितसे ग्रह दृक्तुल्य होता है उससे स्वतन्त्र ग्रह साधन करने चाहियें।

यस्मिन्पक्षे यत्रकाले येन दृग्गणितैक्यकम् ।
दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम् ॥ (वसिष्ठ)
ध्यानग्रहोपदेशाद्बीजं ज्ञात्वा च दैवज्ञैः ।
तत्संस्कृतग्रहेभ्यः कर्तव्यौ निर्णयादेशौ ॥

भावार्थ—जिस पक्षसे जिस कालमें दृक्तुल्य गणित जिसकी हो उसी पक्षसे तिथ्यादिका निर्णय करना चाहिये तथा बीज देनेकी आवश्यकता जान पड़ने पर बुद्धिमानोंने वह बीजका संस्कार ग्रहोंमें देकर धार्मिक कार्योंका निर्णय करना चाहिये ऐसा वसिष्ठजीका वाक्य है। यह शास्त्र प्रत्यक्ष शास्त्र है, यदि यही (ज्योतिषशास्त्र) प्रत्यक्ष स्थितिको नहीं बतलावे तो यह शास्त्रही क्या, यथा—

किं तेनापि सुवर्णेन कर्णघातं करोति यः ।
तथा किं तेन शास्त्रेण यन्नप्रत्यक्षतः स्फुटम् ॥

भावार्थ—ऐसा सुवर्ण किस कामका जोकि कान को छेद देता हो और ऐसा ज्योतिषशास्त्र ही किस कामका जिसकी गणित प्रत्यक्ष दिखाई नहीं दे।

यन्त्रैः स्पष्टतरोऽत्र जन्मसमयो वेद्योऽथ खेटाः स्फुटाः ।
यत्पक्षे हि घटन्त उद्गम इहास्तर्क्षं सषड्भः स च ॥
(केशवीय जातक पद्धति)

जिस पक्षसे गणित करनेसे ग्रह दृक्तुल्यताको प्राप्त होते हों अर्थात् जन्म समयके ग्रह ऐसे स्पष्ट हों कि वह यन्त्रों द्वारा वेधसे स्पष्ट प्रतीत होते हों ऐसे ग्रह स्पष्ट करके पुनः आगे जन्मपत्रकी गणित करनी चाहिये ऐसा केशवीकारका स्पष्टमत है।

ऐसे आज भारतीय ज्यौतिषशास्त्रमें अनेक प्रमाण उपलब्ध हैं और भारतीय ज्योतिषशास्त्र वेत्ताओंकी मत प्रणाली ऐसी ही पाई जाती है। इसी कारणसे भारतका ज्यौतिषशास्त्र आज इतनी उच्च स्थितिमें पहुँचा हुआ पाया जाता है। बांसकी नलियोंसे वेध लेकर हमारे भारतीय विद्वानोंने ऐसे दृक्तुल्य गणितका साधन किया है कि जहां अति-सूक्ष्म यन्त्रों द्वारा वेध लिये जाते हैं ऐसे ग्रिनिच आब्झरवेट्री (यरुपकी प्रसिद्ध विशाल वेधशाला) के सञ्चालकोंने भारतीय विद्वानोंके लिये मुंहमें उङ्गली दे आश्चर्य प्रकट किया है। वहां उनके वेधोंके तत्तुल्य हमारे भारतीय ज्यौतिषशास्त्रके अनुसार गणित प्राप्त होता है। यदि भारतीय प्राचीन विद्वानों में हठ या दुराग्रह होता तो आज भारतीय ज्यौतिष शास्त्र इतनी उज्ज्वल कीर्तिको प्राप्त नहीं होता। इसका आधुनिक विद्वानोंको ध्यान रखना चाहिये। धीरे २ वेधप्रणाली लुप्त प्राय होनेसे आधुनिक भारतीय विद्वानोंको दृक्तुल्य या वेधतुल्य आदि शब्द-योजना चमत्कारिक प्रतीत होती है। परन्तु पहले घर २ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यन्त्र थे, प्रत्येक ज्यौतिषी अपने यहां नतांश, उन्नतांश, दिक्साधन, ग्रह ताराओंके वेध नलिका बन्धनसे किया करते थे और अभी तक उनके घरोंमें ऐसे यन्त्र पाये जाते हैं। अब भी यन्त्रराज जैसा छोटा सा यन्त्र पास रखकर नतांश, उन्नतांश, ग्रह-भोग, ताराओंके भोग, समय, लग्न, दशम, क्रान्ति आदि साधन कर सकते हैं और पञ्चांगमें दी हुई गणित की परीक्षा भी कर सकते हैं। रविचन्द्रमें १२ अंश का अन्तर होनेसे १ तिथि होती है, विशेषतया यही प्रमाण तिथि विषयमें विद्वानोंने माना है। तिथि भी आप आकाशीय वेधोंसे निश्चित कर सकते हैं। जिसके लिये "षष्ट्यंशयन्त्र" अत्यन्त उपयोगी है। "षष्ट्यंश यन्त्र" द्वारा रवि चन्द्रका अन्तर निकालकर स्पष्ट रविचन्द्रकी सूक्ष्म गति लेकर तिथिका मान वेध द्वारा भी निश्चित कर सकते हैं। जिसका विवरण प्रसंगवशात् 'वेध प्रकरण' में किया जायगा। यहां कहनेका तात्पर्य यह है कि ज्यौतिषके प्रत्येक अङ्ग प्रत्यङ्ग आकाशीय घटनाओंसे ओतप्रोत हैं। भारतीय ज्योतिर्वेत्ताओंमें सूक्ष्म दृक्तुल्य गणितका विरोधी केवल शक १५७० में कमलाकरभट्ट हुआ, किन्तु कालान्तर जन्य बीज और अन्तर उनको भी स्वीकार करना ही पड़ा है, यह उन्हींके श्लोकोंसे सिद्ध होता है—

दिग्देशकालैर्बहुधान्तराणि
स्थूलानुपातैर्जनितानि यानि।
मध्यस्फुटीयाम्बरगौलशैघ्र्य-
मान्दोच्चपातादि विचित्रगत्या॥
सुस्थूल या स्युर्गणितोद्भवानि
सर्वाणि तन्मिश्रितमेकमेव।
बह्वन्तरं स्याद् बहुकालजं तत्-
ज्ञानं ह्यशक्यं हि नृणां यतोऽत्र॥
कस्यान्तरं कुत्र च तत्प्रदेयं
न ज्ञायते तन्नलिकोक्तितोऽपि।
लोकेऽभिमानात्कथयन्ति मूढाः
कालान्तरं बीजमहो न सत्तत्॥
ब्रह्मार्कचन्द्रैः स्थिरसृष्टिरुक्ता
प्रतिक्षणं तां च विलक्षणां च।
मत्वा स्वबीजस्य गतिं वदन्ति
ज्ञातं च किं तैस्तदहं न वेद्मि॥

भावार्थ— दिशा, देश, काल, स्थूल अनुपात, मन्दोच्च, शीघ्रोच्च आदिकी विचित्र गति इत्यादि कारणोंसे जो २ अन्तर पड़ता है वह सभीका मिश्रित अन्तर एक ही दिखाई देता है, वह अन्तर अधिक समयमें अधिक होगा, परन्तु उसका मनुष्यको ज्ञान होना अशक्य प्राय है, क्योंकि कौनसा अन्तर कहां देना यह नलिकायन्त्रसे भी जान नहीं सकते। लोकोंको अभिमान नहीं, मूढ़लोक "कालान्तर जन्य उत्पन्न हुवा बीज है" ऐसा जो कहते हैं वह बराबर नहीं है। ब्रह्म, सूर्य, चन्द्र इन्होंने सृष्टिको स्थिर कहा है। उसको प्रतिक्षणमें चल मानकर निश्चित किये हुए बीजकी सिद्धता करते हैं, उन्होंने इसमें क्या समझा है यह मैं नहीं जान सकता।"

कमलाकर भट्टका यह कथन भ्रमयुक्त पाया जाता है, क्योंकि पहले बीज होना बताते हैं और कालान्तर जन्य अन्तर बहुत दिनोंसे "एक बड़ा भारी अन्तर हो जायगा कि जिसको कहां और कैसा मिलाना इसका ज्ञान नहीं होगा" आदि, इसमें कमलाकरजी बीजको स्वीकार करते हैं, किन्तु वह बीज कितना और कैसा और कहां मिलाना चाहिए इसका उनको पता नहीं लगनेसे अन्तमें उन्होंने यह कह दिया कि बीज ही नहीं है। परन्तु कमलाकरजी भारी भ्रममें पड़ गए थे यह प्रत्येक विद्वान् कह सकता है, क्योंकि यदि बीजका खण्डन करना था तो बीज होना नहीं बतलाते, जहां बीजका होना बताया है तो वहां बीजका खण्डन कैसे हो सकता है? ऐसे द्विधा कथनसे यही समझना चाहिए कि कमलाकरजी जहां बीजका होना मानते हैं तो बीज संस्कारको भी मानना आवश्यक है। परन्तु किस कालमें कितना बीज देना चाहिए इसका उनको पता नहीं लगनेके कारण बीजका खण्डन कर दिया है। वास्तवमें तो कमलाकरजीकी गणना बीज मानने वालोंमें ही करनी चाहिए, क्योंकि उन्होंने बीजका होना पहले ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्लोकमें कह दिया है। अतः मेरा अभिप्राय है कि कमलाकर भट्ट जी बीजसंस्कारको प्रतिपादित करने वाले हैं।

ऊपर दिये हुए भ्रमयुक्त कल्पनाओंसे कमलाकर जी ने और एक बात कह रक्खी है, उसमें भी द्विविध कल्पनाका बीजारोपण किया है—

अदृष्टफलसिद्ध्यर्थं यथार्काद्युक्तिः कुरु ।
गणितं यद्धि दृष्टार्थं तद्दृष्ट्युद्भवतः सदा ॥

भावार्थ—इसमें कहते हैं कि अदृष्टफलसिद्धि के लिए जो तिथ्यादि साधन किया जाता है वह सूर्य सिद्धान्तमें कही हुई पद्धतिसे साधन करना, क्योंकि सूर्य, सोम, वशिष्ठ आदि महर्षियोंके सिद्धान्तोंमें बीज संस्कार देनेको नहीं कहा है इसलिए बीज संस्कार है ही नहीं और ग्रहण उदयास्त आदि वेधोंसे प्राप्त हुई गणितसे साधन करना।

यहां कमलाकर भट्टने अदृष्टफलसिद्धिके लिए जो वचन कहा है वह सूर्यसिद्धान्तके माननेके विषयमें कहकर अन्य ग्रहणादि वेधतुल्य गणितसे लेनेको कहते हैं। इसमें भी उनको पिछला भ्रम स्थिर होनेके कारण ही यहां ऐसा द्विविध मत देना पड़ा और यह मत उन्होंने अति शीघ्रतासे दे दिया ज्ञात होता है। क्योंकि ऐसा उल्लेख अन्य किसी भी ग्रन्थमें पाया नहीं जाता और यहां गणित पद्धतिके विरुद्ध मत प्रणाली होनेकी संभावना है, अतः अन्य ग्रंथोंसे यह मत विरुद्ध होनेसे मानने योग्य नहीं।

किसी विद्वानने तो यहांतक कह दिया कि "पांच ग्रह जब इकट्ठे होते हैं तब ग्रहण होता है" यह कहना जैसा शास्त्र विरुद्ध होता है ऐसा ही कालान्तर जन्य अन्तरको नहीं मानना भी शास्त्र विरुद्ध है और अन्य सिद्धान्तोंके विरुद्ध पड़नेसे कमलाकरजी भट्टका किसी ने अभीतक अनुमोदन नहीं किया, यह एक विशेष ध्यानमें रखनेकी बात है। इनके पूर्व इस लेखमें जितने भी सिद्धान्तकार और ग्रन्थकार हैं वे सभी दृक्तुल्य गणितको प्रतिपादित करनेवाले हैं। इन सभीसे कमलाकर भट्टका मत विरुद्ध होनेसे कोई भी विद्वान् इस मतको महत्त्व नहीं देता है। यदि कोई देते होंगे तो वह श्रद्धा जाड्य है।

इस विचारसे तो यही सिद्ध होता है कि सिद्धान्त हो या करण, यदि उसमें कालान्तर जन्य अन्तर हो गया हो तो बीज संस्कार देकर उस अन्तरको निकाल देना चाहिए और वेधतुल्य परिमाणोंको स्वीकार कर पञ्चाङ्ग बनाना चाहिए, जिसमें तिथि, नक्षत्र, योग, करण, ग्रहयोग, उदयास्त, ग्रहण आदि की गणित सूक्ष्म दृक्तुल्य वेधतुल्य होगी, तभी ही अपने किये हुए धार्मिक कार्य जिस समय होने चाहिये उस समय में होकर उसका जो फल होगा वह प्राप्त होगा, अन्यथा नहीं। इसीलिये इन सबकी गणित सूक्ष्म पद्धति से होनी चाहिये। सूर्यसिद्धान्त आदि सिद्धान्तोंकी तथा ग्रहलाघव आदि करणग्रन्थोंकी गणित स्थूल होनेसे अर्थात् अधिक समय बीत जाने पर उसमें अन्तर आता है। अतः वास्तवमें उन्हीं ग्रन्थकर्ताओंकी आज्ञाके अनुसार ग्रन्थोंमें संशोधन होना आवश्यक है। इसी हेतुसे भारतवर्षमें कुछ वर्षोंसे पर्याप्त आन्दोलन पञ्चाङ्ग विषयमें हो रहा है, किन्तु जितना यहां मिलना चाहिये उतना अभी नहीं मिला है। ग्रहलाघव सूर्यसिद्धान्त आदि ग्रन्थोंकी गणितसे ग्रहण अस्तोदय ग्रहचार आदि दृष्टिगोचर नहीं होनेसे और यहां ग्रहणमें एक घण्टे तकका अन्तर होनेसे विद्वानोंमें पर्याप्त विचार होने लगा। और संशोधनकी चर्चाएँ भी आरम्भ हुईं। शके १८२६ में श्रीशङ्कराचार्यजी महाराजकी अध्यक्षतामें बम्बईमें प्रथम अखिल भारतीय ज्यौतिष सम्मेलन हुआ और भारतीय ज्यौतिषशास्त्र संशोधन का बीजारोपण किया गया, जिसमें भारतके प्रसिद्ध विद्वान् उपस्थित थे। वह सम्मेलन अपूर्व ऐसा था। दूसरा सम्मेलन पूनामें सन् १९१७ में हुआ जिसमें २३ अयनांशके आसन्न अयनांश और सूक्ष्म परिमाणोंको विद्वानोंने स्वीकृत किया। तथा और भी एक दो छोटे सम्मेलन हुए। तदनन्तर पञ्चाङ्गैक्यमण्डल पूना द्वारा पूनामें शके १८४७ में श्रीमन्त श्री १०५ औंध महाराजके सभापतित्वमें सम्मेलन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भराया गया, जिसमें ग्रहलाघवपक्ष, चैत्रपक्ष, रैवतपक्ष आदि पक्षोंके पञ्चोंने अपना अपना निर्णय सभामें उपस्थित किया और उसमें चैत्रपक्ष ही प्रबल सिद्ध हुआ। अनन्तर राजासाहबकी स्टेटमें चैत्रपक्षीय (केतकी) पञ्चाङ्ग प्रकाशित होने लगा। पुनः सन् १९३४ में मैसूर सरकारके आश्रयमें मैसूरमें द्वितीय कर्नाटक ज्योतिष-परिषद् हुई, जिसमें चैत्रपक्ष ही सर्वमान्य किया गया। इसके अनन्तर इन्दौर सरकारके आश्रित पञ्चाङ्ग-संशोधन-सभा द्वारा सन् १९३५ में अखिल भारतीय ज्योतिष-सम्मेलन महामना श्री पं० मदनमोहन मालवीयजीके सभापतित्वमें हुआ, यह सबको विदित ही है। इस प्रकार भारतमें पञ्चाङ्ग संशोधनके लिए पर्याप्त आन्दोलन हो चुका है, हो रहा है और होगा। क्योंकि अब भारतीय जनता अन्धश्रद्धा वाली नहीं है। अब प्रत्यक्ष प्रमाण ही प्रमाण माना जायगा और परम्पराकी प्रणालीके अनुसार संशोधन भी करना ही पड़ेगा। क्योंकि अब केवल गणितागत अङ्कोंके ऊपर श्रद्धा रखकर धार्मिक कार्योंका करना निरी भूल है और वह गणितके अङ्क प्रत्यक्ष आकाशीय घटनाओंसे निकटवर्ती सम्बन्ध रखते हैं वा नहीं इस ओर जनता का पूरा पूरा ध्यान पाया जाता है। इसमें आपको विश्वास होगया होगा कि यदि गणितागत अङ्क आकाशीय घटनाओंसे नहीं मिले तो उसे शुद्ध करना चाहिए, जिससे गणित शुद्ध होकर धार्मिक, जातक, ताजिक आदिका निर्णय ठीक २ होवे और ज्यौतिषशास्त्र पर जनताका विश्वास फिरसे दृढ़ होवे। अब यदि ग्रहलाघव आदि करण-ग्रन्थ और सिद्धान्तोंकी गणित तुल्य नहीं आती तो उसमें क्या संस्कार करना आवश्यक है? अथवा किस पद्धतिको स्वीकार करना चाहिए? आदि विचार आगामी अङ्कोंमें सविस्तर किया जायगा।

मकर संक्रान्तिका फल

गताङ्कमें हम मकर-संक्रान्तिका फल लिखनेकी सूचना दे चुके हैं; तदनुसार यहां संक्रान्ति-फल लिखा जाता है। इस संक्रान्तिके वाहन, वस्त्र, भूषण, लेपन, भक्षण, स्थिति, गमन-दिशादिका विचार करनेसे सब का निष्कर्ष (फल) निम्न है—

संसारमें क्लेश, आर्य-लोग, ब्राह्मण, क्षत्रिय, सन्यासी, जमींदार, गर्भिणी-स्त्रियां, राजवर्ग और गौ-अश्वादि चतुष्पद प्राणियोंको पीड़ा हो। धान्य घृतादि पदार्थ तेज। अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, चौरभय, वायु का उपद्रव, पूर्व दक्षिण देशोंमें युद्ध दुर्भिक्षादि भय। बंगाल, बिहार, आसाम, मद्रास, कलिंग, मगध और समुद्रतटवर्ति प्रान्तोंको भय। पीले रंगकी प्रत्येक वस्तु तेज हो। विशेषकर हल्दी, सुवर्ण, चान्दी, मोती, ताम्बा, लोहा और घृतादि रस पदार्थोंका भाव अधिक तेज होगा। नेत्र-रोग अतिसारादि-रोगोपद्रव हों। आगामी वर्षाकाल मध्यम रहे। —सम्पादक।

पहले भूदेव

[कवयिता— श्री पं० कुलशेखरजी]

कैसा भी कराल काल दुस्तर न आये, किन्तु होते ना निराश वे प्रसिद्ध सिद्ध नेता थे।
बाहु-बल ही पर भरोसा रखते थे सदा, आत्म-बल धारी सन्मार्गके प्रणेता थे॥
कहै "कुलशेखर" समस्त महि-मंडलमें, ये ही ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मदेव धर्मवेत्ता थे।
दुःख नहिं पाते वीर-पुङ्गव कहाते, ऐसे पूर्वज हमारे विश्व-विजयी विजेता थे॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालाय तस्मै नमः

देवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र

सन् १९४३ ई० का भीषण भविष्य

महायुद्ध शीघ्र समाप्त नहीं होगा

[लेखक—श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय']

वर्तमान विश्वव्यापी महासंग्रामसे कई बड़े बड़े राष्ट्र भस्मसात् हो रहे हैं, बड़े २ ऐश्वर्यशाली पार्थिव (सम्राट्) पार्थिव (मट्टीके) हो रहे हैं। ऊँचीसे ऊँची सभ्यता रसातलमें पहुंच रही है। बड़े बड़े दानवी-सभ्यताके अनुयायी अपने आपको दैवी-सभ्यताके संस्थापक मनवाने का हठात् भय दिखा रहे हैं। किन्तु कराल कालके उदरमें आज पर्यन्त क्या क्या नहीं गया? जिनमेंसे किसी किसीकी अभी भी थोड़ी बहुत स्मृति-सी रह गई है। इस बातको महान् त्यागी एवं महान् विद्वान् भर्तृहरिने कितने सुन्दर शब्दोंमें अङ्कित किया है—

भ्रातः! कष्टमहो महान्स नृपतिः सामन्तचक्रं च तत्
पार्श्वे तस्य च साऽपि राजपरिषत्ताश्चन्द्रबिम्बाननाः।
उद्रिक्तः स च राजपुत्रनिवहस्ते बन्दिनस्ताः कथाः
सर्वं यस्य वशादगात्स्मृतिपथं कालाय तस्मै नमः॥
(वै० श०)

[हे भाई! कैसे कष्टकी बात है! पहले यहाँ कैसा राजा राज करता था, उसकी सेना कैसी थी, उसके राजपुत्रोंका समूह कैसा था, उसकी राजसभा कैसी थी, उसके यहाँ कैसी कैसी चन्द्रमुखी स्त्रियाँ थीं, कैसे अच्छे-अच्छे चारण भाट और कहानी कहने वाले उसके यहां थे! वे सब जिस कालके कराल गालमें चले गये हैं, उसी कालको मैं नमस्कार करता हूं]

सन् १९४३ ई० का भीषण भविष्य

पौष कृष्णा १० शुक्रवारको (इस हेमन्ताङ्क प्रकाशित होनेसे १५ दिन पूर्व ही) सन् १९४३ ई० आरम्भ हो रहा है। इस ईसाई नववर्षके प्रारम्भकी (नवमी गुरुवारको निशीथ कालीन लग्न कुण्डलीकी) ग्रहचार परिस्थितिका सम्यक्तया विचार करनेसे हमें जो प्रतीत हो रहा है, उसका कुछ स्पष्टीकरण हम यहां दे रहे हैं। 'श्रीस्वाध्याय'के पाठक इस समय इसी पर सन्तोष रक्खें। समयकी परिस्थितिके कारण अधिक स्पष्टीकरण करनेमें हम असमर्थ हैं।

भारत तथा भारतेतर अन्यान्य राष्ट्रोंके कर्णधारों की जन्मकुण्डलियां तथा तत्तद्देशोंकी ग्रहचार परिस्थिति देखनेसे हमें तो यही प्रतीत हो रहा है कि संसारकी रक्षा भगवान् ही कर सकते हैं। ग्रह परिस्थिति अत्यन्त विषम-पथकी पथिक हो रही है। दानवी अहंमहमिकाके कारण जितना भी विनाश हो वह थोड़ा ही है। जापान हो अथवा जर्मनी, इंग्लैण्ड हो अथवा अमेरिका, सभी तमोगुणसे अन्धे होकर एक दूसरेको अहंपूर्विकासे खा जाना चाहते हैं। होना तो वही है जो भगवान्की इच्छा होगी। वर्तमान् समयमें इस महान् भयानक दानव युद्धमें दैवी सम्पत्तिके प्रेमी भी 'घुणगोधूम' न्यायसे पिसे जारहे हैं। भारत भी उन पिसे जाने वालोंमेंसे एक है। विजय किसीकी भी हो, विजयी राष्ट्र जब तक दैवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पत्तिका पोषक प्रचारक तथा सेवक न होगा तब तक विजित तथा विजयी दोनों सुखी नहीं हो सकते। आज तकका प्राचीन इतिहास यही बतला रहा है। वर्तमान ग्रहपरिस्थिति जिन २ राष्ट्र तथा राष्ट्रकर्णधारों के लिए अनुकूल है वे यदि दैवीसम्पत्तिके अनुयायी न हुए तो वे भी राष्ट्रके साथ ही कालके कराल गाल-रूपी भ्राष्ट्र (भट्टी) में भस्मसात् हो जाएँगे।

हमारे भारतको इस वर्षमें महान् आपत्तिका साम्मुख्य होगा। भारत यदि स्वतन्त्र होता तो बड़ी उदारतासे इन आपत्तियोंका मुँहतोड़ प्रयत्न करता, परन्तु परतन्त्रताके कारण जालमें बंधे हुए सिंहके समान सब कुछ विवश होकर सहेगा। इसके अतिरिक्त उसके पास और कोई उपायान्तर नहीं। हां, भगवत्प्रार्थना, हृदयके सत्य-सङ्कल्प आदिसे अपने पारतन्त्र्यकी शृङ्खलाओंको तोड़कर भारत स्वतन्त्र हो सकता है तथा अपने सुहृदोंका उपकार एवं शत्रुओंका विनाश भी कर सकता है। किन्तु आज तो उसे सच्चे अर्थमें शत्रु तथा मित्रोंकी परख करनेका भी अधिकार नहीं, ऐसी स्थितिमें यदि भारतको असह्य आपत्तियाँ भोगनी पड़ें तो इसमें आश्चर्य ही क्या। यद्यपि इस वर्षकी ग्रह-परिस्थिति भारतके लिए अनिष्टकर ही प्रतीत हो रही है; तथापि इसका अर्थ यह नहीं कि परिणाममें वह इसी प्रकार असमर्थ रहेगा। इस महायुद्धकी समाप्तिके अनन्तर भारत को सुप्रभातका प्रकाश भी दिखाई देगा और पुनः उसके सोनेके दिन भी जाग उठेंगे। किन्तु इस समय उसे सोना नहीं चाहिए, सोनेसे सोना नहीं मिलेगा और सोनेके (सुवर्णके) बिना सुखसे सोना भी नहीं मिलेगा; अस्तु।

भारतको पूर्वकी ओरसे तथा उत्तरकी ओरसे भी आपत्तिका अधिक भय है। यों तो दक्षिण-पश्चिम से भी भयकी न्यूनता नहीं। भारतके कुछ कर्णधारोंके सिद्धान्तोंसे तथा उनकी ग्रह-परिस्थितिसे तो यही प्रतीत होरहा है कि भारत स्वतन्त्र हो कर ही रहेगा। संसारके मानचित्रमें अत्यधिक उलटफेर होगा। आज यह निश्चितरूपसे कुछ नहीं कहा जा सकता कि कौन कौनसे राष्ट्र पूर्ण स्वतन्त्र रह सकेंगे। स्वतन्त्र राष्ट्रका लक्षण श्रीराष्ट्रालोकमें यों लिखा है—

परराष्ट्रस्य सम्बन्धः सेना कोषश्च सर्वथा।
यत्र हस्ते राष्ट्रियाणां स्वतन्त्रं राष्ट्रमस्ति तत्॥
स्वतन्त्रं त्रयमेतत्स्यात् यत्र राष्ट्रांणि तानि तु।
राष्ट्रसंख्यां हि गच्छन्ति कर्षन्ति च महद्यशः॥

[राष्ट्रान्तरोंके साथ सम्बन्ध, सेना तथा कोषकी सभी प्रकारकी व्यवस्था करनेके अधिकार तथा सामर्थ्य जिस राष्ट्रमें वहांके राष्ट्रियोंके हाथमें रहते हैं उसी राष्ट्रको स्वतन्त्र कहना चाहिए। जहां पर-राष्ट्रसम्बन्ध, सेना और कोषकी व्यवस्था स्वतन्त्र होती है उन्हींको वास्तवमें राष्ट्र कह सकते हैं, क्योंकि राष्ट्रोंकी गिनतीमें स्थान प्राप्त करनेके लिए पूर्ण स्वातन्त्र्यकी अपेक्षा सर्वदा ही रहती है। एवं महान् यशकी प्राप्तिमें भी राष्ट्रकी पूर्ण स्वतन्त्रता ही समर्थ हो सकती है।]

वर्तमान कालिक ग्रहोंसे इतना तो निश्चित ही प्रतीत हो रहा है कि भूमण्डलके पूर्वी प्रदेशों परसे पश्चिमी प्रभाव बहुत अधिक न्यून हो जायगा। भारतीय नृपतिवर्गके अधिकारोंमें न्यूनता आवेगी। कुछ नरेश देशहितके कार्यमें यशस्वी होंगे। यातायात की बहुत असुविधा होगी। प्रत्येक वस्तुका भाव अत्यधिक मँहगा होगा और कई आवश्यक वस्तुएँ दुष्प्राप्य हो जावेंगी।

इंगलेण्ड, डेन्मार्क, लेसर, पोलेण्ड, जर्मनी, पेलेस्टाईन, सीरिया, आयरलेण्ड, ईरान, एशिया-मायनर, डब्लिन, रसिया, स्काटलेण्ड, हालेण्ड, अफ्रिका, न्यूयार्क, मानचेस्टर, जिनेवा, स्टॉकहोम, फ्रान्स, इटली, खाल्डियासे बसरा पर्यन्त, रोम, शिकागो, बल्हेरिया, नार्वे, ट्रान्सवाल, लीव्हरपूल, वाशिंगटन, भारतवर्ष, अफगानिस्थान, ग्रीस, पोर्ट-सय्यद, आक्सफोर्ड और भारतमें मद्रास, बड़ौदा, कलकत्ता, म्हैसूर, निजाम हैदराबाद, प्रयाग, दिल्ली, बम्बई, उड़ीसा, बंगाल, सूरत इन प्रदेशों और नगरों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए यह वर्ष आपत्तिकारक रहेगा। संयुक्तराज्य अमेरिका, बेल्जियम, इजिप्ट, यूरोपियन-तुर्की, आस्ट्रिया, चीन, तिब्बत, ब्रह्मदेश, उत्तर इजिप्ट, मेसोपेटोमिया, ग्रीस, जापान, अरबस्थान, आस्ट्रेलिया हंगरी, स्पेन, प्रशिया, रसिया, स्वीडन, ब्राथटन, पुर्तगाल. गलेशिया इन प्रदेशोंके लिए यह वर्ष कुछ अच्छा रहेगा। जिन कुछ प्रदेशोंके नाम दोनों स्थानोंमें आये हैं वे मध्यम रहेंगे।

युद्ध शीघ्र समाप्त नहीं होगा

'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्कोंमें हम वर्तमान महायुद्ध और संसारकी परिस्थिति पर पर्याप्त प्रकाश डाल चुके हैं। अब इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि आनेवाला विक्रम सम्वत् २००० भी सब प्रकारकी आपत्ति एवं कठिनाइयोंका केन्द्र होगा। इसमें अनेक अभूतपूर्व घटनाएँ घटित होंगी। प्राणिमात्रके प्राण सङ्कटग्रस्त रहेंगे। महायुद्धके भीषण परिणामसे समस्त जनता व्याकुल हो उठेगी। आधिदैविक आधिभौतिक उपद्रव भी अधिक होंगे। दुर्भिक्ष, महामारी, भूकम्प, वायुप्रकोप, जलप्रकोप, अग्नि-प्रकोपादिसे जनधनकी अत्यधिक हानि होगी। राजपरिवार, राष्ट्रके कर्णधार एवं उच्च पदाधिकारियों-मेंसे कई असामयिक मृत्युएँ होंगी। घमासान जलयुद्धके कारण महासागरोंका जल रक्तरञ्जित हो उठेगा। महासंग्रामके लिए आगामी वर्ष उल्लेख-नीय होगा। जापान एवं जर्मनीकी ओरसे नये नये भीषण चमत्कार संसारके सामने प्रकट होंगे।

यहाँ कई सहयोगी ज्योतिर्विन्महानुभावोंका मत है कि "सं० २००० वि० में यह विश्वव्यापी महायुद्ध समाप्त होकर संसारमें सुखशान्तिका साम्राज्य स्थापित हो जायगा, तथा भारतको तो आषाढ़ तक ही विशेष भय है "इत्यादि। किन्तु हमारा मत इससे भिन्न है। सं० २००५ तक समस्त संसारमें पूर्ण शान्ति हमारे विचारसे स्थापित नहीं हो सकती। तब तक यत्र तत्र छोटे-मोटे युद्ध चलते ही रहेंगे। हां, यह अवश्य होगा कि संवत् २००० वि० में विश्वव्यापी महा-भयानक संग्राम होगा जिसमें समस्त राष्ट्रोंकी शक्ति बहुत अंशमें क्षीण हो जावेगी। उससे कुछ समयके लिए किसी देशमें क्षणिक शान्ति हो सकती है पर यह स्थाई शान्ति न होगी। आज जो मित्र हैं कलको वही शत्रु बनकर पुनः लड़ना आरम्भ कर देंगे। इस प्रकार संसारमें यत्र तत्र थोड़ी बहुत अशान्ति बनी ही रहेगी। भारतको भी अभी निकट भविष्यमें अनेक प्रकारकी आपत्तियाँ सहनी होंगी। हम तो चाहते हैं कि भगवान् हमारे उन दैवज्ञ मित्रोंकी भविष्यवाणी ही सत्य सिद्ध करे और संसारमें शीघ्र शान्ति स्थापित हो, किन्तु यह तो प्रभुकी इच्छा पर ही निर्भर है।

फाल्गुन शुक्लसे (ता० ७ मार्चसे) संसारमें अशान्ति विशेषरूपसे बढ़ने लगेगी। यहांसे महायुद्ध की भयानकता घोर रूप धारण करेगी। भयङ्कर संहार होना आरम्भ होगा। साथ ही अग्निकाण्ड दिग्दाह भूकम्प अनावृष्टि महामारी आदिसे भी महा उत्पात होंगे। बड़े बड़े नगर नष्ट भ्रष्ट होंगे। चैत्रसे आगेका समय भारतके लिए भी अच्छा नहीं है।

बृहस्पति और शनिका भयङ्कर परिभ्रमण

इस वर्षमें बृहस्पति और शनिकी स्थिति संसारके लिए सङ्कटापन्न है। अर्थात् यहाँ बृहस्पति अतिचारी हो कर मिथुनसे कर्क और कर्कसे सिंहमें भी प्रविष्ट हुआ है। वैसे साधारण गतिसे भी बृहस्पतिकी मिथुन कर्कमें स्थिति संहिता ग्रन्थोंमें राजविग्रह दुर्भिक्ष एवं संसारमें दारुण भयकारक मानी है; यथा—

मिथुने च गुरुर्याति तत्राब्दे दारुणं भयम्।
नृपाणां विग्रहस्तत्र स्वल्पं तोयं भविष्यति॥
बृहस्पतिर्यदा कर्के स्वल्पो मेघः प्रवर्षति।
राजभिर्विग्रहश्चैव दुर्भिक्षं तत्र जायते॥

फिर यदि अतिचारी हो कर मिथुन कर्क सिंहका भोग करे तब तो कहना ही क्या है, पहले ही करेला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और फिर नीम चढ़ा, अस्तु। इसका विशेष विवेचन श्री रा० कृ० संस्कृत कालेजके प्रधानाध्यापक श्री पं० विशुद्धानन्दजी ज्यौतिषाचार्य महोदयने अपने लेखमें किया है, वह हम इसी अङ्कमें साथ ही प्रकाशित कर रहे हैं।

वृषभका शनि भी राजयुद्ध एवं दुर्भिक्षकारक है, यथा—

कन्यायां मिथुने मीने वृषे धनुषि वा स्थितः।
शनिः करोति दुर्भिक्षं राजयुद्धं परस्परम्॥

चैत्र शु० ८ मंगलवार ता० १३ अप्रैलसे हमारा नया सौर वर्ष आरम्भ होगा। अतः 'श्रीस्वाध्याय' के आगामी अङ्क (वसन्ताङ्क) में वर्ष वर्षेश(जगल्लग्न) कुण्डली और अन्यान्य ग्रह योगोंके आधार पर सं० २००० वि० का सविस्तर भविष्यफल प्रकाशित करने का प्रयत्न करेंगे। पाठक चैत्र शु० १० को प्रकाशित होनेवाले 'वसन्ताङ्क' की प्रतीक्षा करें।

नौ वर्ष पूर्वकी भविष्यवाणी

विगत ६ वर्षोंसे हम जिस भावी भीषण-सङ्कट और विश्वव्यापी महायुद्ध तथा दैवी उत्पातों (दुर्भिक्ष, महामारी, बाढ़, ववण्डर, अग्नि प्रलय, जल प्रलयादि) से जन-धन-संहारकी सूचना देते आ रहे हैं उसकी सत्यता बहुत अंशोंमें तो प्रकट हो चुकी एवं हो रही है; तथा अब जो भीषण भविष्य शेष रहा है उसका सन्निकट समयमें ही साम्मुख्य होने वाला है।

आज से ठीक ६ वर्ष पूर्व सं० १९९० के माघ मासमें बम्बईके सुप्रसिद्ध साप्ताहिक 'श्रीवेङ्कटेश्वर-समाचार' पत्रके ता० १६ जनवरी १९३४ ई० के अङ्कमें हमारी एक विस्तृत भविष्यवाणी प्रकाशित हुई थी। उसका शीर्षक था—"उत्पात और अशान्ति की सम्भावना—दश वर्षके भीतर सभी महाशक्तियाँ क्षीण हो जाएँगी—कई राष्ट्र मट्टीमें मिल जाएँगे" इसी लेखमें हमने संसारकी सामाजिक परिस्थितिके साथ साथ महायुद्धका देशनिर्देशपूर्वक विस्तृत रूपमें विवेचन करते हुए लिखा था कि—

"सं० १९९१ से लेकर २००० वि० तकके दश वर्षोंमें संसारकी बड़ी बड़ी शक्तियां नष्ट हो जाएंगी। भीषण रक्तपात और विश्वव्यापी क्रान्ति होगी, जिसमें कई राष्ट्र मिट्टीमें मिल जाएँगे और अनेकोंका पुनरुत्थान भी होगा। संसारमें भूकम्प आवेंगे, फसलें नष्ट होंगी, साम्यवाद क्रान्ति और गुप्त-षड्यन्त्रोंका विशेष प्रचार होगा। राजतन्त्र-शासनप्रणालियोंमें महत्त्वपूर्ण परिवर्तन होंगे। भारतमें दमनचक्रका दौरदौरा होगा। अत्याचार बढ़ेंगे, आर्थिक स्थिति भयङ्कर रूपमें खराब होगी, पूंजीपति और व्यापारियों के जीवन कष्टमय होंगे। राजा प्रजाका वैमनस्य उग्र रूप धारण करेगा, नये नये आन्दोलन होंगे और प्रतिदिन आश्चर्यजनक घटनाएँ सुननेमें आवेंगी....."
इत्यादि।

उसी समय 'हिन्दी-मिलाप' 'हिन्दी-बंगवासी' 'हिन्दू पञ्च' 'मारवाड़ी-ब्राह्मण' आदि कई प्रमुख पत्रकारों ने भी अपने अपने पत्रोंमें वह भविष्यवाणी उद्धृत की थी। किन्तु उस समयकी राजनैतिक परिस्थिति और आजकी परिस्थितिमें आकाश पातालका अन्तर है। आज युद्धके सम्बन्धमें भविष्यवाणी करना या यथार्थ स्थितिको प्रकट करना अपने ऊपर एक आपत्ति मोल लेना है। इसी कारण कई सुप्रसिद्ध पत्र प्रेस प्रतिबन्धोंकी भेंट हो चुके हैं और कइयोंने अग्रलेख लिखना ही बन्द कर दिया है। ऐसी स्थितिमें 'श्रीस्वाध्याय'के विज्ञ पाठक हमारी विवशताका अनुमान भी भली भांति लगा ही सकते हैं।

सं० १९९० के अनन्तर भी प्रतिवर्ष पत्रोंमें हमारी भविष्यवाणियां प्रकाशित होती रही हैं। सन् १९३९ की पहली सितम्बरको जब जर्मनीकी ओरसे पोलैण्ड पर प्रथम आक्रमण हुआ था उस समय भी कई पत्रकार मित्रोंने युद्धके सम्बन्धमें ज्योतिश्शास्त्रानुसार अपने विचार व्यक्त करनेके लिए हमें लिखा था। लाहौरके सुप्रसिद्ध साप्ताहिक (अब दैनिक) 'विश्वबन्धु'के सम्पादक श्री 'माधव' जी के विशेष आग्रह करने पर सन् १९४० के फरवरी मासमें 'विश्वबन्धु'के लिए हमने एक विस्तृत भविष्यवाणी लिखी थी। उसमें सं० १९९७ के १२ मासोंका भविष्य और महायुद्ध एवं संसारकी परिस्थितिके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्धमें हमने अपने कुछ स्पष्ट विचार व्यक्त किये थे। ता० १७ मार्च १९४० के 'विश्वबन्धु' में पूरे दो पृष्ठोंमें वह भविष्यवाणी प्रकाशित हुई थी। उसका शीर्षक था--"महाभारतकालीन ग्रहोंका फेरा, विश्वका मानचित्र बदलेगा, इटली अमेरिका लड़ाईमें उतरेंगे, सागरोंका जल रक्तरञ्जित हो उठेगा, संवत् २००० तक संसारकी स्थिति पर ज्योतिश्शास्त्रकी दृष्टि" आदि। उसी भविष्यवाणीमें हमने लिखा था कि—"निकट भविष्यमें (मार्च अप्रैलमें) बेल्जियम, नारवे और स्वीडन को भी युद्धमें कूदकर अपरिमित हानि उठानी पड़ेगी" तदनुसार मार्चके अन्तमें ही नारवे आदि उक्त प्रदेशों पर जर्मनीका आक्रमण हुआ और इनका निपात हो गया, तथा उसी संवत्के ज्येष्ठ शुक्ल पक्षमें (त्रयोदशदिन पक्षमें) फ्रान्सका भी पतन हो गया था। इस कारण 'विश्वबन्धु' के उस अङ्ककी इतनी अधिक मांग आई थी कि कार्यालयमें एक भी प्रति शेष नहीं रही। पुनः वह न छप सकी। गत वर्ष स्वयं 'विश्वबन्धु' के सम्पादकजीने उस भविष्यवाणीकी प्रति हमारे पाससे मँगवाकर उसकी प्रतिलिपि अपने पास रक्खी है। सन् १९४० के मार्चमें प्रकाशित हुई उस भविष्यवाणीका कुछ अंश हम यहां उद्धृत कर रहे हैं। इसके द्वारा 'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी पाठकों को ज्योतिश्शास्त्रकी सत्यता प्रकट हो जावेगी और विगत ३ वर्षोंके परिवर्तन तथा निकट भविष्यमें आने वाले सङ्कटकी सूचनाका ज्ञान भी हो जावेगा।

"गत सन् १९३९ की पहली सितम्बरसे यूरोपमें जिस युद्धका सूत्रपात हुआ है, यह निकट भविष्यमें किसी प्रकार भी रोका न जा सकेगा। इस विभीषिकासे बचनेके लिए जितनी भी शान्ति चर्चाएं चलाई जावेंगी वे सब सं० २००० वि० तक विफल सिद्ध होंगी और परिस्थिति सुलझनेकी अपेक्षा अधिकाधिक उलझती हुई प्रतीत होगी। कुछ देरके लिए तत्कालीन परिस्थितिके अनुसार किसी प्रान्त विशेषमें एकाधिक बार क्षणिक शान्ति चाहे भले ही हो जावे, पर उसका स्थाई प्रभाव कुछ नहीं होगा। कोई भी राष्ट्र अपनी हठ न छोड़ेगा। इंगलेण्ड, फ्रान्स, रूस, जर्मन आदिकी कोई भी महाशक्ति अब किसी प्रकार भी शान्त न की जासकेगी। अतः सं० १९९७ के आरम्भसे पूर्व ही (मार्च अप्रैल १९४० से) यह युद्ध भीषण महायुद्धका रूप धारण करेगा।.....

.....संसारमें बाढ़ भूकम्पादि दैवीप्रकोपोंसे भी बहुत हानि होगी। वहाँ बहुतसे भूगर्भीय किले और सुरक्षित लाइनें (रक्षा पंक्तियाँ) टूट जावेंगी या भूकम्पसे चकनाचूर हो जावेंगी। जापान उन्नति के पथ पर अग्रसर होगा। चीन तथा पूर्वी एशिया में पश्चिमी शक्तियोंके अधिकारों पर आक्रमण किया जावेगा।.....जिससे सारे संसार में खलबली उत्पन्न हो जावेगी और एक प्रान्त या देशमें ही नहीं समस्त विश्वमें इसकी भीषण प्रतिक्रिया होगी। भयङ्कर आधिदैविक आधिभौतिक उपद्रवों तथा अनेक प्रकारके पाशविक आक्रमणोंसे संसार भयभीत रोमाञ्चित हो उठेगा.....

.....इस महायुद्धका अन्त महासंहारके बाद विप्लव के रूपमें ही होगा, जिसमें बृटेन, फ्रान्स, रूस या जर्मनी ही नहीं समस्त राष्ट्र नवीनरूपमें प्रकट होते दिखाई देंगे या यों कहिये कि विश्वका मानचित्र ही एक दम बदल जायगा, जिसकी हम अभी कल्पना भी नहीं कर सकते।.....वहां आधुनिक यूरोप भी नहीं रहेगा। विशेषतः नवीन प्रकारके व्यक्तितन्त्रका शासन-विधान सामने आयेगा। समुद्रतटवर्त्ती प्रान्तोंका अस्तित्व खतरेमें होगा। स्वेजनहर और कुछ एक महत्त्वपूर्ण बन्दरगाहों पर भीषण परिस्थिति उत्पन्न हो जावेगी। भूमध्यसागर, प्रशान्तमहासागर, अरबसागर एवं अतलान्तक महासागरका जल रक्तरञ्जित हो जावेगा।.....

.....सं० १९९७ से २००० वि० तक विश्वके साथ भारतमें भी अशान्तिका साम्राज्य रहेगा।.....

पश्चिमोत्तर भारत (सीमान्त) की अल्प संख्यक जातियोंको विशेष आपत्तिका सामना करना पड़ेगा। बंगाल, बिहार, आसाम, सिन्ध, पञ्जाबका वातावरण अधिक अशान्त रहेगा। इसी अवधिमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रिय महासभाका रूप भी सर्वथा परिवर्तित हो जायगा और देश पर विदेशी शक्तिके आक्रमणका भय उपस्थित होगा.....इससे राष्ट्रकी कठिनाइयाँ बहुत बढ़ जावेंगी। सं० १९९९ में भारतका वातावरण एकदम क्षुब्ध हो जावेगा, इसके परिणाममें भारतको अनेक प्रकारकी आपत्तियोंका सामना करना पड़ेगा।..... .....यत्र तत्र दंगे फिसाद, चोर डाकू लुटेरोंकी लूट खसोट एवं अवर्षण, जलप्लावन, शीताधिक्य, अग्नि वायु आदिके उपद्रवोंसे भी हानि होगी..... इन सब कठिनाइयोंको पार करनेके बाद आगे भारत का भविष्य उज्ज्वल प्रतीत होता है।..... ....इन वर्षोंमें व्यापारमें भारी उथल पुथल मचेगी जिससे संसारके बहुतसे धनी निर्धन एवं निर्धनी धनाढ्य बन बैठेंगे। रङ्ग तथा वस्त्रके व्यापारियों को पर्याप्त लाभ होगा..... .....गेहूं और रुईमें भयङ्कर तेजी आवेगी। कर्पूर, राई, सरसों, जौ, चना, इक्षुरसोत्पन्न (गुड़ शक्कर खांड) और जलोत्पन्न वस्तुएँ, मादक व जहरीली वस्तुएँ, गन्धक पारा आदि, चांदी, सोना, मोती, तांबा, लोहा और पिप्पली आदिका भाव विशेष तेज रहेगा.....।

('विश्वबन्धु' १७ मार्च १९४०)

शुक्रोदयास्त

[लेखक—ज्योतिर्विद्यारत्न श्री पं० कृष्णचन्द्र शर्मा ओझा, केतकी पञ्चाङ्गकर्ता]

ज्योतिश्शास्त्रमें गुरु शुक्रके अस्तोदयको महत्त्व प्राप्त होनेका श्रेय यदि देखा जाय तो वह मुहूर्त और धर्मशास्त्रके कारण ही है। गुरु शुक्रके अस्तमें प्रत्येक धार्मिक शुभकार्योंका निषेध होनेसे जनताका ध्यान गुरु शुक्रके अस्तोदयकी ओर रहा ही करता है। इस भारतवर्षमें अनेक पन्थ (अनेक मार्ग) दिखाई देते हैं। ऐसे ही अनेक पञ्चाङ्ग भी दृष्टिगोचर होते हैं, उन पञ्चाङ्गोंमें परस्पर एकवाक्यता न होनेसे गत शुक्रास्त के सम्बन्धमें भारतके कोने २ में हलचल होगई। किसी पञ्चाङ्गमें १५ दिन पूर्व शुक्रास्त और किसी पञ्चाङ्गमें १५ दिनके पश्चात् शुक्रास्त लिखा था। इस प्रकार १५ दिनका अन्तर होनेसे धार्मिक विधियां करनेमें जनताको एक बड़ी आपत्तिका सामना करना पड़ा। किस पञ्चाङ्गके अनुसार धर्माचरण करें और किस पञ्चाङ्गकी गणित ठीक है? इस पर पर्याप्त चर्चा हो चुकी है। यहां यदि एक पञ्चाङ्गमें अस्त पूर्व ही १५ दिनके होनेसे और दूसरे पञ्चाङ्गमें शुक्रास्त १५ दिन पश्चात् होनेसे धार्मिक विधिको एक पञ्चाङ्गके अनुसार करते हैं तो दूसरे पञ्चाङ्गमें शुक्रका अस्त लिखा है। यह महान् आपत्ति उपस्थित होती है। इस आपत्तिका प्रधान कारण पञ्चाङ्गकर्ता हैं। यदि भारतके सभी पञ्चाङ्गकर्ता सूक्ष्म वेधतुल्य पद्धतिको स्वीकार कर लें तो यह आपत्ति आ ही नहीं सकती और भारतवर्षमें एकवाक्यता हो सकती है। अस्तोदय प्रत्यक्ष प्रमाण है, इसमें पक्षपातका कोई झगड़ा है ही नहीं। किसी पञ्चाङ्गमें यदि १५ दिन पूर्व और किसी पञ्चाङ्गमें १५ दिन पश्चात् शुक्रोदयास्त लिख दिया हो तो शुक्र प्रत्यक्ष दीख रहा है या नहीं इसकी परीक्षा स्वयं जनता कर सकती है। ऐसा ही एक उदाहरण सन् १९३८ का है। पूनाके तिलक पञ्चाङ्गमें ता० १५।३।३८ को शुक्रोदय लिखा था और केतकी पञ्चाङ्गमें ता० २८।२।३८ को उदय लिखा था, यह १५–१६ दिनका अन्तर अक्षम्य होनेसे भारी हलचल हो गई थी और ता० २८।२।३८को ही ठीक शुक्रोदय हुआ ऐसा जनताको प्रत्यक्ष शुक्रके दर्शनसे निश्चित हुआ, तथा कुलाबा ऑबझरवेटरीके सञ्चालकोंने 'शुक्रोदय ता० २८।२।३८ को हुआ' ऐसा प्रकट किया था। एवमेव ता० २८।२।३८ के अनन्तर जनता प्रतिदिन शुक्रके दर्शन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया करती थी। ऐसी स्थितिमें तिलकपञ्चाङ्गके अनुयायी अपनी भूलका ही समर्थन करते रहे, किन्तु उन्हींके पक्षके नागपुरवालोंने यह भूल जनताको प्रकटकी थी। यही उदाहरण वर्तमान वर्षका है।

यदि इस प्रत्यक्ष शास्त्रमें कोई हठ करे कि हमारा ही लिखा ठीक है, अन्य ठीक नहीं तो यह न्याय्य पद्धति नहीं है। गत शुक्रास्त सम्बन्धी जो अन्तर पञ्चाङ्गोंमें हुआ उसके प्रधान कारण निम्नलिखित हैं—

गुरु शुक्रके उदयास्त-सम्बन्धमें सिद्धान्तकारोंने तथा करण ग्रन्थकारोंने ग्रहोंके कालांश निश्चित किये हैं, अर्थात सूर्यके इतने समीप ग्रह आनेसे वह अस्त होता है और इतने अंश ग्रह (सूर्यसे) दूरी पर जानेसे उदय होता है। किन्तु सब सिद्धान्तोंके तथा सब करणग्रन्थोंके कालांश भिन्न २ होनेसे गुरु शुक्रके उदयास्त भिन्न २ आते हैं।

कालांश ग्रन्थकारोंने अपने अपने अनुभवसे निश्चित किए हुए हैं और यह कालांश अनुभवसे ही सिद्ध करने पड़ते हैं। प्राचीन ग्रन्थकारोंने उनके समयमें अपने अनुभवसे जितने अन्तर पर उदयास्त होता दिखाई दिया उतने कालांश उन्होंने मान लिये। गुरु शुक्र आदि ग्रह वक्रगति होने पर, तथा पृथ्वीके समीप होने पर उनका तेज बढ़ जाता है, ऐसी स्थितिमें कालांशमें भी अन्तर होना आवश्यक ही है, और भी कारण हैं कि अन्यान्य अक्षांशोंके अन्तरसे, सर्वत्र एक क्षितिज नहीं होनेसे कालांशमें भिन्नता होना स्वाभाविक है। इस भिन्नताके कारण ही कालांश निश्चित करनेमें भारतीय विद्वानोंका स्थाई एक मत नहीं हो सका।

शुक्रका उदयास्त जाननेके लिये भिन्न २ ग्रन्थकारोंने निम्न लिखित भिन्न २ कालांश माने हैं। प्रथम सूर्यसिद्धान्तमें ६। द्वि० सू० सि०, रोमश, ब्रह्म, सोमसिद्धान्तमें १०। प्रथम आर्यसिद्धान्तमें ६। ब्रह्मगुप्त, सिद्धान्तशिरोमणिमें १०। लल्ल, करणकुतूहलमें ६। द्वि० आर्यसिद्धान्तमें ८। ग्रहलाघवमें ७। इस प्रकार ग्रन्थोंमें कालांश कहे हुए हैं। सबहीमें एकवाक्यता नहीं होनेसे उनकी गणित भी भिन्न २ आयगी यह स्वयं सिद्ध बात है।

भिन्न २ पञ्चाङ्गोंमें अन्तर होनेका और भी एक कारण है, वह यह कि ग्रहलाघव, सूर्यसिद्धान्त, करणकुतूहल आदिसे जिस पञ्चाङ्गमें ग्रहचार दिये होते हैं और उस ग्रहचारसे जिस पञ्चाङ्गोंमें गुरुशुक्र के अस्तोदय लगाये जाते हैं, वह ग्रहचार स्थूलप्राय होनेसे उससे लाया हुआ अस्तोदय स्थूल ही आयगा अर्थात् अन्तरसे ही आयगा यह भी स्वयं सिद्ध है।

कालांश-पद्धतिसे गुरुशुक्रके उदयास्तमें सदा कुछ न कुछ अन्तर रहा ही करता है, उसके प्रधान २ कारण ऊपर दिये हुए हैं। केतकी ज्योतिर्गणित आदि ग्रन्थोंमें गुरु शुक्रके उदयास्तकी गणित कालांश-पद्धतिसे न देकर उन्नतांश-पद्धतिसे दी गई है। कालांश-पद्धतिकी अपेक्षया यह उन्नतांश-पद्धति सूक्ष्म और प्रत्यक्ष दिखाई देती है, ऐसा आजतकका अनेक विद्वानोंका अनुभव है, और केतकी पञ्चाङ्गमें इसी उन्नतांश-पद्धतिसे अस्तोदय दिया हुआ होनेसे भारतकी जनता अनेकों वर्षोंसे अनुभव ले रही है। वह ठीक है ऐसा कई विद्वानोंका अनुभव है।

"भारतीय ज्यौतिषशास्त्रका इतिहास" के रचयिता स्व० शङ्कर बालकृष्ण दीक्षितजी अपनी पुस्तकके पृ० ४४६ पर लिखते हैं कि—

"कालांश-पद्धतिकी अपेक्षया उन्नतांश पद्धतिसे लाए हुए उदयास्त ठीक २ मिला करते हैं और वही पद्धति मानने योग्य है ताकि उदयास्त ठीक २ निकला करे।"

यदि भारतीय पञ्चाङ्ग कर्ताओंको अखिल भारतवर्षमें उदयास्त सम्बन्धी एकवाक्यता करनी हो तो उन्नतांश-पद्धतिके अनुसार ज्योतिर्गणित द्वारा उदयास्त लाकर अपने २ पञ्चाङ्गोंमें देवें ताकि मतभेदसे जो श्रद्धावान् जनताकी धार्मिक बाधाएँ होती हैं वह नहीं होवें। यदि किसी ज्योतिर्विद् महाशयको ज्योतिर्गणित द्वारा कष्ट करनेकी इच्छा न हो तो हमसे गणित की हुई मंगा कर इसी पद्धतिसे सर्वत्र पञ्चाङ्गोंमें उदयास्त देकर भारतवर्षमें उदयास्त सम्बन्धी एकवाक्यता निर्माण करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री महाशिवरात्रि

[लेखक—श्री पं० बलजिन्नाथजी शास्त्री, बी० ए०]

शिवरात्रि समस्त भारतवर्षके हिन्दुओंका एक बड़ा त्यौहार है। परन्तु हम काश्मीरवासियोंका तो यह सबसे बड़ा त्यौहार है। हिन्दुओंका प्रत्येक पर्व-दिन अनेक रहस्यों तथा प्रयोजनोंसे पूर्ण होता है। ये रहस्य अनेक प्रकारके होते हैं। परन्तु अधिकतर दो प्रकारके होते हैं। प्रायः प्रत्येक पर्व-दिन और उस दिनके मनानेकी रीतिके आधार दो होते हैं। (१) दार्शनिक, (२) पौराणिक। कहीं कहीं या प्रायः सर्वत्र ही इन दोनों आधारोंका भी परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। इस सिद्धान्तको ही दृष्टिकोणमें रखकर इस लेखमें शिवरात्रिकी विवेचना की जाएगी।

'शिव' शब्दका अर्थ होता है कल्याण, मङ्गल, सुख आदि। अर्थात् शिव शब्दसे परम आनन्द अर्थ अभिप्रेत है। परम आनन्द स्वरूप परमात्माका है। इस कारण शिव परमात्मा का नाम है। वेदान्तके आचार्योंका उपदेश भी है कि "चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्" अर्थात् मेरा स्वरूप चित् आनन्द है मैं शिव हूँ। इस शिवकी रात्रिको कहते हैं शिवरात्रि। परमात्मा तो वस्तुतः निर्गुण निष्क्रिय और विशेषणोंसे रहित है। परन्तु सब गुण सब क्रियाएँ और सब विशेषण उसीकी शक्तिसे उसीमें भासते हैं, इस कारण किसी अवस्थामें उसके भी विशेषण मानने पड़ते हैं। जिस समय परमात्माकी शक्ति इस सारे विश्वका संहार करती है और महाप्रलय हो जाता है उस समय परमात्माके विना और कुछ नहीं शेष रहता है। फिर एक सहस्र दिव्ययुगों तक यही अवस्था रहती है। इस अवस्थाको ही शिवकी रात्रि कहते हैं। कई शास्त्रोंमें इसे ब्रह्माकी रात्रि भी कहा गया है। इसको महाकल्प भी कहते हैं। हमारे यहां शिवरात्रिके दिन व्रत रखते हैं और बहुत ही प्रसन्न होते हैं। भारतवर्षमें हिन्दू लोग प्रायः होली, दिवाली अथवा दसहरेके दिन अधिक प्रसन्नता मनाते हैं। परन्तु हमारे देशमें शिवरात्रिके लिए ही सब प्रसन्नताएँ सञ्चित करके रखी जाती हैं। शेष त्यौहारों में तो इन मनोविनोदोंका केवल थोड़ा सा ही अंश व्यय किया जाता है। शिवरात्रिके दिन हमारे घरोंमें महादेव और पार्वतीके विवाहकी कथाएँ सुनाई जाती हैं। और यहांके हिन्दू यह मानते हैं कि शिवरात्रिके दिन ही गिरिजाका विवाह गिरीशसे हुआ है। इसी कारण इस दिन विनोद मोद प्रमोद आदिका आधिक्य होता है। भला एक छोटे मोटे ग्रामीण रईसका विवाह हो तो कितनी प्रसन्नता मनाई जाती है फिर जब राजाओंके राजा, देवताओंके भी देवता और ईश्वरोंके भी ईश्वर भगवान् परमेश्वरके विवाह का दिन हो तो लोगोंके आनन्दका ठिकाना ही क्या। अब थोड़ा सोचिए कि पूर्वोक्त शिवरात्रिका महादेव के विवाहके साथ क्या सम्बन्ध है ? यह तो बता दिया कि महादेव अर्थात् शिव परमेश्वरका नाम है। इस महादेवकी पत्नी महादेवी अर्थात् पार्वती कौन है ? वह इस परमात्माकी अपनी शक्ति है। उस शक्तिके साथ इस रात्रिको शिवका विवाह होता है। विवाह क्या होता है ? वरको वधूकी प्राप्ति ही को विवाह कहते हैं। तो इस रात्रिमें भी शिवको शक्तिकी प्राप्ति हो जाती है। शिवको शक्तिका समागम होता है। शास्त्र कहते हैं कि शिवके शरीरमें ही जगदम्बा पार्वती समा गईं, जब कि शिव अर्धनारीश्वर रूप बने तो इसी शिवरात्रिको शक्ति शिवके शरीरमें समा गईं। वह इस प्रकारसे— सृष्टिसे पहिले केवल पर-ब्रह्म ही था। अर्थात् केवल शिव ही था। अनन्तर शिवकी परम स्वातन्त्र्यशक्तिसे ही शिवसे शक्ति आदि के क्रमसे सारे विश्वकी उत्पत्ति हुई। अर्थात् शिवके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीरसे शक्ति प्रादुर्भूत हुई और वह शक्ति ही समस्त विश्व-आकार बन गई। इसी कारण शैवशास्त्र में शिव और शक्तिका लक्षण इस प्रकार बताया है—

"शक्तयोऽस्य जगत् सर्वं शक्तिमान् स महेश्वरः"

अर्थात् समस्त जगत् ही इस शिवकी शक्तियाँ हैं। और वह महेश्वर शक्तिमान् (शक्तियोंका स्वामी) है। महाप्रलयके समय इसी शिवकी संहारशक्ति द्वारा समस्त पदार्थोंका जब नाश होता है, तो शिवकी शक्ति पुनः शिवमें ही लीन हो जाती है। क्योंकि पदार्थोंके परमात्मामें लीन होनेको ही संहार कहते हैं। यह है शक्तिका शिवमें समा जाना, यह है पार्वती का शिवके साथ समागम होना और यही है शिव और पार्वतीका विवाह। इसी अभिप्रायसे शैवशास्त्रके परम गुरु भगवान् उत्पलदेव एक स्तोत्रमें कहते हैं—

पानाशनप्रसाधनसम्भुक्तसमस्तविश्वया शिवया।
प्रलयोत्सवसरभसया दृढमुपगूढं शिवं वन्दे॥
(शि० स्तो०)

संस्कृत भाषामें एक वैचित्र्य है जिसे श्लेष कहते हैं। श्लिष्ट रचनाका पूरा अनुवाद किसी भी भाषामें नहीं हो सकता है। इस कारण इस पद्यकी कुछ व्याख्या करते हैं— विवाहके समय वधूको खिलाते पिलाते तथा अलंकृत करते हैं। फिर वह वधू रतोत्सव (प्रलयोत्सव) में वेगयुक्त होकर वरका आलिङ्गन करती है। तो इस दुल्हन अर्थात् शिवा (पार्वती) ने तो पान खान और अलंकृतिमें समस्त विश्वको ही समाप्त किया है और अब प्रलयोत्सव (प्रलयके अर्थ नाश और सम्भोग दोनों होते हैं) में वेगयुक्त होकर इसने शिवको कसकर आलिङ्गित किया है। इस अवस्थामें वर्तमान शिवको मैं नमस्कार करता हूं। "प्रलयकालमें सब विश्वको खाकर शक्ति शिवमें लीन हो जाती है" यह अर्थ इस पद्यमें विचित्र प्रकारसे कहा गया है। यही है शिव और शक्तिका विवाह। इसी विवाहके उपलक्ष्यमें हम शिवरात्रिको मनाते हैं। इसी विवाहके आधार पर पौराणिक शिव पार्वती विवाहकी गाथाओंकी रचना हुई है।

यह शिवरात्रिका वास्तविक स्वरूप तो है, परन्तु यह शिवरात्रि शिवकी ही शिवरात्रि है। हम तो अज्ञानके कारण स्वयं शिव होते हुए भी अपने आपको शिव नहीं मानते हैं। तो भला हम ऐसी शिवरात्रिको कैसे मना सकें। हमारे लिए शिवरात्रिका क्या स्वरूप है? अब इस बातका विचार किया जाता है— यह तो वेदान्तोंमें बहुत स्थानों पर कहा गया है कि सब कुछ शिव (परमात्मा) है, मैं भी परमात्मा अर्थात् शिव हूँ और तू भी शिव ही है। वस्तुतः हम सब शिव ही हैं। परन्तु हम अपने शिव भावको भूल गए हैं। हम उसे समझते नहीं। जब भक्ति आदि उपायों द्वारा हम ज्ञानको प्राप्त करेंगे तो हमें यह ज्ञात होगा कि हम वस्तुतः शिव हैं। शिव सर्वशक्तिमान् हैं, तो हम भी सर्वशक्तिमान् बन जाएंगे। बन क्या जाएंगे सर्वशक्तिमान होते हुए ही अपनी भूली हुई सर्वशक्तिमानताको पुनः समझ लेंगे। वही हमारा मोक्ष होगा। यही वस्तुतः मोक्षका स्वरूप है। पूर्वोक्त आचार्य उत्पलदेव भी ऐसा ही कहते हैं—

मोक्षस्य नैव किञ्चिद् धामास्ति न चापि गमनमन्यत्र।
अज्ञानग्रन्थिभिदा स्वशक्त्यभिव्यक्तता मोक्षः॥
(शि० स्तो०)

अर्थात् मोक्षका कोई स्वर्गकी भांति नियत स्थान नहीं। नाही मोक्षकी अवस्थामें जीवको कहीं जाना होता है। किन्तु अज्ञान ग्रन्थिके टूट जाने पर अपनी ही शक्तिका प्रकट होना मोक्ष है। यह जीवन्मुक्त दशा ही हमारी शिवरात्रि है। अथवा इस दशा की प्राप्ति ही हमारे लिए शिवरात्रि है। इस अज्ञान की अवस्थामें हम अपनी ज्ञानादि शक्तिको भूल गए हैं। अथवा यों कहिए कि हम अपनी शक्तिको खो गए हैं। जिस प्रकार दक्ष प्रजापतिके यज्ञमें महादेव अपनी शक्ति-रूप भवानीको खो गए थे और फिर समाधियोगकी सिद्धिके अनन्तर विवाह द्वारा अपनी खोई हुई प्रेयसीको उन्होंने पार्वती रूपमें पुनः प्राप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया। इसी प्रकार हम जीव भी भक्तियोगकी सिद्धि के अनन्तर ज्ञान द्वारा अपनी खोई हुई शक्तिको स्वतन्त्रता रूपमें (मुक्ति रूपमें क्योंकि स्वतन्त्रता मुक्ति का ही नाम है). पुनः प्राप्त करते हैं। यही हमारी शिवरात्रि है। शिव अर्थात् कल्याणकी रात्रि है। इस शिवरात्रिमें हमारे शरीरमें पशु (जीव) रूपमें रहने वाले शिवका अपनी शक्तिके साथ समागम अर्थात् विवाह होता है। यह आत्मज्ञानकी अवस्था ही जीवोंकी शिवरात्रि है। इस शिवरात्रिका स्वरूप भी भगवान् उत्पलदेव दो पद्योंमें बताते हैं—

यत्र सोऽस्तमयमेति विवस्वाँ-
श्चन्द्रमःप्रभृतिभिः सह सर्वैः।
कापि सा विजयते शिवरात्रिः
स्वप्रभाप्रसरभास्वररूपा॥ (शि० स्तो०)

[उस अलौकिक शिवरात्रिकी जय है, जो कि अपनी ही प्रभासे चमकती है। जहां सूर्य भी अस्त हो गया है और जहां चन्द्रमा तारे आदि सभी अस्त हो गए हैं।] यह शिवरात्रि है ज्ञानकी वह दशा जिसमें योगीको अपना शिवरूप भासता है। उसमें सूर्य—अर्थात् प्रकाश करने वाला, ज्ञान कराने वाला प्रत्यक्षादि प्रमाण भी अस्त हो गया है। क्योंकि उस समय शिव ही शिव प्रकाशित होता है। उस शिवका प्रकाश प्रत्यक्षादिसे नहीं हो सकता है; क्योंकि उस शिवके ही प्रकाशसे प्रत्यक्षादि प्रमाण स्वयं प्रकाशित होते हैं। सूर्यसे प्रकाशित होने वाले चन्द्रादि अर्थात् प्रमाणसे प्रकाशित होने वाले प्रमेय भी उस समय समस्त अस्त हो जाते हैं। क्योंकि उस अवस्थामें शिवके अतिरिक्त कोई दूसरी वस्तु भासती ही नहीं। शिव प्रकाशमय है इस कारण वह शिवसमावेश दशा अपने प्रकाशसे ही भास्वर है। यहां सूर्य शब्दसे मुख्य प्राण और चन्द्रादिसे अपानादि अथवा चक्षुरादि इन्द्रियां भी अभिप्रेत हो सकती हैं। क्योंकि मुख्य प्राणकी ही शक्तिसे इन सबमें शक्ति आ जाती है। आचार्यका दूसरा पद्य यह है—

ज्योतिरस्ति कथयापि न किञ्चिद्
विश्वमप्यतिसुषुप्तमशेषम्।
यत्र नाथ! शिवरात्रिपदेऽस्मिन्
नित्यमर्चयति भक्तजनस्त्वाम्॥
(शि० स्तो०)

अर्थात्—हे नाथ! आपको भक्तजन उस शिवरात्रिमें नित्य पूजा करते हैं, जिसमें ज्योतिका तो नाम भी नहीं होता और समस्त विश्व भी जिसमें बहुत गाढ़ निद्रामें सोया हुआ होता है। ज्योतिका यहां अर्थ है बाह्य तथा मानस ज्ञान। उसका तो शिव समावेशकी दशामें नाम भी नहीं होता है। क्योंकि शिवके प्रकाशके सामने करण निस्तेज हो जाते हैं। जैसे सूर्यके प्रकाशके सामने ग्रह निस्तेज हो जाते हैं। उस दशामें मायाकी भी कुछ नहीं चलती। इस कारण मायासे बना हुआ यह सारा विश्व भी उस समय जागता नहीं अर्थात् प्रकाशित नहीं होता है। क्योंकि केवल शिव ही उस समय चमकता है। ऐसी शिवरात्रिमें शिवके साथ एकताकी प्रतीति अर्थात् मैं शिव हूँ यह प्रतीति ही शिवकी पूजा है। इस पूजा को केवल भक्तजन ही कर सकते हैं। यह कविका अभिप्राय है।

इस भावनासे भक्तिपूर्वक शिवरात्रिकी उपासना हम सबको करनी चाहिये, जिससे हम भी कभी शिवरात्रिका पूर्ण आनन्द प्राप्त कर सकें। अब शेष रहती है शिवरात्रिके समयकी विवेचना उसे हम अपने ज्योतिष जानने वाले मित्रों पर छोड़ देते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिव प्रशस्ति

[विद्याभूषण श्री पं० मोहन शर्मा, विशारद, भूतपूर्व सम्पादक 'मोहिनी']

वह जो सुन्दर परिधेय श्वेत गजके चर्म्मको कटिदेशमें पहिने, उन्नत और विशाल ललाटमें नवीन इन्दुकला धारण किये हुये हैं, जिनके जटाजूटसे रजत-रेखाके समान गंगधार सरीसृप गतिसे सदा सर्वदा प्रवाहित हो रही है, मादक द्रव्य सेवनसे जिनके नयन-युगल अरुणोदयकी शुभ्र छटाके सदृश आरक्तिम हो उठते हैं, धवल-धतूरा जिन्हें अति प्रिय जान पड़ता है, नर-कङ्कालकी गल-माल जिनके ग्रीवा में शोभायमान हो रही है, विश्व द्वारा परित्यक्त श्मशान-भूमिकी भस्म जिनके देव-दुर्लभ गातसे लिपटकर धन्य २ हो रही है—मैं उन्हींका एक क्षुद्र दासानुदास ऐसे दीर्घाकृति सौम्यदृष्टि, सौम्य मूर्तिमान्, रजतगिरिके समान भूतभावन भगवान् भूतेश्वर देवाधिदेवके पद पङ्कजोंमें श्रद्धा भक्तिसे तन्मय होकर अपना मस्तक झुकाता हूं।

हिमालयकी पवित्रतम हिममण्डित धरतीमें देव-दारु वृक्षोंके नीचे महामहिमशाली रुद्र भगवान् जब इतस्ततः विचरण करते हैं तब किसी २ स्फटिक शिलाकी वक्षस्थली में उनके चरण-चिह्न चिरकाल के लिये अङ्कित हो जाते हैं। और तब मानस सरोवर की ओर विचरते हुये राजहंस तथा विहङ्ग गण सिद्ध मुनियों द्वारा सेव्य उन पावन पाद चिह्नोंको अपलक नेत्रोंसे देख आत्म-विभोर हो उठते हैं। उनके सौभाग्योदयके इस सुनहले प्रभातका शब्दों द्वारा तो क्या आंसुओं द्वारा भी वर्णन नहीं हो सकता। हममें यदि उड़नेकी क्षमता रहती तो आकाश मार्गसे वहां जाकर उन पद चिह्नों पर इस बोझल मस्तकको एक बार ही झुका देते और जिससे कि हमारी समस्त ऐहिक और पारलौकिक एषणाओंका एकान्त रूपसे शमन हो जाता।

मृत्युञ्जय भगवान् जब कभी विश्वमूलमें आत्मस्थ होते हैं तब समग्र सृष्टिका राग रंग सहसा निष्प्रभ हो जाता है। तब वायु निश्चल हो रहती है, वृक्ष निष्कम्प हो जाते हैं, खण्ड चन्द्र भी अपनी प्रभा-मर्यादा त्याग देता है, जटाजूट-लीना माता गङ्गा शब्द हीना हो उठती हैं। केवल शैल-सुता गौरी माता ही तब इस दुर्दृश्यको निरखती रहती हैं और देख-देख कर भी भगवान्के उस समयके रूपको देखनेकी साध नहीं मिटा पातीं।

त्रिनेत्रधारी त्रिशूल-पाणि भगवान् शंकर कभी २ हिमालयमें अन्यमनस्क होकर दण्डायमान अवस्थामें पाये जाते हैं। तब उनका दिगन्त-विस्तृत विराट-वपु देख कर ऐसा भासित होता है मानो मेघ रूपी जल-धारा कर्पूर गिरिसे संलग्न हो गयी हों। तब उनका ईषत्-कपिश केश-जाल अस्त सूर्यकी रक्तिम किरणोंसे उद्भासित हो उठता है। ललाटका अर्द्ध-चन्द्र ध्रुव तारे के समान जाज्वल्यमान दिखाई देता है और कल-कण्ठमें शोभायमान फणि समूहका मणि मण्डल आगन्तुकको अन्धकारके भयानक मार्गमें दीप-महोत्सवकी प्रदीप मालाकी भांति नयनानन्ददायक हो जाता है।.....इसी रूपसे विश्व-रूपका प्रादुर्भाव होता है। हे! नील-लोहित! विराट-वपुधारी जगन्निवास! तुम्हारे इस विश्वव्यापी वरेण्य स्वरूपको निरख कर कौन ऐसा है जो तृप्त नहीं होगा? तुम्हारे इन पावन पदाम्बुजोंमें मेरा शत कोटि प्रणाम है! "नमो भवाय नित्याय शिवाय च!"

यद्यपि ये ही रजतगिरिके समान देहधारी देवाधि-देव अतीव सौम्य और सौम्यादपि सौम्य माने गये हैं। तथापि प्रलयकालमें इन्हींके ललाटसे लुप्त तृतीय नेत्रके प्रकट होते ही विश्वविनाशी लीलाका आरम्भ हो जाता है। एवं पलक उघाड़ते ही सृष्टि ध्वंसको प्राप्त हो रहती है। उस दिन भगवान्के फहराते हुये जटाजूटोंसे अग्नि शिखायें दिगन्त व्यापी ताण्डवका दृश्य उपस्थित कर देती हैं। दिगन्तरमें सघन कृष्ण-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेघोंके ऊपर मानो दावानलकी दीप्ति प्रतिबिम्बित हो रही हो—ऐसा भयंकर और हृदय विकम्पी दुर्दृश्य तब भगवान्के लीलाविलासकी असीम सत्ताको व्यक्त करने वाला होता है। तब माता गङ्गा निदाघ-तापित तटिनीके समान शुष्क होकर अन्तर्हिता हो जाती हैं। और गल लम्बित मणि शिर फणि माला दिनकर-कर-कर्षिता पद्मिनीकी भांति म्रियमाण हो उठती है। उस दिन भगवान् शंकर स्वकर स्थित शूल द्वारा दिग् दिगन्तको वेधकर सप्त ब्रह्माण्डोंको चूर्ण विचूर्ण कर देते हैं। तब ग्रह-उपग्रह-सङ्कुल सौर-मण्डलका आत्यन्तिक विनाश एक निमेष मात्रमें ही साधित होता है। इस प्रकार सृष्टिका विध्वंस कर भगवान् अनन्त शून्य महाव्योममें अलक जालको उड़ाते हुये ताण्डव नृत्य करने लग जाते हैं। कोटि २ कल्प व्यतीत होने पर भी यह नृत्य अपनी परिसमाप्तिको नहीं पहुंचता। सहसा एक दिन भगवान्के मन मानस में यह ध्वनि तरंगित हो उठती है "अहं बहुस्याम्" और बस इसी इच्छाके वश वे आत्म-संवरण करके पुनर्वार विश्व-मूलमें प्रकृतिस्थ होते हैं। फिर सृष्टि पुनरुज्जीविता होती है। संसार उजड़ा हुआ पुनः बसने लग जाता है। विकट संहारके उपरान्त फिर सृजन-हार सृष्टि लीला दिखाते हैं।

अन्तमें हे सौम्य! हे रौद्र!! हे पृथूकीर्त्ति!!! आपने मेरे मानस-मन्दिरमें सातिशय अधिकार धारण किया है। आपके महात्म्यकी वाणी द्वारा स्तुति नहीं हो सकती। आपको मेरा कोटिशः प्रणाम है। जिस प्रकार समग्र वर्णोंके समुच्चय स्वरूप शुभ्र वर्णकी महिमा है उसी प्रकार समस्त देवोंके ऐश्वर्य समन्वय स्वरूप आपके लावण्यका महात्म्य है। ॐ नमः शिवाय।

होलिका दहन और उसका परिणाम

इस वर्ष फाल्गुन शु० १५ रविवार ता० २१ मार्च १९४३ को सन्ध्या समयके अनन्तर रात्रिके ८ बजे (वर्धित स्टेण्डर्ड टाइम नौ बजे) के उपरान्त होलिका-दाहका मुहूर्त शुभ है।

गताङ्कमें हमने रविवारी दीपमालिकाके अनिष्ट परिणामकी सूचना दी थी, उसका प्रत्यक्ष अनुभव पाठकोंको हो ही रहा है। आगे यह होलिका भी रविवारमें आ रही है, इसका अनिष्ट प्रभाव दीपमाला से भी बढ़कर होने वाला है। अर्थात् यह होली समस्त संसारके लिए महान् हानिकारक होली ही सिद्ध होगी। अनेक प्रकारके उत्पातोंसे संसार संत्रस्त हो उठेगा। भड्डलीमें इसका फल यों लिखा है—

रवि मङ्गल शनि होली आवे।
डंक कहे मोहे फागुन भावे॥
उल्का (अग्निके गोले) पात करे भुव सारी।
घर घर बार रोय नर नारी॥

वायु परीक्षा

पाठकोंको इस वर्ष होलिका दाहके समय वायु-परीक्षा अवश्य करनी चाहिए। यदि भगवान्की कृपासे उस समय जिस देशमें पूर्व उत्तर या ईशान की वायु चलेगी उस देशमें अनिष्ट परिणाम बहुत अंश में निवृत्त हो जावेगा और जिन देशोंमें इनसे भिन्न दिशाकी वायु चलेगी उन देशोंका रक्षक ईश्वर ही है।

वायुका फल

होली जलनेके समय वायु पूर्वका हो तो राजा-प्रजामें सुख। अग्निकोणका हो तो अग्निका भय। दक्षिणका हो तो दुर्भिक्ष तथा पशुओंकी मृत्यु। नैर्ऋत्यकोणका हो तो टिड्डी आदिका उपद्रव। पश्चिम का हो तो मध्यम सुभिक्ष तथा भेड़ोंकी मृत्यु जिससे ऊन मँहगी। वायव्यकोणका हो तो वायुका उपद्रव। उत्तर वा ईशानकोणका हो तो सम्पूर्ण अन्न (खेतियाँ) उत्पन्न होने योग्य श्रेष्ठ वर्षा। यदि चारों ही ओरका पवन चले तो सेना (फौज) वा टिड्डीसे राजा प्रजा को कष्ट हो। यदि कदाचित् होलिका दाहके समय वायु बिल्कुल शान्त हो जिससे होलीकी झाल (अग्नि की लपट) सीधी ऊपर आकाशकी ओर जावे तो जगत् कम्पायमान होवे। आशा है विज्ञ पाठक महानुभाव अपने अपने नगरमें होलिका दाह समयकी वायु परीक्षा अवश्य करेंगे। —सम्पादक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

[लेखक—श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय']

पौष	शुक्ल	११ रविवार	ता० १७ जनवरी	पुत्रदा ११ व्रत
,,	,,	१२ सोमवार	ता० १८ ,,	सोमप्रदोषव्रत
,,	,,	१४ बुधवार	ता० २० ,,	सत्यव्रत
,,	,,	१५ गुरुवार	ता० २१ ,,	माघस्नानारम्भ
माघ	कृष्ण	४ सोमवार	ता० २५ ,,	श्रीगणेशजयन्ती सङ्कष्ट चतुर्थी तिल ४ व्रत चन्द्रोदय [प्रचलित स्टेण्डर्ड टाईम घं० १० मि० ३० रात्रिमें
,,	,,	११ सोमवार	ता० १ फरवरी	षट्तिला एकादशी व्रत
,,	,,	१२ मंगलवार	ता० २ ,,	भौमप्रदोष व्रत
,,	,,	१४ गुरुवार	ता० ४ ,,	मौनी अमावस, महोदय पर्व ११ घटी उपरान्त
माघ	शुक्ल	२ शनिवार	ता० ६ ,,	चन्द्रदर्शन
,,	,,	५ मंगलवार	ता० ९ ,,	वसन्त पञ्चमी श्री ५
,,	,,	७ गुरुवार	ता० ११ ,,	अचलासप्तमी रथसप्तमी
,,	,,	८ शुक्रवार	ता० १२ ,,	कुम्भसंक्रान्ति मु. ३० पुण्यकाल १९ घ. उपरान्त, भीष्म ८
,,	,,	११ सोमवार	ता० १५ ,,	जया एकादशी व्रत
,,	,,	१२ मंगलवार	ता० १६ ,,	भीष्मद्वादशी
,,	,,	१३ बुधवार	ता० १७ ,,	प्रदोष व्रत
,,	,,	१३ गुरुवार	ता० १८ ,,	गुरुपुष्य योग
,,	,,	१४ शुक्रवार	ता० १९ ,,	सत्यव्रत
,,	,,	१५ शनिवार	ता० २० ,,	माघी १५ माघस्नान समाप्ति
फाल्गुन	कृष्ण	३ मंगलवार	ता० २३ ,,	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत
,,	,,	८ रविवार	ता० २८ ,,	श्रीसीताजन्माष्टमी
,,	,,	११ मंगलवार	ता० २ मार्च	विजया एकादशी व्रत
,,	,,	१३ गुरुवार	ता० ४ ,,	श्रीमहाशिवरात्रि १४ व्रत प्रदोष व्रत
,,	,,	३० शनिवार	ता० ६ ,,	शनैश्चरी अमावस
फाल्गुन	शुक्ल	१ रविवार	ता० ७ ,,	चन्द्रदर्शन [*होलाष्टकारम्भ
,,	,,	८ रविवार	ता० १४ ,,	मीन संक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल २४ घटी उपरान्त,*
,,	,,	११ बुधवार	ता० १७ ,,	आमला एकादशी व्रत
,,	,,	१३ शुक्रवार	ता० १९ ,,	प्रदोष व्रत
,,	,,	१५ रविवार	ता० २१ ,,	होलिकादाह हुताशनीजन्म सत्यव्रत
चैत्र	कृष्ण	१ सोमवार	ता० २२ ,,	वसन्तोत्सव होलिकाभस्मधारण आम्रपुष्पप्राशन धुलेंडी, श्वपच स्पर्श

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चैत्र कृष्णा	४	गुरुवार	ता० २५	मार्च	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत
,, ,,	८	सोमवार	ता० २६	,,	श्रीशीतलाष्टमी शीतलापूजन
,, ,,	११	गुरुवार	ता० १	अप्रैल	पापमोचनी एकादशी व्रत
,, ,,	१२	शुक्रवार	ता० २	,,	प्रदोष व्रत
,, ,,	१४	शनिवार	ता० ३	,,	चैत्रचतुर्दशी
,, ,,	३०	रविवार	ता० ४	,,	अमावास्या
चैत्र शुक्ल	१	सोमवार	ता० ५	,,	चान्द्रसँव्वत्सर शक १८६५(सं० २०००) आरम्भ नवरात्रारम्भ तैलाभ्यङ्ग घटस्थापन, श्रीमहर्षि गौतमजयन्ती
,, ,,	२	मंगलवार	ता० ६	,,	चन्द्रदर्शन
,, ,,	३	बुधवार	ता० ७	,,	गणगौरीपूजन मत्स्यजयन्ती
,, ,,	८	मंगलवार	ता० १३	,,	मेष संक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल दूसरे दिन, भवान्युत्पत्ति श्रीदुर्गाष्टमी मध्याह्नव्यापिनी श्रीराम ६ स्मा०
,, ,,	६	बुधवार	ता० १४	,,	श्रीराम ६ व्रत, दुर्गा ६

महापुरुषोंकी जयन्तियां, निर्वाण-दिन और प्रसिद्ध मेले

माघ कृष्ण	७	गुरुवार	ता० २८	जनवरी	श्रीरामानन्द जयन्ती
,, ,,	१४	गुरुवार	ता० ४	फरवरी	मौनी अमावस महोदयपर्व मेला प्रयागराज
,, शु०	१४	शुक्रवार	ता० १६	,,	स्वर्गीय श्री गोखले पुण्यदिन
फाल्गुन कृष्ण	८	रविवार	ता० २८	,,	समर्थ श्री रामदास पुण्यदिन
,, शु०	२	सोमवार	ता० ८	मार्च	श्री परमहंस रामकृष्ण जयन्ती
,, ,,	१५	रविवार	ता० २१	,,	महाप्रभु श्रीकृष्ण-चैतन्य जयन्ती
चैत्र कृष्ण	१	सोमवार	ता० २२	,,	मेला आनन्दपुर साहिब (पंजाब)
,, ,,	३	बुधवार	ता० २४	,,	भक्त श्री तुकाराम पुण्यदिन
,, ,,	६	शनिवार	ता० २७	,,	श्री एकनाथ महाराज पुण्यदिन
,, ,,	११	गुरुवार	ता० १	अप्रैल	शुद्धाद्वैताचार्य श्रीवल्लभ जयन्ती
,, ,,	१४	शनिवार	ता० ३	,,	मेला पृथूदक पिहोवा (कुरुक्षेत्र)
,, शुक्ल	८	मंगलवार	ता० १३	,,	मेला वैशाखी और मेला श्रीमनसादेवी मनीमाजरा

छुट्टियां हाईकोर्ट पंजाब और युक्तप्रान्त

मुहर्रम (ताज़िया)— ता० १५ से १७ जनवरी शुक्रसे रविवार तक
मौनी अमावस— ता० ४ फरवरी गुरुवार
वसन्तपञ्चमी— ता० ६ ,, मंगलवार
उरस दातागंजबख्श— ता० २५ फरवरी गुरुवार
आखरी चहार शम्बा— ता० ३ मार्च बुधवार
शिवरात्रि— ता० ४ मार्च गुरुवार
ईदुल्लमिल्लाद— ता० १६ मार्च शुक्रवार
होली— ता० २१ मार्च रविवार
होला— ता० २२ मार्च सोमवार
आठोंका मेला— ता० २८–२६ मार्च रवि सोमवार
दुर्गाष्टमी— ता० १३ अप्रैल मंगलवार
वैशाखी— ता० १३ ,, ,,
रामनवमी— ता० १४ अप्रैल बुधवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाध्याय-पत्र-प्रशंसा

[लेखक—राजकुमारगुरु ज्यौतिषालङ्कार विद्याभूषण श्री पं० तारादत्त जी राज ज्यौतिषी]

[ये कविताएँ यद्यपि 'श्रीस्वाध्याय' पत्र तथा उसके सम्पादककी प्रशंसामें लिखे जानेके कारण हमें स्वयं प्रकाशित करना अकचका-सा जान पड़ता है, तथापि विद्वान् कवयिताके हार्दिक प्रेमकी उपेक्षा करना हमें अनुचित प्रतीत हुआ इस कारण इन कविताओंको यहां प्रकाशित किया जारहा है। —सम्पादक]

[१]

हरेण देवेन सशङ्कभावं
हर्तुं स्वनाम्नैव विभूषितो यः।
स्वाध्यायपत्रं हरदेव विप्रः
सम्पादयत्युत्तम कर्मणैव ॥

श्रीदेवहरने हरनेको शङ्का
जिन्हें सजाया निज नामसे ही।
करते हैं निर्मित हरदेव विप्र
स्वाध्यायको उत्तम कामसे ही ॥

[२]

शास्त्राभिधं सन्मतिमन्दरेण
प्रमथ्य सिन्धुं हि निबन्धरूपः।
सतां सुधौघो निहितो गणेन
सत्पत्रपात्रेऽतिसुखाय पाने ॥

रखा सुधी-मन्दरसे जो मथकर
शास्त्राब्धिको पत्र-सुपात्रमें है।
सत्संघने लेख-सुधा-समूह
अत्यन्त देता सुख पानमें है ॥

[३]

एतत्सुधापानत एव शक्ति-
मवाप्य कामं सकलो बुधौघः।
जयत्वबोधाभिधदैत्यसंघं
नास्तिक्यहेतुं बहुगर्ह्यशीलम् ॥

पाकर बड़ी शक्ति इसी सुधाके
पीनेसे जीते सब धीर संघ।
अज्ञानरूपी अतिनिन्द्य शील
नास्तिक्यका कारण दैत्य संघ ॥

[४]

अधर्मलेशं निखिलं विहाय
गायन्तु नित्यं यश एव शम्भोः।
विहाय सर्वाणि जगद्भयानि
धामोत्तमं यान्तु महेश्वरस्य ॥

अधर्मका लेश सभी हटाकर
महेशका ही यश नित्य गावें।
सभी भयोंको जगके हटाकर
महेशका उत्तम धाम पावें ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रैमासिक ग्रहयोग-प्रतियोग चमत्कार

[लेखक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

बुध शुक्र युतिः ता० १७ जनवरी
सूर्य बुध युतिः ता० २४ ,,
शुक्र राहु प्रतियोग ता० २६ जनवरी
सूर्यराहु ,, ,, १४ फरवरी
मङ्गल गुरु प्रतियोग ता० १७ फरवरी
बुध राहु ,, ,, ७ मार्च
सूर्य बुध युतिः ,, ४ अप्रैल
मङ्गल राहु प्रतियोग ,, ७ अप्रैल

इन तीन मासोंमें विशेष महत्त्वका योग प्रतियोग कोई नहीं है। जो साधारण हैं उनका इष्टानिष्ट परिणाम (फल) "दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र" शीर्षक लेखमें अन्तर्हित कर दिया है। पाठक उस लेखको अवश्य पढ़लें।

ग्रहोंके साथ चन्द्रमाका समागम और दृष्टियोग

जनवरी मासमें—

ता० १५ चं० बु० केन्द्र
,, चं० गु० तृतीयैकादश
,, चं० मं० षडष्टक
१६ चं० सू० त्रिकोण
,, चं० रा० केन्द्र
१७ चं० श० युतिः
,, चं० ह० युतिः
,, चं० बु० त्रिकोण
,, चं० शु० त्रिकोण
१८ चं० गु० द्विर्द्वादश
,, चं० मं० प्रतियोग
,, चं० रा० तृतीयैकादश
,, चं० सू० षडष्टक
१६ चं० श० द्विर्द्वादश
,, चं० बु० षडष्टक
२० चं० शु० षडष्टक
,, चं० गु० युतिः
२१ चं० मं० षडष्टक
,, चं० रा० द्विर्द्वादश
,, चं० सू० प्रतियोग
२२ चं० श० तृतीयैकादश
ता० २२ चं० बु० प्रतियोग
२३ चं० शु० प्रतियोग
,, चं० गु० द्विर्द्वादश
,, चं० रा० युतिः
,, चं० मं० त्रिकोण
२४ चं० सू० षडष्टक
,, चं० बु० षडष्टक
,, चं० श० केन्द्र
२५ चं० गु० तृतीयैकादश
,, चं० शु० षडष्टक
२६ चं० रा० द्विर्द्वादश
,, चं० मं० केन्द्र
,, चं० बु० त्रिकोण
२७ चं० श० त्रिकोण
,, चं० सू० त्रिकोण
२८ चं० गु० केन्द्र
,, चं० शु० त्रिकोण
,, चं० रा० तृतीयैकादश
,, चं० बु० केन्द्र
२६ चं० मं० तृतीयैकादश
,, चं० श० षडष्टक
,, चं० सू० केन्द्र
ता० ३० चं० गु० त्रिकोण
,, चं० रा० केन्द्र
,, चं० बु० तृतीयैकादश
,, चं० शु० केन्द्र
३१ चं० मं० द्विर्द्वादश
,, चं० श० प्रतियोग
,, चं० सू० तृतीयैकादश

फरवरी मासमें—

ता० १ चं० गु० षडष्टक
,, चं० रा० त्रिकोण
२ चं० बु० द्विर्द्वादश
,, चं० शु० तृतीयैकादश
,, चं० मं० युतिः
,, चं० श० षडष्टक
३ चं० सू० द्विर्द्वादश
,, चं० गु० प्रतियोग
,, चं० बु० युतिः
,, चं० रा० षडष्टक
४ चं० शु० द्विर्द्वादश
,, चं० श० त्रिकोण
,, चं० मं० द्विर्द्वादश
५ चं० सू० युतिः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ता० ५ चं० गु० षडष्टक
" चं० बु० द्विर्द्वादश
" चं० रा० प्रतियोग
६ चं० श० केन्द्र
" चं० शु० युतिः
" चं० मं० तृतीयैकादश
७ चं० गु० त्रिकोण
" चं० सू० द्विर्द्वादश
" चं० बु० तृतीयैकादश
" चं० रा० षडष्टक
८ चं० श० तृतीयैकादश
" चं० शु० द्विर्द्वादश
" चं० मं० केन्द्र
९ चं० गु० केन्द्र
" चं० सू० तृतीयैकादश
१० चं० रा० त्रिकोण
" चं० बु० केन्द्र
" चं० श० द्विर्द्वादश
११ चं० मं० त्रिकोण
" चं० शु० तृतीयैकादश
" चं० गु० "
१२ चं० सू० केन्द्र
" चं० रा० "
" चं० बु० त्रिकोण
१३ चं० श० युतिः
" चं० मं० षडष्टक
१४ चं० शु० केन्द्र
" चं० गु० द्विर्द्वादश
" चं० सू० त्रिकोण
" चं० रा० तृतीयैकादश
१५ चं० बु० षडष्टक
" चं० श० द्विर्द्वादश
१६ चं० मं० प्रतियोग
" चं० गु० युतिः
१७ चं० शु० त्रिकोण
" चं० रा० द्विर्द्वादश

ता० १७ चं० सू० षडष्टक
१८ चं० बु० प्रतियोग
" चं० श० तृतीयैकादश
१९ चं० गु० द्विर्द्वादश
" चं० मं० षडष्टक
" चं० शु० "
" चं० रा० युतिः
२० चं० सू० प्रतियोग
" चं० बु० षडष्टक
" चं० श० केन्द्र
२१ चं० गु० तृतीयैकादश
" चं० मं० त्रिकोण
२२ चं० रा० द्विर्द्वादश
" चं० ने० युतिः
" चं० शु० प्रतियोग
२३ चं० सू० षडष्टक
" चं० श० त्रिकोण
" चं० बु० "
२४ चं० गु० केन्द्र
" चं० मं० "
" चं० रा० तृतीयैकादश
२५ चं० शु० षडष्टक
" चं० सू० त्रिकोण
" चं० श० षडष्टक
" चं० बु० केन्द्र
२६ चं० गु० त्रिकोण
" चं० मं० तृतीयैकादश
" चं० रा० केन्द्र
२७ चं० शु० त्रिकोण
" चं० श० प्रतियोग
" चं० सू० केन्द्र
२८ चं० बु० तृतीयैकादश
" चं० गु० षडष्टक

मार्च मासमें—

ता० १ चं० श० त्रिकोण
" चं० मं० द्विर्द्वादश

ता० १ चं० शु० केन्द्र
२ चं० श० षडष्टक
" चं० सू० तृतीयैकादश
" चं० गु० प्रतियोग
" चं० बु० द्विर्द्वादश
३ चं० रा० षडष्टक
" चं० मं० युतिः
४ चं० श० त्रिकोण
" चं० शु० तृतीयैकादश
" चं० सू० द्विर्द्वादश
" चं० गु० षडष्टक
५ चं० बु० युतिः
" चं० रा० प्रतियोग
" चं० मं० द्विर्द्वादश
६ चं० श० केन्द्र
" चं० शु० द्विर्द्वादश
" चं० सू० युतिः
" चं० गु० केन्द्र
७ चं० बु० द्विर्द्वादश
" चं० रा० षडष्टक
" चं. मं. तृतीयैकादश
८ चं. श. "
" चं. शु. युतिः
" चं. गु. केन्द्र
" चं. सू. द्विर्द्वादश
९ चं. रा. त्रिकोण
" चं. बु. तृतीयैकादश
" चं. मं. केन्द्र
१० चं. श. द्विर्द्वादश
११ चं. गु. तृतीयैकादश
" चं. शु. द्विर्द्वादश
" चं. सू. तृतीयैकादश
" चं. रा. केन्द्र
१२ चं. बु. "
" चं. मं. त्रिकोण
" चं. ह. युतिः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ता० १२ चं. श. युतिः
१३ चं. गु. द्विर्द्वादश
„ चं. शु. तृतीयैकादश
१४ चं. सू. केन्द्र
„ चं. रा. तृतीयैकादश
१५ चं. मं. षडष्टक
„ चं. बु. त्रिकोण
„ चं. श. द्विर्द्वादश
„ चं. गु. युतिः
१६ चं. शु. केन्द्र
„ चं. रा. द्विर्द्वादश
„ चं. सू. त्रिकोण
„ चं. मं. प्रतियोग
१७ चं. श. तृतीयैकादश
१८ चं. बु. षडष्टक
„ चं. गु. द्विर्द्वादश
१९ चं. रा. युतिः
„ चं. शु. त्रिकोण
„ चं. सू. षडष्टक
२० चं. श. केन्द्र
„ चं. मं. षडष्टक
„ चं. गु. तृतीयैकादश
२१ चं. बु. प्रतियोग
„ चं. रा. द्विर्द्वादश
„ चं. ने. युतिः
२२ चं. शु. षडष्टक
„ चं. सू. प्रतियोग
„ चं. श. त्रिकोण
„ चं. मं. „
२३ चं. गु. केन्द्र
„ चं. बु. षडष्टक
„ चं. रा. तृतीयैकादश
२४ चं. शु. प्रतियोग
„ चं. सू. षडष्टक
„ चं. श. „
२५ चं. मं. केन्द्र

ता० २५ चं. गु. त्रिकोण
२६ चं. रा. केन्द्र
„ चं. बु. त्रिकोण
२७ चं. सू. „
„ चं. शु. षडष्टक
„ चं. श. प्रतियोग
„ चं. मं. तृतीयैकादश
„ चं. गु. षडष्टक
२८ चं. रा. त्रिकोण
„ चं. बु. केन्द्र
२९ चं. सू. „
„ चं. श. षडष्टक
„ चं. मं. द्विर्द्वादश
„ चं. शु. त्रिकोण
„ चं. गु. प्रतियोग
३० चं. रा. षडष्टक
३१ चं. बु. तृतीयैकादश
„ चं. श. त्रिकोण
„ चं. शु. केन्द्र
„ चं. सू. तृतीयैकादश

अप्रैल मासमें—

ता. १ चं. गु. षडष्टक
„ चं. मं. युतिः
„ चं. रा. प्रतियोग
२ चं. श. केन्द्र
„ चं. बु. द्विर्द्वादश
„ चं. सू. „
३ चं. शु. तृतीयैकादश
„ चं. गु. त्रिकोण
„ चं. मं. द्विर्द्वादश
„ चं. रा. षडष्टक
४ चं. श. तृतीयैकादश
५ चं. सू. युतिः
„ चं. बु. „
„ चं. गु. केन्द्र

ता० ५ चं. शु. द्विर्द्वादश
„ चं. मं. तृतीयैकादश
„ चं. रा. त्रिकोण
६ चं. श. द्विर्द्वादश
७ चं. गु. तृतीयैकादश
„ चं. सू. द्विर्द्वादश
„ चं. बु. „
„ चं. शु. युतिः
„ चं. मं. केन्द्र
८ चं. रा. „
९ चं. श. युतिः
„ चं. गु. द्विर्द्वादश
१० चं. सू. तृतीयैकादश
„ चं. रा. „
„ चं. शु. द्विर्द्वादश
„ चं. मं. त्रिकोण
„ चं. बु. तृतीयैकादश
११ चं. श. द्विर्द्वादश
१२ चं. गु. केन्द्र
„ चं. सू. „
„ चं. रा. द्विर्द्वादश
१३ चं. मं. षडष्टक
„ चं. शु. तृतीयैकादश
„ चं. बु. केन्द्र
१४ चं. श. तृतीयैकादश
„ चं. गु. द्विर्द्वादश
१५ चं. रा. युतिः
„ चं. सू. त्रिकोण
„ चं. मं. प्रतियोग
„ चं. शु. केन्द्र
१६ चं. बु. त्रिकोण
„ चं. श. केन्द्र
१७ चं. गु. तृतीयैकादश
„ चं. रा. द्विर्द्वादश
१८ चं. सू. षडष्टक
„ चं. मं. „

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीराम-नवमी

"नवमी तिथि क्यों हुई राम अवतारमें ?"

[लेखक—श्री पं० लक्ष्मीदत्तजी कथावाचक महोपदेशक कीर्तन-कलानिधि]

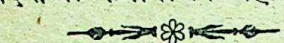

॥ शंका ॥

जप तप योग याग, शुभ काम और राग,
पठन पाठन और सब व्यवहारमें।
विवाह उत्साहमें मनाह किया रिकताको,
कहीं नहीं माना इसे षोडश संस्कारमें॥
यात्रा विदेशमें और सुन्दर उपदेशमें,
जगत संदेशमें औ बनज व्यापारमें।
लक्ष्मीदत्त नवमी रिकता कर छोड़ी जब,
फिर क्यों ये तिथि लीनी राम अवतारमें ? ॥१॥

॥ उत्तर ॥

प्रथम ब्रह्माण्डके बनाये नवखण्ड[१] देखो,
फिर रची यह देही नव[२] हीके द्वारमें[३]।
नवग्रह[४] नवद्रव्य[५] नवरस[६] नवहव्य[७],
नवदेवी[८] नवनाड़ी[९] बदन आकारमें॥
नवभक्ति[१०] नवशक्ति[११] नवरत्न[१२] नवनिधि[१३],
नवविप्रकर्म[१४] जो विदित नर नारमें।
लक्ष्मीदत्त नवका महत्त्व सत्य जानकर,
नवमी तिथि यों हुई राम अवतारमें॥२॥
नवरात[१५] आत हैं सुहात हैं प्रभात साथ,
एक-एक वर्ष जो हैं घूमती दो वारमें।
नवरस भावके[१६] विभाव दरशावने को,
नवनव सुमन[१७] खिलाती गुलजारमें॥
निशङ्क अङ्क नव हैं, कलङ्क विन जगमें,
व्यापक जैसे राम हैं असार संसारमें।
लक्ष्मीदत्त पापसे रिकत जान रिकताको,
नवमी तिथि यों हुई राम अवतारमें॥३॥
हरेक नाम गाममें, तीरथ और धाममें,
राजत शुभा शाममें, जो नौके[१८] पहारमें।
वे ही अवधविहारी, कर[१९] शर[२०] धनुधारी,
भक्तन हितकारी पैदा हुए साकारमें॥
चैतके महीनेको नगीनेसे जटित जान,
अभिजित योग और शुभ चन्द्रवारमें।
नौमी[२१], नवमी तिथिको आधार जो अतिथिको,
नवमी तिथि यों हुई राम अवतारमें॥४॥

---

(१) नवखण्ड ये हैं— कुरु, हिरण्मय, रम्यक, इला, हरि, केतुमान्, भद्राश्व, किन्नर, भारत। (२) नवद्वार ये हैं— दो आंखें, दो कान, दो नाक रन्ध्र, मुख, लिङ्ग, गुदा। (३) नवग्रह ये हैं— रवि, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु। (४) नवद्रव्य ये हैं— पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिग, आत्मा, मन। (५) नवरस ये हैं— शृङ्गार, करुणा, शान्त, रौद्र, वीर, अद्भुत, हास्य, भयानक, बीभत्स। (६) नवहव्य ये हैं—घृत, दुग्ध, नैवेद्य, तिल, यव, तण्डुल, दाख, छुहारा, फलादि। (७) नवदेवी ये हैं— शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्री, महागौरी, सिद्धिदा। (८) नवनाड़ी ये हैं— इड़ा, पिङ्गला, सुषुम्बा, गन्धारी, गजजिह्वा, पूषा, प्रसादा, शनि, शंखिनी। (९) नवभक्ति ये हैं— श्रवण, कीर्तन, स्मरण, चरणसेवन, अर्च्चन, वन्दन, दास्य, सख्य, आत्म-निवेदन। (१०) नवशक्ति ये हैं— ब्रह्माणी, वैष्णवी, रौद्री, माहेश्वरी, नारसिंही, वाराही, इन्द्राणी, कार्तिकी, सर्वमंगला। (११) नवरत्न ये हैं— हीरा, पन्ना, माणिक, नीलम, लहसनिया, गोमेद, मोती, मूंगा, पुखराज। (१२) नवनिधि ये हैं— महापद्म, पद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, खर्व। (१३) नवविप्रकर्म ये हैं— शम, दम, तप, शौच, क्षमा, सरलता, ज्ञान, विज्ञान, आस्तिकता। (१४) नवरात ये हैं— चैत्रशुक्ला और आश्विनशुक्ला प्रतिपदासे नवमी तककी ९ रातें। (१५) नूतन। (१६) पुष्प। (१७) नवअंक ये हैं— १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९। (१८) नौका पहाड़ा गणना करनेसे नौका नौ ही रहता है। (१९) हाथ। (२०) बाण। (२१) प्रणमामि, अथवा नवमी तिथि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रैमासिक भविष्य और राशिफल

[लेखक—श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय']

माघमासका भविष्य

ता० १४ जनवरीसे ११ फरवरी १९४३ पर्यन्त संसारमें सर्वत्र भय, अकालवृष्टि, रोगभय, उत्तर-भारतमें शीत अधिक पड़े, वातपित्त ज्वरोपद्रव भी हों। दक्षिण भारतमें कफविकार वृद्धि। घृत, तैल, गुड़, शक्कर, मिर्च, गेहूं और सुवर्णका भाव तेज। यहां मासके आरम्भमें लोह पदार्थ और धान्य संग्रह करनेसे आगे एक मासके अनन्तर पर्याप्त लाभकी सम्भावना है। किसी दूसरे राष्ट्रसे भारतका व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित होनेका योग है इससे भारत के व्यापारमें उन्नतिकी सम्भावना है। वायदेके भावोंमें बहुत घटाबढ़ी होगी। म्लेच्छ देशोंमें तथा बिलोचिस्थानके पर्वतीय प्रदेश, गुजरात और पश्चिमोत्तरीय राजस्थानमें उपद्रव होंगे।

माघमासका राशिफल

(ता० १४ जनवरीसे ११ फरवरी पर्यन्त)

मेष—विद्या बुद्धि सम्मान वृद्धि, कार्य व्यग्रता, लोक-प्रीति, सन्तति सुख, नवीन उद्योग का प्रयत्न, स्त्रीकी ओरसे कुछ चिन्ता, राजपक्ष मध्यम।

वृषभ—क्लेश, यात्रामें कष्ट, मस्तक तथा नेत्रोंमें पीड़ा, स्त्री पुत्र कुटुम्ब परिवारमें मनोमालिन्य, स्थलान्तर, वृत्ति या व्यापार व्यवसाय नौकरी आदिमें बाधा या फेरफार।

मिथुन—शत्रु वृद्धि, वृथापवाद, मानसिक क्लेश व्यय अधिक, लाभमें बाधा, पारिवारिक चिन्ता, मासके अन्तमें साधारण लाभ व यश प्राप्तिका योग है।

कर्क—उद्योग धंदा व्यवसाय आदिकी दृष्टिसे यह मास साधारण है। आप्तजनोंकी सहायता, सम्मान, अल्प श्रमसे कार्य सिद्धि और यशः प्राप्ति हो, सङ्कट निवृत्ति, सन्मित्र प्राप्ति।

सिंह—उग्र कार्योंसे द्रव्य प्राप्ति और उनसे समाजमें प्रतिष्ठा, प्रवास, व्यर्थके कार्योंमें समय नष्ट हो और द्रव्यका व्यय भी अधिक होवे। आप्तजन विरोध, शत्रुनाश, गृह भूमि सुख उत्तम।

कन्या—उत्साह वृद्धि, शत्रुनाश, साम्पत्तिक लाभ साधारण, प्रचलित व्यवसाय धन्दा नौकरी या किसी महत्त्वपूर्ण कार्यकी ओर प्रगति, इष्ट मित्र एवं कौटुम्बिक विरोध या आपत्तियोंकी निवृत्ति।

तुला—कार्य व्यवसाय उत्तम, श्रेष्ठ अधिकारी की प्रसन्नता, चित्तमें आनन्द, कोई उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य करना पड़े और उसमें यश मिले, बन्धुओंसे अनबन, लाभ व्यय बराबर।

वृश्चिक—आर्थिक संकट व्ययाधिक्य, स्थितिके अनुसार बहुत सावधानीसे कार्य करना चाहिए। किसी बड़े कार्यमें हाथ डालना भयप्रद है। मासके अन्तमें कुछ अचानक लाभ हो।

धनुः—कुटुम्ब परिवार एवं इष्टमित्रोंकी चिन्ता, शत्रु वृद्धि, यात्रा, राजपक्ष मध्यम, व्यापारसे साधारण लाभ, न्यायालयमें उपस्थित होने का प्रसंग आवे और उसमें हानि होवे। आर्थिक संकट, ऋणग्रस्तता, लोकापवाद।

मकर—कार्य व्यवसायमें प्रगति, अधिकारियों की प्रसन्नता, कौटुम्बिक सुख उत्तम, वात व्याधि, मासके अन्तमें किसी महत्त्वपूर्ण कार्यसे यश व लाभ प्राप्ति होवे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुम्भ—यह मास सावधानीका है अतः किसी कार्यमें हस्तक्षेप नहीं करना । भलाई का परिणाम बुराईमें मिले, अकारण शत्रु उत्पन्न हों, मन चिन्ताग्रस्त रहे, शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम ।

मीन—आत्माभिमानवृद्धि, भृत्यवर्ग या मातुल पक्षसे त्रास चिन्ता उत्पन्न हो, यात्रामें भी कष्ट या चोट लगनेका भय है सावधान रहें । मासका अन्तिम सप्ताह उत्तम है, उसमें इच्छित कार्य बनने लगेंगे ।

फाल्गुनमासका भविष्य

ता० १२ फरवरीसे १३ मार्च पर्यन्त उड़द, मूंग, अरहर, कुलथी, नमक, तैल का भाव तेजीकी ओर रहेगा । गेहूँ, बाजरा, मसूर और कपासका भाव कुछ मन्दीकी ओर रहेगा । देशके शत्रुओंका बल क्षीण होने लगेगा । प्रत्येक वस्तु दुष्प्राप्य होने लगेगी जिससे जनतामें अशान्ति अत्यधिक बढ़ेगी । वस्तु नियन्त्रण कुछ शिथिल पड़ेगा । जनताकी आर्थिक स्थिति और करेन्सी (नोट रेजगारी धातुके छोटे-मोटे सिक्कों) की दशा चिन्ताकारक बनी रहेगी । यहां संसारके किन्हीं दो शक्तिशाली राष्ट्रोंमें ऐक्यकी सम्भावना है जिससे भारतमें भी कुछ शुभाशाकी झलक दिखाई देगी ।

फाल्गुनमासका राशिफल

(ता० १२ फरवरीसे १३ मार्च पर्यन्त)

मेष—चित्तमें आनन्द, कार्य व्यवसायमें उन्नति, वैवाहिक सौख्य, प्रत्येक कार्यमें सफलता, पूर्वार्धकी अपेक्षा उत्तरार्ध विशेष उत्तम है ।

वृषभ—शारीरिक व मानसिक स्थिति अस्वस्थ, लोकमत प्रतिकूल, संकटग्रस्त, उच्छृङ्खलताके कारण इष्टमित्र एवं आप्तजनोंमें अपमानित होना पड़े । गुप्तचिन्ता । कार्यव्यवसायमें दुर्लक्ष्य ।

मिथुन—चित्तमें अत्यन्त व्यग्रता, आर्थिक संकट एवं सांसारिक आपत्तियोंके कारण चित्त विक्षिप्तसा हो उठे, क्षणक्षणमें विचार परिवर्तन हो, पारतन्त्र्यके कारण प्रत्येक कार्यमें औदासिन्य ।

कर्क—प्रचलित कार्य व्यवसायमें सन्ताप, अनेक प्रकारकी सांसारिक बाधाओंका साम्मुख्य करना पड़े, भृत्यवर्ग एवं सहवासियोंसे कष्ट, विना लाभके निरर्थक कामोंमें समय अधिक नष्ट हो ।

सिंह—कल्पित कार्य सिद्धिमें विलम्ब, प्रवास, परिश्रमके अनुकूल उसका परिणाम न मिले । विश्रान्ति (आराम) बिल्कुल न मिले, साम्पत्तिक कष्ट, व्ययाधिक्य, मानसिक अशान्ति, घरमें विवाद ।

कन्या—स्वयंकी तथा स्त्रीके स्वास्थ्यकी ओरसे चिन्ता । यह मास प्रत्येक दृष्टिसे त्रासदायक है । कार्य व्यवसाय मध्यम, धार्मिक कार्योंमें अनास्था, पारिवारिक चिन्ता, आर्थिक लाभ और सम्मानकी दृष्टिसे मासका पूर्वार्ध कुछ अच्छा है ।

तुला—स्थलान्तर, प्रवास, उद्योग एवं पर्याप्त परिश्रम करने पर भी सफलता न मिले, कार्य व्यवसायमें स्थिरता, पारिवारिक सुख मध्यम, नये कार्यसे हानि, चिन्ता वृद्धि ।

वृश्चिक—परिवारके वृद्धजनोंको या माताको कष्ट, दुःखदाई वार्ता या वियोग, स्वयं की तथा स्त्रीकी प्रकृति अस्वस्थ, जहां तहां विरोधी लोगोंसे अपमान हो, ऋणग्रस्तता तथा वृथा आरोप ।

धनुः—द्रव्यका आय व्यय बहुत हो, सञ्चय न हो, पारिवारिक सुख मध्यम, स्वजनोंका विरोध, रोग भय, यात्राका विचार, मानसिक क्लेश ।

मकर—स्थावर सम्पत्ति गृह भूमि आदिकी चिन्ता, स्वजन एवं व्यसनी लोगोंसे क्लेश, पारिवारिक जनोंमें हीनत्व, लोकमत प्रतिकूल, कार्यमें अत्यन्त परिश्रम करने पर भी फल अनुकूल न हो ।

कुम्भ—चित्तवृत्ति शान्त स्वस्थ, जनता या अधिकारियोंका पूर्ण सहयोग न मिलनेसे कुछ कार्योंमें बाधा पड़ेगी वह मासके अन्तमें निवृत्त होगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्भयता पूर्वक कार्यक्षेत्रमें डटे रहनेसे प्रतिष्ठा वृद्धि होगी।

मीन—विद्याभ्यासमें उन्नति, नौकरीमें अचानक अधिकार प्राप्ति, लाभ उत्तम, संतति सुख, चित्तमें आनन्द, व्यापार तथा राज्यपक्षमें द्रव्य व्यय, व्ययाधिक्य, पारिवारिक सुख उत्तम, महत्त्वके कार्यमें यशः प्राप्ति, मित्रमण्डलके विरोधसे कष्ट।

चैत्रमासका भविष्य

ता० १४ मार्चसे १३ अप्रैल पर्यन्त सेनानायकों को कष्ट, बालवर्ग तथा उद्योगी लोगोंको पीड़ा। वायुभय, क्षुधा-शस्त्र-रोगयुद्धादि भय। तैल, घृत, गुड़ादि रस पदार्थ और गेहूंका भाव तेज हो। यहां श्रवणनक्षत्रमें मङ्गल आया है अतः गेहूँमें विशेष तेजी होगी। मध्य पूर्वी-एशिया और यूरोपमें महायुद्ध की ज्वाला भीषण रूपमें धधकने लगेगी। भारत पर भी पूर्व दक्षिणकी ओरसे भीषण आक्रमणकी सम्भावना है। पूर्वी राष्ट्रोंकी नवीन प्रगतिके कारण भारतीय-वाणिज्य-व्यवसायमें कई परिवर्तन होते रहेंगे, जिससे कई वस्तुके भावोंमें सहसा घटावढ़ी होगी और व्यापारियोंको अकल्पित लाभ हानियां उठानी पड़ेंगी। अतः यहां व्यापारियोंको बहुत सावधानीसे कार्य करना चाहिए। पूर्वी देशोंमें नई नई क्रान्तियां होंगी। कई प्रकारकी नवीन घटनाएँ घटेंगी, जिनका परिणाम आगे बड़ा भयङ्कर सिद्ध होगा।

चैत्र मासका राशिफल

(ता० १४ मार्चसे १३ अप्रैल पर्यन्त)

मेष—उत्साह वृद्धि, चिन्तानाश, द्रव्यलाभ, उत्कर्ष, स्वास्थ्य सामान्य, उष्णता या पित्तवृद्धिके कारण मासके अन्तमें कुछ शारीरिक कष्ट शिर पीड़ा उदर विकारादि हो और स्त्री या सन्तानकी चिन्ता हो।

वृषभ—आर्थिक लाभ उत्तम, इच्छित कार्यके लिए स्थलान्तर गमन और यश प्राप्ति, केवल अपनी और स्त्रीकी शारीरिक स्थिति उत्तम रहनेके अतिरिक्त अन्य सब बातोंके लिए मास उत्तम है।

मिथुन—मानसिक अशान्ति, शारीरिक तथा साम्पत्तिक सामान्य कष्ट, कार्य व्यवसायमें या अदालती कार्योंमें क्लेश, लोकापवाद, किसी न किसी प्रकारकी चिन्ता सदा बनी रहे। अनुचरोंसे विरोध, वायु पीड़ा, लाभकी अपेक्षा हानि।

कर्क—मासका पूर्वार्ध स्वास्थ्यके लिए ठीक नहीं, उत्तरार्ध अच्छा है। किसी न किसी प्रकारसे सार्वजनिक कार्य हाथमें आवें और उनसे लाभ हो। पुराने गृहको नवीनरूप दिया जावे अथवा भूमि आदिका लाभ हो। जीवनमें कोई महत्त्वमण्डित स्थिर कार्य हो।

सिंह—अकारण मनस्ताप, गृहकलह, स्वजातीय सहयोगी एवं गुप्त शत्रु द्वारा हानि होने का योग है सावधान रहें। किसी प्रकारके भी उत्तरदायित्व पूर्ण कार्यमें कोई सम्मति न देवें अन्यथा अपयश मिलेगा। अधिकारियोंसे विरोध।

कन्या—कार्य व्यवसाय व्यापार धन्दा नौकरी आदिमें न्यूनता आनेका योग है। स्वास्थ्य भी ठीक न रहे, आंख कान या दांत में पीड़ा हो। स्त्रीके स्वास्थ्यके लिए भी यह समय नेष्ट है। सन्ततिके लिए उत्कर्षकारक है, शत्रु वृद्धि होकर अन्तमें नष्ट होंगे।

तुला—अविश्वसनीय लोगोंसे मैत्रीका परिणाम हानिकर सिद्ध हो। विपरीत मार्गमें प्रवेश करनेसे कार्य भंग, मनोभंग, साम्पत्तिक स्थिति चिन्ताकारक। विना विचारके कार्य करनेसे पीछेसे पश्चात्ताप। उद्योग करने पर भी पूर्ण सफलता न मिले।

वृश्चिक—गृह चिन्ता, मिथ्या-कलंक, मित्र बन्धुओंसे विरोध, अपने अथवा स्त्रीके शरीरमें पीड़ा, यात्रा, कार्य व्यवसाय नौकरी आदिकी स्थिति चिन्ताकारक, राजकीय कार्योंमें विशेष हानि, शत्रु वृद्धि, अपयश।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनु:—गृहचिन्ता, शत्रुनाश, अपेक्षित (आने वाले) सम्वाद या पत्रके न आनेसे विशेष चिन्ता, आयकी अपेक्षा व्यय अधिक हो, स्वास्थ्य उत्तम न रहे, रक्त विकार या उदर विकारसे कष्ट हो। प्रतिकूल परिस्थितिके कारण स्वयं ठोकर खाकर सावधान होना पड़े।

मकर—शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम, उत्साहवर्धक कार्य हों, इच्छित कार्यकी सिद्धि, विरोधी वातावरण नष्ट होकर यश प्रतिष्ठाकी वृद्धि हो। लाभ मध्यम, राजद्वारमें विजय, स्त्री कष्ट।

कुम्भ—बुद्धि अस्थिर, शीघ्रता या भावावेशमें आकर जो विवेकशून्य कार्य किया जावे उसका नेष्ट परिणाम भोगना पड़े। पूर्व सञ्चित द्रव्य का व्यय और मित्रोंसे धोखा हो, यह मास सावधानी का है।

मीन—जिस समय कोई अच्छी स्थिति सम्मुख आनेका योग आवे ठीक उसी समय कोई संकटापन्न स्थिति अकस्मात् आ खड़ी होनेसे अनुकूल स्थितिका महत्त्व बहुत न्यून हो जावे। शारीरिक कष्ट, कौटुम्बिक कलह। मासका उत्तरार्ध कुछ शान्ति कारक एवं लाभप्रद सिद्ध होगा।

सूचना—उपर्युक्त राशिफल प्रत्येक मनुष्यको शत-प्रतिशत ठीक बैठे यह बात अनिवार्य नहीं है, क्योंकि संसार के प्राणियोंको बारह भागोंमें या १२ राशियोंमें विभक्त करके यह विचार लिखा गया है। देश काल परिस्थिति और अपने अपने जन्मलग्नकी ग्रहस्थितिके अनुसार कुछ अन्तर रहना स्वाभाविक ही है। एतदर्थ मासका ठीक ठीक सूक्ष्म फल तो गणित द्वारा अपने वर्ष फलसे ही ज्ञात हो सकता है। मध्यम मानसे यह राशिफल भी मिल जाता है। अतः जिन लोगोंका जन्मपत्र वर्षफल बना हुआ नहीं है, उनके हितार्थ यह त्रैमासिक राशिफल हमने बड़े विचारपूर्वक लिखा है। यदि आप हमारे द्वारा अपना सूक्ष्म यथार्थ मासिक फल अथवा जीवन भरका भविष्य जानना चाहते हैं तो सूक्ष्म शुद्ध गणनानुसार जन्मपत्र वर्षफल बनवाइये।

त्रैमासिक मुहूर्तादि विचार

[लेखक— श्री पं० जगन्नाथप्रसादजी ज्यौतिषी (जगनजी)]

विवाह मुहूर्त

माघ कृष्णपक्षमें

४ सोमवार ता० २५ जनवरी उ. फा. रे. ७ ल. गो. ७।

५ मङ्गलवार ता० २६ जनवरी उ. फा. रे. ८ दि. ल. १२ सम। हस्ते रे. ८ ल. गो. ७।

६ बुधवार ता० २७ जनवरी हस्ते रे. ७ दि. ल. १२ सम।

७ गुरुवार ता० २८ जनवरी स्वा. रे. ६ लग्नाऽन्यगो. ६ आवश्यके।

८ शुक्रवार २९ जनवरी स्वा. रे. ६ दि. ल. १

९ शनिवार ३० जनवरी मैत्रै रे. ८ घ. ३५ उप. ग पञ्चक लग्न ७ अन्यगो०।

माघ शुक्लपक्षमें

५ मङ्गलवार ता० ९ फरवरी रेवती. रे. ७ ल० अन्यगोधू०।

फाल्गुन कृष्णपक्षमें

१ रविवार ता० २१ फरवरी उ. फा. रे. ८ ल. १० अंश १३ उप.।

२ सोमवार ता० २२ फरवरी उ. फा. रे. ८ दि. ल. १२ सम।

६ शुक्रवार ता० २६ फरवरी अनु. रे. ९ ल. १०

७ शनिवार ता० २७ ,, ,, रे. ९ दि. ल. १२ रात्रौ चौर पंचक अन्यगो०।

१२ बुधवार ता. ३ मार्च उ. षा. रे. ६ ल. दि. १२–१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फाल्गुन शुक्लपक्षमें

१ रविवार ता. ७ मार्च उ. भा. रे. ६ दि. ल. ३ भौ. दा. ६

२ सोमवार ता० ८ मार्च रेवती रे. ७ दि. ल. ३, रात्रौ ६

उपनयन मुहूर्त

पौष शुक्लपक्षमें

११ रविवार ता० १७ जनवरी ल. चिं.।

माघ शुक्लपक्षमें

३ रविवार ता० ७ फरवरी
११ सोमवार ,, १५ ,,

फाल्गुन कृष्णपक्षमें

२ सोमवार ता० २२ फरवरी
५ गुरुवार ,, २५ ,,

फाल्गुन शुक्लपक्षमें

२ सोमवार ता० ८ मार्च

चैत्र कृष्णपक्षमें

३ बुधवार ता० २४ मार्च
५ शुक्रवार ,, २६ ,,

चैत्र शुक्लपक्षमें

५ शुक्रवार ता० ६ अप्रैल

गेहारम्भ मुहूर्त्त

माघ कृष्णा १ शुक्रवार ता० २२ जनवरी ल. १२ तिथि दोषः

माघ शुक्ला ११ सोमवार ता० १५ फरवरी घ. ६ या. ल. ११–१२ सम

माघ शुक्ला १३ बुधवार ता० १७ फरवरी घ० १६ उप. ल. चिं. आवश्यके। अत्र माघमासो सर्वसम्मतो नाऽस्ति।

फाल्गुन कृष्णा २ सोमवार ता० २२ फरवरी आवश्यके ल. चिं.

फाल्गुन कृष्णा ४ बुधवार ता० २४ फरवरी घ. १४।४५ उप. ल. ३ बु. पू.

गेह प्रवेश मुहूर्त्त

माघ शुक्ला ११ सोमवार ल. ११ आवश्यके
फाल्गुन कृष्णा ७ शनिवार ता० २७ फरवरी
,, शुक्ला ७ ,, ,, १३ मार्च
.. घ. १७ या.

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

माघ शुक्ला ११ सोमवार ता० १५ फरवरी ल. ११
,, १३ बुधवार ता० १७ फर. ल. चिं.
फाल्गुन कृष्णा २ सोमवार ,, २२ फरवरी
,, ५ गुरुवार ,, २५ फरवरी
घ० १३ या०
फाल्गुन शुक्ला २ सोमवार ता० ८ मार्च

द्विरागमन मुहूर्त्त

माघ शुक्ला ११ सोमवार ता० १५ फरवरी घ. ६ यावत्।

माघ शुक्ला १३ ता० १७ फरवरी
फाल्गुन कृष्णा २ सोमवार ता० २२ फरवरी
४ बुधवार ,, २४ ,,
१५ घ. उप.
५ गुरुवार ,, २५ फरवरी
१२ घ० यावत्
१० सोमवार ,, १ मार्च २४ घ. यावत्
१३ गुरुवार ,, ४ मार्च
फाल्गुन शुक्ला २ सोमवार ,, ८ मार्च

विद्यारम्भ मुहूर्त्तः

पौष शुक्ला ११ रविवार ता० १७ जनवरी
माघ कृष्णा ६ बुधवार ,, २७ ,,
,, शुक्ला ३ रविवार ,, ७ फरवरी
६ बुधवार ,, १० ,,
फाल्गुन कृष्णा ५ गुरुवार ,, २५ ,,
१२ बुधवार ,, ३ मार्च

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसूतिस्नानादि आवश्यक मुहूर्त

पौष शुक्ला १२ सोमवार ता० १८ जन घ. ५।३८ उप. चौल अन्न-प्राशन प्रसूता स्नान जल पूजा कर्ण वेध।

पौष शुक्ला १५ गुरौ ता. २१ जन. अन्नप्राशन कर्णवेध जल पूजा।

माघ कृष्णा ५ भौमे ता. २६ जन. प्रसूता स्नान।

" ६ बुधे ता. २७ " जल पूजा कर्ण वेध अन्नप्राशन।

" ७ गुरौ ता. २८ " घ. ५।४८ उप. चौल (मुण्डन) अन्न प्राशन कर्णवेध।

" ८ शुक्रे ता. २९ नासिका छेदन।

" १० रवौ ता. ३१ जन. प्रसूता स्नान।

" ११ सोमे ता. १ फर. मुण्डन, जलपूजा।

माघ शुक्ला ३ रवौ ता. ७ फर. प्रसूतास्नान।

" ५ भौमे ता. ९ " "

" ६ बुधे ता. १० " अन्नप्राशन कर्णवेध।

" ११ सोमे ता० १५ फरवरी मुण्डन घ. ६ या.

" १३ बुधे ता. १७ फर. चौल, अन्नप्राशन, जलपूजा, कर्णवेध।

फा० कृ० १ रवौ ता. २१ फरवरी प्रसूतास्नान सम।

" २ सोमे ता. २२ " अन्नप्राशन, नासिका-छेदन।

" ५ गुरौ ता. २५ " मुण्डन, अन्नप्राशन, प्रसूतास्नान, नासिकाछेदन।

" १० सोमे ता. १ मार्च जलपूजा।

" १२ बुधे " ३ " नासिका वेध घ. २५ उप. जल पूजा।

" १३ गुरौ " ४ " चौल, कर्णवेध, अन्नप्राशन।

फा० शु० २ सोमे ता० ८ मार्च अन्नप्राशन, कर्ण वेध, चौल घ. १।८ उप. प्रसूतास्नान सम।

" ३ भौमे ता० ९ मार्च प्रसूतास्नान।

चैत्र कृष्णा १ सोमे " २२ " प्रसूता स्नान सम, जलपूजा।

चैत्र कृ० ३ बुधे " २४ मार्च अन्नप्राशन।

" ५ शुक्रे " २६ " प्रसूतास्नान, अन्न-प्राशन, जल पूजा।

" १० बुधे ता० ३१ मार्च जलपूजा, अन्न-प्राशन १४ घ. उप.

" ११ गुरौ ता० १ अप्रैल प्रसूतास्नान।

" १२ शुक्रे " २ " अन्नप्राशन।

सं० २००० चैत्र शुक्ला २ भौमे ६ अप्रैल प्रसूतास्नान

" ५ शुक्रे. ९ अप्रैल प्रसूतास्नान सम, अन्न-प्राशन।

" ७ सोमे १२ " जल पूजा।

सामान्य यात्रा मुहूर्त

पौष शुक्ल पक्षमें

१२ सोमवार ता० १८ जनवरी दक्षिण, घ. १४।५२ उप. पश्चिम दक्षिण।

माघ कृष्ण पक्ष में

१ शुक्रवार ता० २२ जन. घ. ७ या. उत्तर।

५ भौमवार " २६ " पूर्व। दक्षिणको सम।

११ सोमवार ता. १ फरवरी घ. १६ या. उत्तर पश्चिम, उप. उत्तर।

१२ भौमवार ता. २ फरवरी घ. १३।५९ उप. पूर्व।

१३ बुधबार ता० ३ फरवरी घ. ७ या. पूर्व।

माघ शुक्ल पक्षमें

२ शनिवार ता. ५ फरवरी पश्चिम।

३ रविवार " ६ " घ. ३७ उप. उत्तर।

५ भौमवार " ८ " पश्चिम।

६ बुधवार " ९ " घ. ३६ उप. पूर्व।

९ शनिवार ता. १३ " दक्षिण।

१० रविवार " १४ " घ. ३३।३९ या. पूर्व, दक्षिण, उप. दक्षिण।

११ सोमवार ता. १५ फरवरी घ. ३ या. दक्षिण पश्चिम।

१३ बुधवार ता. १७ " पश्चिम।

[शेष पृष्ठ ५८ पर देखिये]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान विश्वव्यापी-संग्राम और ज्यौतिष

[लेखक—श्री पं० विशुद्धानन्दजी गौड़ ज्यौतिषाचार्य]

जगन्नियन्ता श्रीभगवान् ही इस निखिल ब्रह्माण्ड की सृष्टि स्थिति और प्रलयके कर्ता हैं। सब मनुष्य, जीव-जन्तु, स्थावर, जङ्गम, पदार्थ मात्र भगवान्की सृष्टि हैं। भगवान्ने ही सब पदार्थोंको विशेष विशेष गुण, रूप, प्रकृति, एवं शक्ति देकर सृजन किया है।

"त्वय्यैव नित्यसुखबोधतनावनन्ते
मायात उद्यदपि यत्सदिवावभाति।"

श्रीमद्भागवतकी ब्रह्माकी इस उक्तिसे असत्वरूप-मय संसार होते हुए भी जगन्नियन्ता भगवान्की रची हुई सृष्टि होनेके कारण सत्स्वरूप ही प्रतीत होता है। क्योंकि वे स्वयं अविनश्वर हैं। इसलिये उनकी रची हुई वस्तुका भी सत्स्वरूपमय ही प्रतीत होना युक्तिसंगत है। निखिल ब्रह्माण्डके विभिन्न प्रदेशोंमें तथा विभागोंमें जितने भी प्राकृतिक विधान शासन करते हुए विद्यमान हैं। वे सब नियम तथा विधान भगवान्की ही कृति हैं। उनके कर्ता वे स्वयं ही हैं। वे ही सब जीवोंमें (प्राणियोंमें) अन्तर्यामी रूप होकर विराजते हैं। तथा बाहरसे भी वे ही निखिल ब्रह्माण्ड नियन्ताके रूपमें भी स्वयं ही प्रतीत होते हैं। वे ही स्वयं विशेष विशेष जीवोंको विशेष २ प्रकारकी नई २ शक्ति-प्रकृति एवं प्रवृत्ति तथा चेष्टा प्रदान करके विशेष कार्य कराते हैं। इन मानवीय शरीरोंसे जितनी हिंसा या जितना घात-प्रतिघात, कलह, द्वेष, अविचार, अत्याचार अथवा प्रलयकाण्ड, जो भी इस जगत्में देखनेमें आ रहा है—इसमें मनुष्यका स्वतन्त्र कर्तृत्व कहां तक समझा जा सकता है? मनुष्योंके द्वारा प्रकट किया हुआ भगवान्का ही यह विधान मानना पड़ेगा। वे ही उनके द्वारा विशेष २ कार्य करा रहे हैं। प्राणियोंका कर्मानुसार सुख-दुःख-मय जीवनका विधान कैसा है, किस रूपमें कैसा था और किस रूपमें कैसा रहेगा? यह सब विषय उस भगवान्के बनाये हुए शास्त्र रूपी विधानसे ही ज्ञात हो सकता है।

"कर्मार्जितं पूर्वभवे सदादि यत्तस्य पक्तिं समभिव्यनक्ति"

वरामिहिरके इस प्रमाणसे भगवान्के नियमित विधानको बतलाने वाला प्राणियोंके पूर्वजन्मार्जित सदसद्कर्मजन्य फलका दिग्दर्शन कराने वाला विधान ज्यौतिष-शास्त्र ही है।

प्रस्तुतमें ग्रहोंकी गोचर-विचार गणनाको ध्यानमें रखते हुए जो समय बीत रहा है अथवा जो भविष्यमें आवेगा उस पर यद्यपि "श्रीस्वाध्याय"में पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। "दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार चक्र" आदि लेखोंसे सम्पादक महोदयने भी वर्तमान ग्रहोंके गोचर स्थितिके फलादेशको भली भांति स्पष्ट किया है। अन्य दैवज्ञ महोदयोंके लेख भी सारगर्भित देखने एवं पढ़नेमें आये हैं। तदनुसार ही उक्त विषयक फलादेश तथा फलित सम्बन्धी भविष्य चर्चा ही प्रस्तुतमें उपादेय होनेसे शास्त्रीय विचारोंमें बड़े २ सुयोग्य भविष्य वक्ताओंके विचारोंको देखते हुए—

यद्विस्तरेण कथितं मुनिभिस्तदस्मिन्
सर्वं मया निगदितं पुनरुक्तवर्जम्।
श्रुत्वापि कोकिलरुतं बलिभुक् विरौति
यत्तत्स्वभावकृतमस्य पिकं न जेतुम्॥

श्रीवराहमिहिर दैवज्ञकी इस उक्तिसे मुनि लोगों ने जिस विषयको विस्तारपूर्वक कहा है वराहमिहिरने अपने ग्रन्थमें उन समस्त पुनरुक्तियोंको छोड़कर शास्त्रका वर्णन किया है। कोयलकी मधुर ध्वनि सुनकर काकका शब्द करना उसका स्वभाव ही है। कोयलको जीतनेके लिये नहीं। इस वर्तमान समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में वर्तमान शताब्दीमें निकट भविष्यकी शताब्दी परिवर्तनके कालमें ग्रहोंकी गोचर-विचार-गणना करनेसे क्रूर ग्रहोंकी स्थिति फलादेशके विषयमें कैसी भयावह चल रही है? इस विषयमें विशेष प्रकाश डालनेकी आवश्यकता भी नहीं है। समस्त भूमण्डलके प्रत्येक प्रदेशोंमें क्रान्ति नई प्रतीत हो रही है। क्रूर ग्रहोंका (शनि राहु भौम आदिकोंका) अपनी २ राशियों पर भोग होनेसे भूभागके जन्तुओं पर नेष्ट फलका परिणाम तो दूर रहा, बृहस्पतिकी स्थितिके भी अतिनेष्ट होनेके कारण समय विशेष दोषास्पद हो गया। बृहस्पति नियमतः अपनी स्वाभाविक गतिसे एक वर्षमें एक राशि पर ही भोग करता है। परन्तु इस वर्ष वर्षके आरम्भमें वृष राशि पर था, फिर शीघ्र-गति-गामी होकर मिथुन पर आया, तदनन्तर अपनी शीघ्र-गति बनाकर कर्क पर आ गया, पुनः वक्री होकर पौषमें ही मिथुन पर हो जायगा। ऐसी अवस्थामें बृहस्पतिके अतिचारी होने पर तीन राशिसे एक वर्षमें ही स्पर्श हो जानेसे—

यत्र वर्षे गुरुः शीघ्रगत्या राशित्रयं स्पृशेत्।
क्लेशान्विताश्च राजानः रक्तपूर्णा च मेदिनी॥

यह योग स्पष्ट प्रतीत हो रहा है। निखिल भूभाग का प्रत्येक प्रदेश, प्रत्येक राजा, प्रत्येक प्राणी, प्रत्येक व्यक्ति ऐसा नहीं रहा है कि जिस पर उक्त ग्रहोंका सामयिक प्रभाव न पड़ा हो। इस समयमें भी पौष तक कर्क राशि पर गुरु चल रहा है। आगे पुनः चैत्र से भी कर्क पर रहेगा। इन दोनों समयोंमें पौष पर्यन्त कर्ककी स्थिति विशेष नेष्ट तथा ज्येष्ठ पर्यन्त कर्क राशिके गुरुकी स्थिति और भी दोषास्पद जाननी चाहिए।

केवल दोषकारक ग्रहोंकी नेष्ट स्थितिका विवेचन ही नहीं करना है, दोषकारक समयमें बहता हुआ प्रत्येक प्राणी अथवा विपत्तियोंके भोगमें फँसा हुआ प्रत्येक जन्तु प्रत्येक समय इसी जिज्ञासामें तथा अन्वेषणमें रहता है कि कहीं विश्रान्ति मिले, सुख मिले, शान्ति प्राप्त हो। मनुष्य उन उपायोंके अन्वेषण में भी रहता है जिनके द्वारा जीवन यात्रा सफल बन जाती है। यद्यपि ग्रहोंकी स्थितिके गोचरमें परिवर्तित हो जानेसे समय अपने सुधार पर स्वयं भी आता है। तो भी उस जगन्नियन्ता भगवान्के बनाये हुए विधानको अनुभवमें लाते हुए राजा और प्रजाके सम्बन्धमें सब जन्तुओंके सम्बन्धित होनेके नियमसे—

मूलं मनुजाधिपतिः प्रजा-
तरोस्तदुपघातसंस्कारात्।
अशुभं शुभं च लोके भवति
यतोऽतो नृपति चिन्ता॥

राजा ही प्रजारूपी वृक्षके लिए जड़ रूप होता है। इस लिये प्रजाके ऊपर उपघात संस्कारके लिये अशुभ और शुभ फल होता है। इस कारण राजाके मङ्गल विषयमें सदा चिन्ता करनी चाहिए। फिर राजा और प्रजा दोनोंका ही मङ्गल हो जाता है। समय अपने सुधार पर स्वयं ही आता है इस विचारको ही प्रथम स्पष्ट करके हम "श्रीस्वाध्याय" के पाठकोंको उक्त राजा एवं प्रजा सम्बन्धी मङ्गल एवं शुभ शान्ति-विषयक शास्त्रीय उपायोंकी विधि भी बतलाएंगे।

समय बराबर एक प्रकारका नहीं रहा करता है।

"नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण॥"

कालिदासकी इस उक्तिसे प्रत्येक व्यक्तिके जीवन में भी दुःखके पश्चात् सुख और सुखके पश्चात् दुःख का अवसर आता ही है। कभी कोई देश या समाज अथवा व्यक्ति उन्नतिको प्राप्त होता है, कभी अवनति का भी अनुभव करता है। इसी विचारसे समय सुन्दर भी आता है। अब प्रस्तुतमें निकट भविष्यमें थोड़ा ही समय बीतने पर अच्छा भी अनुभवमें आएगा।

कोष्ठागारगते भृगुपुत्रे
पुष्यस्थे च गिरां प्रभविष्णौ।
निर्वैराः क्षितिपाः सुखभाजः
संहृष्टाश्च जना गतरोगाः॥

शुक्र ग्रहके कोष्ठागारमें अर्थात् मघा नक्षत्र पर होने पर और बृहस्पतिके पुष्यनक्षत्रमें विराजमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने पर राजा लोग शत्रु रहित होते हैं। प्रजा सुखी होती है। हर्षित और रोग रहित प्रजा होती है। पुष्यनक्षत्र पर गुरुकी स्थिति और मघानक्षत्र पर शुक्रकी स्थिति आगामी आषाढ़ मासके कृष्णपक्षमें ही हो जाती है। उस अवस्थामें प्रजाको शान्ति, राजाओंकी परस्पर निर्मत्सरता होनेसे समय-सुधार, शान्ति एवं सुखमय जीवनका प्रतीत होगा और निखिल ब्रह्माण्ड-नायक भगवान्के विधानका शताब्दीके परिवर्तित आकारका स्वरूप भी दिखाई देगा। यद्यपि आगे चल कर कार्तिक मासमें तेरह दिनके पक्ष आदिका फल कुछ दूषित होगा, तो भी समय उतना भयावह नहीं होगा जितना इधर है।

सुख शान्तिके उपाय और पुष्यस्नान

शान्तिके उपायोंमें शास्त्रीय सिद्धान्तपद्धतिसे स्वयं ब्रह्माजीने महेन्द्रके लिये बृहस्पतिसे जो शान्ति कही थी, वृद्ध गर्गाचार्यजीने उसे भृगुसे कहा था, ऐसे दैविक उत्पातोंके उपस्थित होने पर—

पुष्यस्नानं नृपतेः कर्त्तव्यं दैववित्पुरोधाभ्याम्।
नाऽतः परं पवित्रं सर्वोत्पातान्तकरमस्ति॥

पुरोहित एवं दैवज्ञों द्वारा राजाओंको पुष्य-स्नान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त पवित्र और सब प्रकारके उत्पातोंका नाश करने वाला दूसरा कोई और अन्य उपाय नहीं है। पुष्य-स्नानका इतना क्यों महत्त्व शास्त्रमें माना गया? सम्पूर्ण दैविक उत्पातों की निवृत्ति इससे किस प्रकारसे हो सकती है? इसमें क्या शास्त्रीय विज्ञान है? कभी अवसर मिला तो "श्रीस्वाध्याय" के पाठकोंको समझाया जावेगा। प्रस्तुतमें पुष्यस्नानकी विधि ही उपादेय होनेसे उक्त विज्ञान पर प्रकाश नहीं डाला जा रहा है। पुष्यस्नानकी विधि भी संक्षेपमें देनेसे ही लेख विस्तृतिसे बचाव हो पावेगा। यह विधान राजा महाराजाओंको तो परमावश्यक ही है। धनी-मानियोंको भी सर्वथा उपादेय है। साधारण जनता को भी अपनी शक्तिके अनुसार उक्त विधि पूर्वक पुष्य-स्नान करनेसे सम्पूर्ण अरिष्टनिवृत्ति होकर सम्पूर्ण मण्डल-लाभ होता है।

राजाओंके योग्य तथा धनी मानी व्यक्तियोंके लिये जो समृद्धिशाली हों उनके लिए पुष्य-स्नानविधि लिखते हैं। गर्गमुनिने जो सामग्री औषधियों सहित पुष्य-स्नानकी विधिमें बतलाई है उसे लिखते हुए विधिका उल्लेख किया जाता है—

(१) कंगनी, (२) त्रायमाणा, (३) अपराजिता, (४) जीवा (वच), (५) विश्वेश्वरी (सौंठ), (६) पाठा (पाढ़), (७) समंगा (पसरन), (८) भङ्ग, (९) सहा (कुकुट्टी), (१०) सहदेवी, (११) नागरमोथा, (१२) शतावरी, (१३) रीठा, (१४) शिवा, (१५) भद्रा (मोथा), (१६) अजा (औषधिविशेष), (१७) क्षेमा (चौर नामक गन्ध द्रव्य), (१८) ब्राह्मी, (१९) सर्ववीज, (२०) स्वर्ण, (२१) मङ्गल ग्रहके सब द्रव्य और मङ्गल ग्रहकी सब औषधियां, (२२) बेल, (२३) कह्वी, (२४) प्रशस्ता नामक औषधि। और भी माङ्गलिक द्रव्य ले लिये जायँ तो अच्छा है। इन सबको थोड़ी-थोड़ी मात्रामें शक्तिके अनुसार संग्रह करके सुदृढ़ कलशोंमें सूत बांध कर सब औषधियोंको डाल कर, दुधारे वृक्षोंके पत्ते और फलोंसे ढक कर पुष्यस्नान के निमित्त निर्दिष्ट वेदीके चारों ओर कोनोंकी व्यवस्था से रक्खे। सब कलश उपरोक्त औषधियोंके जलसे परिपूर्ण करके रखने चाहियें। कलश जितने भी औषधियोंके जलोंसे परिपूर्ण होंगे—अधिक संख्यामें होंगे—उसी क्रमसे अरिष्ट निवृत्तिमें समर्थ होंगे। राज्य की व्यवस्थासे यह अनुपात दृष्टिसे ही विधान जानना चाहिए। चक्रवर्त्ती राजाके लिए विस्तार विशेष हो जाता है इतना ही अन्तर है। छोटे राज्यके लिये छोटा विधान है।

इसके अनन्तर जो बैल बूढ़ा होकर स्वयं ही मरा होवे उसका चर्म (उत्तम लक्षण वाले बैलका चर्म होना चाहिये)। उस चर्मको निर्दिष्ट वेदीके पूर्वकी ओर बिछावें।

पुण्येष्वायतनेषु च तीर्थपूद्यानरम्यदेशेषु।
पूर्वोदक्प्लवभूमौ प्रदक्षिणाम्भोवहायां च॥

इस सिद्धान्तसे पवित्र देव-मन्दिरमें, तीर्थ या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्यानमें, रमणीक स्थानमें परिक्रमा आकारमें, जल जहां बहता होवे अथवा पूर्व या उत्तरकी ओर जहां जल अच्छा बहता होवे। इत्यादि जलाशय स्थानमें नदी आदिके निकट विधि करानी चाहिये। अब निर्दिष्ट वेदीसे पूर्व बिछाए हुए बैलके चर्म पर मिल सके तो स्वाभाविक-मृत्युसे ही मरे हुए तरुण बैलके चर्मको बिछावे। फिर उस पर सिंहका चर्म, उस पर व्याघ्रका चर्म बिछावे। पुष्यनक्षत्रमें श्रेष्ठ मुहूर्त्तमें, स्वर्ण, चान्दी और ताम्बेका धातुत्रयका बना हुआ आसन उक्त चर्मों पर बिछावे अथवा दुधारे वृक्षके काष्ठका बना हुआ आसन ही चर्मों पर बिछावे। आसनकी ऊंचाई एक हाथ, सवा हाथ, डेढ़ हाथ स्थितिके अनुसार प्रमाणमें रख कर श्रेष्ठ मन वाला राजा अपने आश्रित राजाओंके साथ, मन्त्री, पुरोहित, दैवज्ञों, नागरिकोंके सहित घिर कर आसन पर बैठे। पुरवासियोंकी उत्सवध्वनि ब्राह्मणोंके द्वारा उच्चारण किया हुआ पुण्य शब्द, मृदङ्ग, शङ्ख, तुरईका मङ्गल शब्द राजाके अरिष्ट तथा अनिष्टका नाश करता है। घृतपूर्ण-कलश भी रहना चाहिये और घृतपूर्ण-कलश से पहिले राजाका पुरोहितके द्वारा अभिषेक होना चाहिये।

आज्यं तेजः समुद्दिष्टमाज्यं पापहरं परम्।
आज्यं सुराणामाहार आज्ये लोकाः प्रतिष्ठिताः॥
भौमान्तरिक्षं दिव्यं च यत्ते किल्विषमागतम्।
सर्वं तदाज्यसंस्पर्शात्प्रणाशमुपगच्छतु॥

इन दोनों मन्त्रोंके द्वारा पहिले अभिषेक राजाका होना चाहिये। कम्बलको उढ़ाकर भी अभिषेक घृत से करानेका विधान है। अथवा ऊनी वस्त्र ले सकते हैं। पुनः फल और पुष्पयुक्त पुष्यस्नानके जलसे राजा का अभिषेक कराना चाहिये।

ब्रह्मा विष्णुश्च शम्भुश्च साध्याश्च समरुद्गणाः।
आदित्या वसवो रुद्रा अश्विनौ च भिषग्वरौ॥
अदितिर्दितिर्दमाता च स्वाहा सिद्धिः सरस्वती।

इत्यादि कई मन्त्र हैं। इनके द्वारा उक्त जलसे स्नान एवं अभिषेक होना चाहिये। तदनन्तर "आपोहिष्ठा" इत्यादि ऋग्वेदके मन्त्र तथा कौष्माण्ड, महारोहिण, कुबेरादि अथर्ववेदके कुछ मन्त्र हैं, इनसे अन्तमें अभिषेक करके कपासी वस्त्र पहनाने चाहिये। इसके अनन्तर राजा पुण्याह वाचनसे, शङ्खशब्दसे आचमन करके, देव, गुरु, ब्राह्मण, दैवज्ञ, पुरोहितोंकी पूजा करे। पुनः छत्र, ध्वज, तथा शस्त्रोंका पूजन करे। "आयुष्यं वर्च्चस्यं राय-स्पोषाः।" इत्यादि ऋचाओंसे अलङ्कारोंका पूजन करें। अनन्तर समिध, तिल, घृतसे अग्निमें हवन करें। पश्चात्—

यान्तु देवगणास्सर्वे पूजामादाय पार्थिवीम्।
सिद्धिं दत्वा सुविपुलां पुनरागमनाय वै॥

इत्यादि मन्त्रोंसे विसर्जन आदि करें।

नृपतिरतो दैवज्ञं पुरोहितं चार्चयेद्धनैर्बहुभिः।
अन्यांश्च दक्षिणीयान् यथार्हतः श्रोत्रियप्रभृतीन्॥
दत्वाभयं प्रजानामाघात स्थानगान्विसृज्य पशून्।
बन्धनमोक्षं कुर्यादभ्यन्तरदोषकृद्वर्जम्॥
एतत्प्रयुज्यमानं प्रतिपुष्यं सुखयशोऽर्थवृद्धिकरम्।
पुष्यं विनार्धफलदा पौषी शान्तिः पुरा प्रोक्ताः॥

इत्यादि नियमसे पौषमासकी पूर्णिमामें पुष्य नक्षत्रका विशेष महत्त्व है। अन्यथा प्रति पुष्यमें भी शान्ति करानी चाहिये। राज्यमें उत्पात एवं राष्ट्रों में परस्पर द्वेषाग्निसे उपद्रवोंमें या और अन्य उपसर्गोंमें अथवा राहु केतुके दर्शनमें अथवा ग्रहों की स्थिति विशेष दोषास्पद होनेसे पुष्यस्नानका ही विधान है।

राष्ट्रोत्पातोपसर्गेषु राहोः केतोश्च दर्शने।
ग्रहावमर्दने चैव पुष्यस्नानं समाचरेत्॥
नास्ति लोके स उत्पातो यो ह्यनेन न शाम्यति।
मण्डलं चापरं नास्ति यदस्मादतिरिच्यते॥
अधिराज्यार्थिनो राज्ञः पुत्रजन्म च कांक्षतः।
तत्पूर्वमभिषेके च विधिरेष प्रशस्यते॥

इत्यादि शास्त्रीय वाक्योंसे स्पष्ट ही है। शुभम्।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय सभ्यता और फासीवाद

[लेखिका—श्रीमती सौ० कमलाराणी एम० ए०]

[इस लेखका उत्तरदायित्व पूर्णरूपेण लेखिका पर ही है, इनके फासीवादका तात्पर्य फासिज्मसे है। नाज़ीज्म या फ़ासीज्म ये कितने बुरे हैं या कितने भले हैं इस सम्बन्धमें अभी हम अपना कोई मत प्रकट नहीं कर सकते। —सं०]

इस समय जबकि सारे संसारको अत्याचारी लूट लेना चाह रहे हैं और मनुष्यकी तुच्छ भावनाएँ वशमें होनेके विपरीत सबको वशमें कर लेने का अवसर पारही हैं, तब इस समय हमें बुद्धकी मैत्री और करुणाके महान् ऊँचे भावोंका स्मरण आता है। उपनिषदोंके ऋषियोंने, बुद्ध महाराजने, ईसा-मसीह तथा मोहम्मदसाहबने एक स्वरसे बताया है कि सभ्यता सांसारिक धन सम्पत्ति और शक्तिमें नहीं, रेल मोटर और विज्ञानके अन्यान्य कामोंमें नहीं, वरन् "सत्यं शिवं सुन्दरम्" के ऊँचे भावोंपर अपने जीवनको ले जानेमें है।

भारतीय सभ्यतामें प्राचीनकालसे इन भावों पर अनुचरण करनेके लिये बहुत दबाव डाला है। लिखित इतिहासके पहिलेसे भी हमारे देशमें ऋषि मुनि फल फूल खाते हुए, साधारण वस्त्र पहनते हुए, कुटियोंमें रहते हुए, बिना रेल मोटरमें बैठे ऐसे सभ्य थे कि आजकलकी कोई भी सभ्यता समता नहीं कर सकती। अशोक महाराज और राजा विक्रमादित्यका शासन तथा मध्यकालमें सम्राट् अकबर और शाहजहांका राज्य पाश्चात्त्य देशोंकी प्रत्येक सभ्यतासे कहीं बढ़कर है।

इसका कारण क्या है ? आधुनिक पाश्चात्य देशोंके मनुष्य सांसारिक सुखोंमें ऐसे लिप्त हैं कि वह अपनी तुच्छ इच्छाओंकी पूर्तिके अतिरिक्त कुछ नहीं समझते। आधुनिक बननेका अर्थ वह नीरस मशीनरूप (Mechenical) रहनेको समझते हैं। वह मनुष्यमें ईश्वरत्वको नहीं देखते। उदाहरणतः कलाको देखिये—योरपीय कलाकार जीवन और प्रकृतिके रूपकी नकल करते हैं और मनुष्यकी इच्छा, उत्सुकता, उत्तेजना आदि भावनाओंको प्रकट करनेमें आनन्दका अनुभव करते हैं। परन्तु भारतीय कलाकार इन भावनाओंके अन्दरकी शक्ति को देखता है। वह बुद्ध महाराजके शारीरिक रूप को प्रकट नहीं करता या उनके जीवनकी किसी घटनाका वर्णन ही नहीं करता, वह उनके रूप द्वारा निर्वाणकी शान्तिको प्रदर्शित करता है। हमारे शिल्पकारोंको देखिये—ताजमहल किसी मनुष्यकी इन्द्रियोंकी सन्तुष्टिकी स्मृति नहीं, परन्तु अजर अमर प्रेमको प्रदर्शित करता है। शोककी बात है कि आजकलकी भारतीय जनता अपनी सभ्यताको छोड़ पाश्चात्त्य जड़ सभ्यताकी ओर आकर्षित होती जारही है।

हमारी सभ्यताका आधार क्या है ? भौतिक, व्यापारिक, सैन्य सम्बन्धी लक्ष्य सब मनुष्योंमें जो ईश्वरत्व है उसके आधीन है। हमारी शिक्षाका लक्ष्य ब्रह्मचर्य है—जो जीवनको नियम पर चलाता है। मन और शरीरको पवित्र बनाता है और प्रत्येक मनुष्यमें दैवी ज्योति बढ़ाता है। जीवनका उद्देश्य आत्माकी स्वाधीन उन्नति है। हम राजनैतिक स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्रतामें अधिक महत्त्व इस कारण समझते हैं क्योंकि उसमें प्रत्येक मनुष्यको अपनी आत्माको उन्नत करनेका और "सत्यं शिवं सुन्दरं" पर अनुचरण करनेका अवसर मिलता है।

इसके प्रतिकूल नाज़ीवाद सभ्यता वह है जो हमारी महान् आध्यात्मिक सभ्यताके विरुद्ध है। वह State की शक्ति और उन्नतिमें बहुत महत्त्व समझते हैं। उनका विचार है कि जो कुछ भी संसारमें प्राप्त करने योग्य है वह है सम्पूर्ण शक्तिमान् State जिसमें मनुष्य मशीनमें छोटेसे पुरजेके समान है जो कि मनुष्यके विचारोंके प्रतिकूल ही क्यों न हो। नाज़ीवादका आधार क्या है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहला अहङ्कार "हमारी सबसे ऊँची जाति है" ऐसा वह मानते हैं।

दूसरा मनुष्यमें जो ईश्वरत्व है वह State की इच्छाओं और विचारोंके आधीन है। नाज़ीवादमें मनुष्यको अपनी आत्माको स्वाधीनतापूर्वक उन्नत करनेका अवसर नहीं मिलता। वह मनुष्य नहीं है, वह तो लोहेकी मशीनमें पुरज़ा है जो अपनी इच्छासे नहीं चलता बल्कि मशीन चलानेवालेकी इच्छा पर चलता है।

तीसरा आधार नाज़ीवादका हिंसा है, जिसकी लाठी उसकी भैंस। नाज़ी शिक्षाका लक्ष्य मनुष्यको निर्दयी कठोर सिपाही या मशीन चलाने का पुर्ज़ा बनाना है। आत्मिक उन्नतिकी स्वतन्त्रताको बढ़ानेका नाज़ी शिक्षामें अभाव है।

पाश्चात्त्य देश नाज़ीवादकी घृणित-मनोवृत्तिको अनुभव नहीं कर सकते। यह केवल भारतीय ही जान सकते हैं कि सभ्यताको इस घृणित मनोवृत्ति से क्या भय है। कहते हैं कि प्रजातन्त्रता, स्वतन्त्रता, पूंजीवाद, साम्यवाद, देशभक्ति इत्यादि इत्यादि ख़तरे में हैं। परन्तु यह सब तो आत्माकी उन्नतिके साधन हो सकते हैं, लक्ष्य नहीं। इन साधनोंको लक्ष्य मान बैठना उचित नहीं। यदि प्रजातन्त्रताके बिना किसी प्रकार हमें अपनी आत्मिक उन्नतिका पूरा अवसर मिल सके तब प्रजातन्त्रताकी पुकारकी क्या आवश्यकता? फ़ासीवाद तो इस कारण निन्दनीय है कि उसके आधार बहुत नीच हैं। आज आधुनिक Propaganda (प्रचार करनेकी संस्था) द्वारा मनुष्य साधन और लक्ष्यके भेदको नहीं जान पाता। इस संस्थाके विरुद्ध लड़ना आवश्यक है, क्योंकि यह मनुष्यके विचारोंको—मनुष्यके मस्तिष्कको—कुचल देता है, हमारे हिताहित ज्ञानको वशमें कर लेता है। हमें पता नहीं चलता कि क्या सत्य है और क्या असत्य।

हमें इस अन्धकारमय नाशकारी संग्राममें जानना चाहिये कि ख़तरेमें है क्या? प्रत्यक्ष हमारी सभ्यता, सत्यं शिवं सुन्दरंके ऊँचे भाव जो हमारी सभ्यताके आधार हैं। हम इन तीनों भावोंको सुन्दरं में कर सकते हैं। सत्य ज्ञानकी सुन्दरता है जो शिवं है वह सुन्दर भी है। इस संसारमें प्रत्येक मनुष्यको अपना जीवन लीलामय बना लेना चाहिए, अर्थात प्रत्येक कार्यका लक्ष्य 'सत्यं शिवं सुन्दरं' होना चाहिए। सत्य तथा धर्म पर चलनेकी आवश्यकता आज कल बहुत ही अधिक है। कहा जाता है कि जिस समय निपोलियन वयाना (Vienna) की प्राचीरों पर आक्रमण कर रहा था, उस समय वहीं उस नगरमें एक छोटी-सी कुटियामें विथोवन (Beethovan) एक राग बनानेमें निमग्न था। वह गान योरपीय गानशास्त्रमें अभी तक सबसे अधिक प्रसिद्ध है।

[पृष्ठ ५२ का शेष]

फाल्गुन कृष्णपक्ष में

१ रविवार ता० २१ फरवरी पूर्व, उत्तर
२ सोमवार ता० २२ ,, दक्षिण
३ भौमवार ता० २३ ,, घ० १५ या० दक्षिण, पूर्व,
१० सोमवार ता० १ मार्च उत्तर
१२ बुधवार ता० ३ ,, दक्षिण, पूर्व,
१३ गुरुवार ता० ४ ,, पूर्व

फाल्गुन शुक्लपक्षमें

२ सोमवार ८ मार्च घ० १५ उप० उत्तर पश्चिम
३ भौमवार ९ ,, घ० १४ याव० ,, ,,
६ शुक्रवार १२ ,, घ० १५ उप० दक्षिण, पूर्व,
७ शनिवार १३ ,, घ० १७ या० दक्षिण

चैत्र कृष्णपक्षमें

१ सोमवार ता० २२ मार्च दक्षिण
५ शुक्रवार ता० २६ ,, उत्तर
७ रविवार ता० २८ ,, घ० १० उप० पूर्व, उत्तर
९ भौमवार ता० ३० ,, घ० २० उप० दक्षिण, पूर्व
१० बुधवार ता० ३१ ,, दक्षिण, पूर्व घ० १४ या०
११ गुरुवार ता० १ अप्रैल दक्षिण पूर्व घ० ८ या०

चैत्र शुक्लपक्षमें

२ मङ्गलवार ता० ६ अप्रैल पूर्व
५ शुक्रवार ता० ९ ,, दक्षिण पूर्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षाका भारतीयी-करण

[लेखक—व्याकरणाचार्य श्री पं० मनोहरलालजी शास्त्री गौड़, एम० ए०, एम० ओ० एल०]

शिक्षाके प्रायः दो ही लक्ष्य हो सकते हैं; या तो मनुष्यको सच्चे अर्थमें मनुष्य बनाना या फिर धनोपार्जनके योग्य बनाना। (Man making education and money making education) वर्तमान शिक्षा-प्रणाली दोनो लक्ष्योंमेंसे किसकी पूर्ति कर रही है ? इसकी यदि आलोचना करें तो इसी निश्चय पर पहुँचेंगे कि आजका नवयुवक इस शिक्षासे न तो मनुष्यत्व ही प्राप्त कर सका है और ना ही धन। भले ही मानव अपनी बनाई हुई वर्तमान सभ्यता पर गर्व करे और कहे कि उसकी उपलब्धियां (Achievements) अप्रत्याशित एवं अनवलोकित-पूर्व हैं; किन्तु इस बातसे भी किसी को अस्वीकार न होगा कि वास्तविक सभ्यताके परिणाम या चिह्न दोनों ही आजके मनुष्योंमें नहीं हैं। मानव सभ्यताके फल—पारस्परिक प्रेम, दूसरोंके सुखोंका प्रबन्ध कर अपने सुखोंका विचार करना, अपनेपन को मानवताकी सीमासे सीमित करना आदि आदि हैं। ये बातें मनुष्यमें कितनी मात्रामें हैं ? इसका प्रत्यक्ष प्रमाण वर्तमान युद्ध है। आज एक जातिका बालक दूसरी जातिके बालकके प्राण हरणके लक्ष्यसे वर्कस् शापमें काम कर रहा है; नवयुवक अपना बाहुबल दूसरे नवयुवकको संसारसे मिटानेमें लगा रहा है; वृद्ध अपनी अनुभूतियाँ एवं परिपक्व ज्ञानसे अपनी ही सन्तान को मिटा रहा है। संसारकी जातियोंमें यदि एककी भी मनोकामना भगवान् पूर्ण करदें तो सम्भवतः जगत् मानव-शून्य हो जाय। यह है हमारी शिक्षा द्वारा किया गया मानवताका सर्जन।

अब रहा धनका प्रश्न। इसको यदि हम दूसरे देशोंके दृष्टिकोणसे देखें तो हमें लाभ ही क्या है। दूसरे देशोंके नागरिक अधिकार, परिस्थितियाँ एवं वैज्ञानिक उन्नति भारतसे बहुत भिन्न हैं। इसलिए अपने देशमें धनोपार्जनके योग्य आधुनिक शिक्षा प्राप्त मनुष्य बनता है या नहीं ? यही विचारना है। धनोपार्जनके दो ही साधन हो सकते हैं—सेवा या व्यापार। व्यापार तो बिना धनराशिके चालू कैसे किया जाए। इसलिए निर्धनके लिए एकमात्र साधन सेवा ही रह जाती है। इसमें भी जो उत्तम या मध्यम वर्गके लोग हैं वे प्रतिष्ठित होनेके कारण सेवाकी रिक्तियोंको अपने साधन एवं परिचयके बलसे हथिया लेते हैं। ये लोग यद्यपि धन-राशिको लगाकर व्यापार भी चालू कर सकते हैं और इस प्रकार यदि सेवाकी रिक्तियोंको (Vacancis) निर्धन-वर्गके लिए छोड़ देते तो रोटी कपड़ेकी समस्या किसी सीमा तक सुलझ सकती थी। परन्तु उस वर्गको भी सेवामें ही अपूर्व आनन्द आ रहा है। इसका एक कारण यह भी है कि भारतवर्षमें सेवा सेवाकी भावनासे न होकर शासनकी भावना से होती है। जब धन और शासन दोनों मिलें तो बुरा क्या है। यही कारण है कि आज प्रत्येक विभाग की रिक्तियोंके लिए धनिक-वर्ग भी उतना ही लालायित है जितना निर्धन-वर्ग। इस लिए जहां तक सेवाका प्रश्न है समाजमें "मत्स्य न्याय" चलता है। सबल दुर्बलका बाध कर लेता है।

और भी; जो शिक्षा जातीय गौरव, राष्ट्रिय-प्रेम तथा पूर्वजोंके अवदानोंका विवेचनात्मक अध्ययन करना नहीं सिखाती वह अधूरी ही नहीं, जातीय उत्थानके लिए घातक भी हो सकती है। अपने देशके स्वार्थों पर मर मिटनेकी भावना तभी नवयुवकमें आएगी जब कि उस देशके आचार, सभ्यता एवं साहित्यकी उच्चतामें विश्वास हो। यदि शिक्षा इस विश्वासमें त्रुटि लाती है तो जातीय उन्नतिके भविष्य में बाधा आनेकी आशङ्का पूरी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना ही नहीं, किसी देशकी शिक्षा पर किसी समुदाय या शासन विशेषका प्रभाव न पड़ जाए — इसी लिए ऋषि लोग जङ्गलोंमें रह कर पढ़ाना हितकर समझते थे और राजाओंके उपकारोंमें अपनेको नहीं बांधते थे। शिक्षाका आयोजन निरपेक्ष सुलझे हुए अनुभवी शिक्षितों द्वारा ही होना चाहिये। यदि शासन या समुदाय विशेषने शिक्षाको अपने मनोनुकूल बनानेमें सफलता प्राप्त करली तो वह समुदाय या शासकवर्ग तभी तक उस जातिकी हितकारिणी शिक्षाका आयोजन करेगा जब तक उसके स्वार्थ उस जातिके साथ सम्बद्ध होंगे। जब जातिके स्वार्थ और उस वर्गके स्वार्थ टकराएंगे तभी शिक्षा पर भी प्रभाव पड़ेगा। इस लिए शिक्षा द्वारा सदा होने वाली देश की उन्नतिको तभी सततस्थायिनी बनाया जा सकता है जब कि उसकी आयोजना ऐसे व्यक्ति ही करें जिनके स्वार्थ एवं देशके स्वार्थ कभी भिन्न ही न हो सकें। अर्थात् वे उस देशके रहने वाले हों। समाजमें उत्पन्न हुए दोषों तथा राजनैतिक दुर्व्यवस्थाओंका सुधार भी शिक्षासे ही करना है। शिक्षित मस्तकोंसे ही परिवर्तन लाने वाली क्रान्तियाँ उठा करती हैं। जिस प्रकार अपने रोटी कपड़ेका प्रबन्ध करना एक शिक्षितका कर्त्तव्य है उसी प्रकार अपने पड़ौसियोंके स्वार्थों एवं भूखे नंगे अपने अशिक्षित भाइयोंकी आवश्यकताओं पर आत्माहुति देना भी एक शिक्षित पुरुष ही कर सकता है। ये बातें तभी मनुष्य कर सकेगा जब कि अपने देशकी सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक उथल-पुथलका विवेचनात्मक अध्ययन उसने किया हो और जाना हो कि उसके देशकी उन्नति या अवनतिमें मूल कारण क्या क्या बन चुके हैं। इसके साथ साथ देशकी वर्तमान परिस्थितिका भी उसे क्रियात्मक ज्ञान हो। समाजकी भलाईके लिए उठाए गए अनेकों आन्दोलन इसी कारण असफल होकर सदाके लिए दब गए कि वे समाजके परम्परागत विश्वासों एवं रूढ़ रीतियोंके विरुद्ध पड़े। और यह होता इसी कारण है कि आन्दोलनके सञ्चालनसे पूर्व इसका सन्तुलन नहीं किया जाता।

शिक्षा-कालमें छात्र तथा उसके आचार्योंका रहन-सहन भी इस प्रकारका होना चाहिये कि वह साधारण समाजसे नितान्त भिन्न न हो। विश्वविद्यालयादि शिक्षा केन्द्रोंसे जब उच्च-शिक्षा प्राप्त कर नवयुवक जीवनमें पदार्पण करता है तो अपने सम्पर्कमें आने वालोंमें वह हिलमिल नहीं सकता — यहांके स्वाभाविक जीवनमें सब प्रकारके मनुष्योंके साथ कन्धेसे कन्धा मिला कर चलना पड़ता है। इस जीवनका ज्ञान क्रियात्मक तथा अपने ही कार्योंका फल इसकी अनुभूतियाँ होती हैं; जब कि छात्रजीवन कृत्रिम तथा विचारमय आदर्शोंसे भरा हुआ होता है। अर्थशास्त्र तथा समाजशास्त्रकी थ्यूरियां छात्रके मस्तकमें अवश्य भरी पड़ी हैं; किन्तु वे हैं ऐसे शास्त्रियोंकी बनाई हुई जिनके सामने भारतका भूखा व नंगा किसान कभी नहीं आया और नाहीं वह कभी परतन्त्र देशका नागरिक बना है। वह एक आकाशमें उड़ने वाला पक्षी है जिसको सर्वत्र समतल ही प्रतीत होता है। वह क्या जानता है कि भूमि पर कहां निचाई तथा उंचाई है। ऐसे शास्त्रकारोंके स्वर्णिल-स्वप्नोंको हृदय पर अङ्कित कर जब वास्तविकताकी ओरसे छात्रने आँखें मींचना सीख लिया तब वह भविष्यमें जातिका उपकार करेगा — ऐसा विश्वास किस आधार पर किया जाए? सच तो यह है कि जब ग्रामीण बालक भी विश्वविद्यालयोंकी उच्च शिक्षा प्राप्त कर निकलते हैं तो वे अपने मातृभूमि ग्रामोंको अपने निवासयोग्य नहीं पाते। नगरोंमें रहना उनकी आवश्यकता बन जाता है और कार्यक्षेत्र है ग्रामोंमें।

इस लिए देशकी सबसे बड़ी आवश्यकता आज यह है कि अपने नवयुवकोंकी शिक्षाकी बागडोर समाजको अपने हाथोंमें लेनी चाहिये। भावी भारत का नव-निर्माण वे ही लोग कर सकेंगे जो संस्कृतिमें भारतीय होंगे। और बातोंमें भारतीयता लानेसे पहिले शिक्षाका भारतीयी-करण परमावश्यक है। भारतीय छात्रके सम्मुख भारतीय गौरव-पूर्ण इतिहास हो, भारतका क्रियात्मक अर्थशास्त्र और भार-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रैमासिक महर्घ समर्घ (तेजी मन्दी) विचार

[लेखक—ज्योतिषालङ्कार श्री पं० आनन्दस्वरूपजी दैवज्ञरत्न]

यद्यपि राजनैतिक वातावरण क्षुब्ध होनेके कारण और नित्य प्रति नये २ सरकारकी ओरसे वस्तुओं पर कण्ट्रोल आदिकी गड़बड़के कारण व्यापारिक संसारमें अधिक उथल पुथल और अकथनीय घटनाएँ घटती रहती हैं। तथापि मेरे विचारमें ग्रहोंका तेजी मन्दी का प्रभाव प्रत्येक वस्तु पर अवश्य पड़ता है और उनके अनुसार ही तेजी मन्दीके कारण बनकर घटा-बढ़ी होती रहती है। अब सूक्ष्म रूपमें अपने कुछ विचार पाठकोंके सामने उपस्थित करता हूँ, आशा है इनका आश्रय लेकर विचारपूर्वक कार्य करते हुए व्यापारी जन लाभ उठावेंगे।

रूई

१६ जनवरी ४३ को बन्द बाजारके समय रुई खरीदें यहांसे बाजार तेजीकी ओर चल पड़ेगा और २२ जनवरी ४३ तक २) २॥) की तेजी आजावेगी। २२ जनवरीको बन्द बाजारके समय लिया हुआ माल सैटिल करके फालतू माल बेचना और ३० जनवरी तकके मन्देमें फिर सैटिल करलें। फिर ३१ जनवरी को खुलते बाजार माल खरीद कर ६ फरवरी तकके तेजीके उछालेमें बेचदें और फालतू माल भी बेच लें क्योंकि यहांसे २१ फरवरी तक जोरदार मन्देकी धारणा है और इसमें २) का मन्दा अवश्य आजावेगा। इस मन्देमें बिका हुआ माल सैटिल करके और फालतू माल भी खरीदना चाहिये; यहांसे ६ मार्च तक बाजारमें शनैः शनैः तेजी ३) तक आजावेगी और यह तेजी आखिरी होगी; यहांसे १५ अप्रैल तक बाजारमें जोरदार मन्दी आवेगी। यदि बीचमें कोई तेजीका उछाला भी आवे तो घबरानेकी आवश्यकता नहीं, अपितु उस उछालेमें माल बेचकर मन्देमें सैटिल करके लाभ उठावें।

नोट नं० १—चूंकि गेहूं, चना, बाजरा, मक्की, खाँड आदि पर सरकारी कण्ट्रोल हो गया है इसलिए इन वस्तुओंका मन्दा तेजी लिखना व्यर्थ सा है, क्योंकि समस्त जनताको इससे कुछ लाभ नहीं हो सकता।

नं० २—७ फरवरी ४३ तक जब तक शनि वक्री रहेगा तब तक तिलहनकी सब वस्तुएँ और सब प्रकारकी धातुओंमें तेजीका असर रहेगा। किन्तु ७ फरवरीको शनि मार्गी होने पर एक बार लोहा, तांबा आदि सब धातुकी वस्तु और सब प्रकारकी तिलहनकी वस्तु और बिनौले आदिकी मारकीटोंमें जबरदस्त मन्दा आवेगा। इसलिए व्यापारी वर्गको ७ फरवरीसे पहले तेजीका काम सैटिल करके मन्देका व्यापार करना लाभप्रद रहेगा।

नं० ३—२८ जनवरीसे ३१ मार्च तकके समयमें हैशियन, पाट, धानमें जोरदार तेजी रहेगी।

नं० ४—१ अप्रैलसे १ जून तकके समयमें कालीमिर्च, गेहूँ, चांदी, चावल, जवाहरातमें जोरदार तेजीका असर रहेगा। आगे भगवान् जाने।

तीय संस्कृतिसे अनुस्यूत ही उनका समाज शास्त्र हो। उसके मस्तकमें वे कूटनीतिके विषाक्त परमाणु न प्रविष्ट किए जाएँ जिनसे मानवताका वर्तमान स्वरूप बन गया है। आध्यात्मिक पतन लाने वाली राजनीति आज नहीं तो कल अनुपयुक्त अवश्य होगी। भारत उस विज्ञानको नहीं चाहता जिसकी वृद्धि जन-धन-संहारके साथ साथ ही होती है। उसे वह व्यापारिक कुशलता भी नहीं चाहिए जिससे अधीनस्थ जातियों का शोषण होता है।

"सर्वे भवन्तु सुखिनः" का पाठ उसके पूर्वजोंने दिया है वही वह पुनः पढ़ना चाहता है और उसीका प्रकाश आज उन जातियोंको देना चाहता है जो अन्धकारमें पड़ी हुई या अपनेको प्रकाशमें आई हुई समझती हैं। भारतीय नवयुवककी शिक्षामें ये गुण तभी होंगे जब शिक्षाका सब प्रकारसे सम्यक्तया भारतीयी-करण होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रैमासिक व्यापार-विमर्श (तेजी मन्दी)

[लेखक—श्री पं० विहारीलालजी शर्मा दैवज्ञ]

सौर माघमासका व्यौरा

[ता० १४ जनवरीसे ११ फरवरी पर्यन्त]

इस मासके ग्रह-योगोंकी जांच पड़तालसे ज्ञात होता है कि प्रत्येक वस्तुके भावोंमें दोनों ओरकी घटबढ़ चलेगी। अतः रुई ३०) ४०) टके। शींग-दाणा एरण्डा चांदी २॥) ३), सोना बिनौला १॥) २), अलसी गेहूं १) १।) के लगभग ऊँचे नीचे घर देखेंगे। सम्भव है कि अधिकतर प्रभाव तेजीकी ओर चल पड़े। ऐसे अवसर पर ज्योतिषीका वर-तारा, मौसमकी वास्तविकता, राजकीय प्रकरणकी तारतम्यता आदि सामयिक परिस्थितिका विचार करना व्यापारीका प्रथम कर्तव्य है।

अब हम 'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी व्यापारी वर्गके लाभार्थ अर्ध-साप्ताहिक या साढ़े तीन तीन दिनकी तेज़ी मन्दीका विचार लिखते हैं। पाठक इसका अनुभव करें और लाभ उठावें।

ता० १४ जनवरी प्रातः १० बजेसे (३॥ दिनमें)—अचानक ही उछाला आयेगा; अतः पहले वाले सोदे को लाभ पूर्वक डबल बेचना अच्छा है।

ता० १७ जनवरी दिनके ४ बजेसे (३॥ दिनमें)—रुई ६) १०) टके। चांदी सींगदाणा एरण्डा १) सोना बिनौला ॥) ॥=) अलसी गेहूं ।) घटना मालूम होता है। पीछे बेचाण लिख आये हैं उस सौदेको नफा पूर्वक यहां सुधार लेवें।

ता० २० जनवरी रात १० बजेसे (३¼ दिनमें)—बेलेन्समें माथे (बेचाण) का कोई सौदा खड़ा हो तो यहां मुनाफेसे सुधार लेवें।

ता० २४ जनवरी सवेरे ५ बजेसे (३¼ दिनमें)—धन्दा मन्दीकी लाईनमें जिस पोइण्टसे करना चाहिए उसी प्रकार करिये।

ता० २७ जनवरी दिनके ११ बजेसे (३¼ दिनमें)—अचानक आने वाली तेजीमें पहले ही माल खरीद लेना चाहिए और भाव बढ़नेपर डबल बेच दीजिए।

ता० ३० जनवरी सायङ्काल ७ बजे से (३¼ दिनमें)—मार्कीटमें दुतर्फा घटबढ़ चलेगी। जहां मामूली फेरफार मालूम दे ऐसे मौके पर नजराणा (जोटा) खा जाना अच्छा है।

ता० २ फरवरी रातके ११ बजेसे (३¼ दिनमें)—आई हुई मन्दीमें झटसे माल खरीदना चतुर व्यापारी का काम कहायेगा।

ता० ६ फरवरी सवेरे ७ बजेसे (३॥ दिनमें)—तेजी आवेगी। पहले लिख आए हैं कि वायदा खरीदना ठीक है, उसका यहां नफाके साथ बेचाण करदें।

ता० ६ फरवरी दिनके २ बजेसे (३॥ दिनमें)—रुई व चांदीके भावमें मन्दीका रियक्शन आते भाव सुधरेंगे। व्यापार मारकेटकी चाल देखकर ही करना उचित है।

सौर फाल्गुनमासका व्यौरा

[ता० १२ फरवरीसे १३ मार्च पर्यन्त]

इस मासकी ग्रहगणित देखनेसे ज्ञात होता है कि मन्दीका प्रभाव अधिक चलेगा। दो तीन संयोग ऐसे भी बने हैं कि भाव बढ़ेंगे। इसका खुलासा यह कि रफ्तार जब मन्दी होती है तब आये हुए तेजीके उछाले उतर जाना ही आंकड़ेका द्योतक है। अतएव इस महीनेमें दो तीन उछाले अच्छी तेजीके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आएँगे और रुई १५-२० टके। सोना विनौला ॥।) चांदी मूंगफली एरण्डा १॥) अलसी गेहूँ ।।) के लगभग गरमाई लेते पीछे ड्योढे आंकड़ेमें घट जावें तो आश्चर्य नहीं। तात्पर्य यह कि तेजीके आंकड़े बताये बाद कुछ मन्दीकी सूचना भी दिये देता हूं। ऐसी द्विविध समस्यामें व्यापार बहुत सावधानीसे करना चाहिए।

ता० १२ फरवरी रात ६ बजेसे (३॥ दिनमें)—भाव टिके हुए रहें साधारण घटबढ़ हो। थोड़ी घटबढ़में लोग नजराणा खाया करते हैं, उचित समझें तो आप भी ऐसा करलें।

ता० १६ फरवरी प्रातः ५ बजेसे (३॥ दिनमें)—रुख मन्दीका प्रतीत होता है। अतः व्यापार उतना ही करना जितना सम्भाल सकते हैं।

ता० १६ फरवरी प्रातः १० बजेसे (३॥ दिन में)—भाव दुतर्फा घटबढ़में चलेंगे, आगेके लिए लाईन तेजीकी कह सकते हैं।

ता० २२ फरवरी प्रातः ५ बजेसे (३॥ दिनमें)—रुई १०) १५) टके। चांदी मूंगफली एरण्डा १) १॥) विनौला सोना ॥।) अलसी गेहूँ ।=) के लगभग बढ़ना प्रतीत होता है।

ता० २५ फरवरी रातके १२ बजेसे (३॥ दिनमें)—साधारण घट बढ़ चलते रुख तेजीकी ओर रहेगा।

ता० १ मार्च प्रातः ७ बजेसे (३॥ दिनमें)—चालू तेजीमें मन्दी बापरे। इस समय सौदा मन्दी के टोनसे करना चाहिए।

ता० ४ मार्च दिनके ४ बजेसे (३॥ दिनमें)—घटाबढ़ी होकर रुख मन्दीका प्रतीत होता है। सौदा करना ही है तो मारकेटका टोन देखकर करें।

ता० ७ मार्च रातके ७ बजेसे (३॥ दिनमें)—यदि भाव घट जाय तो माल खरीद लेना अच्छा है। किये गए सौदाको संभालते हुए अवसर आते ही सुधारना न भूलें।

ता० ११ मार्च प्रातः ८ बजेसे (३॥ दिनमें)—पिछली चली आई मन्दीमें खरीद किये गए माल को इस तेज़ीमें नफाके साथ बेचना ठीक है।

सौर चैत्र मास का ब्यौरा

(ता० १४ मार्चसे १३ अप्रैल १९४३ ई० पर्यन्त)

इस मासकी ग्रह गणना यह बताती है कि मासका पहला भाग या पूर्वार्ध प्रायः तेजीमें निकले और रुई २० टका, चान्दी, सींगदाणा, एरण्डा २) २॥, सोना विनौला १) १।), अलसी गेहूँ ।।) ॥=) के लगभग बढ़ेगा। मासके अन्तिम भाग वा उत्तरार्ध में भाव घटता जावे और घटकर टिका रहेगा। सोदा करनेके पहले वस्तुके बायदेकी मिती, समयका वातावरण, ग्रहसंयोग, फिगरिंग लाईन आदि बातोंका पूरा-पूरा ध्यान रखकर धन्दा करना चाहिए।

ता० १४ मार्च दिनके ४ बजेसे (३॥ दिनमें)—तेज़ीकारक ग्रहने अपना तीरकमान संभाला है, मँहगाईका सन्नाटा मालूम देगा। बायदेके सौदागरोंको चाहिए कि आगे अचानक आनेवाली तेजीके पहले ही अपने व्यापारका प्रोग्राम ठीक करलें।

ता० १७ मार्च रातके १२ बजेसे (३॥ दिनमें)—रुई ५-७ टके, चान्दी, मूंगफली, एरण्डा ॥=) ॥।) सोना विनौला ।-) ।≡), अलसी गेहूँ =) ≡) के लगभग बढ़नेका योग प्रतीत होता है।

ता० २१ मार्च प्रातः ६ बजेसे (३॥ दिनमें)—किसी अंशमें भाव यहां स्टेडी होंगे।

ता० २४ मार्च दिनके ५ बजेसे (३॥ दिनमें)—रुई १०) १५) टके, चान्दी, एरण्डा, शींगदाणा १॥) २), सोना विनौला ॥=) ॥।), अलसी गेहूं ।-) ।≡) के लगभग बढ़ना प्रतीत होता है।

ता० २८ मार्च प्रातः ५ बजेसे (३॥ दिनमें)—बढ़े हुए भाव अधिक नहीं टिकेंगे, अनुभव यह पाया गया कि ता० २२ मार्चसे आखीर मार्च तक प्रायः रुईके भाव घटते हैं। व्यापार खूब सावधानी से करें।

ता० ३१ मार्च दिनके ११ बजेसे (३॥ दिनमें)—पिछले दिनों आई हुई तेजीका उफान यहाँ उतर जाएगा। भाव जैसे चढ़े थे वैसे ही यहां उतर जाएँगे। उतरते भावमें बेचाण करना अच्छा है।

(शेष पृष्ठ ६६ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेमन्त !

प्रिय पाठकवृन्द ! शरत्प्रभाके सौन्दर्यका दर्शन आप लोगोंने 'श्रीस्वाध्याय' के शरदङ्क (द्वि० व० प्रथमाङ्क) में कर ही लिया। अब आप इस हेमन्ताङ्कमें हेमन्तके सौन्दर्यको भी अवश्य निहारिये। प्रत्येक वस्तु सुन्दर है, किन्तु उस सुन्दरताका आस्वादन करना सर्वसाधारणके हाथकी बात नहीं। जिस प्रकार पूर्णमासीकी रात्रि सुन्दर है उसी प्रकार अमावास्याकी रात्रि भी सुन्दर होती है। किन्तु दोनोंका सौन्दर्य अलग ही अलग प्रकारका है। सहृदय पुरुष दोनोंमें सौन्दर्य-दर्शन करता है और उसके आनन्दका उपभोग भी करता है। आचार्य वामन काव्यकी उपादेयतामें अलङ्कारको कारण मानते हैं, तथा सौन्दर्यको अलङ्कार कहते हैं। (देखिये अलङ्कारसूत्र— "काव्यं ग्राह्यमलङ्कारात्" "सौन्दर्यमलङ्कारः") उपमा, उत्प्रेक्षा, प्रतीप, रूपक आदिके साथ आलङ्कारिकोंने विषादको भी एक अलङ्कार माना है। सहृदय-जन विषादमें भी सौन्दर्य देखते हैं। शरत्के सौन्दर्य-से हेमन्तका सौन्दर्य अलग है। उसमें भी एक आकर्षकता है, चमत्कार है, सौन्दर्य है, सभी कुछ है। श्रीस्वाध्याय-सदन संस्थाके संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष पूज्यपाद श्री १०८ मान् सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराजने इस हेमन्तके यों दर्शन किये—

एकान्ते यत्प्रभावात्सुचरितमतयस्तां हसन्तीं हसन्तीं
सेवन्तेऽन्तःसुतृप्ता भवसुखविमुखास्तेऽपि सन्तो वनान्ते।
कान्तारे यानचिन्तां दधति गृहिजनास्तान्तचित्ता निशान्तात्
हेमन्तो हन्त कान्ते प्रसरति कुटिलो भारते भारतेऽस्मिन् ॥

किसी कामिनीने अपने प्रियतमसे स्वर्णके आभूषण बनानेके लिए कहा। इस पर उस प्रियतमने अपनी प्यारीसे कहा कि प्यारी ! तू जानती नहीं कि वर्तमान भारतमें चारों ओर हेमन्त ऋतु पसर रही है ! प्रियतम कहता है— हे कान्ते ! मुझे बड़े खेदसे कहना पड़ रहा है कि इस समय किसी समयके कान्तिमान् इस भारतमें कुटिल हेमन्त पसर रहा है। देखो इसकी चालें कैसी टेढ़ी हैं। वनान्तमें एकान्तमें सन्त महात्मा रहते हैं। वे सांसारिक सुखोंसे मुख मोड़ चुके हैं। अन्तरात्मा उनकी तृप्त हो चुकी है। उनका चरित्र और निश्चय अत्यन्त सुन्दर है। किन्तु कान्ते ! देखो इस हेमन्तने उन पर भी कैसा अपना प्रभाव डाल रक्खा है। वे सत्पुरुष भी उस हँसनेवाली हसन्ती (अँगीठी) का सेवन करने लग रहे हैं। दूसरी ओर देखो गृहस्थ लोग जंगलमें चलनेकी धार रहे हैं। हेमन्त (सुवर्णका अभाव) के कारण उनका सारा ही गृहस्थीका कार्यभार रुका जा रहा है, इसीसे उनका चित्त अत्यन्त दुखी हो रहा है। वे घर छोड़नेकी सोच रहे हैं। रात्रिके अन्तमें तड़के ही तड़के घर छोड़ देना विवशतासे चाह रहे हैं। ऐसा कुटिल हेमन्त इस सुन्दर भारतमें चारों ओर पसर रहा है। आचार्य चरणकी यह कितनी सुन्दर सूझ है। 'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी पाठक रस भाव अलङ्कार ध्वनि आदिका स्वयं स्वाध्याय करेंगे। हमने तो इसे सुन्दर सूक्ति समझ कर यहाँ प्रकाशित की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य-रक्षा

[लेखक— श्री स्वामी रघुवीरदासजी ब्रह्मचारी]

[विद्वान् लेखकने जो प्रक्रिया लिखी है इसके सतत अभ्याससे सर्वसाधारण जनताके स्वास्थ्यमें बहुत लाभ हो सकता है। प्रक्रिया शत-प्रतिशत ठीक है, किन्तु इस क्रियाको पहले किसी अनुभवी गुरुके सम्मुख कर लिया जाय तो विशेष अच्छा होगा। क्योंकि केवल लेखके आधार पर कोई बात ठीक समझमें न आनेसे आरम्भमें यदि कोई त्रुटि रह जाय तो लाभकी अपेक्षया हानिकी सम्भावना है, इस कारण आरम्भमें बड़ी सावधानी की आवश्यकता है —सम्पादक]

यह बतानेकी आवश्यकता नहीं कि सांसारिक जीवन-यापन करनेके लिये स्वास्थ्यका कितना प्रयोजन है। स्वास्थ्य ही जीवन है। अर्थात् आधि-व्याधिग्रस्त होकर जो मनुष्य जीवन-यापन करते हैं, वे संसारके सुखोंसे वञ्चित रहकर व्यर्थका जीवन ही व्यतीत करते हैं। क्योंकि स्वस्थ मनुष्य ही मानवोचित अपने कर्तव्यका पालन कर सकता है। इसके विपरीत रुग्ण व्यक्तिके लिये सांसारिक सुख तो क्या उसे अपना शरीर भी भारी हो जाता है, ऐसी दशामें स्वास्थ्य किसको प्रिय न होगा ?

एक तो भारतकी दरिद्रताके कारण पुष्टिकर खाद्य न पानेसे मनुष्य योंही दिनोंदिन निर्बल तथा स्वास्थ्यहीन होते जाते हैं। दूसरे लोग अपने नित्य नैमित्तिक कार्योंकी अवहेलना करके भी अपनेको अत्यन्त निर्बल बनाते हैं। किन्तु अब आप ही सोचें कि आजकल इसकी क्या दशा है ? एक दिन वह समय था, जब हमारे लड़कोंको शिक्षित बनानेके साथ २ व्यायाम आसन आदि शरीर—स्वास्थ्यप्रद विद्याकी शिक्षा दी जाती थी। उस समयके विद्यार्थी आसन आदि योगकी क्रियाओंमें इतने सुदक्ष होते थे, कि रुग्णता उनको छू तक न जाती थी। आज हमारे विद्यार्थियोंमें उन योग क्रियाओंकी छाया तक नहीं दिखलाई देती। हर्ष है कि देशके मनीषियोंका ध्यान इधर आकृष्ट होने लगा है। फलतः स्थान-स्थान पर स्कूल आदि स्थानोंमें व्यायामकी शिक्षा दी जाने लगी है। इस प्रकारकी जो शिक्षा दी जाती है वह पर्याप्त कदापि नहीं कही जा सकती। अच्छा होता, यदि लड़कोंके माता पिता शिक्षा गुरुओं पर निर्भर न रहकर स्वयं आसन प्रक्रिया आदि योग क्रियाकी शिक्षा देने लगते। ये क्रियायें समय तो अवश्य लेती हैं किन्तु बड़ी ही सरल है। इस क्रियाके करनेमें किसीको कठिनाई नहीं मालूम होती है। मैं नीचे कुछ आसन क्रियाका दिग्दर्शन कराता हूँ।

(१) लड़कोंको सवेरे स्नानादिक करके कुछ डण्ड-बैठक कर लेना बहुत आवश्यक है। इसको संख्या क्रमसे १५-२० होनी चाहिये। सर्वप्रथम इस बातका ध्यान रखना चाहिये कि आसन जहाँ किया जाय वह स्थान स्वच्छ सुन्दर हो, क्योंकि दूषित स्थानकी वायुभी दूषित हो जाती है फलतः सांस लेनेमें जो दूषित वायु भीतर जायगी वह लाभकी अपेक्षा हानि ही करेगी।

(२) सबसे पहले जिस ओरसे शुद्ध वायु आती हो उसी ओर मुँह सीधा करके खड़े हो जाइये। शरीरका कोई भाग संकुचित न होने पावे। अपितु शरीरके अंगोंको धीरे धीरे कड़ा कर लेना चाहिये। इसके अनन्तर दोनों हाथ कड़े करके पुट्ठे (जांघ) पर सटा देना उचित है। इसके उपरान्त नाभि—देशको जितना भीतर ले जाया जाय ले जाना चाहिये, साथ ही मुँहको काक-चंचू की भांति बनाकर (अर्थात् मुँहको इस तरह सकोड़ लेना चाहिये जिससे कौएकी चोंचके बराबर हो जाये) नीचे ऊपरकी दांतोंसे जिह्वाके अग्र भागको दबाकर सांस लें जहां तक ले सके। जब थक जांय, तो थोड़ी देर तक सांस लेना बन्द कर दें। इसके पश्चात् एकाएक मुंह फैलाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़ोरसे हवा मुंहसे छोड़ें। कमसे कम इस प्रकारकी क्रिया नित्य चार-पांच बार करनी चाहिये।

(३) ऊपरकी क्रिया कर लेनेके उपरान्त फिर दूसरी क्रिया करना चाहिये। यह इस प्रकार करना उचित है। पहली क्रियामें जिह्वाके अग्रभागको जिस प्रकार दांतोंसे दबाते हैं दबा लीजिये, फिर सांस लीजिये, सांस लेते समय एक प्रकारका जल मुंहमें सञ्चय होता है। उस जलको पी जाइये। किन्तु इस बातका पूरा ध्यान रहना चाहिये कि यह क्रिया करते समय मुँह दुर्गन्धित न रहे। यह क्रिया यदि आप खड़े होकर न करना चाहें तो बैठकर ही कर सकते हैं। परन्तु स्थान कोई बाग या किसी जलाशयका किनारा हो तो बहुत ही उत्तम है। आप छत पर भी बैठकर शुद्ध वायुमें कर सकते हैं। किन्तु ऐसे खेतके किनारे न करें जिस खेतमें हरी फसल खड़ी हो। क्योंकि इस फसलसे एक प्रकारकी गैस निकलती है, जिससे इस क्रियामें हानि पहुँचती है।

इन दो क्रियाओंमें उपर्युक्त क्रियासे फेफड़ा तथा पेटका विकार नष्ट होगा तथा जीवनी शक्ति-बढ़ेगी। फिर स्मरण शक्तिकी वृद्धि और मस्तिष्कमें सरसता आती है। आपको ज्ञात होना चाहिए कि जिह्वाके अग्रभागमें अमृतका बास है। दांतोंके दबानेसे जिह्वासे जो जल मुंहमें आता है, वह जल जल नहीं, अमृत है। अतः अब आपको बताना न होगा कि अमृत पेटमें जाकर क्या काम कर सकता है। ये क्रियाएँ स्त्री-पुरुष दोनोंके लिये समान गुणकारिणी हैं। इस क्रियाके करते रहने पर रोगी होनेकी आशङ्का एक प्रकार मिट-सी जाती है तथा स्वास्थ्य दिनोंदिन सुधरता जायगा। लगातार तीन महीने तक आप इन क्रियाओं को करें तो आपका स्वास्थ्य बहुत कुछ सुधर जायगा।

होलिकोत्सव

[कवयिता—श्री सिद्धगोपालजी]

ऋतुराज वसन्त विराज रहा,
मनभावन है छवि छाज रहा।
बन बागनमें कुसुमावलिकी,
सुखदा-सुषमा वह साज रहा॥

यव गेहूं चना सरसों अलसी,
सब ही पक आज अनाज रहा।
यह देख मनोहर दृश्य सभी,
अति हर्षित होय समाज रहा॥

उपलक्ष्य इसे करके जगमें
शुभ होलक उत्सव हैं करते।
अधपक्व यवाहुति दे करके,
सब व्योम सुगन्धसे हैं भरते।

सब सज्जन-वृन्द अतः जगमें,
नव-सस्य-सुयज्ञ इसे कहते।
कुल वैर-विसार सनेह सने,
हुलसे सब आपस में मिलते॥

वर पान इलायचि भेंट करें,
निज मित्र समादर हैं करते।
हृदयङ्गम गायन वादनसे,
मुदसे सब हैं मनको हरते।

(६३ पृष्ठका शेष)

ता० ३ अप्रैल रात्रि ८ बजेसे (३॥ दिनमें)—मन्दी जा रही है तेजी आ रही है। आगे आंकड़े अच्छे रूपमें बढ़ते प्रतीत होते हैं। व्यापार समयका टोन देखकर करियेगा।

ता० ७ अप्रैल प्रातः ६ बजेसे (३॥ दिनमें)—बाजारमें तेजी-मन्दी दोनों चले। यदि सौदा खड़ा है तो नया वायदामें बदला करलें, क्योंकि आगे तेजी की आशा है।

ता० १० अप्रैल सायंकाल ६ बजेसे (३॥ दिनमें)—बाजारमें घटाबढ़ी चलकर रुख तेजी की ओर अधिक रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसन्तोत्सव कैसे मनाया जाय ?

[लेखक—श्री पं० बनारसीदासजी चतुर्वेदी भू० पू० सम्पादक 'विशाल-भारत']

[यह लेख फरवरी सन् १९३१ में लिखा गया था। इसमें हिन्दी साहित्य-सेवियोंसे जो प्रार्थना की गई है उसे दुहरानेकी आवश्यकता है। यदि भिन्न भिन्न जनपद इस सांस्कृतिक योजनाको अपना लें तो आगामी वसन्त हमारे लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है। दुर्भाग्यकी बात है कि इस लेखमें वर्णित अनेक वयोवृद्ध साहित्यिक विद्वान् अब इस संसारमें नहीं हैं। —सम्पादक]

जब किसी जातिमें क्रियात्मक कल्पना-शक्ति (Creative imagination) का अभाव हो जाता है, तो वह अपने प्राचीन गौरवका गान करने और पुराने रीति (प्रथाओं) का निर्जीव नाट्य करनेमें ही अपने जीवनको सार्थक समझने लगती है। बाह्य आडम्बरोंकी रक्षाको वह अधिक आवश्यक समझती है और आन्तरिक भावनाको उपेक्षाकी दृष्टिसे देखती है। यदि इस कथनके लिए दृष्टान्त चाहिए तो हमारे उत्सवोंको देख लीजिए। इन उत्सवोंके मनानेकी विधिके भद्देपनको देखकर यही प्रतीत होता है कि हम लोग सचमुच 'साहित्य-सङ्गीत-कला-विहीन' हो गए हैं। हम लोगोंमें कुछ-न-कुछ श्रद्धा अवश्य है, पर हम उसे उचित-रूपसे प्रकट नहीं कर सकते। देशके भिन्न-भिन्न स्थानोंमें वसन्तोत्सव मनाए जाते हैं, और थोड़ा-बहुत पैसा भी व्यय किया जाता है। यदि इसे ढङ्गके साथ मनाया जाय, तो संस्कृतिकी दृष्टिसे यह उत्सव अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बन सकता है। आवश्यकता इस बातकी है कि इस उत्सवके मनाने की विधिमें साहित्य सङ्गीत और कलाका यथोचित समावेश किया जाय। इसी उद्देश्यसे यहाँ एक कार्य-क्रम उपस्थित किया जाता है।

सबसे पहली बात तो यह है कि वसन्तोत्सव नगरके कोलाहलसे दूर किसी उपवनमें मनाया जाय। नाना प्रकारके ऊधमोंके बीच नगरकी धुआँधार गन्दी गलियोंमें वसन्तोत्सव मनाना वसन्तका उपहास उड़ाना और अपनेको हास्यास्पद बनाना है। यदि वसन्त मनाना है, तो किसी उपवनमें चलिए, जहाँ आम्रमञ्जरी आपको निमन्त्रण दे रही है, वृक्षोंकी नवीन कोंपल नवजीवनका सन्देश सुना रही है और सुन्दर सुगन्धित पुष्प आपके हृदयको प्रफुल्लित करने की बाट जोह रहे हैं। अभी उस दिन हम एक जापानी पत्र (ओसाका असाही) का अंग्रेजी विशेषाङ्क देख रहे थे। उसमें जापानियोंके प्राकृतिक सौन्दर्य-प्रेमका वृत्तान्त पढ़कर आश्चर्य हुआ। सुनिये, जापानी लोग वसन्तमें क्या करते हैं—

"The viewing of cherry blossoms in spring makes an annual event in the life of Japanese. The first cherry viewing party ever recorded was in the third year of Konin (812), when the emperor Saga reigned. Afterwards it became popular with all classes of people. Now-a-days the appreciation and protection of cherry blossoms is in large measure due to the work of Cherry Tree Society, first sponsored by Marquis Yorimichi-Tokugawa in 1912. The members of this society are engaged in the study of the cherry from the scientific and literary points of view and publish the results of their study in an organ called 'The Cherry'. As is widely known, the cherry tree and its blossoms have very often furnished the inspiration for lite-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

rature and the fine arts in this country."

अर्थात्—'जब चेरी-पुष्पोंके खिलनेका समय आता है; तो वसन्तऋतुमें उन्हें देखनेके लिए सहस्रों ही आदमी जाया करते हैं। यह वसन्त-यात्रा जापानी जीवनकी एक उल्लेख योग्य वार्षिक घटना हुआ करती है। जहाँ तक इतिहाससे पता चलता है, पहले पहल सन् ८१२ में सम्राट सगके राज्यमें इस यात्राका प्रारम्भ हुआ था। इसके बाद इस प्रकारकी यात्राएँ सम्पूर्ण जनतामें लोकप्रिय होगईं। सन् १९१२ में मार्क्विस योरीमीची तोकूगावाके प्रोत्साहनसे जापान में एक 'चेरी तरु समिति' (Cherry Tree Society) की स्थापना हुई थी। इस समितिके सदस्य वैज्ञानिक तथा साहित्यिक दृष्टिसे चेरी-वृक्ष तथा चेरी-पुष्पका अध्ययन करते हैं और अपने अध्ययन के परिणाम 'चेरी' नामक पत्रमें प्रकाशित करते हैं। यह बात प्रसिद्ध ही है कि चेरी-वृक्ष तथा चेरी-पुष्पोंसे जापानके साहित्य और ललित कलाओंको बहुत कुछ प्रेरणा मिली है।"

क्या ही अच्छा हो, यदि हम लोग भी अपने नवयुवकोंके हृदयमें इसी प्रकारका सौन्दर्य-प्रेम उत्पन्न करें।

वसन्तोत्सवका कार्यक्रम

वसन्तोत्सवके कार्यक्रमको हम कई विभागमें बांट सकते हैं—

(१) वसन्त-पञ्चमीके दिन किसी उपवनमें कवि-सम्मेलन, सङ्गीत तथा खेल-कूद इत्यादि द्वारा मनोरञ्जन।

(२) साहित्यिक यात्रा—किसी प्राचीन साहित्य-सेवीकी जन्मभूमि अथवा अन्य किसी विशेष स्थान की यात्रा।

(३) अधिकारी विद्वानों द्वारा भिन्न-भिन्न विषयों पर व्याख्यान—उदाहरणार्थ, कला, सङ्गीत, इतिहास इत्यादिके विषयमें भाषण।

वसन्तोत्सवको हम लोग इतना उपयोगी और मनोरञ्जक बना सकते हैं कि इसके द्वारा हिन्दी-भाषा-भाषी जनताकी रुचिका बहुत कुछ विकाश हो सकता है। यदि इस कार्यको संगठित रूपसे किया जाय तो सम्पूर्ण हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तोंमें अद्भुत जाग्रति उत्पन्न हो सकती है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन जैसी अखिल भारतीय संस्था यदि चाहे, तो वसन्त-व्याख्यान-मालाको अत्यन्त उपयोगी बना सकती है। भिन्न-भिन्न स्थानोंमें हिन्दी के धुरन्धर विद्वानोंके भाषणोंका प्रबन्ध कराना असम्भव कार्य न होगा। इतिहासके विषयको ही लीजिए। यदि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन चाहे, तो वह पूज्य पं० गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा, श्री काशीप्रसाद जायसवाल, डाक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी, डाक्टर ईश्वरीप्रसाद, डाक्टर बेनीप्रसाद इत्यादिके भाषणोंका प्रबन्ध आगरा, प्रयाग, काशी, पटना, कलकत्ता इत्यादि स्थानोंमें करा सकता है। इसी प्रकार कला-विषयक भाषण भी श्रीमुकुन्दीलाल बैरिस्टर, श्री रायकृष्णदास, श्रीपूरणचन्द नाहर तथा श्रीअर्द्धेन्दु-कुमार गाङ्गुली इत्यादि द्वारा कराए जा सकते हैं। प्राचीन कालके विशाल भारत (Greater India) अर्थात् यव-द्वीप, सुमात्रा, कम्बोज, मलय-द्वीप इत्यादि की संस्कृतिके विषयमें डाक्टर कालीदास नाग तथा डाक्टर सुनीतिकुमार चटर्जीके भाषणोंसे हिन्दी-जनताका बहुत-कुछ मनोरञ्जन तथा ज्ञानवर्द्धन हो सकता है। बङ्गला, गुजराती, मराठी, तैमिल, तेलगू, कनाड़ी इत्यादि भाषाओंके साहित्यके विषयमें भी भाषण दिलाना लाभदायक होगा। जब हमारी भाषाको राष्ट्र-भाषाका पद मिल रहा है, तो हमारा कर्तव्य है कि अन्य प्रान्तीय भाषाओंमें जो कुछ अच्छा है, उसे ग्रहण करनेका प्रयत्न करें और अपनी सेवाओं द्वारा उनकी भी वृद्धिमें सहायक हों। हमने सुना है कि वसन्त-व्याख्यान-मालाका प्रबन्ध महाराष्ट्रमें कितने ही वर्षोंसे किया जाता है। उसे ग्रहणकर हम और भी व्यापक रूप दे सकते हैं। कवीन्द्र रवीन्द्रके शान्ति-निकेतनमें वर्षोत्सव, शरदोत्सव और वसन्तोत्सव मनाये जाते हैं। क्यों न हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग एक बार चलकर इन उत्सवोंको देखें, और उनमें जो कुछ अच्छा हो, उसे ग्रहण करनेका प्रयत्न करें।

अमेरिकामें साधारण जनताके लाभार्थ चाटाकुआ शिक्षा-पद्धति प्रचलित है। वह पत्र-व्यवहार द्वारा, स्थान-स्थान पर ग्रीष्म-विद्यालय खोलकर तथा भ्रमणशील समितियोंके द्वारा अमेरिकामें शिक्षा-प्रचार करती है। प्रसङ्गवश हम उसकी भ्रमणशील समितियोंका संक्षिप्त वृत्तान्त यहाँ देना उचित समझते हैं।

जनतामें शिक्षा-प्रचारके अतिरिक्त चाटाकुआ-सप्ताहकी प्रथा भी बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। सबसे प्रथम वर्षके दस दिनों तक होने वाले सम्मेलन की प्रथाको अधिक उपयोगी और अधिक लाभप्रद बनानेके लिए इस संस्थाके सञ्चालकोंने चाटाकुआ भ्रमणशील समितियों (Chatanqua circuits) की स्थापना की। इस समय ऐसी समितियोंकी संख्या ८७०० तक पहुँच गई है। यह समितियाँ संयुक्त-राष्ट्र अमेरिकाके भिन्न-भिन्न नगरोंमें खोली गई हैं। इन समितियोंने जनतामें शिक्षा फैलानेमें बहुत बड़ा भाग लिया है। प्रत्येक समिति वर्षमें आसपासके छः नगरोंमें एक ही तारीखमें चाटाकुआ-सप्ताहका समारोह करती हैं। इस समारोहके लिए प्रत्येक नगर में एक विशाल मण्डप बनाया जाता है, जिसे बहुत अच्छी प्रकार सुसज्जित किया जाता है। प्रतिदिनकी कार्यवाही विशेष मनोरञ्जक और शिक्षाप्रद बनाई जाती है। सवेरे कई विषयों पर विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान कराये जाते हैं। दोपहरके बाद सङ्गीत और वाद्यादि तथा रातको नाटक, प्रहसन, भिन्न-भिन्न खेल अथवा बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों और प्रसिद्ध पुरुषोंके विविध विषयोंपर उपयोगी भाषण होते हैं। एक वक्ता एक नगरमें पहले दिन भाषण देकर दूसरे नगरमें चला जाता है, और वहाँ भाषण देकर तीसरे नगरमें चला जाता है। इस प्रकार कुछ कार्यकर्ता ही छः नगरोंमें सप्ताह-समारोह मनानेके लिए पर्याप्त होते हैं।

चाटाकुआमें व्याख्यान देनेके लिए अपने-अपने विषयके प्रामाणिक विद्वानों, योग्य वक्ताओं और उत्तम प्रचारकोंको निमन्त्रित किया जाता है। केवल अमेरिकाके ही नहीं यूरोपके विद्वान् भी यहाँ व्याख्यान देनेके लिए बुलाए जाते हैं। बड़े-बड़े विद्वान् यहाँ व्याख्यान देनेमें अपना सम्मान समझते हैं। केवल उत्तम वक्ता और योग्य विद्वान ही नहीं उत्तम नाटक और अभिनय, प्रहसन आदिमें अत्यन्त प्रवीण पुरुषोंको भी निमन्त्रित किया जाता है। वहाँ एक पुरुष एक सत्र (सेशन) में ऐसे अच्छे-से-अच्छे अभिनय, गान और भिन्न-भिन्न वाद्य सुन सकता है, जिनकी उसने पहले कभी कल्पना भी न की होगी। सुप्रसिद्ध पहलवान आकर वहाँ लोगोंको विविध प्रकारके व्यायाम आदि भी सिखाते हैं।

यह एक ऐसी संस्था है—ऐसा शिक्षण-क्रम है—जिससे जनताकी बौद्धिक और नैतिक उन्नति की जा सकती है। प्रसिद्ध अमेरिकन रुजवेल्टने इस अपूर्व शिक्षण-पद्धतिके लिए कहा था कि अमेरिकामें सबसे अधिक अमेरिकन वस्तु यही है। यह एक व्यावहारिक (प्रैक्टीकल) पद्धति है। शिक्षा-जगतमें इसने क्रान्ति कर दी है। आज अमेरिका ही नहीं, यूरोपमें भी इस पद्धतिका पर्याप्त अनुकरण हुआ है।"

यदि ध्यान-पूर्वक देखा जाय, तो हिन्दी-भाषा-भाषियोंमें ऐसे विद्वान् विद्यमान हैं, जिनके कारण हम प्रान्तीय भाषा भाषियोंके सम्मुख अपना मस्तक ऊँचा कर सकते हैं। बस, कमी हमारे यहां है तो यही कि शिक्षा और संस्कृतिके दृष्टिकोणसे हिन्दी वाले अन्य भाषा-भाषियोंसे बहुत पीछे हैं। इस कमीको दूर करनेके लिए ही उपर्युक्त कार्यक्रम रखा गया है। वाद-विवादके बाद इसमें बहुत-कुछ घटा-बढ़ी हो सकती है। सम्मेलनके आगामी अधिवेशनमें यह कार्यक्रम हिन्दी-जनताके सम्मुख रखा जायगा, और हमें पूर्ण विश्वास है कि सम्मेलन इसे स्वीकार कर लेगा। पर हमें उसकी स्वीकृति या अस्वीकृतिकी विशेष चिन्ता नहीं है, क्योंकि हम धैर्य-पूर्वक प्रतीक्षा कर सकते हैं और जब तक यह कार्यक्रम सम्मेलन द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वीकृत होकर कार्य-रूपमें परिणत न होने लगे, तब तक निरन्तर आन्दोलन करते रहेंगे। नागरी-प्रचारिणी-सभा काशी, मध्यभारत हिन्दी-साहित्य-समिति इन्दौर, नागरी-प्रचारिणी-सभा आगरा इत्यादि संस्थाएँ. इस दिशामें बहुत-कुछ कार्य कर सकती हैं। यदि सम्मेलन इस कार्यको न भी अपनावे, तब भी ना० प्र० सभा काशी इत्यादिको इसे अवश्य अपनाना चाहिए। हमारा दृढ़ विश्वास है कि जो संस्था इसको अपनावेगी, वह जनताका हित करनेके साथ-साथ अपना प्रभाव भी व्यापक बना सकेगी।

सन् १९३५ में वसन्तोत्सव कैसे मनाया जायगा, इसके स्वप्न हम अभीसे देख रहे हैं। वसन्त-पञ्चमी आने वाली है। सम्मेलनने अपनी सम्बद्ध संस्थाओं को आदेश दे दिया है कि वसन्तोत्सव एक निश्चित कार्यक्रमके अनुसार मनाया जाय। आगरेकी नागरी-प्रचारिणी-सभाने सूरदासके निवास स्थान रुनकुता (रुक्मिणी-क्षेत्र) तथा स्वर्गीय सत्यनारायणके निवास-स्थान धांधूपुराकी यात्राओंका निश्चय कर लिया है। साप्ताहिक व्याख्यानोंका प्रबन्ध हो गया है। श्रीमया-शङ्कर याज्ञिक ब्रजभाषाके प्राचीन कवियोंके विषयमें अपने अन्वेषणका वृत्तान्त सुनावेंगे। लल्लूलालजी, राजा लक्ष्मणसिंह, श्रीधर पाठक, सत्यनारायण, कविवर नजीर इत्यादिके विषयमें निबन्धोंका पाठ होगा। कवि-सम्मेलन तथा मुशायरेका भी प्रबन्ध किया गया है। उधर ब्रज-मण्डलवाले भला कब किसीसे पीछे रह सकते हैं। वर्तमान कालमें ब्रज-भाषाके सर्वश्रेष्ठ कवि जगन्नाथदास 'रत्नाकर' को उन्होंने अपने अधिवेशनका सभापति निर्वाचित किया है। अष्टछापके कवियोंके विषयमें निबन्धोंका पाठ हो रहा है। श्रीजवाहरलाल चतुर्वेदी द्वारा संग्रहीत नन्ददास ग्रन्थावलीकी एक हजार प्रतियां हाथों-हाथ बिक गईं। कविवर रत्नाकरजीके आग्रहसे पं० पद्मसिंहको भी बिहारीलालके विषयमें अपना निबन्ध पढ़ना पड़ा। इसके बाद कविवर सोमनाथके विषयमें याज्ञिक बन्धुओंके निबन्धका पाठ हुआ। प्राचीन ब्रजभाषा-साहित्यके प्रकाशनके विषयमें एक व्याव-हारिक योजना बनाई गई।

श्रीकालिदासजी कपूर लखनऊसे अपने विद्या-र्थियोंको लेकर मलूकदासके जन्मस्थानकी यात्राके लिए निकल पड़े हैं। गोरखपुरके साहित्य-सेवियोंने तो श्रीहनुमानप्रसाद पोद्दारके प्रबन्धमें भगवान् बुद्धके जन्मस्थान, निर्वाणस्थान तथा कबीरके जन्मस्थानकी यात्राओंका प्रबन्ध कर लिया है। मध्यभारत हिन्दी-साहित्यके उत्साही मन्त्री रा० ब० डा० सरजूप्रसादने इस साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्यमें अपनी सारी शक्ति लगा दी है। श्रीकृष्णबलदेव वर्मा भला बुन्देल-खण्डको क्यों पिछड़ने देंगे? श्रीरायकृष्णदासके उत्साहसे तथा कला-भवनके कारण नागरी-प्रचारिणी-सभाका कार्यक्रम सबसे अधिक मनोरञ्जक रहा और कलकत्तेवालोंने तो कमाल कर दिया। शान्ति-निकेतन की यात्रा की गई। महाबोधि सोसाइटीके सुरम्य भवनमें प्रति सप्ताह व्याख्यानोंका प्रबन्ध किया गया। कला, साहित्य, इतिहास, इत्यादि विषयों पर सचित्र व्याख्यान हुए। भिन्न-भिन्न पत्रोंने अपने विशेषाङ्क निकाले, 'विशाल-भारत' का कला-अङ्क बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित हुआ। देशके भिन्न-भिन्न स्थानोंमें इसी प्रकार बड़ी शानके साथ वसन्तोत्सव मनाये गए और उनके वृत्तान्त समाचार-पत्रोंमें छपे। लोग कहने लगे कि भाई, वसन्तोत्सव तो अबकी बार मनाया गया है।

सम्भव है कि हमारे निराशावादी आलोचकगण कहें कि इस प्रकारके व्यर्थ-स्वप्न देखनेसे क्या लाभ? अभीसे १९३५ की वसन्त-चर्चा क्यों चला रहे हो? हमारा उनसे यही नम्र निवेदन है कि यदि हमारे यहाँ दो-चार कल्पनाशील और परिश्रमी कार्यकर्ता हों और वे हिन्दी-भाषा-भाषी जनताकी सांस्कृतिक जाग्रतिको अपने जीवनका ध्येय बना लें, तो बजाय सन् १९३५ के सन् १९३२ में ही उपर्युक्त स्वप्नका अधिकांश सत्य सिद्ध हो सकता है।

कलकत्तेमें भागीरथीके निकट एक उपवनके बीच में बैठे हुए यह दिवा स्वप्न देख रहा हूँ। वसन्तऋतु आगई है। नाना प्रकारके पुष्प खिले हुए हैं। आम बौरा गए हैं, कोयल-कीर गान कर रहे हैं। शीतल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वासन्ती आषाढी (नवसस्येष्टि) होलिका

[लेखक—श्री अवनीन्द्रकुमारजी विद्यालङ्कार]

होली भारतका प्राचीन और अखिल-भारतीय पर्व है। एक ई० पू० विक्रमादित्यके समय यह 'वसन्तोत्सव' के नामसे मनाया जाता था। श्री हर्ष ने 'रत्नावलि' और कालिदासने 'अभिज्ञान शाकुन्तल' में इसका उल्लेख किया है। कामसूत्रके प्रणेता वात्स्यायनका काल ७ ई० पू० है। अतः होलीका उत्सव २५०० वर्षसे भी अधिक पुराना है यह असन्दिग्ध है। वैदिक कालमें यह उत्सव मनाया जाता था या नहीं; यह नहीं कहा जा सकता। किन्तु फाल्गुनका मास उत्सव और हर्षका होता था, यह असन्दिग्ध है। क्योंकि ऋग्वेदके सूर्यासूक्तमें हम पाते हैं—"माघेषु गावो हन्यन्ते फाल्गुने च उह्यन्ते" माघमें वाग्दान होता है और फाल्गुनमें विवाह होता है।

स्मृतिकालमें हम आर्योंको निम्न पर्व मनाते हुए पाते हैं— पार्वण, श्रावणी, आश्वयुजी, आग्रहायणी, अष्टका और चैत्री। इनको गृह्य-धर्म अथवा पाक-यज्ञ बताया है। होलीने चैत्रका स्थान लिया 'जोकि वर्षकी आन्तिम रीति थी और जिसमें कि इन्द्र, अग्नि, रुद्र और नक्षत्रोंकी पूजा की जाती थी, यह कहना कठिन है। चैत्री चैत्रकी पूर्णिमा को होती थी और होली फाल्गुनकी पूर्णिमाको होती है। एक मासका पूर्वापर अन्तर है। इसलिए यदि प्राचीन कालकी चैत्री ही होलीमें परिवर्तित हो गई हो तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। अल्बेरूनीने लिखा है कि भारतमें वर्ष चैत्रसे आरम्भ होता है। इसके ग्यारहवें दिन हिन्दु 'हिण्डोला चैत्र' मनाते हैं। इस अवसर पर पलनेमें कृष्णकी मूर्त्ति रक्खी जाती है और उसको झुलाया जाता है। तथा उसपर रंग भी फेंकते हैं। यह उत्सव पूर्णिमाको समाप्त होता है। होली पर आज भी बङ्गालमें 'डोल-लीला' या 'डोल-जात्रा' होती है। अतः चैत्रीका होलीमें बदलना असम्भव न होगा। होलीका वर्णन पूर्व मीमांसाके लेखक जैमिनीजीने अपने ग्रन्थमें किया है। बिहारमें आजकल भी फगुआका त्यौहार फाल्गुन पूर्णिमासे आरम्भ होकर चैत्र पूर्णिमाको समाप्त होता है।

वसन्त-पञ्चमी पर वसन्तका आगमन होता है। होली पर वसन्त अपने यौवन पर होता है। इस समय आषाढ़ी शस्य (साढ़ी) खेतोंमें खड़ी होती है। यही रबीकी फसल कहलाती है और यह भारत में सर्व श्रेष्ठ फसल मानी जाती है। भारतमें अकाल पड़ने पर भी साढ़ीकी फसल बहुत थोड़ी मारी जाती है। इसलिए जीवनाधार सर्वपालक शस्यको पाकर किसान वर्गका प्रसन्न होना और उत्सव मनाना स्वाभाविक ही है। यूरोपमें भी किसान इस अवसर पर आमोद प्रमोद मनाते हैं। रूसके किसान फसल कटने पर इष्ट मित्रोंको मदिरा और पक्वान्नसे परि-तृप्त करके उत्सव मनाते हैं। सेण्ट वेलण्टाइनका दिन और इंगलैण्डमें पोलका उत्सव इसी प्रकारसे मनाया जाता है। प्राचीन कालमें एंग्लो-सैक्सन जनवरीको नववर्षका उत्सव होलीके समान आग जलाकर मनाते थे। आजकल भी कुछ देशोंमें क्रिसमस और नववर्ष पर आग जलाते हैं। रोमन

मन्द-सुगन्ध पवन चल रही है। प्रकृतिमें नव-जीवन का संचार हो गया है! ऐसे शुभ अवसरपर निराशा-वादी आलोचकोंकी एक बात नहीं सुननी चाहिए। यदि आज नहीं, तो फिर कभी यह मधुर स्वप्न सत्य हो जायगा, क्योंकि—

"कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग भी फरवरी मासमें भारतीयोंके समान सतुरनालिया मनाते थे। डियोनीसियस उत्सव भी होली की भांतिका था।

अन्न सस्येष्टि

प्राचीनकालमें मनुष्य प्रकृति-पूजक था। वह प्रकृतिसे प्रेरणा और शक्ति पाता था। वसन्तमें प्रकृति उल्लसित, जीवनपूर्ण और मदभरी होती है। वनोपवनोंमें नवविकसित कुसुमोंकी बहार आई होती है और खेतोंमें पके जौ और गेहूँ शस्योंकी सुनहरी सरिता तरङ्गित हो रही होती है। यदि ऐसे समय किसान आनन्दमें विभोर होकर अपने इष्टदेव को अर्घ्य प्रदान करे, उसकी पूजा करे तो क्या आश्चर्य !! अग्नि आर्योंकी पूज्य देवी है। भगवान् कृष्णने गीतामें कहा है—

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः।
प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्॥

आर्य जहाँ गए अपने साथ अग्निको ले गए। इसलिये इस समय अग्निकी हविष्से किसानका पूजा करना स्वाभाविक है।

गोभिलगृह्यसूत्र (३ प्र० ७ ख० ७—२४ सू०)
पारस्करगृह्यसूत्र (२ का० १७ का० १—८ सू०)
आपस्तम्बीयगृह्यसूत्र (ख० १६) मानवगृह्यसूत्र (३ खं०) में इस अवसर पर अन्न सस्येष्टि यज्ञ करनेका विधान है। मनु महाराजने भी लिखा है:—

सस्यान्ते नवसस्येष्ट्या तथर्त्वन्ते द्विजोऽध्वरैः॥
(अ० ४ श्लो० २६

भारतीय किसान देवताओंकी पूजा किये विना नवान्नका सेवन नहीं करता। उसको आज भी वह अछूता मानता है। यह श्रुति उसके रोमरोममें रमी हुई है:—

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति यः—
केवलादी॥ (ऋ० १०।११७।६)

मनुने इसको इस प्रकार कहा है:—

अघं स केवलं भुङ्क्ते यः पचत्यात्मकारणात्।
यज्ञशिष्टाशनं ह्येतत्सतामन्नं विधीयते॥
(म० ३ अ० ११८ श्लो०)

हिन्दुओंके सब पर्वोंमेंसे होलीका त्योहार ही सामूहिक है। आमोद-प्रमोद अकेला मनुष्य मना भी नहीं सकता। यही कारण है कि आज भी प्रत्येक ग्राममें होली जलाई जाती है और प्रत्येक घर से उपले (कण्डे) लकड़ी आदि खोजकर इकट्ठीकी जाती है। किन्तु प्राचीन कालमें दीखता है कि उपले और लकड़ी ही इस अवसर पर नहीं जलाई जाती थी, अपितु प्रत्येक घर अपने अपने यहाँसे जौ आदि आहवनीय पदार्थ लाकर चढ़ाता था। आज भी जौकी वालोंको भूननेके रूपमें उसका अवशेष पाया जाता है।

होलक

संस्कृतमें अग्निमें भूने हुए अर्द्ध-पक्व अन्नको 'होलक' कहते हैं। यथा:—

तृणाग्निभ्रष्टार्द्धपक्वशमीधान्यं होलकः।
होला इति हिन्दीभाषा॥ (शब्दकल्पद्रुमकोष)

भाव प्रकाशमें होलाके गुण इस प्रकार वर्णित हैं:—

अर्द्धपक्वशमीधान्यैस्तृणभ्रष्टैश्च होलकः।
होलकोऽल्पानिलो मेदःकफदोषश्रमापहः॥
भवेद् यो होलको यस्य स तत्तद्गुणो भवेत्।

होला कफ चर्बी और श्रमको दूर करने वाला बताया गया है। प्रो० भवानीप्रसादका मत है कि "पहिले तृणाग्निमें भूने आषाढ़ीके प्रत्येक अन्नके लिए 'होलक' प्रयुक्त होता था, किन्तु पीछेसे वह शमी धान्यों (फलीयुक्त) के लिये ही रूढ़ होगया था। हिन्दीमें प्रचलित होला शब्द इसीका अपभ्रंश है। आसाढ़ी नवान्नेष्टिमें नवागत अधपके यवोंके होमनेके कारण उसको 'होलकोत्सव' कहते थे। उसमें होलक या होले हुतशेष रूपसे भक्षण किए जाते थे और उनके सत्तूका प्रयोग भी इसी पर्वमें प्रारम्भ होता था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रो० भवानीप्रसादकी पिछली बातसे हम सहमत नहीं कि—"सत्तूका प्रयोग इसी पर्वमें आरम्भ होता था"। क्योंकि इसके पश्चात् 'सतवानी' का उत्सव १ वैशाखको मनाया जाता है प्रोफेसर साहब मानते हैं कि सत्तू ग्रीष्मका विशेष आहार है, इस अवस्थामें वसन्तमें उसका उत्सव करनेसे कोई विशेष प्रयोजन सिद्ध नहीं होता।

अग्नि पावक है और वायुको शुद्ध करती है। इसी विचारसे इस अवसर पर होली की जाती है। प्रो० भवानीप्रसादका कहना है:—"नव प्राप्त श्रावणी शस्यके नवीन अन्न-धानोंकी लाजाओंके होमनेके लिए शारदीय नवसस्येष्टि (दीपावली) का पर्व नियत है। उसी प्रकार शीतकालीन वर्षा (मुहासा) के अनन्तर—मुहासा भी एक प्रकारका चौमासा ही समझा जाता है—आवासोंकी परिष्कृतिके लिए तथा वसन्तकी नई ऋतु परिवर्तन और नई आई हुई आसाढ़ी फसलके यवोंसे देव-यज्ञ करनेके लिए आसाढ़ी नव-सस्येष्टि अभिप्रेत है।" प्रचलित कथाओंसे भी इस कथन की पुष्टि होती है।

वैष्णवोंका उत्सव

होली अखिल भारतीय है, परन्तु इसके नाम अनेक हैं और प्रत्येक प्रान्तमें अलग अलग प्रकार से मनाई जाती है। बंगालमें इसको 'डोल-यात्रा' महाराष्ट्रमें 'शिमगा' या होली, दक्षिण भारतमें 'काम-दहन', उत्तरीय भारतमें 'होला' कहते हैं। मद्रासी इसको होली या सिमगा कहते हैं। बिहारमें इसको 'फगुआ' कहते हैं। यह उत्सव विशेष करके कृष्ण भक्तोंका या नरनारायणके पूजकोंका हो गया है। गङ्गाकी धारा ज्यों ज्यों बंगालकी खाड़ीकी ओर बढ़ती जाती है त्यों त्यों उसमें (मार्गोंमें) अनेक नदियाँ मिलती जाती हैं। इसी प्रकार भारतीय पर्वोंके साथ अनेक पूजाएँ जुड़ती जाती हैं और उनका रूप परिवर्तित होता जाता है, तथा उनका महत्त्व बढ़ानेके लिए नई नई कथाएँ उनके साथ जुड़ती जाती हैं। आज नए नए उत्सव चलाने की परिपाटी है। प्रत्येक समुदाय और पन्थ अपने अलग अलग उत्सव मनाना आवश्यक समझता है। इसीमें अपना महत्त्व समझता है। किन्तु प्राचीन कालमें अपना महत्त्व बढ़ानेके लिए पहलेसे चले आ रहे पर्वोंको ही लोग अपना लेते थे और उनको अपने ढङ्गमें ढालकर और अपने रंगमें रंगकर अपने महत्त्वकी वृद्धि करते थे। यही कारण है कि होलीके साथ इतनी कथाएँ जुड़ गई हैं।

प्रचलित कथाएं

विजयादशमी जैसे शाक्तोंका त्यौहार है उसी प्रकार होली वैष्णवोंका पर्व है। अतः अधिकांश कथाओंका सम्बन्ध भगवान् कृष्णसे है।

उत्तरीय भारतके लोग विश्वास करते हैं कि डोलयात्रा उत्सव मुख्य करके भगवान कृष्णका है। कहानी है कि कंसने कृष्णको मरवानेके लिए पूतना राक्षसीको भेजा, जिससे वह अपना विषाक्त दूध बाल कृष्णको पिलाकर मार दे। इसी प्रकार उसने किया और भगवान् कृष्ण जब उसका दूध पी रहे थे तब उन्होंने उसके जीवनको भी चूस लिया। इसलिये उत्तरीय भारतमें (पंजाब प्रान्तको छोड़कर) होलीके दिन आगमें पूतना जलाते हैं। पूतना नाम भारतीय राजनीतिमें स्व० श्री दादासाहब खापर्डेने स्व० डा० बैसेण्टके लिये प्रयुक्त किया था।

इसीके साथ यह भी कहानी है कि सूर्यास्तके समय पूर्वीय क्षितिजमें पूतनाके प्रकट होनेसे रुग्णताएँ, विशेषतः (श्वासके रोग) फैलती हैं जिसमें बच्चे आक्रान्त होते हैं। आयुर्वेदके लेखक इनमें बाल रोगोंकी भी गणना करते हैं।

होलिका

एक दूसरी कहानी है कि होलिका नामक एक राक्षसी बच्चोंको खा जाती थी। लोगोंने उसे पकड़कर आगमें जला दिया था। उसके जल जानेसे बच्चे बच गए; इसीलिये इस अवसर पर आग जलाकर प्रसन्नता मनाई जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक अन्य कहानी है कि दानवराज हिरण्यकशिपु का पुत्र प्रह्लाद अत्यधिक कृष्ण भक्त था। पुत्रको कृष्ण भक्तिसे विरत करनेके उसके सब प्रयत्न व्यर्थ गए। अन्तमें उसने अपने पुत्रको कृष्ण भक्तिके पापसे मुक्त करनेके लिये अपनी बहिनको भेजा। दानवराज के परिवारमें ईश भक्ति घोर पाप समझा जाता था। अतः उसकी बहिनने प्रह्लादको गोदमें लेकर आगमें कूद जानेका निश्चय किया; उसका विश्वास था कि प्रह्लाद आगमें जल जायगा और वह बच जायगी। हिरण्यकशिपु भी प्रसन्न था कि चलो पापी पुत्रसे पिण्ड छूटा। फूफी और भतीजा दोनों आगकी ज्वालाओंमें घिर गए; किन्तु कृष्ण भक्तिके कारण प्रह्लाद अक्षत बच गया और उसकी फूफी जल मरी। प्रह्लादका नाम भारतके घर-घरमें आदरसे लिया जाता है और समझा जाता है कि होलीके दिन जलाई जाने वाली आग प्रह्लादकी फूफी राक्षसीके जल जानेकी प्रसन्नताके उपलक्षमें जला ईजाती है।

वर्षका अन्त

होलिका-दहनके साथ यह कहानी भी प्रचलित है कि वर्षकी समाप्ति पर रोगोंके शमनके लिये आग जलाई जाती है। पौराणिक उपाख्यान है कि ब्रह्माने सृष्टिको चान्द्रवर्षके चैत्र मासके प्रथम दिन रचा था और वह दिन होलीका अगला दिन होता है।

इसीके साथ यह ऐतिहासिक परम्परा चली आ रही है कि विक्रमादित्यने विक्रम संवत्की समाप्ति पर होलिका-दहनकी परिपाटी चलाई थी। विक्रम संवत् प्रायः करके होलीके पश्चात् समाप्त होता है। बंगालके कुछ भागोंमें होलिकाको केवल संवत्की वहिन माना जाता है। पूर्व बंगालमें होलिकाको बूढ़ी स्त्री माना जाता है जोकि जलकर मर गई थी।

कामदहन

होलीका शिवसे भी कुछ सम्बन्ध है। मद्रासमें शिव मन्दिरके आगे ही इस कारण आग जलाई जाती है। कहानी यह है कि मदनको देवताओंने शिवको जगानेके लिये हिमालय पर भेजा; जहाँ कि वे दश लाख वर्षसे तपस्या कर रहे थे। मदन अपने कर्तव्य पर प्रस्थित हो गया। उसने अपने पुष्प-धनुष से बाण छोड़ने प्रारम्भ किये। मदन चतुराईसे बाण छोड़ रहा था। जब वह छः बाण छोड़ चुका तब शिवका ध्यान टूटा। शिवने अपना विनाशक तीसरा नेत्र खोला। मदन वहीं एक ज्वालाके भड़कनेके साथ ही भस्म हो गया। पतिके भस्म होनेका समाचार सुनकर मदनकी सुन्दर पत्नी रति विलाप करती हुई शिवके पास पहुँची। आँखोंमें आंसू भरकर और रुंधे कण्ठसे रतिने शिवसे अपने पतिको पुनः जीवदान देनेकी प्रार्थना की। शिव अन्तमें करुणाद्रवित हो गए और उन्होंने मदनको सशरीर रूपमें नहीं किन्तु अनङ्गके रूपमें जीवन दान दे दिया। रति भी अपने पतिको पाकर प्रसन्न हो गई।

ढूण्ढा राक्षसी

महाराष्ट्र और कोंकणमें कहानी प्रचलित है कि प्राचीन कालमें एक बड़ी भयङ्कर ढूण्ढा नामकी राक्षसी थी। सम्भवतः यह संस्कृत नाम इलन्तक या हिलन्तक का अपभ्रंश है, जोकि ओरियन चन्द्रके तीन तारे हैं। यह राक्षसी छोटे बच्चोंको बहुत दुःख देती थी। इससे बच्चोंको बचानेके लिये और उसको भगानेके लिये लोगोंने बस्तीके चारों ओर आग लगा दी और उसको बुरीसे बुरी गालियां दीं, इससे होलीके अवसर पर आग जलाई जाती है।

बंगाल में

बंगालमें यह उत्सव विशेष धूमधामसे मनाया जाता है। प्रातः भगवान् कृष्णको सिंहासन पर बिठा करके पहलेसे बनाए मण्डपमें लाया जाता है। देवताको स्नान कराके उसकी पूजा की जाती है। फूल अबीरसे घुलाकर चढ़ाए जाते हैं। फिर रस्सीके द्वारा सिंहासनको अलग कर दिया जाता है और उसको सात बार झुलाया जाता है। इसलिये इसका नाम 'डोला' है। अनेक स्थानोंमें उत्साह और बड़े धूमधाम के साथ इसका जलूस निकाला जाता है। इस दिन परिवारका सबसे बड़ा व्यक्ति दिन भ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपवास करता है और भगवान् कृष्णकी पूजा करता है। शामको भूसेकी बनाई मेढ़ेकी मूर्ति जलाई जाती है। इसको चरचरी (चनचरी) कहते हैं।

उत्तर बंगालमें वस्तुतः मेढ़ेको बांसके बने एक भवनमें रखते हैं और उसको भूननेके लिये वहाँ भूसा भी रक्खा जाता है। परन्तु इसमें आग लगाने के पश्चात् मेढ़ेको बाहर निकाल लेते हैं। अनन्तर जानवरको मारकर उसका मांस वहाँ उपस्थित लोगों में बांटा जाता है। पूर्व बंगालमें 'मढ' नामसे कई खण्ड (मंजिल) ऊँचे मकानके नमूनेके रूपमें मिठाई बनाकर इस उत्सव पर बेची जाती है।

औरंगजेब

औरंगजेब जब बंगालका डिप्टी गवर्नर था तब वह ढाकामें होलीके उत्सवको देखकर बहुत प्रभावित हुआ था। वह उसमें सम्मिलित भी हुआ था। इस पर सम्राट्ने उसको इस प्रकार लिखा था:—

"A sappron-coloured helmet on thy head, a red garment on thy shoulder, thy venerable age verging on forty-six years; hurrah on thy beard and moustache."

महाराष्ट्रमें

महाराष्ट्र, कर्नाटक और गोआमें यह होलीका उत्सव बड़ी धूमधामसे मनाया जाता है। अच्छी प्रकारसे सजे सजाए झूलेमें भगवान् कृष्णको रखा जाता है। उसको सूर्योदयसे सूर्यास्त तक झुलाया जाता है। गांवोंमें यह उत्सव सामूहिक रूपसे मनाया जाता है।

कोंङ्कण और गोआमें इस उत्सव पर नाच गान विशेष रूपसे होता है। नृत्य और संगीत रातभर होता रहता है। कभी कभी नाचने वाली भी बुलाई जाती है। नाचने और गानेकी मण्डलियाँ एक गाँवसे दूसरे गाँवको जाती हैं और उनका गांवोंमें धूमधाम से स्वागत किया जाता है। अच्छा नाचने और गाने वालेको गाँवकी ओरसे चांदीकी अंगूठी भेंट की जाती है। इसके अनन्तर प्रीतिभोज होता है, जिसमें विजया और मद्य खूब उड़ाई जाती है। किन्तु कर्नाटकमें कुनबी धाड़ी और मेढ़ जातिके लोग इस दिन मद्य छूते तक नहीं हैं। न व इस दिन अपशब्द बोलते हैं और न भद्दे और गन्दे गीत गाते हैं।

बम्बई और उसके आसपास पांच दिन तक होली होती है और एक स्थान पर बड़ी ऊंची आग जलाई जाती है। यहाँ यह भी रीति है कि होली की आगमें गर्म किए हुए पानीसे होलीके अगले दिन स्नान किया जाय। इस स्नानके अनन्तर लोग अपने नित्यके काममें लगते हैं।

मराठा सरदारोंके यहाँ होली विशेष धूमधामसे मनाई जाती थी। मेजर बोल्टनने महाराजा दौलतराव सीन्धिया (१८०६) के दरबारमें हुए होलीके उत्सवका मनोरञ्जक वर्णन किया है। कर्नल टॉडने राजपूतानेमें वसन्त पञ्चमीसे होली तक ४० दिन तक होली खेलने और इस अवसर पर महाराणा मेवाड़के दरबार करने और सरदारोंको लकड़ीकी तलवार भेंट करनेका विशद और आकर्षक वर्णन किया है।

यूरोपमें

वसन्त उत्सवके समान प्राचीन रोममें मार्च मासके अन्दर सामाजिक प्रसन्नताका उत्सव नाच गान और वाद्यके साथ मनाया जाता था। बाचूज नामक देवताको रोममें इस उत्सव पर भूने हुए खाद्य पदार्थ भेंट किए जाते थे। ये खाद्य पदार्थ उस समय तैयार हुई फसलसे सम्बन्ध रखते थे। यूरोपके बहुतसे गांवोंमें 'चंचर' से मिलता जुलता बसन्त उत्सव मनाया जाता है। फ्रेजरने 'गोल्डन बो' में लिखा है कि— "इंगलैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, इटली और ग्रीसके कुछ शहरों और गांवोंमें मनुष्य के पुतले को आगमें जलाते हैं और उसकी राखको बादमें दफनाते हैं। इसके बाद प्रीतिभोज होता है, शराब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य जातिका जन्मस्थान

[लेखक—श्री पं० बलजिन्नाथजी कौल शास्त्री बी० ए०]

प्रस्तुत लेखमें विद्वान् लेखकने सुदृढ़ प्रमाणोंसे यह सिद्ध किया है कि पाश्चात्य विद्वान् अपने स्वभावानुरूप भारत तथा भारतीयोंके लेखों और विचारोंको दूषित रीतिसे पददलित करनेका प्रयत्न करते रहते हैं। किन्तु परतन्त्र भारत विवशता के कारण सहन करनेके अतिरिक्त मार्गान्तर ही नहीं देख पाता। प्रेमी पाठक इस लेखका अवश्य मनन करें। इस लेखके लेखक एक सुयोग्य होनहार नवयुवक विद्वान् हैं। पंजाब विश्वविद्यालयकी एण्ट्रेंस तथा प्राज्ञ विशारद शास्त्री परीक्षाओंमें सर्वाधिक अङ्क प्राप्त कर आप समुत्तीर्ण हुए हैं। अब आपने बी० ए० भी कर लिया है। इन्हीं योग्यताओंको देखकर काश्मीरकी राजधानी श्रीनगरकी राजकीय पाठशालामें राज्यकी ओरसे प्रधानाध्यापकके पद पर आप नियुक्त किये गये हैं —सं०]

आजकल यूरोपमें विज्ञानकी बहुत उन्नति है, यह सब लोग जानते हैं। विज्ञानकी उन्नतिके साथ ही साथ और विद्याएँ भी उन्नति पर हैं। कोई समय ऐसा था जब भारतवर्षसे इससे भी कई गुना अधिक प्रकाश देने वाला विद्याका सूर्य दसों दिशाओंको प्रज्वलित करता था। आजकलकी यूरोपीय सभ्यताकी विद्या भौतिक विज्ञान तक ही परिमित है। इससे आगे नहीं बढ़ सकती है। परन्तु भारतवर्षकी विद्या तो इस अन्तिम लक्ष्यका भी भेदन करके मनुष्यको परब्रह्म पर्यन्त पहुँचाती थी और अब भी पहुँचा सकती है। थोड़ा विचारिए कि जितनी सुविधाएँ विद्याके प्रचार और खोजके लिए आज कल सुप्राप्य हैं उतनी स्यात् पहिले कभी प्राप्त नहीं थीं, तो भी आधुनिक विद्या क्यों अधिक उन्नति नहीं कर सकती है? इसका कारण क्या है? विचार करने पर यही प्रतीत होगा कि इसके कारण तो अनेक हैं; परन्तु मुख्य कारण यह है कि प्राचीन भारतीय विद्याके प्रचारकों और अन्वेषकोंका लक्ष्य प्रायः केवल एक था और वह था सत्य विद्याकी उन्नति, सत्य बातकी खोज। उपनिषदोंमें—जोकि भारतीय साहित्यके शिरोमणि हैं— यह बात अनेक स्थानों पर सुस्पष्ट होगी कि उस समयके ऋषियोंको केवल इसी बातकी खोजकी अत्युत्कट इच्छा थी कि सत्य कौनसी वस्तु है? इसी कारण वह विद्या उस वस्तु अर्थात् परब्रह्म पर्यन्त पहुँची। परन्तु आधुनिक यूरोपीय विद्वानोंके लक्ष्य प्रायः दो होते हैं। पहिला तो यह कि किस प्रकारसे हमारी जाति दूसरी सब जातियोंसे बड़ी बनकर सबको दबा सके। यही लक्ष्य उनका प्रधान होता है। दूसरा लक्ष्य उनका होता है विद्याकी उन्नति। परन्तु यह लक्ष्य गौण होता है। ज्ञानके लिए उन्हें ऋषियोंकी जैसी तृषा नहीं होती है। इसी कारण यह विद्या भौतिक चक्रमें फँस जाती और

उड़ती है, नाच होता है और आमोद प्रमोद होता है।"

गौराङ्ग प्रभु

होलीका रूप कुछ भी क्यों न हो, सबका एक अर्थ है कि असत् पर अन्तमें सत्की, बुराई पर मानवीय सद्गुणोंकी विजय होती है। कुछ कालके लिए भले ही पाप पाशविकता और स्वार्थ विजयी और सम्मानित दिखाई दे; परन्तु अन्तमें पुण्य, त्याग देवभाव और सत्यकी विजय होती है। पुनर्जन्मके सिद्धान्तका आधार यही है। इसलिये प्रेम धर्मके प्रचारक गौराङ्ग महाप्रभुका नाम इस दिनके साथ जोड़ा जाना उचित ही हुआ है। कहा जाता है कि महाप्रभुने परम प्रभुको पुरीमें समुद्रकी लहरोंके बीच में देखा और वे उसमें अन्तर्लीन हो गए। यह वस्तुतः आत्माकी पृथ्वीसे स्वर्गकी ओर, अन्धकारसे शाश्वत प्रकाशकी ओर उड़ान थी। होलीका सन्देश है:— शाश्वत प्रकाशकी ओर निरन्तर बढ़ते जाओ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे निकलकर परमेश्वर तक नहीं पहुँच सकती है। यूरोपकी प्रत्येक विद्या इस प्रकारसे स्वार्थपरक ही हुआ करती है। सब विद्याओंको सत्यकी कसौटी पर परीक्षा करनेके लिए तो एक बड़ा भारी ग्रन्थ लिखना पड़ेगा। इस कारण इस छोटेसे लेखमें हम आपको केवल यह दिखाना चाहते हैं कि यूरोपीय विद्वानोंने विद्याके एक अङ्ग इतिहासके लिखनेमें अपने स्वार्थ को सिद्ध करनेके लिए सत्यको छिपाने और असत्य को प्रथित करनेका कितना प्रयत्न किया है। इतिहास भी एक लम्बा चौड़ा विषय है, इसलिए केवल "आर्योंका जन्मस्थान" इसी एक विषयकी विवेचना इस समय की जाती है—

आजकल हम किसी भी भारतीय छात्रसे पूछें कि "भारतवर्षके आदि निवासी कौन हैं ?" तो यही उत्तर मिलेगा कि— "भील कौल और सन्थाल इत्यादि जङ्गली लोग।" आर्योंके विषयमें सभी छात्र यही कहेंगे कि आर्य लोग बाहरसे भारतवर्षमें आए। इसका कारण यह है कि इतिहासके बड़े बड़े विद्वान् यूरोपमें उठे। भारतवर्षमें भी जो ऐतिहासिक विद्वान् हुए अथवा हैं, तो वे भी प्रायः सबके सब ऐसे ही हैं जिनको यूरोपीय रीति पर शिक्षा मिली है, जिनको छोटी अवस्थासे यही संस्कार पड़े हैं कि आर्य वस्तुतः विदेशीय हैं। इसलिए उन विद्वानोंने भी बहुतसी बातोंमें यूरोपियनोंका ही अनुकरण किया। इतिहासके लिखनेमें यूरोपीय विद्वानोंका यह सदासे अभिप्राय रहा है कि इतिहास इस प्रकारसे लिखे जाएँ कि यूरोपीय मनुष्योंकी गणनामें आएँ और शेष सारे विश्वके लोग पशु माने जाएँ। इसी कारण अमेरिकाके सभ्य आदि निवासियोंको इतिहासोंमें हवशी माना गया है। परन्तु यूरोपियनोंसे अतिरिक्त सारे संसारके रहने वालोंको पशु सिद्ध करने में इन ऐतिहासिकोंके सामने एक बड़ा भारी विघ्न आ पड़ा। वह विघ्न था भारतवर्षीय उपनिषत्कालकी सभ्यता। इस विघ्नको दूर करनेके लिए उन्होंने एक नया उपाय सोचा और इस उपायसे उन्होंने पर्याप्त सफलता प्राप्त की। इन्होंने अपने मन-माने प्रमाणों द्वारा यह सिद्ध किया कि आर्य लोग भारतवर्षके आदि निवासी नहीं। उनका आदि जन्मस्थान कई तो मध्य एशिया, कई जर्मनी, कई पश्चिमी रूस, कई नार्वे और कई उत्तरी ध्रुव मानने लगे। उन्नीसवीं शताब्दीमें यूरोपमें एक विद्याका आविष्कार हुआ जिसे भाषा शास्त्र (Philology) कहते हैं (इस विद्याको भारतवर्षमें यास्कमुनिके समय ८०० वर्ष ई० पू० से भी पहिले लोग जानते थे) इस विद्या द्वारा इन्होंने सिद्ध किया कि उत्तरी भारतवर्ष, फारस और यूरोपकी भाषाओंका परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है। इस कारण इस शास्त्रके पहिले यूरोपीय आचार्यने यह प्रथित किया कि यह समस्त भाषाएँ संस्कृत भाषाके अपभ्रंश हैं। इसलिए इन भाषाओं का नाम उसने संस्कृत भाषाएँ (Sanskritic Languages) यह रक्खा। इसके अनन्तर एक और इस शास्त्रका आचार्य यूरोपमें उठा जो इस नामको सहन न कर सका, इसलिए इसने इनका नाम रखा आर्य भाषाएँ। फिर कई जर्मनोंकी छातियों पर इस नामके सुननेसे सांप लोटा तो वे कहने लगे कि यह भाषाएँ प्रारम्भिक जर्मन भाषासे निकली हैं। इस कारण इनका नाम जर्मन भाषाएँ (Germanic Languages) यह रखा जाय। फिर कई विचारवान् जर्मनोंने इनका नाम भारत-जर्मन भाषाएँ (Indo Germanic) रखा। परन्तु फ्रांसके लोग इस बातसे क्रुद्ध हो गए। वे कहने लगे कि ये भाषाएँ भारतवर्षसे लेकर सारे यूरोप तक फैली हुई हैं, इस कारण इनको भारत-यूरोप भाषाएँ (Indo European) रखना उचित है। इस बातके सिद्ध होने पर यूरोपके ऐतिहासिकोंने इस विद्याकी शरण ली और उन्होंने इस प्रकार अनुमान करने आरम्भ किए:—

'क्योंकि यूरोपसे लेकर भारतवर्ष तक लोगों की भाषाओंमें घनिष्ट सम्बन्ध है इसलिए यह सिद्ध है कि यूरोपीय और भारतीय पहिले इकट्ठे किसी देशमें रहते थे और इनकी भाषा भी एक थी, जिसका काल्पनिक नाम भारतीय-यूरोपीय भाषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(Indo European) था। उसी एक जातिकी और उसी एक भाषाकी शाखाएँ भारतवर्षसे यूरोप तक फैली हुई हैं। उसी जातिको आर्य जाति कहते हैं।"

यहाँ तक तो हम भी कुछ कुछ माननेके लिए प्रस्तुत हैं। परन्तु अब प्रश्न होता है कि ये आर्य लोग वस्तुतः कहाँ रहते थे ? इसके उत्तरमें अधिकतर भाषाशास्त्रज्ञ और उनकी शरण लेने वाले ऐतिहासिक यह कहते हैं कि आर्य पहिले पहल यूरोपके मध्यमें रहते थे और वहींसे वे पश्चिममें इङ्गलैण्ड आयर्लैण्ड और आइसलैण्ड तक, दक्षिणमें इटली बलकान और यूनान तक, उत्तरमें नार्वे स्वेडन आदि तक, तथा पूर्वमें बङ्गाल और आसाम तक फैल गए। इसी कारण इन देशोंकी भाषामें घनिष्ठ सम्बन्ध है। परन्तु कुछ विचारपूर्वक तर्ककी कसौटी पर इस अनुमानकी परीक्षा करें तो यह सारा सिद्धान्त निर्मूल प्रतीत होगा। जैसे हम देखते हैं कि पंजाब, संयुक्तप्रान्त, राजस्थान और गुजरातकी भाषाओंमें अति घनिष्ठ सम्बन्ध है। इससे यह तो अवश्य सिद्ध हो सकता है कि इन प्रान्तोंके रहने वालोंमें भी घनिष्ठ सम्बन्ध है। परन्तु हम यह सिद्ध नहीं कर सकते कि इन भाषाओंका और इन लोगोंका प्रारम्भिक स्थान पंजाब ही था अथवा संयुक्तप्रान्त ही था। जिस प्रकारसे यह सिद्ध हो सकता है कि पंजाबके ही लोग इन प्रान्तोंमें प्रथित हुए (फैले) उसी प्रकारसे यह भी सिद्ध हो सकता है कि गुजरातके ही लोग इन प्रान्तोंमें प्रथित हुए हैं। इसी प्रक्रियासे यूरोपियनोंके सिद्धान्तका खण्डन हो सकता है कि जैसे भाषा साम्य के कारण यह सिद्ध हो सकता है कि आर्य यूरोपके मध्यसे निकल कर और देशोंमें प्रथित हुए उसी प्रकारसे यह भी सिद्ध हो सकता है कि आर्य लोग भारतवर्षके मध्यमेंसे अर्थात् आर्यावर्त्तसे निकल कर इङ्गलैण्ड तकके सब देशोंमें प्रथित हो गए। इस लिए आर्यावर्त्तको छोड़ कर यूरोप या और किसी देशको विना सोचे विचारे ही आर्योंका जन्मस्थान मानना केवल अन्धपरम्परा-न्याय ही है और बड़ी भारी भूल है।

अब यह विचार किया जाता है कि आर्योंका वास्तविक जन्मस्थान कौनसा है ? 'आर्य' शब्द संस्कृत भाषाका शब्द है। इससे अतिरिक्त पारसियोंके धर्मग्रन्थ जंड-अविस्ताकमें भी यह शब्द इस अर्थमें मिलता है। यूरोपकी किसी भाषामें यह शब्द नहीं मिलता। कई यूरोपीय कहते हैं कि आयरलैण्ड भी 'आर्य' शब्दका ही अपभ्रंश है। परन्तु यह निर्मूल कल्पना है, इसमें कोई प्रमाण नहीं। मनुस्मृतिमें देशोंके विभागको दिखाते हुए आचार्य कहते हैं कि सरस्वती और दृषद्वती नदीके बीचके प्रदेशका नाम ब्रह्मावर्त्त है और कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पंचाल और शूरसेन नामक प्रदेशोंको ब्रह्मर्षि-देश कहते हैं। हिमालय और विन्ध्याचलके मध्यमें सरस्वतीके विनशन स्थान (जहाँ सरस्वती भूमिमें प्रवेश करती है) से पूर्व और प्रयागसे पश्चिमके देशको मध्य-देश कहते हैं। इन्हीं दो पर्वतोंके मध्यमें पूर्व समुद्र (बंगालकी खाड़ी) से लेकर पश्चिम समुद्र (अरब सागर) तक के देशको आर्यावर्त्त कहते हैं अर्थात् यह आर्योंका देश है। यास्कमुनि भी निरुक्तमें लिखते हैं कि— "शवतिर्गतिकर्मा कम्बोजेषु, विकारमस्यार्येषु भाषन्ते शव इति" अर्थात् शवति धातुका प्रयोग तो कम्बोज देशमें (काबुलमें) होता है, परन्तु आर्यदेशमें शव इस शब्दका प्रयोग होता है। महाभाष्यकार पतञ्जलि भी लिखते हैं—

"हम्मतिः सुराष्ट्रेषु रंहतिः प्राच्य-
मध्येषु गमिमेव त्वार्याः।"

अर्थात् हम्मति धातुका प्रयोग सुराष्ट्र (काठियावाड़) में, रंहति धातुका प्राच्य (विहारादि) और मध्यदेशमें, तथा गम धातुका प्रयोग आर्यदेशमें किया जाता है। इन उद्धरणोंसे यह सिद्ध होता है कि गङ्गा के मैदानके मध्यभागको ही आर्यावर्त्त अर्थात् आर्यदेश कहते हैं। इस कारण इसी प्रदेशमें पहिले-पहल आर्य रहा करते थे। यहींसे निकल कर वे पश्चिममें इङ्गलैण्ड तक और पश्चात् पूर्वमें जावा सुमात्रा बाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और श्याम तक और कई अभिनव विद्वानोंके मतमें अमेरिका तक भी भिन्न-भिन्न समयोंमें प्रथित होगए। सोचनेकी बात यह है कि यदि आर्य पश्चिमसे आए होते तो क्यों न पंजाबका ही नाम आर्यावर्त्त होता। क्योंकि उस अवस्थामें आर्योंकी संख्या पंजाबमें ही अधिक होती और ऐतिहासिक ऐसा मानते भी हैं। ऐतिहासिक यह भी मानते हैं कि आर्योंकी सभ्यता का केन्द्र ब्रह्मावर्त्त था। यदि आर्यलोग बाहरसे ही आकर ब्रह्मावर्त्त देशको अपनी सभ्यताका केन्द्र बनाते तो उसी देशका नाम वे आर्यावर्त्त रखते। आर्योंके प्राचीन ग्रन्थोंमें आर्योंके सांवले वर्णका भी और श्वेत वर्णका भी वर्णन है। जहां युधिष्ठिरादि गौरवर्ण थे वहां कृष्णादि श्यामवर्ण थे। श्याम और गौर भारतीयोंके ही वर्ण होते हैं, यूरोपीयोंके नहीं। आर्यों के नेत्र प्राचीन आर्यग्रन्थोंके अनुसार इन्दीवर अर्थात् नील कमलके समान होते थे। इस समय भी भारत-वासियोंके नेत्र अधिकतर नील कमलके समान होते हैं। परन्तु यूरोपीय लोगोंके नेत्र प्रायः बिल्लोंके नेत्रों के जैसे होते हैं। अब स्वयं सोचिए कि ये बिडालाक्ष लोग कैसे असली आर्य हो सकते हैं ?

यह तो यूरोपके ऐतिहासिकों और भाषाशास्त्रज्ञों को भी मानना पड़ता है कि वेद आर्योंके सबसे प्राचीन ग्रन्थ और वैदिक संस्कृत आर्योंकी सबसे प्राचीन भाषा है। ऋग्वेदमें सबसे अधिक प्रार्थना है वर्षाके लिए। वर्षाकी अधिक आवश्यकता भारत-वर्षमें ही है। इसी लिए मेघाधिष्ठातृदेव इन्द्र भारतके देवताओंके राजा हैं। इससे सिद्ध है कि ऋग्वेदीय आर्य भारतवर्षके निवासी थे। इसलिए कोई यह नहीं कह सकता कि वेदों पर भारतीयों अर्थात् आर्योंको छोड़कर और किसीका अधिकार है। इस बातको सिद्ध करनेके लिए तो अनेक प्रमाण हैं, परन्तु इस छोटेसे लेखमें दिखाए नहीं जा सकते। अब लीजिए वैदिक संस्कृत भाषाको। यह भाषा आर्योंकी सबसे पुरानी भाषा है। इस कारण जिन लोगोंकी भाषाका सम्बन्ध इस वैदिक संस्कृतके साथ सबसे अधिक होगा वे लोग असली आर्य हैं और उन लोगोंका ही देश आर्योंका वास्तविक जन्मस्थान है। वैदिक संस्कृतका सबसे अधिक घनिष्ठ सम्बन्ध हमारी लौकिक संस्कृत भाषाके साथ है। यह संस्कृत भाषा भारतवर्षकी भाषा है। इसलिए भारतीय ही असली आर्य हैं और भारतवर्ष ही आर्योंका सबसे पहिला निवास-स्थान है। जो आर्य भारतवर्षसे बाहर निकले वे अपनी प्राचीन विद्या और भाषाकी उतनी रक्षा नहीं कर सके जितनी कि उनके वास्तविक देशमें उसकी हुआ करती है। बाहर जाकर विदेशीय जातियोंके साथ मिल जानेके कारण उनकी भाषा, रङ्ग, ढङ्ग, रहन-सहन तथा प्रत्येक बातमें भेद पड़ गया। जैसे भारतवर्षमें मुसलमान आगए तो उनके साथ अरब देशकी भाषाके कुछ शब्द तथा उस देशकी कुछ रीतियां भी भारतवर्षमें आगईं। परन्तु भारतवर्ष विद्यामें सब देशोंसे बढ़ चढ़ कर था, इस कारण यहांकी भाषा और सभ्यता पर अरबका बहुत थोड़ा प्रभाव पड़ा। इसके विपरीत आर्य जैसी सभ्य जाति के लोग ज्योंही यूरोपके जंगली और असभ्य लोगोंमें पहुंचे तो उनका प्रभाव उन असभ्य लोगोंकी भाषा, सभ्यता, धर्म और साहित्य पर बहुत पड़ा। इसी कारण भारतवर्षकी संस्कृत भाषाके शब्दोंके, भारतीय पौराणिक देवताओंकी गाथाओंके तथा भारतवर्षके प्राचीन रामायणादि महाकाव्योंके अनुकरण यूरोप में पाए जाते हैं। उच्च सभ्यता और परिमार्जित भाषाका प्रभाव नीच सभ्यता अथवा असभ्यता और अपरिमार्जित भाषा पर सदासे पड़ता आया है। रोमकी उन्नतिके दिनोंमें भी ग्रीस (यूनान) जैसे छोटेसे अधीन देशकी सभ्यता और भाषाका प्रभाव रोमकी सभ्यता और भाषा पर पर्याप्त मात्रामें पड़ा। इसके लिए इतिहास प्रमाण है। इसी कारण भार-तीय सभ्यता, धर्म, साहित्य और भाषाकी छाप यूरोप पर पड़ी हुई अब भी प्रतीत होती है।

यह तो अब सिद्ध हो गया कि आर्य भारतवर्षके आदिनिवासी हैं। और यहींसे चारों ओर विस्तृत हुए हैं। यहांसे निकलकर ये आर्य लोग जितना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जितना भारतवर्षसे दूर होते गए, उतनी उतनी ही उनकी भाषा, सभ्यता तथा धर्म आदि भारतवर्षकी भाषा, सभ्यता तथा धर्म आदिसे दूर होते गए। अब देखिए; हिन्दूकुश तकका देश भारतवर्ष है। आधुनिक काबुल (कम्बोज) और कन्दहार (गान्धार) भी वस्तुतः भारतवर्षके ही प्रान्त हैं। इस भारतवर्ष के पश्चिममें फारस (पारसीक) देश है। इस देशकी सीमा भारतसे मिलती है। यहाँके प्राचीन निवासी पारसी लोग हैं। और यहांकी प्राचीन भाषा वह है जिस भाषामें इन पारसियोंका धर्म-ग्रन्थ ज़ंड (Zand) और उसका भाष्य 'अविस्ताक' लिखा हुआ है। समस्त आर्य भाषाओंमेंसे वैदिक भाषा से अधिक मिलती जुलती भाषा है लौकिक संस्कृत और दूसरे सोदान पर है यह फारसकी प्राचीन भाषा। इस भाषामें भी संस्कृत और वैदिककी भांति सात विभक्तियां हैं। तीन लिङ्ग और वचन हैं। इस ज़ण्ड ग्रन्थके बहुतसे मन्त्र हमारे वैदिक मन्त्रोंसे मिलते जुलते हैं। वैदिक कालका प्रधान धर्म था यज्ञ द्वारा देवताओंकी उपासना। तो इन पारसियों का भी मुख्य धर्म है अग्निकी उपासना। बहुत काल के अनन्तर मुसलमानोंने फारस पर आक्रमण करने आरम्भ किए और धीरे धीरे सारे फारस पर उनका प्रभुत्व जम गया। पारसी तो कुछ भागकर अपने पुराने घर भारतवर्षमें आगए। शेष बलात्कारसे मुसलमान बना लिये गए। उनका सारा साहित्य नष्ट किया गया, क्योंकि दूसरोंके साहित्यको नष्ट करना तो मुसलमानोंकी सदासे नीति चली आती रही है। यदि पारसियोंका सारा प्राचीन साहित्य नष्ट न हुआ होता तो भारतीय साहित्यके साथ उसका आवश्यकतासे भी अधिक सम्बन्ध दिखाई पड़ता। इस समय जितना थोड़ा भी उनका साहित्य मिलता है इससे यह अच्छी प्रकारसे सिद्ध होता है कि फारसके लोग भारतवर्षके ही लोगोंकी एक शाखा है।

ज्यों ज्यों ये आर्य पश्चिमकी ओर आगे बढ़ने लगे त्यों त्यों उनकी भाषा और सभ्यता भी अपने मूलभूत देश (भारत) की भाषा और सभ्यतासे दूर होने लगी। इस कारण रूसके पश्चिमी प्रदेशों की भाषा यद्यपि वैदिक भाषासे मिलती है परन्तु 'अविस्ताक' भाषाकी अपेक्षा बहुत थोड़ी। इससे आगे ये आर्य यूनान (ग्रीस) और वहांसे इटली में पहुंचे। यूनानमें तो आर्य बहुत संख्यामें गए। पश्चिमी रूसकी भाषाकी अपेक्षा ग्रीक भाषा (यूनान की भाषा) वैदिक भाषासे कुछ न्यून मिलती जुलती है। परन्तु जितना सादृश्य वैदिक संस्कृतका ग्रीक भाषासे है उससे भी थोड़ा सादृश्य रोमन (इटली की) भाषाके साथ है। क्योंकि इटली ग्रीससे भी बहुत दूर पश्चिममें है। यूनानके साहित्य पर जो प्रभाव भारतवर्षके साहित्यका पड़ा है उसकी साखी तो ग्रीक भाषाके प्राचीन महाकाव्य हैं, जिन पर भारतवर्षके रामायणादि महाकाव्योंकी पूरी छाप पड़ी है। ग्रीक पुराणों और भारतीय पुराणोंमें भी बहुत सादृश्य है। भारतीय देवताओं और ग्रीक देवताओंमें बहुत-सा सादृश्य है। परन्तु यूनान फारससे भी बहुत दूर पश्चिममें है, इस कारण इतनी दूर पहुंचनेमें आर्योंको कई शताब्दियां लगीं। यहां पहुंचने तक आर्य अग्निमें आहुति देनेकी प्रथा को भूल गए और यद्यपि आर्योंका ही अधिक प्रभाव यूरोपके लोगोंके जीवन पर पड़ा, तथापि थोड़ा थोड़ा प्रभाव इन असभ्य लोगोंके साथ रहनेके कारण आर्यों पर भी पड़ा। उनके रहन-सहन, रंग ढंग, रीति आदिमें भी पड़ने लगा। भाषा पर प्रभाव पड़ना तो अनिवार्य ही था। जिस समय आर्य ग्रीस में पहुँचे लगभग उसी समय जर्मनीमें भी पहुँचे। इन देशोंसे आगे बढ़ते बढ़ते वे क्रमशः फ्रांस, स्पेन, पुर्त्तगाल, हालैण्ड, डेन्मार्क, स्वेडन, नार्वे, इंगलैण्ड, आयर्लैण्ड और आइसलैण्ड तक पहुंचे। इस कारण इन देशोंकी भाषाका सादृश्य ग्रीक, रोमन और जर्मनिक भाषाओंकी अपेक्षा वैदिक संस्कृतके साथ बहुत न्यून है। इन देशोंसे फिर आधुनिक समयमें ये आर्य अमेरिका, अफ्रिका और आस्ट्रेलिया तक पहुँच गए। परन्तु जितना दूर जो जो देश भारतवर्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से है उतना उतना ही अधिक उस देशके आर्योंमें विजातीय रुधिरका सम्मिश्रण है। इस कारण अति पश्चिमके लोग नाममात्रसे ही आर्य हैं।

इन सब बातोंकी ओर गर्दभनिमीलिका करके यूरोपके ऐतिहासिकोंने यह प्रसिद्ध किया कि आर्य यूरोपके ही असली निवासी हैं। इससे उन्होंने यह दिखलाया कि यूरोपीय लोग ही वस्तुतः सभ्य थे और सभ्य हैं। शेष सभी लोग असभ्य हैं। ये यूरोपीय लोग इस समय समस्त विश्व पर अत्याचार तो करते ही हैं, तो इन कदर्थित जातियों पर इस प्रकारसे असभ्यताका आरोप करनेसे और अपने नृशंस तथा दारुण स्वरूपको इस कृत्रिम सभ्यताके कञ्चुकसे छिपामेंमें उनको अपने अत्याचारोंको पराकाष्ठा तक लेजानेका अवसर मिलता है। और बहुत से देशोंकी भांति भारतवर्ष पर भी इन्हीं असभ्य लोगोंका राज्य है। इस कारण इनके प्रभुत्वमें हमें वैसी ही शिक्षा मिलती है जिससे छोटी अवस्थासे ही हमारे देशके बच्चोंके हृदयोंमें ये संस्कार बैठें कि भारतवासी वस्तुतः असभ्य और जंगली हैं। इन्होंने आदिकालसे ही यूरोपसे मनुष्यता सीखी है, और अब भी सीख रहे हैं, तथा आगे भी सीखेंगे। इस प्रकारसे जब हम बाल्यावस्थामें ही आत्म-गौरव खो बैठते हैं तो अनन्तर ऐसी ही शिक्षासे प्रौढ़ावस्था पर्यन्त धीरे धीरे दासता पराश्रयता आदि दोष कूट कूट कर हमारे हृदयोंमें भर जाते हैं। यही कारण है कि भारतवर्ष जैसा देश और आर्य जैसी जाति इस समय पराधीन है और संसारके बहुतसे देशों और जातियोंसे पीछे रह गया है। यह तो हुई इतिहास की बात। ऐसी ही व्यवस्था प्रत्येक विद्याकी है। सारी शिक्षा-प्रणाली ही इसी रीतिसे चलाई जाती है। केवल शिक्षा-प्रणाली ही नहीं, सारे ही शासन विभागोंमें यही व्यवस्था है। अनेक प्रकारोंसे भारतवर्षके महत्त्वको मिट्टीमें मिलानेके प्रयत्न किए जारहे हैं। इस कारण हमें चाहिए कि हम यूरोपीय लेखकोंकी बातोंको बिना सोचे विचारे कभी न मानें। प्रत्येक बातकी परीक्षा तर्कसे करें। यह बात ठीक है कि यूरोपीय लेखक बहुत चालाक होते हैं। बाहिरसे तो उनके शब्द अमृत जैसे प्रतीत होते हैं परन्तु भीतरसे उनमेंसे विष निकलता है। भारत वर्षकी प्रशंसा करते हुए ही वे व्यंग्य द्वारा पर्यवसान में घोर निन्दाको द्योतित करते हैं। संस्कृत साहित्य तथा भारतीय नाटकोंके इतिहासके लिखने वाले मिस्टर कीथ तो इस बातके एक निदर्शन हैं। अतः कभी भी भारतीयोंको यूरोपियनोंके मधुसे लिपे हुए ओष्ठों पर विश्वास नहीं करना चाहिये। क्यों कि उनके हृदय हालाहलसे भरे हुए होते हैं। ऐसे भारतीय जो यूरोपियनोंका अनुसरण करते हैं, जिनकी बुद्धिमें यूरोपकी दासता कूट कूटकर भरी हुई हैं, वे तो यूरोपियनोंसे भी कहीं बढ़कर हमारे शत्रु हैं। हाँ, इतना भेद अवश्य है कि वे निष्काम शत्रु हैं। यहां दासतासे हमारा अभिप्राय केवल राजनैतिक दासतासे नहीं, अपितु उससे भी अधिक हानिकर सामाजिक, धार्मिक, व्यावहारिक और प्रत्येक सभ्यता सम्बन्धिनी दासतासे है।

मैं भाषाशास्त्रका कोई विद्वान् नहीं। मैं भाषाशास्त्रज्ञोंके साथ अधिक वादविवाद नहीं कर सकता। मैंने केवल एक दो भाषाशास्त्रके ग्रन्थ देखे हैं। परन्तु हमारे भारतवर्षमें अनेक भाषाशास्त्रज्ञ विद्वान् हैं। कई उनमेंसे ऐसे भी होंगे जो उपर्युक्त प्रकारोंसे यूरोप के दास नहीं। मैं उनसे प्रार्थना करता हूँ कि वे इस विषय पर अच्छी प्रकारसे खोज करके इस तथ्य बातको सिद्ध करके सारे भारतवर्ष और सारे विश्वमें प्रसिद्ध कर दें कि आर्य वस्तुतः आर्यावर्त्तके ही रहने वाले हैं। आर्य सभ्यता भारतवर्षकी ही सभ्यता है। भारतवर्ष ही आदिकालसे संसारको ज्ञानकी ज्योति देता आरहा है और इस समय भी यथाशक्ति दे रहा है, तथा भविष्यमें भी अच्छी प्रकारसे देकर प्रकाशकी प्रखरतासे अनात्मवाद रूपी अन्धकारको दूर कर देगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापारिक तेजी मन्दी और ज्यौतिष

[लेखक—श्री प्रोफेसर बी० सी० महता म्यूनिस्पल कमिश्नर]

[विद्वान् लेखकका यह लेख दश फार्म (८० पृष्ठ) छप जानेके अनन्तर हमें अभी अभी प्राप्त हुआ, इस कारण यह अर्थस्तम्भमें तेजी मन्दी वाले अन्य लेखोंके साथ नहीं जा सका । व्यापारीवर्गके लिए विशेष उपयोगी समझ कर इसे हम इस इतिहास-स्तम्भमें ही प्रकाशित कर रहे हैं, आशा है प्रेमी पाठक इससे अवश्य लाभ उठावेंगे ।—सं०]

गताङ्कमें अस्वस्थताके कारण मैं अपने श्रेणी-बद्ध लेखको उपस्थित नहीं कर सका, इसके लिये मुझे हार्दिक खेद है और पाठकोंसे क्षमा चाहता हूँ ।

यह लेख पाठकोंके पास १७ जनवरीके लगभग पहुंचेगा । १७ जनवरीको बुध शुक्रकी युति Con. सायन कुम्भ और निरयन मकर राशिमें होगी । इसका प्रभाव रुईमें अनायास तेजी तथा सब प्रकार के धान्य सरसों आदिमें उछाला लावेगा, यह उछाला यद्यपि ठहरेगा विशेष नहीं, तथापि व्यापारिक मनोवृत्तिमें कुछ तेजी घुस जावेगी, जिसका प्रभाव व्यापारियोंके पक्षमें बुरा होगा । क्योंकि अब इस महीनेमें सामुहिक (मेजोरिटी) योग मन्दीके होंगे अतः प्रत्येक उछालेमें माल वेचना चाहिये ।

ता० २८ जनवरीको मकरमें मंगल प्रवेश होगा, यह नेपच्यूनसे केन्द्र Square तथा बृहस्पतिसे प्रतियोग (आपोजिशन) योग बनाना आरम्भ कर देगा, जिसका प्रभाव धीरे २ व्यापारिक प्रत्येक वस्तुमें मन्दीका होगा । विशेषकर रुई तो मन्दी ही होगी, चांदी पर भी इसका प्रभाव पड़े बिना न रह सकेगा ।

फरवरीमें भी कई बलवान् योग बने हैं । विशेषकर ता० ५ फरवरीको भारतसे बाहर सूर्य ग्रहणका योग है तथा इसके ठीक १५ दिन अनन्तर दूसरा चन्द्र ग्रहण भारतसे बाहर हो रहा है । अतः इस मासमें प्रत्येक व्यापारीको बहुत सावधानीसे व्यवसाय करना चाहिये । क्योंकि इस मासमें बहुत भारी घटा बढ़ी रुई और चांदीमें होगी । रुईमें २०-२० टकोंकी दैनिक घटा बढ़ी तथा चांदीमें ५-७ टकोंकी दैनिक घटा बढ़ी होना तो साधारण-सी बात है ।

इन दोनों ग्रहणोंके अतिरिक्त योग भी इस मासमें कई बड़े २ बने हैं । ता० १ को मास के आरम्भमें शुक्र और हरशलका केन्द्र Square योग होगा जो बाज़ारको दोनों ओर बलात् खींचेगा । पहले बढ़ेगा फिर घटेगा । तारीख ५ को शुक्र शनिका केन्द्र Square यह भी अनायास बाज़ारको भभकावेगा । अनन्तर इसके शुक्रका मंगलसे सेक्सटाईल ता० ७ को होगा यह रुईमें अच्छी तेजी लावेगा । ता० १४ को शुक्रका बृहस्पतिसे त्रिकोण Triangale होगा यह चांदीमें अनायास तेज़ीका चमकारा लावेगा । ता० २० को सूर्य हरशलका केन्द्र व्यापारिक वर्गमें पर्याप्त अशान्ति व सोना तथा चांदीमें अच्छी तेजी लावेगा और एक ओरकी तेजी चलेगी । जो ता० २६ को अपना मुंह फेर लेगी तथा अचानक बाज़ार में मन्दी दिखाई देगी । अतः ता० २६ फरवरीको तेजीमेंसे निकलकर मन्दीमें पड़ जाना चाहिये ।

मार्च मासमें प्रथम सप्ताहमें रुई चांदी आदिमें पर्याप्त मन्दी होनेकी सम्भावना है ।

इस मासमें भारतीय ज्यौतिष प्रणालीके आधार-भूत एक अच्छा योग हो रहा है, वह है कर्क राशिमें राहु ग्रहका प्रवेश; यह योग भी बड़ा अनोखा है और जब २ इसके साथ अन्य ग्रहोंका सम्बन्ध होगा तब २ नाना प्रकारके रंग व्यापार व भारतकी राजनैतिक अवस्थामें दिखावेगा ।

इसका प्रभाव १८ महीनेके आसन्न इसी राशिमें रहेगा । किन्तु मार्च २४ से सितम्बर २४ तक इसका पूरा प्रभाव भारत के कौने २ में दृष्टिगोचर होगा । जो भी हिन्दुस्तानके लिये हानि हो सकती है वह इस अवधिमें हो जावेगी और पश्चात् शान्तिका साम्राज्य होगा । प्रत्येक प्रकारकी अशान्ति शान्तिमें परिणत हो जावेगी । इस समयमें सोना चांदी और रुईमें ऐसी अनहोनी घटा बढ़ी चलेगी कि व्यापारी चकित ही नहीं स्तम्भित हो जायँगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आभार-प्रदर्शन

वर्तमान विश्व-व्यापिनी विषम परिस्थितिमें भी 'श्रीस्वाध्याय' निरन्तर पाठकोंकी सेवा करता जा रहा है, इसका सम्पूर्ण श्रेय संस्थापक संरक्षक सहायक प्रेमी ग्राहक और विद्वान् लेखक एवं सहयोगी मित्र-वर्गको ही है। जब हम अपनी सीमित शक्तिकी ओर देखते हैं तो हमें स्वयं आश्चर्य होने लगता है कि—ऐसे विषम समयमें जबकि कागजकी दुष्प्राप्यता एवं अन्यान्य साधन-सामग्रीकी असुविधाके कारण जहाँ कई सुप्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओंने अपना प्रकाशन अनिश्चित कालके लिए स्थगित कर दिया और अनेकोंने अपना कलेवर घटा दिया—वहां हमारे इस नवजात शिशु श्रीस्वाध्यायकी शुक्लपक्षके शरच्चन्द्रकी भांति श्रीवृद्धि कौनसी शक्ति करा रही है। यह सब उसी महाशक्तिकी कृपा है जिसने जिस सुमुहूर्त्तमें 'श्रीस्वाध्याय' को जन्म दिया है। उसीके आशीर्वाद से तीस चालीस रुपए रिम तककी कागजकी अत्यधिक भीषणतम मँहगाई और मुद्रण व्यवस्थादिकी कठिनाइयोंको पार करता हुआ श्रीस्वाध्याय लोकप्रिय बनता जा रहा है। जहाँ हम चाहते हैं कि श्रीस्वाध्याय अपनी पूरी शक्तिसे प्रेमी पाठकोंको इसी प्रकार सदा सन्तुष्ट करता रहे, वहाँ पाठकोंका भी कर्त्तव्य है कि वे भी अपनी पूर्ण शक्तिसे इसके सञ्चालनके लिए आर्थिक सहायता अवश्य करें। यदि प्रत्येक ग्राहक महानुभाव दो-दो चार-चार नवीन ग्राहक बनादें अथवा स्वयं ही सामर्थ्यानुसार संरक्षक सहायक व सम्मान्य ग्राहक बन जांय तो ऐसे कठिन समयमें भी उनका यह प्रिय पत्र पर्याप्त उन्नति कर सकता है। इसकी भावी उन्नति सर्वथा प्रेमी पाठकों पर ही निर्भर है। आगे समय और भी भयङ्कर आ रहा है अतः हमें सभी सहृदय सज्जनोंके सहयोगकी परमावश्यकता है। हम उन पाठकोंको विशेष रूपसे धन्यवाद देते हैं जिन्होंने वार्षिक मूल्य देकर अमूल्य सहायता की है।

'श्रीस्वाध्याय' में सर्वाधिक सहायता हमारे महामान्य संरक्षक बघाट-महीमहेन्द्र धर्ममार्त्तण्ड श्री १०५ मान् राजासाहब दुर्गासिंहजी बहादुर सी० आई० ई० सोलन नरेश महोदय और भरतपुर के रावराजा कैप्टन श्री १०५ मान् गिरिधारीशरण सिंहजी महोदयने की है, अतः हम इनके चिरकृतज्ञ हैं। पांचों सहायक महानुभावोंने भी पर्याप्त सहायता दी, अतः उनके भी हम हृदयसे आभारी हैं।

ज्योतिश्शास्त्रके प्रकाण्ड पण्डित वयोवृद्ध विद्वान् श्री पं० मीठालालजी व्यास, श्री पं० शिवशरणजी राजोपाध्याय, श्री बा० हंसराजजी इन्सपेक्टर, श्री पं० गोविन्दजी मिश्र, श्री पं० काहनचन्द्रजी ज्यौतिषी तथा अन्य कई मित्रोंने 'श्रीस्वाध्याय' के प्रचारमें पूर्ण सहयोग दिया, अतः इन मित्रोंके भी हम आभारी हैं।

व्याकरणाचार्य श्री पं० मनोहरलालजी शास्त्री, श्री पं० दीनानाथजी शास्त्री सारस्वत, श्री अवनीन्द्रकुमार जी विद्यालङ्कार, श्री पं० बलजिन्नाथजी शास्त्री, श्री पं० विशुद्धानन्दजी ज्यौतिषाचार्य आदि जिन विद्वान् महानुभावोंने अपने २ गवेषणा पूर्ण मौलिक लेख भेज कर इस अङ्कको अलंकृत किया है उनके हम अत्यन्त आभारी हैं और आशा करते हैं कि भविष्यमें भी ये महानुभाव इसी प्रकार 'श्रीस्वाध्याय' को अपनी उदार सहायतासे उपकृत करते रहेंगे। जिन मान्य विद्वानोंकी मौलिक रचनाएँ स्थानाभावके कारण इस अङ्कमें प्रकाशित नहीं हो सकीं वे आगामी अङ्कमें प्रकाशित होंगी।

मानवधर्म, माधुरी, विक्रम, वीणा, जीवन-साहित्य, धारा, मधुकर, कर्मवीर, स्वराज्य, विश्वबन्धु मीरा, केसरी, सिद्धान्त आदि कई पत्र पत्रिकाओंके उन सहयोगी सम्पादकोंके भी हम अत्यन्त आभारी हैं जो परिवर्तनमें अपने अमूल्य पत्र भेजकर हमें सहयोग दे रहे हैं।

—हरदेव शर्मा त्रिवेदी (सम्पादक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्यायके गतांक

'श्रीस्वाध्याय' के प्रथम वर्षके चारों अङ्क और वर्तमान वर्षके विगत दो अङ्कोंकी भारतके गण्य मान्य धुरन्धर विद्वानों एवं सुप्रसिद्ध समाचारपत्रोंने भूरि भूरि प्रशंसा की है। इनमें सभी लेख सारगर्भित मौलिक और ठोस सामग्री लिए हुए हैं। साथ ही प्रत्येक अङ्ककी भविष्यवाणियां ६५ प्रतिशत ठीक मिली हैं। इस सम्बन्धमें कुछ प्रसिद्ध पत्रों और विशिष्ट विद्वानोंकी विस्तृत सम्मतियोंमेंसे कतिपय सम्मतियोंका कुछ भाग गताङ्कोंमें प्रकाशित किया जा चुका और अब भी कुछ विशेष २ नई सम्मतियाँ प्रत्येक अङ्कमें (दो पृष्ठोंमें) प्रकाशित की जाती हैं। इतने पर भी कई सहृदय विद्वानोंकी सम्मतियां रह ही जाती हैं। यदि उन सबको अक्षरशः प्रकाशित की जावे तो एक बड़ी पुस्तक बन सकती है। इसीसे आप अनुमान लगा सकते हैं कि ये अङ्क कितने ठोस और उपादेय होंगे। प्रथम वर्षके चारों अङ्कोंकी प्रतियाँ अब बहुत थोड़ी शेष हैं, अतः इसका (प्रथम वर्षकी फाईलका) मूल्य अब ३॥) रु० निर्धारित किया गया है।

नवीन ग्राहकोंको विशेष लाभ

'श्रीस्वाध्याय' के ग्राहक वर्षारम्भसे ही बनाए जाते हैं, अर्थात् जिस वर्षमें जो ग्राहक हो उसको आश्विनके प्रथमाङ्कसे आषाढ़ तकके चारों अङ्क लेने आवश्यक हैं। अब इस द्वितीय वर्षमें जो नये ग्राहक होंगे उनको (यदि वे चाहेंगे तो) प्रथम वर्षकी फाईल ३) रु० में दे दी जावेगी। और चारों उपहार पुस्तकें (श्रीपञ्चस्तवी, श्रीपरशुराम स्तोत्र, श्रीराष्ट्रालोक, श्रीसप्तपदीहृदय) तथा "सं० २००० वि० के दैनिक ग्रह" नामक ॥) मूल्यकी पुस्तक विना मूल्य भेजी जा सकेगी। इसके लिए उनको २।-) वर्तमान द्वितीय वर्षका मूल्य और ३) प्रथम वर्षकी फाईलके तथा ≡) पांचों उपहार पुस्तकोंका मार्ग व्यय कुल ५॥) मनीआर्डर द्वारा भेजना होगा।

संवत् २००० वि० के दैनिक ग्रह

यह पुस्तक छपकर इस हेमन्ताङ्कके साथ ही प्रकाशित हो रही है। अतः जिन ग्राहकोंका इस पुस्तक के लिए मार्गव्यय -)॥ प्राप्त हो चुके हैं उन्हींको बुकपोस्ट द्वारा यह पुस्तक भेजी जारही है। केवल द्वितीय-वर्षके ग्राहकोंको ही यह पुस्तक -)। के मार्गव्ययमें भेजी जाती है। इसका मूल्य ॥) आठ आने है। अतः ग्राहकोंके अतिरिक्त कोई अन्य सज्जन मँगवाना चाहें तो वे एक प्रतिके लिए मार्गव्यय सहित ॥-)। के टिकट (या मनीआर्डर) भेजकर मँगवा सकते हैं।

आवश्यक सूचना

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना विना मूल्य किसीको भी नहीं भेजा जाता, अतः कोई सज्जन नमूनेके लिए वाध्य न करें। यदि एक प्रति (नमूनार्थ) मँगवानी हो तो उसके लिए ॥≡) भेजने आवश्यक हैं। जिन सज्जनोंके जवाबीपत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको संस्थाकी ओरसे उत्तर दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' की रूपरेखा (नियम उद्देश्य आदि) तीन पैसेका)॥। टिकट प्राप्त होने पर भेजी जा सकेगी। पुराने ग्राहकोंको रुपया भेजते समय कूपन पर अपना ग्राहक नम्बर लिखना आवश्यक है। 'श्रीस्वाध्याय' का प्रत्येक अङ्क प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ल दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास न पहुँचे तो पहले अपने स्थानीय पोस्ट आफिस (डाकघर) में पूछताछ करके १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए। जिन ग्राहकोंने अपना द्वितीय वर्षका मूल्य अभी तक नहीं भेजा है वे शीघ्र भेजदें। जब तक उनका मूल्य प्राप्त नहीं होगा तब तक यह 'अङ्क' उनके पास नहीं भेजा जा सकेगा।

पत्र व्यवहारका पता—व्यवस्थापक श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (शिमला)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीदुर्गा भवन

यह जानकर हमारे भारतीय सम्पूर्ण नर-नारियों को परम हर्ष होगा कि "श्रीदुर्गा-भवन" की स्थापना होगई है। इसमें श्रीदुर्गाभगवतीके सम्बन्धमें जितना भी वाङ्मय होगा उस सबका संग्रह किया जायगा। अच्छे २ योग्य विद्वानोंसे अन्वेषण कराया जाएगा, तथा क्रम-बद्ध सुचारु रूपसे उसका विवरण भी प्रकाशित होगा। इस समय दुर्गासप्तशतीकी सात आठ टीकाएं तथा छः सात प्रकारकी भिन्न २ रूपोंमें मुद्रित पुस्तकें इसमें संगृहीत होचुकी हैं। अतः "श्रीस्वाध्याय" के पाठकों एवं अन्य सज्जनोंसे भी प्रार्थना है कि जिन-जिन लोगोंको सप्तशतीके सम्बन्धमें जो भी कुछ विशेष ज्ञान हो वह लेखबद्ध कर नीचे लिखे पते पर भेजनेकी कृपा करें। जितनी प्रकारकी पुस्तकें, टीकाएं, भाष्य, अनुवाद, निबन्ध आदि जो भी कुछ हों एक-एक प्रति भेज कर अनुगृहीत करें। यह संस्था लोकोपकारक है इस कारण विशेषतः अमूल्य ही भेज कर इस शुभ कार्यमें सहयोग प्रदान करें। जो महानुभाव मूल्य लेकर भेजना चाहें, वे अपनी पुस्तकोंके विवरण तथा मूल्यकी पृथक् सूची बनाकर हमारे पास भेजें।

श्रीस्वाध्यायसदन

श्रीस्वाध्यायसदन एक ऐसी संस्था होने जारही है जो भारतमें एक सर्वोच्च अन्वेषकका कार्य करेगी। अपने लोकोपकारी कार्योंसे राष्ट्र तथा धर्मकी भली-भांति सेवा करती हुई उनकी उन्नतिका प्रयत्न करेगी। इसमें संस्कृत तथा हिन्दीके सब विषयोंके ग्रन्थ संगृहीत होंगे और वाङ्मयका अन्वेषण, अनुशीलन तथा उसका स्वाध्याय होगा। उसके सक्रिय प्रचारका भी प्रयत्न किया जायगा। इस संस्थाके द्वारा अच्छे २ विद्वान् तथा कार्यकर्ता पुरस्कृत होंगे।

सर्व प्रथम इस संस्थाने "श्रीस्वाध्याय" नामक त्रैमासिक पत्र प्रकाशित करना प्रारम्भ किया है, जिसके द्वितीय वर्षका द्वितीयाङ्क 'हेमन्ताङ्क'के रूपमें आपके हाथोंमें ही है। इसे शीघ्र ही मासिक करनेका आयोजन किया जा रहा है। अतः राष्ट्र, धर्म, जाति तथा स्वातन्त्र्यसे प्रेम रखने वाले सभी भारतीय सज्जन तन-मन-धनसे इस संस्थाको उन्नत एवं अखिल भारतमें आदर्श बनानेके लिए हाथ बटानेमें सङ्कोच न करते हुए सबका हित करेंगे।

पत्र व्यवहार का पता—व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

श्रीस्वाध्यायसदनका ज्यौतिष-विभाग

इस विभागमें ज्योतिष सम्बन्धी प्रत्येक कार्य शास्त्रानुसार सन्तोष-जनक रीतिसे किये जाते हैं। जन्मपत्र वर्षफलमें आयुः, सन्तान, स्त्री, धन, व्यापार, नौकरी, शरीरका सुखदुःख, भाग्योदयादिका पूरा पूरा विचार शास्त्रप्रमाणानुसार लिखा जाता है। प्राचीन तथा नवीन दोनों पक्षसे गणित होता है, दोनों पद्धतियोंकी पारिश्रमिक (फीस) भिन्न २ है। जन्मपत्रकी फीस ११) रु० से १०००) रुपये तक। वर्षफल ५) से १००) रु० तक। एक भावका सूक्ष्म विचार (यथार्थ निर्णय) के ११) रु०। आयुर्विचार (अंशायुर्गणित, मारकेश विचार मृत्यु-समय-स्थान-रोग-मोहादि निर्णय सहित) राजा महाराजा एवं सेठ साहुकारोंसे १००) रु०, सर्वसाधारणसे २५) रु०। टेवा बनानेकी फीस २) रु०, भारतसे बाहर अन्य देशोंमें उत्पन्न हुए बालकोंके शुद्ध इष्ट और केवल लग्न कुण्डली बनानेकी फीस ५) रु०, विवादास्पद प्रश्न पर शास्त्रानुसार व्यवस्था बतलाने की फीस ५) रु०, शुद्ध विवाह मुहूर्त्त और ग्रहमेलापक (कुण्डली मिलान) की २) रु०, सामान्य प्रश्न १।) रु०।

प्रत्येक कार्यकी आधी फीस पेशगी मनीआर्डर द्वारा पत्रके साथ ही भेजना आवश्यक है। बिना प्रारम्भिक (एडवांस) प्राप्त हुए कार्य-आरम्भ नहीं किया जाएगा। उत्तर प्राप्त करनेके लिए जवाबी कार्ड अथवा टिकिट भेजना आवश्यक है।

पता—व्यवस्थापक श्रीस्वाध्यायसदन [ज्यौतिषविभाग] सोलन (पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No. L.

श्रीग्रन्थमालाका प्रथम पुष्प

श्रीपञ्चस्तवी

(श्रीमद्धर्माचार्य भगवत्पाद प्रणीत)

यह एक अत्यन्त प्राचीन तथा भक्तोंके सम्पूर्ण मनोरथों को पूर्ण करने वाला श्रीमहामायाका स्तोत्ररत्न है। लाखों भक्तोंने अनुभव किया है और आगे भी करेंगे कि यह स्तोत्र-रत्न संसारमें अद्वितीय है।

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम श्रीमदमृतवाग्भवाचार्य प्रणीत कुछ प्रकाशित तथा अप्रकाशित ग्रन्थरत्न

श्रीपरशुरामस्तोत्र

यह एक अत्यन्त ओजस्विनी भाषामें लिखा हुआ भगवान् श्रीपरशुरामका स्तोत्र है। भारतके अनेकों पत्र पत्रिकाओंने तथा विद्वानोंने इसकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। राष्ट्रभाषानुवाद सहित सचित्र द्वितीय संस्करण छपकर तैयार है।

श्रीराष्ट्रालोक

अत्यन्त सरल तथा सरस संस्कृतभाषामय इस ग्रन्थके अध्ययनसे नस २ में राष्ट्रप्रेम व उत्साह भर जाता है। राष्ट्रिय व्यक्तियोंके सम्पूर्ण कर्तव्य, राष्ट्रको स्वतन्त्र व उन्नत करनेके उपाय, राष्ट्र किसे कहते हैं? उस पर किसका अधिकार होता है? इत्यादि विभिन्न राष्ट्रिय विषयोंका सम्पूर्ण ज्ञान होजाता है। बड़े २ राष्ट्रिय नेताओंने इसकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। अधिक क्या, गागरमें सागर है। राष्ट्रभाषानुवाद सहित द्वितीय संस्करण शीघ्र प्रकाशित होने वाला है।

श्रीसप्तपदीहृदय

(राष्ट्रभाषानुवाद सहित)

भारतीय आर्यविवाह-संस्कारमें सप्तपदी नामक क्रिया कितनी सुन्दर एवं महत्त्वपूर्ण है यह तो पाठकोंको विदित ही है। किन्तु इस सप्तपदीका वास्तविक रहस्य आज तक किसी भी विद्वान्ने खोल कर नहीं लिखा। "एकमिषे" इत्यादि सूत्रोंके यथार्थ रहस्यको खोल कर भारतीय आदर्शके राष्ट्रिय रूपमें यह श्रीसप्तपदीहृदय नामक ग्रन्थ लिखा गया है। विशेष क्या आदर्श-दाम्पत्य जीवनका तत्त्व इस पुस्तकमें भरा पड़ा है।

श्रीआत्मविलास

(सुन्दरी राष्ट्रभाषा व्याख्या सहित)

मनुष्यमात्रके लिए परम कल्याणकारी व सन्मार्ग प्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थरत्न है, जिसके प्रकाशित होते ही दार्शनिक जगतमें हलचलसी मच गई और सैकड़ों प्रतियां हाथोंहाथ लग गईं। इस ग्रन्थको पढ़नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शान्त होता है, संसार बाहर भीतर सम्पूर्णरूपसे आनन्दमय प्रतीत होता है। अतः यदि आप भी आत्मा क्या है? परमात्मा क्या है? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है? हम क्या हैं? और हमें क्या करना चाहिए? दर्शन किसे कहते हैं? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहां होता है? उनकी उपपत्ति क्या है? आदि २ आध्यात्मिक गूढ़ रहस्योंसे भली-भांति परिचित होकर आत्म-साक्षात्कार करना चाहते हैं तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजिये। आपके सभी सन्देह दूर होकर अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा। मूल्य २) रु० मात्र।

शीघ्र प्रकाशित होनेवाला

श्रीराष्ट्रालोकका

श्रीराष्ट्रसञ्जीवन संस्कृतभाष्य

इसके विषयमें संक्षेपसे ही हम पाठकोंको सूचित करते हैं कि यह ग्रन्थरत्न सम्पूर्ण साहित्यसागरका सार है। इसके जोड़का ग्रन्थ आज तक संसार भरके किसी भाषाके साहित्यमें नहीं लिखा गया। ग्रन्थ क्या है, सम्पूर्ण राष्ट्रिय विषयोंका हृदय है। ग्रन्थमें प्रणेताने स्वाभाविक पूर्ण विज्ञानके आधार पर सम्पूर्ण मानव-कर्तव्य तथा स्वभावका उस विशेषतासे प्रतिपादन किया है कि जो एक अत्यन्त नवीन, सुललित, स्वभाव-शुद्ध तथा प्रकृति-सिद्ध हो सकती है। इस ग्रन्थका स्वाध्याय प्रत्येक राष्ट्रहितैषीका परम प्रधान कर्तव्य है। पढ़ने वाले आजन्म पछतायेंगे। कईसौ पृष्ठोंमें यह ग्रन्थ समाप्त हुआ है।

सूचना—श्रीआत्मविलासको छोड़ कर शेष सभी मुद्रित पुस्तकें मार्गव्यय (दो आने) प्राप्त होनेपर "श्रीस्वाध्याय" ग्राहकोंको बिना मूल्य दी जावेंगी।

पता— श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)।

पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुनप्रेस, देहलीमें छप कर श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (शिमला) से प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रैमासिक

श्रीः

श्रीस्वाध्याय

[वसन्ताङ्क]

वर्ष
२
सं० २०००

संख्या
३
चैत्र

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः

वार्षिक
मूल्य
२।-)

इस अङ्क
का मूल्य
।।।)

संस्थापक—

श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक—

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

	विषय	पृष्ठ
१	श्रीस्वाध्यायके नियम उद्देश्य आदि	२
२	श्रीस्वाध्याय [कविता] क०—श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज	७
३	अपनी बात, ले०—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी	८
४	स्वत्व	१०
५	अरे वसन्त ! यहां मत आओ [कविता] क०—श्री पं० रामदत्तजी शास्त्री काव्यतीर्थ 'विमल'	१३
६	जीवनकी एक झांकी, ले०—श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज	१४
७	ब्राह्मण, ले०—श्री पं० बलजिन्नाथजी शास्त्री बी० ए०	१८
८	अक्षय-तृतीया, ले०—राजकुमारगुरु ज्योतिषालङ्कार श्री पं० तारादत्तजी राजज्योतिषी	२३
९	श्रीपरशुरामाष्टकम्, क०—श्री पं० बलजिन्नाथजी शास्त्री बी० ए०	२४
१०	कालका गाल, दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र, ले०—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी	२६
११	सं० २००० वि० का भविष्य, ले०—श्री पं० सङ्कर्षणजी व्यास ज्यौतिषाचार्य	२९
१२	त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय, ले०—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी	३२
१३	त्रैमासिक मुहूर्त्तादि विचार, ले०—श्री पं० जगन्नाथप्रसादजी ज्यौतिषी	३३
१४	आधुनिक क्रय-विक्रय विज्ञान, ले०—वि० भू० श्री पं० मोहन शर्माजी विशारद	३६
१५	त्रैमासिक व्यापार चन्द्रिका, ले०—ज्योतिषरत्न श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्योतिषी	४१
१६	व्यापारिक तेजीमन्दी और ज्यौतिष, ले०—श्री प्रोफेसर बी० सी० महता म्यू० कमिश्नर	४५
१७	प्रार्थना [कविता] क०—श्री पं० चम्पालालजी कविशेखर	४५
१८	सूर्यका सायन मेष राशिमें प्रवेश, ले०—श्री पं० मनूभाई पी० शुक्ल	४६
१९	क्या रोगोंका कारण रोगाणु है ?, ले०—श्री प्रो० प्रसाद प्राकृतिक-स्वास्थ्यशास्त्रोपाध्याय	४८
२०	श्रीमहावीरजीका लङ्का निरीक्षण, ले०—श्री पं० देवदत्तजी शर्मा	५१

विद्वान् लेखकोंसे—

विद्वान् लेखक महानुभाव जहां तक हो सके अपना लेख संक्षिप्त सारगर्भित और कागजके एक ही ओर संशोधनके लिए कुछ स्थान (मार्जन) छोड़ कर लिखा करें। कई लेखोंमें उर्दू आदि विदेशी शब्दों की भरमार अधिक होती है और भाषा तथा वाक्य-विन्यास भी व्यवस्थित नहीं होता। उन्हें संशोधन सम्पादन करनेमें विलम्ब हो जाता है अतः ऐसे लेख समय पर प्रकाशित न हो सकेंगे। इस अंकके प्रकाशित होनेमें भी कुछ विलम्ब होगया है। अतः अब ज्येष्ठ कृ० ३० ता० २ जून पर्यन्त जो लेख उपर्युक्त नियमानुसार हमारे पास पहुंच जावेंगे वे ही आगामी 'ग्रीष्माङ्क' में स्थान पा सकेंगे। —सम्पादक।

ग्राहकोंसे—

'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होते ही सब ग्राहकोंके पास भलीभांति जांच कर भेज दिया जाता है। प्रत्येक ग्राहककी ग्राहक संख्या और अङ्क भेजनेकी तिथि हमारे रजिस्टरमें अङ्कित की जाती है। गत 'हेमन्ताङ्क' के लिए हमें कई ग्राहकोंके पत्र मिले थे कि 'हेमन्ताङ्क' नहीं मिला, उनको हमने दूसरी बार 'हेमन्ताङ्क' भेजा था। किन्तु अब कागजके इस भीषण दुष्कालमें दो-दो बार अङ्क भेजना हमारे लिए सर्वथा असम्भव है। आशा है प्रेमी ग्राहक हमारी हानिका ध्यान रखते हुए अपने स्थानीय डाकघर (पोस्ट आफिस) से ही इसका उचित प्रबन्ध करेंगे। —व्यवस्थापक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ श्रीः ❀

श्रीस्वाध्याय

[त्रैमासिक-पत्र]

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—

बघाटमहीमहेन्द्र धर्ममार्तण्ड

राजा साहब श्री १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर C. I. E. सोलन (शिमला)

रावराजा कैप्टेन श्री १०५ मान् गिरिधारीशरणसिंहजी भरतपुर।

सहायक—

श्री १०५ मती मांजी महाराणी साहिबा (सिरमौरीजी) बघाटराज्य।

श्रीमान् सरदार कुँवर रणदीपसिंहजी नाहन (सिरमौर)

श्रीमान् कुंवर शिवसिंहजी B. A., L-L. B. सेशन जज सोलन।

श्रीमान् कुँवर ईश्वरीसिंहजी सुपरिण्टेण्डेण्ट कोर्ट आफ वार्ड्स उदयपुर (मेवाड़)

श्रीमान् सरदार जगजीतसिंहजी ढिल्लों B. A., L-L. B. नाभा।

सम्पादक—

ज्योतिषमार्तण्ड ज्योतिर्विद्यारत्न दैवज्ञमणि गणकरत्न

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिश्शास्त्री

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना "श्रीस्वाध्याय" का उद्देश्य है।

संचालक गणोंके नियम—

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जाएँगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५०) से ३००) रु० तक प्रति वर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जाएँगे।

सम्मान्य ग्राहक—

(३) जो सज्जन २।—) से अधिक ५०) रु० तक प्रति वर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के सम्मान्य ग्राहक माने जाएँगे।

श्रीस्वाध्यायके नियम—

(१) 'श्रीस्वाध्याय' (जब तक त्रैमासिक रहेगा, तब तक) आश्विन शुक्ल १०, पौष शुक्ल १०, चैत्र शुक्ल १० और आषाढ़ शुक्ल १० को प्रकाशित हुआ करेगा। इस त्रैमासिक संस्करणका वार्षिक मूल्य २।—) है। एक प्रतिका ।॥) स्थाई ग्राहक आश्विनसे ही बनाये जाते हैं। श्रीस्वाध्यायके स्थाई ग्राहकोंको हमारी "श्रीग्रन्थमाला" की सभी अद्भुत अमूल्य पुस्तकें बिना मूल्य (मुफ्त) दी जावेंगी। ऐसी सर्वोपयोगी अमूल्य पुस्तकें कोई भी मासिक पत्र प्रतिवर्ष अपने ग्राहकोंको बिना मूल्य नहीं देता। यह 'श्रीस्वाध्याय' के ग्राहकोंको विशेष लाभ है। पर्याप्त संरक्षक, सहायक और ग्राहक होने पर बहुत शीघ्र ही 'श्रीस्वाध्याय' को मासिक कर दिया जायगा।

(२) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय सदनकी ओरसे प्रार्थना पूर्वक मँगवाये जाएँगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथा समय प्रकाशित हो जावेंगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियाँ और विनिमय (परिवर्तन) के पत्र पत्रिकायें सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (पंजाब) के पतेसे भेजने चाहिएँ।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढ़ाने तथा उसे लौटाने या न लौटाने का सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। जिस अस्वीकृत लेखको सम्पादक लौटाना स्वीकार करें, उसका डाक और रजिस्ट्रीका व्यय लेखक को भेजना होगा। अधूरे लेख नहीं लिये जाते।

विज्ञापन छपाईके नियम—

१ पृष्ठ या दो कालमकी छपाई	२०)	प्रति अङ्क
आधा पृष्ठ या एक कालमकी छपाई	११)	"
चौथाई पृष्ठ या आधा "	" ६)	"

पूरे वर्ष या चार अंकोंमें एक पृष्ठकी छपाई ६५) रु० होगी।

त्रैमासिक 'श्रीस्वाध्याय' के पृष्ठका आकार २०×३० अठपेजी। कालम स्थान ८×३ इञ्च है।

आधे पृष्ठसे अधिक विज्ञापन देनेवालोंको 'श्रीस्वाध्याय' बिना मूल्य भेजा जावेगा। छपाईकी रकम पेशगी प्राप्त होने पर ही विज्ञापन पत्रमें छापा जावेगा।

विशेष जानने के लिए—
व्यवस्थापक श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)
से पत्र व्यवहार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्याय

(त्रैमासिक पत्र)

श्रीस्वाध्याय—अत्यन्त लोकप्रिय हो रहा है। कारण—

श्रीस्वाध्याय—मोक्ष रहस्य तथा दार्शनिक मतमतान्तरोंका परिचय करानेमें अद्वितीय पत्र है।

श्रीस्वाध्याय—धर्मके मर्म समझनेमें अत्यन्त सुन्दर सरल रीतिसे सहायता करता है।

श्रीस्वाध्याय—द्रव्योपार्जन तथा संरक्षण करनेके अनेक प्रकारोंको बतलाता है।

श्रीस्वाध्याय—सांसारिक सुख, स्वास्थ्यसाधन तथा कला-कौशलका तत्त्व प्रकाशित करता है।

श्रीस्वाध्याय—भारतीय इतिहास प्रकाशित करनेका असाधारण साधन है।

श्रीस्वाध्यायको—भलीभांति पढ़ने और समझनेसे मनुष्य स्वावलम्बी, निर्भय, उदार, आर्य एवं व्यवहारकुशल हो कर संसारयात्रामें विजयी हो सकता है।

श्रीस्वाध्यायने—अपने प्रथमाङ्कके साथ ही आगामी वर्ष भरके भारतीय वेधसिद्ध दैनिक सूक्ष्मग्रह तथा शर, क्रान्ति, योग प्रतियोग आदि प्रचारित करनेका दृढ़ निश्चय करके महान् लोकोपकार किया है।

श्रीस्वाध्यायके लिए—भारतके प्रसिद्ध विद्वानोंकी सुन्दर २ सम्मतियां और महापुरुषोंके आशीर्वाद प्राप्त हो रहे हैं।

श्रीस्वाध्यायसे—भारतीय महान् आदर्श तथा हमारी प्राचीन विद्याओंका पुनरुद्धार होगा।

श्रीस्वाध्यायका—पठन पाठन प्रत्येक प्रकारके उन्नति मार्गका प्रबोधन करायेगा।

श्रीस्वाध्यायमें—राष्ट्रको स्वतन्त्र करनेके प्रत्येक वैध उपायोंके साथ दर्शन, अर्थशास्त्र, ज्यौतिष-गणित-फलित-मुहूर्त, संस्कार, व्रतोत्सवादि निर्णय, दायभागादि धर्मशास्त्र निर्णय, सामाजिक व्यवस्थाएँ, संसारकी सामाजिक-धार्मिक-राजनैतिक व व्यापारिक परिस्थितिपर महत्त्वपूर्ण चमत्कारी भविष्य-वाणियां, आयुर्वेद, भूगोल, खगोल, महापुरुषोंके जीवन-चरित्र, विज्ञानके चमत्कार, ग्रन्थ-परिचय समालोचन इत्यादि विषयों पर अनुभवी विद्वानोंके गम्भीर लेख प्रकाशित होते हैं।

पता—व्यवस्थापक श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (पंजाब)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्यायको—

भारतीय विचक्षणवर्ग किस दृष्टिसे देखता है—

'श्रीस्वाध्याय' पर प्राप्त हुई सम्मतियोंमेंसे भारतके सम्मानित धुरन्धर विद्वानों एवं पत्रोंकी कुछ सम्मतियाँ प्रथम और द्वितीय वर्षके गताङ्कोंमें क्रमशः प्रकाशित की गई थीं। उसके अनन्तर 'हेमन्ताङ्क' पर प्राप्त हुई अनेकों सुप्रसिद्ध साहित्यमहारथियों और राष्ट्रिय प्रमुख पत्रोंकी सम्मतियोंमेंसे कुछ-एकका संक्षिप्त भाग यहाँ और देखिए—

संस्कृत साहित्य एवं न्याय-दर्शनादि कई शास्त्रोंके प्रकाण्ड पण्डित सुप्रसिद्ध सनातन धर्म संस्कृत कालेज (लाहौर) के प्रिन्सिपल महामहोपाध्याय श्री पण्डित परमेश्वरानन्दजी लिखते हैं।

धर्मैकब्रह्मरहस्यमस्ति मनुजाश्चेद् वो विजिज्ञासितं
वेदैतिह्यमनिन्द्यमार्यजनुषां भूम्नाऽनुसंधित्सितम्।
सत्साहित्यसमुद्रवीचिनिचये चेत् साधु सिस्नासितम्
श्रीस्वाध्यायमहर्निशं हरकृपोद्भासं तदाभ्यस्यत ॥१॥
जड़िमानमपनुदन्ती सर्वपथीना प्रहीणकौटिल्या।
'श्रीस्वाध्याय' धुनीयं मनः पवित्रं चिरं जीयात् ॥२॥

काशीके सुप्रसिद्ध साप्ताहिक 'सिद्धान्त' के सम्पादक श्री पं० गङ्गाशङ्करजी मिश्र एम० ए० लिखते हैं—

"·····सचमुच 'श्रीस्वाध्याय' पत्र बहुत सुन्दर और उपयोगी है। ·····हमारा आपका लक्ष्य और नीति एक ही है।"

काशीके सुप्रसिद्ध 'सन्मार्ग' मासिक पत्रके व्यवस्थापक श्री पं० शीतलप्रसादजी पाण्डेय लिखते हैं—

"·····आपकी पत्रिका (श्रीस्वाध्याय) अवलोकन कर चित्त प्रफुल्लित हो उठा। यद्यपि बहुत सी पत्रिकाएँ हमारे यहाँ अती हैं पर उन सबमें आपकी पत्रिका सर्वश्रेष्ठ है। इसकी मैं भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ तथापि वह थोड़ी ही है।·····"

हिन्दी और संस्कृत साहित्यके सुप्रसिद्ध विद्वान् गवर्नमेण्ट हाईस्कूल (मेरठ) के हेड पण्डित साहित्याचार्य श्री पं० योगीन्द्रकृष्ण दौर्गादत्ति शास्त्री लिखते हैं—

"न जाने मेरे कौनसे स्वाध्यायके फलसे स्वाध्यायके लिए अकस्मात् 'श्रीस्वाध्याय' की उपलब्धि हुई। कई बार ध्यान पूर्वक उसका अध्ययन करने पर भी जब जब उसे पढ़ो तो कोई न कोई नवीनता उसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झलकने लगती है और महाकवि माघकी यह उक्ति— 'क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः' सर्वांशमें सची लगने लगती है !..... आजकल संस्कृत विद्याके ह्राससे अधिकांश जनता बहुतसे विषयोंके ज्ञानसे वञ्चित रह जाती है और वह यथार्थ स्वाध्याय नहीं कर सकती किन्तु अब 'स्वाध्याय' के अध्यायसे यह न्यूनता दूर हो गई। इसमें चतुर्वर्ग सम्बन्धी विषयोंका समावेश अशेषतासे किया जाता है। वेदके अङ्गों मेंसे ज्योतिष एक मुख्य अङ्ग है, किन्तु कलिकाल महिमासे बहुतसे लोग उसे कोरी गप्प कहनेमें तनिक भी सङ्कोच नहीं करते। 'श्रीस्वाध्याय' उसकी उपयोगिताको जगत्में भली भांति प्रथित कर रहा है।....."

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

दिल्लीका सुप्रसिद्ध राष्ट्रिय दैनिक पत्र "वीर अर्जुन" अपने १ अप्रैल १९४३ के अङ्कमें लिखता है—

"....इस पत्रको प्रकाशित होते यह दूसरा वर्ष है, परन्तु पत्र (कागज) सङ्कटके कालमें जन्म लेकर भी यह अपने पाठकोंकी सेवा यथापूर्व उक्त स्वल्प मूल्यमें ही कर रहा है। इसका मुख्य कारण पत्रका उद्देश्य व्यापारिक न होकर धार्मिक होना है। पत्र हिन्दू धर्मशास्त्रोंके स्वाध्यायमें जनताकी रुचि बढ़ानेके लिए निकला है। .....इतिहास स्तम्भमें प्रायः प्रत्येक अङ्क कोई गवेषणापूर्ण लेख लेकर प्रकाशित होता है। ज्योतिष और तत्सम्बन्धी विवेचन इस पत्रकी प्रमुख विशेषता है। "दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार चक्र" शीर्षकके नीचे प्रति अङ्कमें भविष्यके विषयमें जो सम्भावनाएँ प्रकट की जाती हैं वे बहुत कुछ सत्य सिद्ध होती पायी गयी हैं। .....हिन्दूधर्मका स्वाध्याय करनेके प्रेमियोंको यह सुलभमूल्यका पत्र अवश्य अपनाना चाहिए"

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

मध्यप्रान्त खण्डवाका सुप्रसिद्ध राष्ट्रिय साप्ताहिक 'हिन्दी स्वराज्य' अपने ९ फरवरी १९४३ के अङ्कमें लिखता है—

".....यह त्रैमासिक नियमित रूपसे प्रकाशित हो रहा है। इसमें धर्म अर्थ काम और मोक्ष के पथ पर समस्त संसारको लेजाने की दृष्टिसे सामग्री प्रकाशित की जाती है। भारतीय-संस्कृतिकी आभा इस त्रैमासिकके प्रत्येक अङ्कमें दिखाई देती है। ..... हम इस त्रैमासिककी उत्तरोत्तर उन्नतिकी कामना करते हैं।"

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

"भारतीय धर्म" मासिक पत्र (अजमेर) फाल्गुनके अङ्कमें लिखता है—

".....पत्र सुसम्पादित तथा सुन्दर है। अनेक मान्य विद्वानोंके लेख इस पत्रमें प्रकाशित होते हैं। ..... प्रायः सभी लेखोंमें उत्तम सामग्री प्रस्तुत करनेका प्रयास किया गया है। ज्योतिष विषयका तो यह एक प्रामाणिक और प्रशंसनीय पत्र है। फलादेश भी बड़े विचार पूर्वक लिखे जाते हैं। ..... सारांश यह कि इसके सभी लेख सुविमृष्ट, उत्कृष्ट और पठनीय तथा संग्रहणीय सामग्रीसे पूर्ण रहते हैं। ऐसे सुन्दर पत्रके प्रकाशनके लिए हम संस्थापक तथा सम्पादकको बधाई देते हैं और सहयोगीकी सफलता के हृदयसे इच्छुक हैं।"

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

'सरस्वती' 'कर्मवीर' 'अङ्कुश' 'उदय' आदि कई पत्रोंकी और श्रीयुत डा० परशुरामजी शर्मा मंत्री पञ्जाब प्रान्तीय हि० सा० सम्मेलन, श्री प्रो० प्रसादजी गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी, श्री प्रो० बी. एल. आनन्द दयालसिंह कालेज लाहौर, सनातनधर्म महोपदेशक श्री पं० लक्ष्मीदत्तजी कथाकोविद अमृतसर आदि अनेकों मान्य विद्वानोंकी शुभ सम्मतियाँ यहाँ स्थानाभावके कारण प्रकाशित नहीं हो सकीं। यथावसर आगामी किसी अङ्कमें प्रकाशित करनेका प्रयत्न करेंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्यायमें क्या क्या होगा ?

विज्ञ पाठकोंको 'श्रीस्वाध्याय' के उद्देश्य तथा नीतिका ज्ञान तो भली भांति हो ही गया है। इसमें जो मोक्षादि पांच प्रधान स्तम्भ रक्खे गये हैं—उनके अन्तर्गत किन २ विषयों पर लेख लिखे जा सकते हैं ? इसकी एक संक्षिप्त सूची हम नीचे दे रहे हैं। इस तालिका द्वारा हमारे विद्वान् लेखकोंको विषय चुननेमें सुविधा होगी।

मोक्षस्तम्भमें—

भारतीय दर्शनोंका संक्षिप्त परिचय। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त (शाङ्कर रामानुज निम्बार्क, माध्व श्रीकण्ठ भास्कर आदि मतोंका संक्षिप्त सार) शैव (त्रिक प्रत्यभिज्ञा पाशुपत आदि मतोंका संक्षिप्त परिचय) शाक्त (दक्षिण वाम कौल तन्त्र सिद्धान्त त्रैपुर आदि मतोंके संक्षिप्त परिचय) पारमार्थिक मोक्ष, व्यावहारिक मोक्ष आदि आदि।

धर्मस्तम्भमें—

वेदोंका स्वाध्याय। राष्ट्रिय शिक्षा। घरेलू शिक्षा। स्त्री शिक्षा। धर्म रहस्य। धर्ममें स्मृतियोंका स्थान। कल्प सूत्र। स्त्रीधन। दत्तक-दाय। दाय-भाग। प्रायश्चित्त विधान। पर्व व्रतोत्सवादि निर्णय। मुहूर्त्तादि निर्णय। पर्व किस प्रकार मनाये जायें। पर्व और त्यौहारोंका राष्ट्रिय महत्त्व। पर्व मनानेमें धार्मिक दृष्टिसे हानि लाभका विचार। ज्योतिश्शास्त्रानुसार तात्कालिक शुभाशुभ योग और भविष्यवाणियां। राशिफल। खगोलके ग्रह नक्षत्रादिकोंका परिचय।

अर्थस्तम्भमें—

अर्थ शास्त्र। चाणक्यके विचार। घरकी व्यवस्था। पारिवारिक आय व्यय। राष्ट्रको समृद्ध करनेके उपाय। यातायातमें अर्थ प्राप्ति। व्यापार। ज्योतिश्शास्त्रानुसार महर्घ समर्घ (तेजी मंदी) विचार। खानोंसे अर्थ प्राप्ति। आर्थिक दृष्टिसे कलाओंका विचार। पर्व और आर्थिक दृष्टि। युद्धसे आर्थिक हानि लाभ। कृषि (धान्य, फल, शाक-भाजी, ईख, कपास आदिके उत्पादन) से अर्थ प्राप्ति आदि आदि।

कामस्तम्भमें—

आयुर्वेद। शरीरके सभी अवयवोंको सुन्दर सुदृढ़ स्वस्थ ओजस्वी बनानेके उपाय। दीर्घजीवी बननेके उपाय। रसोईघर। कलाकौशल। घरकी स्वच्छता और पवित्रता। बच्चोंका पालन पोषण। भृत्योंके साथ व्यवहार। पशुपालन आदि आदि।

इतिहासस्तम्भमें—

इतिहास जाननेके साधन (ताम्रपत्र दानपत्र मुद्रा शिलालेखादि) संस्कृत-साहित्यका इतिहास। भारतीय ग्रन्थ और ग्रन्थाकारोंके परिचय। भौगोलिक परिचय (देशकी सीमायें नदियां पर्वत तीर्थ नगर ग्राम आदि) प्राचीनकालमें भूमण्डलके समस्त देश प्रान्त नगरादिकोंके जो नाम और सीमा थी उनके वर्तमान नाम और सीमाका विवेचन। महापुरुषों (दानवीर युद्धवीर धर्मवीर मृत्युवीर शास्त्रार्थवीर विशिष्टविद्वान् भगवद्भक्त राष्ट्रभक्त सिद्ध सती ज्ञानी आदि) के जीवन चरित्र। प्रत्येक वस्तु पर ऐतिहासिक दृष्टिसे विचार।

विशेष—

इसके अतिरिक्त 'श्रीस्वाध्याय' में कुछ सामयिक लेख भी रहेंगे। प्रत्येक अङ्कको त्रैमासिक अवधिमें जो जो विशेष पर्व त्यौहार या जिन २ अवतारों एवं महापुरुषोंकी जयन्तियां आवेंगी उन उन पर विशेष रूपसे प्रकाश डाला जावेगा। आगामी अङ्क (ग्रीष्माङ्क) के लिए विद्वान् महानुभाव सर्व प्रथम निम्न विषयों पर सुविचारपूर्ण लेख भेजनेकी अवश्य कृपा करें।

उत्सर्जन, उपाकर्म निर्णय, योद्धा कृष्ण, ब्रह्मण्य कृष्ण, विलासी कृष्ण, भगवान् कृष्ण, अवतारी कृष्ण, वीर कृष्ण, चतुर कृष्ण, जगद्गुरु कृष्ण, प्रौष्ठपदी, महालय श्राद्ध, देवी नवरात्र आदि आदि।

सब लेख ज्येष्ठ कृ० ३० ता० २ जून १९४३ पर्यन्त "सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (पञ्जाब)" इस पते पर पहुँचना आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः। ❀ श्रीः ❀ स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम्।

श्रीस्वाध्याय

[वसन्तांक]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम्।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति॥ [राष्ट्रालोक]

वर्ष २ | सोलन, चैत्र शु० १० गुरुवार सं० २००० वि० | संख्या ३

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै॥
—अ० वा० आचार्य

श्रीस्वाध्याय

अपने अपने कर्तव्योंका
पल पलमें है ज्ञान कराता।
निज शासनके संस्थापनका
सिखलाता प्रज्ञान॥
उन्नति पथका पथिक बनाता
पारतन्त्र्यको झटिति मेटता।
'श्रीस्वाध्याय' विश्वको देता
जीवनका विज्ञान॥

—अ० वा० आचार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी बात

पहले इन दो पृष्ठोंको अवश्य पढ़ लीजिये

वर्तमान विषम समयमें प्रत्येक पत्रकारके सामने बड़ी कठिनतम समस्या उपस्थित है। अब भारत सरकारकी ओरसे पत्रोंको जो नई आज्ञा प्रचारित हुई है उसके अनुसार तो अच्छे अच्छे सुप्रसिद्ध पत्रों का जीवन भी सन्देहास्पद हो गया है। गत २७वीं फरवरीको नई दिल्लीसे भारत सरकारने भारतीय पत्रोंके नाम जो विज्ञप्ति प्रचारित की है उसका सार मर्म इस प्रकार है—

"(१) अबसे कुछ समय पहले पत्रके मूल्यके अनुसार पत्रकी जो पृष्ठ संख्या निर्धारित की गई थी, वह आधी कर दी जाए। इस व्यवस्थासे भविष्यत्में पत्रोंको वर्तमान परिमाणसे आधा ही कागज प्रदान किया जाएगा। (२) भविष्यात्में कोई भी पत्र अपना दूसरा संस्करण न निकाले। निकाले तो सरकारसे पूछ कर। (३) समाचारपत्रकी न बिकने वाली प्रतियाँ उसके एजेण्टोंसे वापिस न ली जाएं और प्रत्येक समाचार-पत्र अपने विज्ञापनकी दर ड्योढ़ी कर दे····· ·····" इत्यादि।

शासकोंकी इस विज्ञप्तिके अनुसार प्रायः प्रत्येक प्रसिद्ध प्रत्रोंने या तो अपनी पृष्ठ संख्या घटा दी या मूल्य बढ़ा दिया है, किन्तु हमें ये दोनों ही बातें अभीष्ट नहीं। यद्यपि आज पर्यन्त अन्यान्य पत्रोंकी भांति सरकारकी ओरसे 'श्रीस्वाध्याय'को कागजका कोटा (कण्ट्रोल भाव पर कागज प्राप्त करनेकी सुविधाका प्रमाण-पत्र) नहीं मिला, तथापि हमारा उद्देश्य व्यापारिक न होनेसे कागजके व्यापारियोंको मुंहमाँगा मूल्य देकर भी हम श्रीस्वाध्यायका प्रत्येक अङ्क ८० अस्सी और इससे भी अधिक पृष्ठका प्रकाशित करते रहे हैं। इस समय सरकारी आज्ञा, कागजकी दुष्प्राप्यता, प्रेसकी असुविधा, एकाकी कार्यकर्ता आदिकी जहाँ कई भीषण कठिनाइयाँ हमारे शिर पर मँडरा रही हैं वहाँ कुछ सहायकोंकी वार्षिक सहायता और कई पुराने ग्राहकोंका वार्षिक मूल्य न आना भी 'श्रीस्वाध्याय'के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। यदि हमारे वे सब कृपालु महानुभाव अपनी अपनी वार्षिक सहायता और मूल्य समय पर भेज देते तो पहले ही कागज क्रय कर लिया जाता और किसी सहकारी कार्यकर्ताको भी बुला लिया जाता, जिससे उनके प्रिय पत्रको आज इतनी आपत्ति न उठानी पड़ती। इन सब आपत्तियोंको सहन करके भी यह अङ्क हम पाठकोंकी सेवामें प्रस्तुत कर रहे हैं। इसकी कुछ पृष्ठ संख्या वाध्य होकर घटानी पड़ी, अतः कई सुप्रसिद्ध विद्वानोंके मौलिक लेख इस अङ्क में नहीं आसके तथा प्रकाशित होनेमें भी कुछ अनपेक्षित विलम्ब हो जानेका हमें महान् खेद है। विलम्बका कारण हम आगे बताएँगे।

अब इतना तो हमें विश्वास हो गया है कि प्रेमी पाठक "श्रीस्वाध्याय" के प्रत्येक अङ्कको बड़ी उत्सुकतासे प्रतीक्षा करते हैं और उसे बड़े मनोयोग के साथ पढ़ते हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण वे पत्र हैं जो यह 'वसन्ताङ्क' समय पर न पहुंचनेके कारण नित्य हमें दर्जनोंकी संख्यामें मिल रहे हैं। उन सब प्रेमी पाठकोंको अलग अलग उत्तर देनेमें हम असमर्थ थे। हमारी परिस्थितिको जान कर आशा है दैवात् होने वाले इस विलम्ब और उत्तर न देनेके लिए वे हमें क्षमा करेंगे।

जिस प्रकार इन ग्राहकोंने अपना मूल्य भेज कर सक्रिय सहायता दी है उसी प्रकार यदि अब भी गत वर्ष और वर्तमान वर्षके जिन सहायकों एवं ग्राहकों ने अभी तक अपनी सहायता और वार्षिक मूल्य नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेजा है, वे शीघ्रातिशीघ्र भेज दें और प्रत्येक ग्राहक दो या तीन नवीन ग्राहक बना दें तो इस सङ्कट काल में भी 'श्रीस्वाध्याय' पूर्ववत् उनकी सेवा कर सकेगा। अन्यथा इस आर्थिक सङ्कट-कालमें इतनी आपत्तियों से आवृत रहते हुए हम कार्य सञ्चालनमें असमर्थ होंगे और प्रेमी पाठकोंको अपने इस प्रिय पत्रसे वञ्चित रहना पड़ेगा।

यदि वार्षिक मूल्य न्यूनातिन्यून १) एक रुपया और बढ़ाया जाए अर्थात् तीन रुपये पांच आने कर दिया जाए तो प्रति अङ्क ८० पृष्ठका प्रकाशित हो सकेगा। इसके लिए प्रत्येक पाठक महानुभाव हमें अपनी अपनी स्वीकृति भेजें कि वे २।–) ही दे कर अग्रिम वर्षमें ५० पृष्ठका अङ्क लेना चाहेंगे ? अथवा १) अधिक [३।–)] देकर ८० पृष्ठका अङ्क लेना चाहते हैं ? सब ग्राहकों की सम्मति एवं सक्रिय स्वीकृति आने पर अग्रिम (तीसरे) वर्षके लिए निर्णय किया जाएगा।

यदि संरक्षकों सहायकों एवं ग्राहकों ने इस समय हमें पूर्ण सहयोग न दिया तो वाध्य होकर अनिश्चित कालके लिए (जब तक कागज और प्रेसकी असुविधा रहेगी तब तक) पत्रको स्थगित करना पड़ेगा। हमें ऐसी आशा तो नहीं हैं, परन्तु कदाचित् परिस्थितिवशात् अगले अङ्कसे ऐसा करना पड़ा, अथवा कुछ विलम्ब हो जाए तो ग्राहकगण पत्र पर पत्र लिख कर हमें वाध्य न करें। प्रकाशित होते ही पत्र ग्राहकों के पास उसी समय भेज दिया जाता है।

विलम्बका कारण

इस अङ्कके प्रकाशित होनेमें कुछ अनपेक्षित विलम्ब हो गया, इसका हमें महान् खेद है। यह विलम्ब हमारी ओरसे नहीं हुआ, हम तो इस अङ्क को भी सदाकी भांति निश्चित समय पर ही प्रकाशित करना चाहते थे; परन्तु कुछ दैवी कारण ही ऐसे बनते गये कि हम कुछ भी न कर सके। यह तो पाठकोंको विदित ही है कि प्रेसकी सुविधा न होनेसे 'श्रीस्वाध्याय' दिल्लीमें छपता है और १५–२० दिनके लिए हमें स्वयं दिल्ली जाकर प्रत्येक अङ्कको छपाई (प्रूफ करेक्शन आदि कार्य) करवानी पड़ती है। सदाकी भांति इस वार भी चैत्र कृ० ८ तक हमें दिल्ली पहुंच जाना चाहिए था; किन्तु इन्हीं दिनोंमें (फा० शु० ८ को) प्रसव और छठे दिन ही नवजात कन्याके काल-कवलित हो जानेसे धर्मपत्नीका स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया। पत्नीको अभी स्वास्थ्य लाभ हुआ ही नहीं था कि चै० कृ० ३० से बड़ी लड़कीको ज्वर (टाईफाईड) होगया और साथ ही चै० शु० ३ से छोटी लड़कीको १०४ तक इन्फ्लुएञ्जा ज्वर होने लगा—"एकस्य दुःखस्य न यावदन्तं तावद्द्वितीयं समुपस्थितं मे" उक्ति अक्षरशः चरितार्थ होने लगी। प्रायः डेढ़मास पर्यन्त इन आपत्तियोंसे द्वन्द्व युद्ध करते रहनेके कारण इस अङ्कके प्रकाशनमें इतना विलम्ब हुआ। आशा है विज्ञ पाठक एवं विद्वान् लेखक महानुभाव विवशताके लिए क्षमा करेंगे और पूर्ववत् अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

सहानुभूतिके लिए कृतज्ञता

इस हमारे पारिवारिक कष्ट-कालमें सोलनके राजपरिवारने (विशेषकर श्री १०५ मती सिरमौरी राजमाताजीने) जो सहानुभूति एवं सक्रिय सहयोग दिया उसे हम कदापि नहीं भुला सकते। राज्यके हेल्थ ऑफीसर साहब डॉ० गौतमचन्द्रजीके भी हम अत्यन्त कृतज्ञ हैं जिन्होंने सौजन्यपूर्ण सहयोग देकर अत्यन्त आत्मीयतासे सफल चिकित्सा की। इन महानुभावोंके सहयोगका ही यह परिणाम है कि आज यह अङ्क प्रकाशित करके पाठकों तक पहुंचानेमें हम सफल हो सके हैं।

श्री० महामहोपाध्याय पं० परमेश्वरानन्दजी प्रिन्सिपल दीवान कृष्णकिशोर सनातनधर्म संस्कृत कालेज लाहौर। श्री माधवजी सम्पादक दैनिक 'विश्वबन्धु'। श्री अवनीन्द्रकुमार जी विद्यालङ्कार। श्री पं० सूर्यनारायणजी व्यास सम्पादक 'विक्रम'। श्री कालिकाप्रसादजी दीक्षित सम्पादक 'वीणा'। श्री भूपेन्द्रनाथ जी वन्द्योपाध्याय एम० ए० लाइब्रेरियन पब्लिक-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वत्व

स्वाभाविकी सुखेच्छा स्वतन्त्रताया ऋते न सुखलब्धिः ।
स्वातन्त्र्यस्य प्राप्तिः स्वत्व ज्ञानं बिना नैव ॥

अ० वा० आचार्य ।

[प्राणिमात्रके हृदयमें सुखकी इच्छा स्वाभाविक है । सुखकी प्राप्ति स्वतन्त्रताके बिना नहीं, स्वत्वज्ञानके बिना स्वतन्त्रताकी प्राप्ति भी नहीं होती यह विद्वानोंका निश्चय है ।]

'स्वत्व'का पर्याय है अपनापन । अपनापन किसीसे भी छिपा नहीं है । प्रत्येक वस्तुका अपनापन कहीं न कहीं अवश्यमेव स्थिर है । वह ज्ञात हो अथवा अज्ञात, किन्तु है वह अवश्य । यदि अपनापन विद्यमान न हो तो वह पदार्थ जी ही नहीं सकता । यदि कहीं कुछ जीवनका आधार भी है तो वह 'स्वत्व' ही है । अपनापन कहीं न कहीं भी नहीं यह तो सम्भावनाकी कोटिसे बाहरकी बात है । अपने को 'स्व' कहते हैं, तथा अपने आपके मूल-आधार को 'स्वत्व' कहा जाता है । यच्चयावत् पदार्थमात्र अपनी दृष्टि रखता है, कारण वह सत् है । वस्तुका ग्रहण भावविधया हो अथवा अभावविधया, उसे सत् ही कहना होगा । असतका तात्पर्य भी सत्से ही है । यदि असत्को सत् न कहा जाएगा तो उसकी प्रतीति ही न होगी । जो जो प्रतीयमान है वह सब सत् है । प्रतीयमान तथा प्रकाशमान ये दोनों ही एक वस्तुके ही दो नामान्तर मात्र हैं । वस्तु मात्र प्रतीयमान है, प्रकाशमान है, फिर भी बद्धकी दृष्टि प्रतिहत होनेके कारण प्रतीयमानको ग्रहण नहीं करती । सूरजको उल्लू नहीं देखता फिर भी सूरजकी सत्तामें कोई संशय नहीं । मुक्तकी दृष्टि अप्रतिहत है, उसके लिए प्रत्येक वस्तु प्रकाशमान ही रहती है । प्रतीयमानता, प्रकाशमानता, वस्तुत्व ये सब अभिन्न हैं । 'स्व' की सत्ता ही जब सर्वव्यापक अव्यय महासत्ता है तब स्वत्व जोकि उसका अपना अभिन्न स्वभाव है उसके न होनेकी शङ्का भी लेशमात्र नहीं होती । उचित भी यही है कि मैं और मेरा इसका तारतम्य समझ लेनेसे सम्पूर्ण व्यवहार सुचारुरूपसे निभ सकता है । 'स्व' तथा 'स्वत्व' का यथार्थ अनुभव होनेसे व्यवहार तथा परमार्थ आनन्दमय हो उठेगा । स्वत्व ओतप्रोत भावसे सर्वत्र है ऐसी अनुभूति स्थिर सुदृढ़ होने पर जाग्रत स्वप्न तथा सुषुप्ति दशाओंके तारतम्यसे बने हुए क्रियामय ज्ञानमय तथा इच्छामय जगत्के रहस्य उद्घाटित होते जाते हैं । स्वत्वके साक्षात्कारके बिना हानि लाभकी सम्भावना उत्पन्न नहीं होती । 'स्व' का साक्षात्कार हुए बिना स्वत्वका साक्षात्कार नहीं होता । यद्यपि—

तमहं प्रत्ययव्याजात्सर्वे जानन्ति जन्तवः ।

[उस सर्वनिदान सर्वाधार परोक्ष वस्तुको उत्पन्न

लाइब्रेरी प्रयाग । श्री शार्दूलसिंहजी महता बी. ए. एल. एल. बी. जज हाईकोर्ट उदयपुर मेवाड़ । श्री विद्याभूषण पं० मोहन शर्माजी विशारद । श्री साहित्याचार्य पं० नन्दलालजी शास्त्री आदि आदि जिन अनेकों सहयोगी मित्रों, विद्वान् लेखकों और प्रेमी ग्राहकोंने सहानुभूतिपूर्ण पत्र भेज कर जिस हार्दिक स्नेहका पचिय दिया उसके लिए हम उन सभी सज्जनोंके अत्यन्त कृतज्ञ हैं । कारणवशात् उन सबको हम अलग अलग उत्तर नहीं लिख सके हैं, इसके लिए आशा है वे महानुभाव हमें क्षमा करेंगे और पूर्ववत् स्नेह बनाए रक्खेंगे ।

वैशाख कृ० १० } विनीत—
सं० २००० वि० } हरदेव शर्मा त्रिवेदी (सम्पादक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने वाले सभी पदार्थमात्र अहं रूपसे प्रतीयमान होनेके कारण अपनेको जानते ही हैं।]

यह ठीक है, किन्तु 'मैं हूँ' इतना जान लेनेसे तो सारे काम नहीं निकल सकते। सब काम निकालने के लिए सर्वव्यापकरूपसे 'स्व' का साक्षात्कार आवश्यक है। उसके हो जाने पर निस्सन्देह—'कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुं सामर्थ्य' प्रकट हो जाएगी। न्याय अन्यायका रहस्य भी तदनन्तर ही प्रकट हो सकता है। बाह्य व्यवहारमें नित्यप्रति हम देखते तथा सुनते रहते हैं कि इसी स्वत्वकी अव्यवस्थासे कितनी अशान्ति लोगोंको घेरे रहती है। दुःख, दारिद्र्य, भय आदि अनन्त आपत्तियाँ इसी एक मात्र 'स्वत्व' की अव्यवस्थासे ही उत्पन्न होती हैं। बाह्य व्यवहारमें भी शान्ति स्थापनाके लिए पारमार्थिक स्वत्वके साक्षात्कारकी परम आवश्यकता रहती ही है। शान्ति कामना प्रत्येक जन्तुकी स्वाभाविक कामना है। अशान्तिकी कामना भी शान्ति लाभके लिए ही प्रायः हुआ करती है, अतः कहना न होगा कि स्वत्व साक्षात्कारकी कितनी अधिक आवश्यकता है। सांसारिक सुव्यवस्था किसे नहीं चाहिए ? पशु अथवा उन्मत्त इस विषयमें क्या किसी भी विषयमें प्रमाण होने योग्य नहीं होते। कुशिक्षित उन्मादग्रस्त होते हैं। अशिक्षित पशु हैं तो कुशिक्षित उन्मत्त होते हैं। अशिक्षित 'स्वत्व' से अपरिचित होनेके कारण परमुखापेक्षी रहते हैं। इसी कारण वे निरन्तर दुःख भोगते रहते हैं। कुशिक्षित स्वत्वको अन्यथा समझे बैठे होनेसे नयीसे नयी आपत्तियां उत्पन्न करते रहते हैं। इसीलिए वे भी फिर उन्हीं आपत्तियोंमें फँसते तथा अनन्त दुःख भोगते हैं। संसारमें स्वतन्त्रताके बिना सुव्यवस्था स्थापित नहीं हो सकती। स्वतन्त्रता सुशिक्षतताके बिना नहीं प्राप्त होती। सुशिक्षितता 'स्वत्व' साक्षात्कारके बिना नहीं मिलती। 'स्व' साक्षात्कारसे 'स्वत्व' की सुव्यवस्था होती है। सुख तथा शान्तिका एकमात्र निवासस्थान सुव्यवस्था ही है। 'स्वत्व' सर्वव्यापक होने पर भी उसका उपभोग तथा उपयोग करना अशिक्षित जनोंके हाथकी बात नहीं। कुशिक्षित पुरुषोंके ललाटपट्टमें स्वत्वके सदुपयोगके कर्तृत्वका लेख विधाताने लिखा ही नहीं। स्वरूपज्ञानके संकोच से जीवभाव निर्मित किया गया था। जीवभावको ही बद्धभाव कहते हैं। बद्धोंके लिए शान्ति, सुख, दृष्टि, स्वत्व सभी कुछ सीमित रहेगा, निस्सीम नहीं। निस्सीमका आनन्द भी निस्सीम होता है, ससीमका ससीम। व्यापकको ही सुख प्राप्ति होती है, ऐसी वस्तुस्थिति है। इसी कारण उपनिषद् विद्यामें महर्षियोंका उपदेश है—

"यो वै भूमा तत्सुखम्। नाल्पे सुखमस्ति।"

[जो व्यापक है सुख उसीके आधीन है। अव्यापकमें सुख स्थिर नहीं रह सकता।]

सुख सभी जन्तुओंके लिए उपादेय है, किन्तु उपादित्सा होने पर भी ज्ञान के बिना उसकी प्राप्ति नहीं होती। अतः जिज्ञासा पहले आवश्यक है। 'स्वत्व' जिज्ञासा प्राणिमात्रके हृदयमें निरन्तर विराजमान ही रहती है। जिस राष्ट्रमें स्वत्व जिज्ञासाको आर्यविधया निवृत्त करने वाले श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ पुरुष सम्मानित होते हैं वह राष्ट्र स्वत्वका साक्षात्कार अवश्य प्राप्त करता है। तदनन्तर अपने अपने कर्ममें सर्वतोभावसे नैपुण्य प्राप्त करके यथाऽभिलषित सम्यक् सिद्धि प्राप्त कर लेता है। श्रीगीतामें भगवान् वासुदेवने यही बात कही है, वहां इस प्रकार लिखा है—

स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः।

[नीतिमान् पुरुष अपने अपने कर्ममें सभी प्रकारसे संलग्न होजाए तो सम्यक् सिद्धिका लाभ उसको अवश्य होता है।]

यावत्पर्यन्त किसका कौनसा अपना कर्तव्य है यह भलीभांति ज्ञात न हो तावत्पर्यन्त उसमें अभिरति नहीं हो सकती, अतः सर्वप्रथम 'स्व' तथा 'स्वत्व' का ज्ञान परमावश्यक है। जीव अज्ञतावश 'स्व' तथा 'स्वत्व' को बहुत ही अल्प परिमाणमें ग्रहण करता है। किन्तु मुक्त विज्ञतासे स्व तथा स्वत्वके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महान्से महान् परिमाण का विज्ञान कर लेता है। वही स्वतन्त्र होकर सबको सुखी करता है। जिस राष्ट्रमें राष्ट्रियज्ञानको यथायोग्य सिखाने वाले नहीं होते वह राष्ट्र पराधीन होकर विनष्ट हो जाता है। राष्ट्रियोंको राष्ट्रियज्ञान 'स्व' है, तथा उनका अपना उसपर स्वत्व सर्वदा ही हुआ करता है। अतएव राष्ट्रियोंको राष्ट्रियज्ञान ही एकमात्र 'स्व' तथा 'स्वत्व' का साक्षात्कार करानेमें सामर्थ्य रखता है। श्रीराष्ट्रालोकमें इस विषयमें कितना सुन्दर लिखा है देखिए—

यस्मिन् राष्ट्रे न विद्यन्ते राष्ट्रियज्ञानशिक्षकाः।
आशु नश्यति तद्राष्ट्रं भुजङ्गो निर्विषो यथा॥

[जिस राष्ट्रमें राष्ट्रियोंको उनका अपना राष्ट्रिय ज्ञान सिखाने वाले पुरुष विद्यमान नहीं होते निर्विष भुजङ्गके समान उनका वह राष्ट्र शीघ्र नष्ट हो जाता है।]

स्वत्वका अपनी प्रत्येक वस्तु पर होना प्रकृतिसिद्ध बात है। सारे संसारमें स्वत्व स्थित है; किन्तु क्षणिक आनन्दके उपभोगके लिए बद्धत्वकी छोटेपनकी कल्पना की जाती है। तदनन्तर अपनेपनके साथ ही परायेपनकी कल्पना उत्पन्न हो उठती है। परायेपनकी कल्पना ही विश्वमें कलहका बीज बोती रहती है। मर्यादित परकीय पर अनार्यपथसे स्थापित करनेकी प्रवृत्ति अनार्य पुरुषोंको बुभुक्षावश तामसी वृत्तिके कारण उत्पन्न होती है। लघुचेतस पुरुषोंको इसी क्षुद्रताके कारण बुभुक्षा उत्पन्न होना स्वाभाविक है। बुभुक्षा रौद्री शक्ति नामान्तरित संहार शक्तिको कार्य करने के लिए वाध्य करती है। अपने परायेपनका भेद क्षुद्रचेतसोंके हृदयमें पनपता है। महापुरुषोंका तो समस्त संसार अपना कुटुम्ब होता है। इसीलिए विद्वान् कहते हैं—

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

[यह अपना है तथा यह पराया है ऐसी गणना क्षुद्रचित्त पुरुष ही किया करते हैं। उदार चित्तवाले पुरुष सम्पूर्ण पृथ्वीको ही अपना कुटुम्ब समझते हैं।]

अतएव समस्त संसारकी कल्याण-कामना महात्माओंके हृदयमें ही प्रादुर्भूत हुआ करती है। महात्माओंका स्वत्व सङ्कुचित नहीं होता। अपने आप कल्पित किए हुए सङ्कुचित स्वत्वका त्याग करनेके उपरान्त सम्पूर्ण विश्व उनका अपना स्वस्थिर हो जाता है। वे महात्मा विश्व-वपु हो रहते हैं। महात्मा स्वामी श्रीरामतीर्थ अपनी अनुभूति कितने सुन्दर शब्दोंमें इस विषयमें प्रकट करते हैं, देखिए—

अपने मजेके खातिर गुल छोड़ ही दिए जब।
रू ए जमीके गुलशन मेरे ही बन गए सब॥

अपनी उन्नति प्रत्येक पुरुषकी स्वाभाविक परिस्थिति है। अपना निपात कोई भी प्रकृतिस्थ वाञ्छनीय नहीं समझता। निपातकी उपादित्सा भी उन्नतिकी अभिलाषाको ही उद्दिष्ट रख हुआ करती है। वैसी अभिलाषा अल्पज्ञताके कारण होती अथवा उसमें रहस्यान्तर भी कोई है यह बात कथान्तर होगा। इतना तो सभी जानते हैं कि परायेकी उन्नतिकी अपेक्षया अपनी उन्नति सभीको प्यारी है, किन्तु व्यावहारिक दृष्टिमें अपने परायेका विभाग स्थिर हो जाने पर कर्तव्य सा हो जाता है कि परकीयकी कल्याण-कामना करना मानों कोई अघटित घटना है। वैसी परिस्थितिमें भी महात्माओंकी दृष्टिमें अपने पराये सभी एक समान हो रहते हैं। वहाँ अपना परायापन कोई अवशिष्ट नहीं रहता। इसी लिए उनका सभी व्यवहार लोक कर्तव्यमात्र हो रहता है। इस विषयमें एक महान् अनुभवी सिद्ध महापुरुष आचार्य अभिनवगुप्तपादका अनुभव हम पाठकोंकी भेंट करते हैं। सुनिये—

स्वं कर्तव्यं किमपि कलयँल्लोक एष प्रयत्नात्
नो पारार्थ्यं प्रति घटयते काञ्चन स्वात्मवृत्तिम्।
यस्तु ध्वस्ताऽखिलमलभवो भैरवीभावपूर्णः
कृत्यं तस्य स्फुटमिदमियल्लोककर्तव्यमात्रम्॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[यह संसारी पुरुष है, सङ्कुचित स्वार्थमें बँधा जीव है, यह सर्वदा अपने स्वार्थके कर्तव्यको ही प्रयत्नसे गणनामें रखता है। आत्मवृत्तिको दूसरेके लिए लगाना नहीं अच्छा समझता, कारण वह कार्य परका है। अतः सर्वदा सङ्कुचित ज्ञान में फँसा हुआ जीव संसार अपने अपने सङ्कुचित कर्तव्योंको ही आत्म कर्तव्य समझता है अतएव दूसरोंके कर्तव्यको आत्मीय नहीं समझता। परार्थमें अपने आपको थोड़ा भी लगाना उचित नहीं समझता, किन्तु जो स्व साक्षात्कारसे पूर्ण भैरव भावमें स्थित है, समस्त मल जाल तथा तज्जन्य अनेक जन्म-जाल जिसका पूर्ण आत्मभावमें विलीन होचुका है उसका सभी कर्म लोक कर्तव्यमात्र हो रहता है। उसका कोई भी कर्म सङ्कुचित स्वकर्तव्य नहीं रहता, किन्तु प्रत्येक कर्म लोक हितकर कर्तव्य रूप ही रहता है।]

साधारण सज्जनोंकी दृष्टिमें ऐसे पुरुष सत्पुरुष कहे जाते हैं तथा उनके विषय में लोग कहा करते हैं कि—"वे सत्पुरुष अपने स्वार्थ पर सर्वथा तिलाञ्जलि देकर केवल लोकोपकार मात्र करते रहते हैं। अपने स्वार्थको नष्ट करके भी अन्य जनोंके स्वार्थ साधन में वे पुरुष लगे रहते हैं। उन्हें पर सन्तोषसे ही सन्तोष होता है।" महा विद्वान् भर्तृहरिने उनके लिए यों लिखा है—

"एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं विनिघ्नन्ति ये"

[जो अपने स्वार्थको विनष्ट कर देते हैं केवल परार्थका ही वे निरन्तर साधन करते हैं उन्हें मुख्य सत्पुरुष कहना चाहिए।]

ऐसे महापुरुष ही समस्त विश्वको स्वत्वका साक्षात्कार करा सकते हैं। वे ही वास्तवमें राष्ट्रवादी कहे जा सकते हैं। कारण वे विश्व-वपु हैं। समस्त विश्व उनका अपना शरीर है। ऐसे महापुरुष ही समस्त विश्वका कल्याण कर सकते हैं। तन्त्र ग्रन्थोंमें ठीक ही लिखा है—

यदा चर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यन्ति मानवाः।
तदैव सर्वलोकानां दुःखस्यान्तो भविष्यति ॥

[जब चर्मस्थानीय वेष्टन मानवका आकाश हो जाएगा तभी सम्पूर्ण लोगोंके समस्त दुःखोंका अन्त होगा।]

अतः सर्व प्रथम प्रत्येक पुरुष मात्रको चाहिए कि वह 'स्वत्व' का साक्षात्कार करे। स्वत्व साक्षात्कारसे ही परिपूर्णानन्द, परिपूर्ण सामर्थ्य, परिपूर्ण-शक्ति प्राप्त हो सकती है। शिवमस्तु ॥

अरे वसन्त ! यहां मत आओ

[कवयिता—श्री पं० रामदत्तजी शास्त्री काव्यतीर्थ 'विमल']

असह्य-दैन्य-यंत्रणासे पीड़ित— हमारे पास तुम आओ।

ग्रीष्म सदा रहता है मनमें,
पावस रहती नित्य नयनमें।
शिशिर घुसी है इस जीवनमें—
कौन करेगा तेरा स्वागत—
यहाँ आ मत निज मान घटाओ ॥

अन्न-कण जिन्हें नहीं जुटते,
उपयुक्त वस्त्र न कभी मिलते,
पराधीनतामें घुट मरते—
स्वागत-भार उन्हें तुम देकर—
मत और अधिक व्यथा बढ़ाओ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवनकी एक झांकी

[२]

[गताङ्कोंमें पूज्यपाद श्री १०८ आचार्य चरणोंके अलग अलग कइ विषयों पर मौलिक लेख निकल चुके हैं। उन लेखोंसे सन्तुष्ट होकर कई प्रेमियोंने बारम्बार उनकी जीवनीके सम्बन्धमें प्रश्न किये हैं, किन्तु उनकी जीवनी उन्हींके अतिरिक्त प्रायः और कोई नहीं जानता। हमने भी कई बार उनसे अपनी आत्मकथा प्रकाशित करनेके लिए प्रार्थना की परन्तु वे अस्वीकार ही करते गये। अपने प्रेमी भक्तोंके अत्याग्रहके कारण आत्मजीवनके कुछ अंशों पर प्रकाश डालना उन्होंने अब मान लिया है। उसीके अनुसार उनका एक लेख इसी शीर्षकसे गत हेमन्ताङ्कमें प्रकाशित हो चुका है। 'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी पाठकोंने उसको अत्यधिक सराहा है। कई पाठकोंके कई प्रकारके उत्सुकतापूर्ण पत्र आये हैं। उन सज्जनोंके हितार्थ उनका यह दूसरा लेख हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं। 'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी पाठक इससे भी लाभ उठाएँगे ऐसी आशा है। —सम्पादक]

'श्रीस्वाध्याय'के प्रेमी पाठकोंने गताङ्कमें ऊपर लिखित शीर्षकके एक लेख का भलीभांति स्वागत किया है। साथ ही और भी जीवनकी घटनाओं पर प्रकाश डालनेके लिए अनुरोध किया है, इसी कारण इस अङ्कमें भी एक घटना हम लेख बद्ध कर रहे हैं। पाठक इससे भी लाभ उठाएँगे ऐसी आशा है।

जनन तथा मरण ये दोनों ही जीवनके ओर-छोर हैं। जीवनका प्रारम्भ जनन तथा अन्त मरण नामसे सम्बोधित किया जाता है। आत्मानन्दनाथका जीवन अनादि एवं अनन्त है। जीवानन्दनाथका जीवन जनन तथा मरण नामक दो अवस्थाओंके मध्यमें आबद्ध है। इसकी जीवन-तरङ्गिणी शिवानन्दनाथके मानस सरोवरसे स्रोतस्विनी बनी है, ऐसी जनश्रुति अनन्त समयसे चली आ रही है। शिवमानस-सरोवरको उसका अपना जीवन उस सच्चिदानन्दकन्द महान् पर-शिवसागरसे अज्ञात काल-घनकी कृपासे प्राप्त हुआ था, ऐसा कहा जाता है। क्षुद्रसे क्षुद्रसे लेकर बड़ेसे बड़े पर्यन्त जीवोंकी जीवन तरङ्गिणियाँ अन्तमें उसी महान् शिवसागरमें आत्मसमर्पण कर देती हैं, घुलमिल जाती हैं, उसके साथ समरस हो सामरस्यका आनन्द लूटती हैं। इसीमें सबको पूर्णानन्द सिद्धि हुआ करती है। परिपूर्णमें एकत्व तथा अनेकत्व परिपूर्ण रूपसे भरा पड़ा है। जीवानन्दको जीवानन्दकी तथा शिवानन्दको शिवानन्दकी उपलब्धि स्वसङ्कल्पानुरूप इसीसे सदा ही होती रहती है। अवस्थाओंके द्वन्द्वसे आबद्ध जीवन जन्म कहा जाता है। जन्मकी व्याख्या अपनी विवक्षाके आधीन है। अस्तु।

मेरे अपने इस आबद्ध जीवन (जन्म) के तीन चौमासे बीत लिए थे। बालसुलभ चापल्य वैसे तो मुझमें न्यून मात्रामें था। अब तो और भी कम हो रहा था। ऊधममें मैं भी समवयस्कोंका हाथ बटाया नहीं करता था ऐसी कोई बात न थी, किन्तु दूर-दूरसे अलिप्तसे होकर ताशके कई खेलोंमें प्रावीण्य हो गया था। पतङ्ग उड़ाना प्रायः प्रतिदिनका कर्तव्य-सा बन गया था। बुद्धिबल (शतरञ्ज) में बढ़ रहा था। गुल्लीडण्डा प्रायः प्रत्येक दिन का खेल था। क्रिकेट भी अच्छा खेल लेता था किन्तु गोलियोंके खेलमें चतुराई थोड़ी भी न आने पाई। थोड़ा-थोड़ा लट्टू घुमाना भी जानता था। हां, चक्री फेरना कुछ अच्छा आता था। अब तैरना भी कामके योग्य जान गया था। चौसर पर्याप्त खेला करता था। कौड़ियोंके तथा पासोंके कई खेल आ गये थे, किन्तु सभी प्रकारके खेल कूदोंमें यथाऽवसर सम्मिलित होने पर भी चित्त किसीमें भी नहीं लगा करता था। चित्त उदास-सा ही रहा करता था। एकान्तमें बैठकर लम्बे-लम्बे निःश्वास लिया करता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर वालोंकी दृष्टिमें कभी-कभी यह बात अवश्य आ गई थी, वे इसको अपशकुन मानते थे। इसका कारण भी वे कई बार पूछ चुके थे। मेरा उत्तर मौनसे अतिरिक्त कुछभी न होता था। बहुत प्रयत्न करने पर भी इसका निदान वे न जान सके। मेरा शरीर कभी भी हृष्ट-पुष्ट न हो सका। इसका प्रधान कारण शरीर यष्टिकी स्वाभाविक अशक्तता ही मुझे प्रतीत हुई है। खाने-पीनेकी प्रतिकूलता भी न थी। लोग कहा करते थे कि मातृ-दुग्धसे वञ्चित बालक पुष्ट नहीं होते। प्रतिदिन कोई न कोई रोग शरीरको घेरे ही रहता था। अमरकोष, शब्दरूपावली, अष्टाध्यायी (पाणीनीय) आदि कई छोटी-मोटी पुस्तकें अब कण्ठस्थ हो चुकी थीं। पढ़नेके लिए किसी पाठशालामें नहीं जाना पड़ता था। ननसालमें रहते हुए कुछ पढ़ाई हिन्दी पाठशालामें भी पढ़ी थी। सवा चार वर्षकी अवस्थामें एक वैतनिक शिक्षकके पास पढ़नेके लिए जाना पड़ता था। उसकी लाल-लाल तथा बड़ी-बड़ी आंखोंको देखकर एवं उसके "क्यों रे!" के शब्दको सुनकर मैं बहुत ही भयभीत हो जाता था। शरीरमें कँपकँपी छूटती थी, मूत्र निकलने लगता था, ज्वर चढ़ जाता था। उसके पास पढ़नेसे मैंने अस्वीकार कर दिया। हठात् उसके पास पहुँचाने पर चुपकेसे भागनेके लिए प्रकृति विवश करती थी। उर्दू वर्णमाला अब सर्वथा भुला दी थी। हिन्दी, संस्कृत, इतिहास, भूगोल, गणित आदि सभी विषयोंमें प्रायः समान रूपसे प्रतिभा चलती थी। अस्तु।

उपनयनसंस्कार बड़े ठाठ-बाठसे हो चुका था। वेदमाता श्रीगायत्रीकी दीक्षा विधियुक्त मिल गई थी। सन्ध्योपासन यथा विधान तीनों समय करना होता था। कुछ रहस्यान्तर भी उसी समय यथा-सम्प्रदाय पूज्य श्रीपिताजीसे प्राप्त हुआ था। "श्रीपञ्चस्तवी"का "लघुस्तव" नित्य पाठमें आ गया था। इस बातका ज्ञान हम पिता-पुत्रोंके अतिरिक्त किसीको न होने पाया। इसका कारण पूज्य पिताजीकी आज्ञा ही था। अस्तु।

एक दिनकी बात है, सम्भवतः श्रावण मासका कृष्ण पक्ष था। तिथि अज्ञातके गर्भमें विलीन हो चुकी है। गर्मी पर्याप्त मात्रामें थी। अपराह्नका समय हो रहा था। पिताजी विश्राम कर उठ चुके थे। मैं भी उन्हींके पास लेटा था, मुझे नींद नहीं आ रही थी। उन्होंने हाथ मुँह धोये। मैंने भी हाथ मुँह धोये। वे चटाई पर बैठ गये, पास मैं भी। 'श्रीपञ्चस्तवी'की पोथी पड़ी थी। हस्त लिपि सुन्दर तथा सुवाच्य भी थी। पोथी मैंने उठा ली। दूसरा स्तव पढ़ने लगा। श्लोक पाठकी रीति मुझे स्वभावतः पूर्व संस्कारोंसे ही प्राप्त हो गई थी। स्वर मधुर था। छन्द शास्त्र न पढ़ने पर भी गुरु लघु की त्रुटि तथा मात्रा और अक्षरादि के न्यूनाधिक्य भावका ज्ञान भी कुछ स्वभावतः प्राप्त हो गया था। मेरे पाठसे सुनने वाले श्रोता लोग मुग्ध हो जाया करते थे। इस बात पर मुझे भी उचित गर्व था। कुमुनीर निवासी स्वप्नके बाबा-जीसे भी श्लोक पाठके लिए मुझे साधुवाद मिले हुए थे। 'चर्चास्तव' सारा पढ़ डाला। बातों बातोंमें सुन रक्खा था कि स्वर्गमें कल्पवृक्ष होते हैं। श्री-रामायण, श्रीमद्भागवत, श्रीमन्महाभारत आदिकी कथाएँ बहुत सुन रक्खी थीं। मातामहीसे सैकड़ों कथाएँ सुन चुका था। वह एक बड़ी विदुषी वृद्धा थी। सहसा "कल्पद्रुम" श्लोक पढ़ते समय कल्पवृक्ष की बात स्मृतिपटल पर समक्ष हो आई। मैंने अपने पिताजीसे उस श्लोकका अर्थ पूछा। मैंने कहा, "पिताजी! इस श्लोकका अर्थ क्या है?" अबकी बारी पिताजीने श्लोकके अर्थको बतानेसे अस्वीकार नहीं किया। उन्होंने उसका अर्थ बता दिया। अर्थ संक्षिप्त-सा ही था। जिन शब्दोंमें उन्होंने अर्थ बताया था, उन शब्दोंकी आनुपूर्वीको दोहराना अब असम्भव है। उसे भूल भी चुका हूँ। अब उस आनुपूर्वीकी आवश्यकता भी प्रतिभासित नहीं होती। अर्थ सुनते ही शरीर शून्यसा हो गया। हृदयमें एक कोई विलक्षण व्याकुलता होने लग पड़ी। शरीरमें झंझनाहट हो रही थी और न जाने क्या हो गया। मैं अचेतनसा हो वहीं चटाई पर ही गिर पड़ा। किन्तु शीघ्र ही सचेतन हो गया। पिताजी बहुत घबरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गये थे। मुझे प्रस्वेद (पसीना) हो रहा था। मेरे शिर पर एवं मुख पर भी पानीके छींटे दिये गए थे। नाक दबाई गई थी। ये सब बातें मुझे चेतना आने के पश्चात् ज्ञात हुईं। मैंने आँखें खोलकर देखा, वहाँ तीन चार मनुष्य बैठे थे। किसीने कहा, "यह अपस्मार (मिर्गी) है।" किसीके मतमें ऊपरी भूतादिकी बाधा थी। पिताजीको बहुत चिन्ता हो रही थी। उन्होंने नाड़ी देखकर कहा, "नाड़ी तो ठीक है, थोड़ी पित्तकी अधिकताके अतिरिक्त कुछ नहीं।" मैं अब भलीभांति सावधान हो गया था। पिताजीने बहुत पूछा। किन्तु मैं कुछ भी न बता सका कि मैं अचेतन क्यों कर हो गया था। हृदयकी व्याकुलतासे अन्य मैं स्वयं भी कुछ न जान पाया था। सब लोग समझ रहे थे कि यह मूर्छा रोग है। घरवालोंके तथा अन्यान्य सम्बन्धियोंके कहने पर डाक्टरसे परीक्षा कराई गई। किन्तु डाक्टरने कहा, "इसको कोई भी रोग नहीं हुआ है।"

'श्रीपञ्चस्तवी' के उस श्लोकके पाठ करते समय मुझे प्रत्येक बार हृदयमें एक विलक्षण अज्ञात व्याकुलता हो जाया करती थी। हृदयमें चींटियोंके काटनेकी सी पीड़ा हुआ करती थी। एकान्तमें पढ़ने पर रोना आने लगता था। रोते रोते मैं सिसकियाँ भरने लग जाता था। घर वालोंने एकान्त में चुपके रोते देख लिया था। उन्होंने इसका निदान मातृस्मृति निश्चित कर रक्खा था। वे लोग मुझे सान्त्वना भी दिया करते थे, किन्तु उससे क्या बनता। जबकि रोगका निदान ही ज्ञात न था। रोग कुछ अन्य ही था, औषधि उसके विपरीत थी। अब उसका कारण ज्ञात हो चुका है। अब तो उसके पढ़ते समय अत्यधिक आनन्द आया करता है। बारम्बार पढ़ने पर भी चित्त तृप्त ही नहीं होता। तृप्ति न होने पर भी दुःख सर्वथा भूल जाता है। ज्ञान होने पर संयोग तथा वियोग दोनों ही आनन्ददायक हो जाया करते हैं। दोनोंका पर्यवसान आनन्दमें ही निहित है, किन्तु अज्ञान सभी अनर्थोंकी जड़ है। यों तो बीज इसका भी आनन्दमें ही प्रस्फुरित होता रहता है। इसी घटनाके कारण 'श्रीपञ्चस्तवी' के उस श्लोकसे अत्यधिक प्यार है। अब भी मैं उसे प्रेमसे पढ़ा करता हूँ। 'श्रीपञ्चस्तवी' का वह श्लोक मेरी अपनी जीवनकी एक झांकी है। विज्ञ पाठकोंको यह संकेत समझते चिर न लगेगा। वह श्लोक पूरा इस प्रकार है—

कल्पद्रुमप्रसवकल्पितचित्रपूजा—
मुद्दीपितप्रियतमामदरक्तगीतिम्।
नित्यं भवानि! भवतीमुपवीणयन्ति
विद्याधराः कनकशैलगृहागृहेषु॥

[निखिल संसार तथा उसके मूलजनक परशिव के अनन्त जीवनकी परमाधार आप ही हैं। इसी कारण आपको "हे भवानि!" इस प्रकार से विद्वान् लोग आमन्त्रित करते हैं। "विद्याधर" विद्याधर हैं। "विद्ययाऽमृतमश्नुते" विद्यासे अमृतत्वकी प्राप्ति होती है। उस विद्याको विद्याधर निरन्तर धारण करते हैं। जिनकी धरा (जन्मभूमि) ही विद्या है, उनको अमृतत्व तो स्वाभाविक होना ही योग्य है। इसीलिए देव योनियोंमें विद्याधर सर्व श्रेष्ठ हुए हैं। कारण वे आपके कामकला स्वरूप को भली भांति जानते हैं। पर-शिव मूलविन्दु महा-कामेश्वरकी अभिन्न सर्वतन्त्रस्वतन्त्र कामकला ही विसर्गशक्ति आप हैं। इसीलिए आपको महाकामेश्वरी कहा जाता है। आपके उपवीणन से आत्म विस्मृति कभी नहीं होती। अतएव विद्याधर लोग निरन्तर आपकी उपवीणना (समावेश) में तन्मय होते रहते हैं। पर-शिवका यह काम-कला-स्वरूप अद्भुत सुन्दर है। इसीलिए आपके इस रूपको श्रीमहात्रिपुर-सुन्दरी कहते हैं। भोग और मोक्ष दोनों ही समान भावसे विद्याधरोंके करगत हैं। कारण वे आपके सौन्दर्यकी उपवीणना नित्य करते हैं। आपमें तथा विद्याधरों में नाम मात्रके लिए कल्पित भेद भले ही हो, किन्तु वस्तुतः वे भी आपकी उपवीणनासे अपने आपकी ही उपवीणना करते रहते हैं। अतएव वे विद्याधर हैं। वे स्वयं विद्याधर होनेके कारण धर्म नामक पुरुषार्थ की उन्हें स्वाभाविक सिद्धि है। धर्मका ज्ञान करनेके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए उन्हें कहीं अन्यत्र नहीं जाना पड़ता। कामकला के उपवीणनने उन्हें विद्याधर बना दिया है। उपवीणनकी सामग्री भी इनके पास सर्वदा सिद्ध ही रहती है। इधर उधर कहीं भटकना नहीं पड़ता। विद्याधर आपकी पूजा कल्पवृक्षोंके पुष्पोंसे करते हैं। यह अपने आपकी उपवीणनाके लिए की गई पूजा विलक्षण होती है। इसका वर्णन करनेमें वाणीकी वाणी भी असमर्थ है। पूजाके लिए आपका यथेष्ट चित्र ये स्वयं कामकलामें निर्माण कर लेते हैं। आपके इस चित्रकी रचनामें इनकी कल्पनाको भांति-भांतिके कल्पवृक्षोंके पुष्प रंग रूपकी सहायता देते रहते हैं। जिनके पास अपनी सत्ताके (स्वत्वके) कल्पद्रुम हों; स्वयं विद्याधर हों तथा नित्य अपनी आत्मरूप कामकलाका उपवीणन होता हो, तो पूजाके लिए चित्रकी रचना कौनसी कठिन या असम्भावनीय सी बात है? कामकलाके अभ्यासीको सभी कलाओंमें चातुर्य प्राप्त हो जाता है, तो चित्रपूजाकी सिद्धहस्ततामें क्या चित्र (आश्चर्य) है? हे भवानि! विद्याधरोंके लिए आप 'कल्पद्रु' हैं। वे लोग आत्मसम्प्रदायानुसार महान् यज्ञोंसे आपकी विलक्षण सम्भावना किया करते हैं। इस विलक्षण सम्भावनाको पूजा रूपसे वे भली भांति जानते हैं। आदि वर्णमालासे रचित आपके चित्रकी पूजाका रहस्य भी वे सम्यक् जानते हैं। अतएव पर-शिव-स्वरूपमें उत्पन्न होने वाले उसमें रहने वाले तथा अन्तमें उसीमें विलीन होने वाले अनन्त पदार्थ सार्थसे विलक्षण पूजा करना यह एक उनको स्वाभाविक बात हो गयी है। अतएव वे नित्यमुक्त हैं। उन्हें कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुं सामर्थ्य प्राप्त है। नित्य मुक्तको मोक्षकी कामनाकी सम्भावना कैसे हो सकती है? कामकलाके उपवीणक विद्याधरों की प्रियाएँ, प्रियाएँ ही नहीं अपितु प्रियतमाएँ हैं। एतदर्थ उनमें सभी प्रकारका मद (हर्ष) होना स्वाभाविक है। विद्याधरोंके प्रेमका एक मात्र आयतन बनना यह उनके लिए चारों ओरसे हर्षका कारण है। यह हर्ष विद्याधरोंकी की हुई उस विलक्षण पूजा से और भी उद्दीपित हो गया है। अतएव गीति (गान) को भी अत्यन्त शोभा प्राप्त हुई है। विद्याधरों की प्रियतमाओंका स्वरसाऽनुभवसे रञ्जित गान उद्दीपित होगया है। इनका अपना इस विलक्षण पूजनसे अत्यन्त अभीष्ट सर्वतोभावका आनन्द उद्दीपित हो गया है, इसीसे उनका अपना गान भी अति शोभित हो रहा है। गान विद्यामें कुशल; सर्वदा आनन्दमय रूपमें रहने वाली, आलस्य प्रमादादि दोषोंसे रहित, इनकी प्रियतमाएँ काम-कला के उपवीणनमें नित्य तत्पर इनके पास हैं। अतएव काम नामक पुरुषार्थकी सिद्धि भी इन्हें निरन्तर प्राप्त ही है। सुवर्ण शैलकी गुहाओंमें इनके गृह हैं। इनके घर ही जब सोनेके पर्वतोंकी गुफाओंमें हैं तथा सम्पूर्ण गृह सुवर्णसे ही निर्मित हैं तो धनकी न्यूनता की सम्भावनाको यहाँ स्थान ही कहाँ? हे भवानि! कामकलाका उपवीणन क्या नहीं कर सकता? हे भवानि! आपने उनको विद्याधर पद पर प्रतिष्ठित किया है; उनके धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, नामक चारों पुरुषार्थ सहजसिद्ध हो गए हैं। इसी कारण विद्याधर सर्वदा आपके उपवीणनके अतिरिक्त कोई कार्यान्तर नहीं करते। करें भी क्या? आपके चिदानन्देच्छाज्ञान-क्रियामय-स्वरूपमें वे समाविष्ट होकर सामरस्यानन्दका उपभोग निरन्तर करते रहते हैं। वस्तुतः सर्वत्र सर्वरूपसे आत्मानन्दकी उच्छलत्तामें आत्मातिरिक्तताकी शंका भी नहीं होती। हे अपने आप रूप! हे परशिवकी प्राणाधार! आपके कामकला स्वरूपका निरन्तर उपवीणन ही जीवनका सर्वश्रेष्ठ प्रियतम जीवन है। अहा! कितना सुन्दर जीवन है, सम्पूर्ण साधन साध्यरूप हो उठते हैं। पूर्णरूपसे निरन्तर पूर्णाहन्ता स्वरूपकी यह उच्छलत्ता कितनी आनन्ददायक है, जिसमें अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड रूपी तरङ्गोंकी लीला निरन्तर होती रहती है। इस अद्भुत अनन्त जीवनमें किसी भी वस्तुकी अपूर्णता खटकती भी नहीं। हे भवानि! यह अपने आप रूप जीवन अति धन्य है।]

प्रेमी पाठकों! मेरी इस घटनाने मुझे अब सावधान कर दिया है। नव वर्षकी अवस्थामें पहले पहल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मण

[लेखक—श्री० पं० बलजिन्नाथजी शास्त्री बी० ए०]

यह तो सारा संसार जानता है कि भारतवर्षमें ब्राह्मणोंका ही स्थान सर्वोच्च रहा है। अकबर जैसे मुसलमान सम्राटोंके समयमें भी ब्राह्मणोंका बहुत सत्कार होता रहा है। स्वयं औरंगजेबकी सभामें भी कई ब्राह्मण कवि और विद्वान् आदर पाते थे तो और सम्राटोंके राज्यकी बात ही नहीं। बौद्ध पहिले पहिले ब्राह्मणोंके विरुद्ध खड़े होने लगे थे परन्तु ब्राह्मणोंके ज्ञान और उनकी विद्याका प्रभाव बौद्धों पर भी पड़ा और उनके समयमें भी समाज सदा ही ब्राह्मणको आदर दृष्टिसे देखता था। अति प्राचीन काल (जो भारतका वास्तविक स्वर्णयुग कहा जा सकता है) तो 'ब्राह्मणोंका काल' नामसे ही इतिहासमें प्रसिद्ध है। इस कारण उस समयकी ब्राह्मणोंकी अवस्थाका कहना ही क्या? इस घोर कलि कालमें तो ब्राह्मणों पर चारों ओरसे आक्रमण होते हैं, परन्तु विचारपूर्वक देखा जाय तो आजकल भी साधारण जन समाजकी दृष्टिमें अधिकतर ब्राह्मण ही सत्कारके पात्र बन रहे हैं। देशके बड़े बड़े नेताओंमें भी अधिक संख्या ब्राह्मणों की ही है।

अधर्मपरायण यूरोपकी सभ्यता सदासे ब्राह्मणों का विरोध करती आई है। इसका मुख्य कारण यह है कि यूरोपके लोग शेष संसारके लोगों पर अधिकार जमाकर उस अधिकारको स्थिर रखनेके लिए इन देशोंके लोगोंको संसारकी दृष्टिमें गिरानेके अनेक यत्न करते रहे हैं और करते भी हैं। इन परतन्त्र देशोंके लोगोंको असभ्य सिद्ध करके संसारको यह दिखाते हैं कि ये लोग दास भावके ही योग्य हैं, स्वतन्त्रताके योग्य नहीं। दुर्भाग्यवश भारत भी इन्हीं परतन्त्र देशोंमेंसे एक है। हमारी शासक जातिके लोग भी यही कहते आए हैं। भारतवर्ष निवासियों में प्रधान हैं ब्राह्मण, इस कारण ब्राह्मणोंकी निन्दा और ब्राह्मणत्व पर आक्षेप करना ही हमारे शासकोंने अपना धर्म समझा और तन-मन-धनसे इस धर्मको निभाया। यह तो प्रायः सभी जानते हैं कि हिन्दुओं और विशेषकर ब्राह्मणोंके अपयशको प्रथित करनेके लिए मिस म्योकी मदर इण्डिया (Mother India) के अनुवाद समस्त संसारकी प्रधान प्रधान भाषाओं में प्रकाशित करनेमें और इस पुस्तकका प्रचार समस्त संसारमें करनेके लिए कितना धन व्यय किया गया और कितना परिश्रम किया गया। परन्तु क्या फादर इंडिया (Father India) का भी कभी भारतवर्षसे बाहर प्रचार किया गया? धिक्कार है उन भारतियोंको जो कि औत्सुक्यसे मदर इण्डिया जैसी पोथियोंको पढ़ते हैं और उन पर विश्वास करते हैं। मोरेशस द्वीपका एक ब्राह्मण कुमार हमारे साथ पढ़ता था। उस द्वीपके निवासी अधिकतर फ्रेंच भाषा बोलते हैं। उसने हमसे बताया कि "एक फ्रांस के निवासीने भारतवर्षके विषयमें एक पुस्तक लिखी, जिसमें उसने भारतवर्षका, हिन्दुओंका और विशेष करके हिन्दु स्त्रियोंका और उनके पातिव्रतके महत्त्व

इस श्लोकके अर्थके सुनने पर मैं निश्चेतन सा हो रहा था, घर वालोंकी दृष्टिमें रोगग्रस्त सा हो गया था। महामायाकी अपार कृपा है, अब जीवन नित्य निरन्तर आनन्दमय हो रहा है। इस श्लोकमें अनेक गूढ़ रहस्य भरे पड़े हैं। उनको संक्षेपमें आप लोगों के समक्ष निवेदित कर दिया है। 'श्रीपञ्चस्तवी' का यह श्लोक मेरे अनन्त जीवनका साक्षी है। इससे अधिक रहस्यके उद्घाटन करनेके लिए संविद्योगिनियोंकी आज्ञा अपेक्षणीय है। प्रेमी पाठक इससे सन्तुष्ट होकर स्वयं भी लाभ उठानेकी चेष्टा करेंगे।

॥ शिवमस्तु ॥

—अ० वा० आचार्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का सच्चा चित्र खींचा। परन्तु प्रकाशित होते ही फ्रांस के राज्यने उस पुस्तकको बन्द कर दिया, क्योंकि उस में भारतवासियोंकी उचित प्रशंसाके गीत गाए हुए थे।" कितना यह घोर अन्याय है! कितना पाप है! आजकल यूरोपकी सभ्यतासे रंगा हुआ सारा संसार ही अधर्मपरायण बन गया है। प्रायः संसारके प्रत्येक देशमें प्राचीन समयमें धार्मिक लोगोंका अधिक सम्मान होता था। ज्यों ज्यों अधर्म बढ़ता गया धार्मिक लोगोंका सम्मान घटता गया। यूरोपके राजा लोग गिरजोंको तथा पादरियोंको लूटने लगे। धीरे-धीरे सारी जनता पादरियोंके विरुद्ध उठ खड़ी हुई और उनसे समस्त अधिकार छीने गए। यद्यपि भारतमें भी किसी किसी अधम राजाने मन्दिरोंका धन लूटा है। परन्तु भारतवर्षके लोग कभी ब्राह्मण अथवा देवालयके विरुद्ध नहीं हुए। ऐसे राजापसद प्रजामें निन्दित हो गए और ब्राह्मण अपने सम्मान्य पद पर स्थित रहा। आजकल यूरोपकी सभ्यतासे अन्धे बने हुए भारतीय भी बहुतसे अधर्मपरायण बनकर ब्राह्मणकी निन्दा करने लगे हैं। उर्दूके प्रसिद्ध कवि का वह गीत भी (सारे जहांसे अच्छा हिन्दोस्तां हमारा) जिसको सहस्रों भारतीय औत्सुक्यसे गाते हैं, अंग्रेजी ढङ्गकी शिक्षाके प्रभावके कारण ब्राह्मण की निन्दासे छूटा नहीं है। विदेशीय शत्रुओंके, तथा दास भावसे अभिभूत स्वदेशीय मित्र रूपी शत्रुओंके आक्षेपोंकी वर्षा इस समय ब्राह्मण सहन करते हैं। परन्तु इतना होने पर भी आप भारतके ग्रामोंमें जाइए और सूक्ष्म दृष्टिसे निरीक्षण कीजिए तो आपको यही प्रतीत होगा कि भारतवर्षमें अब भी प्रायः ब्राह्मण ही अधिक सम्मानका पात्र है। लोग ब्राह्मण ही को हृदयसे सम्मान करते हैं। केवल हिन्दू ही नहीं, सिख जैन तथा अनेक मुसलमान भी हृदयसे ब्राह्मणका ही सम्मान करते हैं। भारतका ब्राह्मण इस घोर कलियुगमें भी यूरोपके पादरीकी अवस्थाको प्राप्त नहीं हुआ (यह बात और है कि पादरीकी आर्थिक दशा ब्राह्मणसे अच्छी होती है) टर्कीके मौलवियोंकी भांति कहीं भी ब्राह्मणोंकी दाढ़ी नहीं नोची गई, ब्राह्मण अब भी ब्राह्मण ही है, इसका क्या कारण है?

कारण यह है कि पादरी और मौलवी केवल पौरोहित्यका ही काम किया करते थे। वह काम भी उनको प्रायः किसीके विवाह और मृत्यु या और किसी एक आध अवसरको छोड़कर और कभी नहीं करना पड़ता था। इस कारण लोग पादरियों तथा मौलवियोंको व्यर्थ समझने लगे। लोग उनको केवल खाने वाले और कोई काम न करने वाले समझते थे और अब भी समझते हैं। परन्तु यह बात ब्राह्मण की नहीं। ब्राह्मण केवल विवाह कराने वाला और मृतकका संस्कार कराने वाला ही नहीं है। ब्राह्मण केवल पुरोहित ही नहीं है। ब्राह्मण तो उल्टा पौरोहित्यकी निन्दा करता है।

"नरकाय मतिस्ते चेत् पौरोहित्यं समाचर"

यह पञ्चतन्त्रका श्लोक तो प्रसिद्ध ही है। ब्राह्मणों के साहित्यको सामने रखकर तो यूरोपके भी ऐतिहासिकों को यह अवश्य मानना पड़ता है कि प्राचीन कालकी भारतकी सभ्यता आधुनिक पाश्चात्त्य सभ्यता की अपेक्षा कहीं बढ़ चढ़कर थी। इस सभ्यताके स्तम्भ कौन थे? कौन ऐसे परिश्रमी थे? जिन्होंने भारतको उस उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचाया? प्राचीन भारतको बनाने वाले कौन थे? वे भारतवर्ष के ब्राह्मण थे। ब्राह्मणोंकी बुद्धि, ब्राह्मणोंका बल, उनका साहस, उनकी निरपेक्षता, उनकी जितेन्द्रियता, उनका त्याग, उनकी पवित्रता, उनका प्रयत्न, और उनकी धार्मिकतादि ही भारतवर्षकी उज्ज्वल सभ्यता के मूल स्रोत थे। हिन्दू समाजको ब्राह्मणोंने ही इस प्रकारसे बांध रखा कि अभी तक उसके बन्धन यत्किञ्चित् भी ढीले नहीं पड़े। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के साधनोंके आविष्कर्ता ब्राह्मण ही थे। विद्यामें, शस्त्र विद्यामें और कलाकौशलमें भी ब्राह्मण ही चारों वर्णोंके गुरु थे। ब्राह्मणोंने तपस्या की, ब्राह्मण ही धर्मके उपदेशक थे, ब्राह्मण ही न्यायके निर्णायक थे, ब्राह्मण ही राजाको अभिषेक कराते थे, ब्राह्मण ही राज्यके समस्त नियमोंका निर्माण करते थे, चार वर्णों तथा चार आश्रमोंके व्यवस्थापक ब्राह्मण ही थे। देश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा जातिके कल्याणके लिए कितने ही कठिन काम ब्राह्मणोंने ही किए। सारे देशको बनानेवाले तथा बचाने वाले ब्राह्मण ही थे। क्षत्रियोंको भी शस्त्रविद्या ब्राह्मण ही सिखाते थे। जब कभी देशमें अन्यायको दबानेकी अथवा शान्तिको स्थिर करनेकी शक्ति क्षत्रियोंमें नहीं रह जाती थी, जब कभी क्षत्रिय ऐश्वर्यमदमें तथा विषयोपभोगमें उन्मत्त होकर प्रजापालन छोड़ देते थे तो झट ब्राह्मण शस्त्र उठाते थे और समस्त दोषोंको शीघ्र दूर करते थे। भगवान् परशुराम, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य आदि ब्राह्मण शिरोमणि तो इसके उज्ज्वल दृष्टान्त हैं। कितनी बार परशुरामजीने दुष्ट राजाओं को दण्ड देकर संसारमें शान्तिकी स्थापना की। युद्ध में ब्राह्मण क्षत्रियोंसे बढ़कर वीर हुआ करते थे। परशुरामजीके अतिरिक्त महर्षि वसिष्ठ भी इस बातके प्रसिद्ध दृष्टान्त हैं। प्रसिद्ध शस्त्रधारी महावीर विश्वामित्र भी समस्त क्षात्र अस्त्रोंका प्रयोग करने पर भी वसिष्ठजीसे हार गए। मध्यकालमें भी यौगन्धरायण और रुमण्वान जैसे ब्राह्मण वीर भारतवर्षमें हुआ करते थे जो लड़नेमें क्षत्रियोंसे भी बढ़ चढ़कर थे। लड़ते हुए यौगन्धरायणका वर्णन महाकवि भासने प्रतिज्ञा-नाटिकामें कैसी सुन्दर रीतिसे किया है—

एष खलु आर्य यौगन्धरायणः। यः एषः—

निशितविमिल खड्ग संहृतोन्मत्तवेषः
कनकरचितचर्मव्यग्रवामाग्रहस्तः ।
विरचितबहुचीरः पाण्डुराबद्धपट्टः
सतडिदिव पयोधः किञ्चिदुद्गीर्णचन्द्रः ॥

अग्निकुल राजपुत्रोंके प्रोत्साहक भी ब्राह्मण ही थे। शिवाजी जैसे वीरोंके भी गुरु रामदास जैसे ब्राह्मण ही थे। चन्द्रगुप्त जैसे सम्राटोंके तथा मौर्य साम्राज्य जैसे साम्राज्योंके भी बनाने वाले चाणक्य जैसे ब्राह्मण ही थे। सारांश यह है कि भारतवर्षकी विद्याको, बलको, शस्त्रबलको, सामाजिक स्थितिको और कलाकौशलको बनाने वाले ब्राह्मण ही थे। वास्तवमें भारत पर शासन भी ब्राह्मणोंका ही था, क्योंकि राज्यानियम वे ही बनाते थे और राजा तथा समस्त राजकर्मचारियों पर उनका बड़ा प्रभाव हुआ करता था। इस प्रकार सब प्रकारसे ब्राह्मण भारतवर्षके स्वामी थे।

ब्राह्मणोंका महत्त्व देखिए—समस्त देशके स्वामी होने पर भी स्वयं जङ्गलोंमें रहते थे, धन तथा ऐश्वर्य को तुच्छ समझते थे। विद्या ही उनका धन था, लोकोपकार ही उनका ऐश्वर्य हुआ करता था। तपोवनोंमें तपस्या करते करते वे देशका अनेक प्रकार से कल्याण करते थे और ऐसा करने पर भी देशसे अपने शरीरको सुख देने तककी सामग्री भी नहीं लेते थे। शीतोष्णवर्षा आदिके कष्टोंको भी देशकी भलाईके लिए सहते थे। देशके लिए अपने प्राणों की भी चिन्ता नहीं करते थे। यह तो संस्कृतज्ञ सभी जानते होंगे कि पाणिनि जैसे ब्राह्मण जङ्गल में रहकर सिंहके हाथों मारे गए परन्तु नगरमें आकर ऐश्वर्यमें न रहे। इसी प्रकारसे मीमांसा-दर्शनके निर्माता जैमिनि हाथी द्वारा और छन्दःशास्त्रके सूत्रकार पिङ्गल-मुनि मकर द्वारा मारे गए। इन ब्राह्मणोंने अपने प्राण संशयमें डाल दिए, तो किस लिए? केवल देशोपकारके लिए। आज तक भारत के लोग इन ब्राह्मणोंके ग्रन्थोंसे उपकृत हो रहे हैं। यह तो इतिहास प्रसिद्ध बात है कि मौर्यसाम्राज्यको बनाने वाले और इतने विशाल साम्राज्यका सुप्रबन्ध करने वाले त्यागी ब्राह्मण चाणक्य स्वयं पाटलिपुत्र नगरके बाहिर जङ्गलमें एक कुटियामें रहते थे और एक निर्धन ब्राह्मणकी भांति वहां अपने हाथोंसे अपनी सारी सेवा करते थे। त्यागकी तो यह पराकाष्ठा है। कहा जाता है कि व्याकरण महाभाष्यकी प्रदीप टीका बनाने वाले काश्मीरके विद्वान् कैयट खेती करके अपना पेट भरते थे। काश्मीरके नरेशके आग्रह करने पर भी उन्होंने राजाका आश्रय और ऐश्वर्यका जीवन स्वीकार नहीं किया। ऐसे त्यागके सहस्रों उदाहरण हैं। ब्राह्मणोंके ही महत्त्वसे प्राचीन कालमें भी भारतवासी वृक्षोंसे ऊन प्राप्त करते थे, जबकि यूनान और रोमके लोग केवल पशुओंसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊन पाते थे, क्योंकि वे लोग कपासकी खेती तब जानते ही नहीं थे । इस समय भी यदि संसारमें कोई भारतवर्षका सम्मान करता है तो उसके भी मूल कारण ब्राह्मण ही हैं । क्योंकि इस समय भारत धनमें, बलमें, भौतिक विज्ञानमें, राजनीतिमें, कला-कौशलमें तथा शस्त्रविद्यामें पाश्चात्त्य देशोंसे पीछे रह गया है । इस कारण इनमेंसे कोई भी भारतका सम्मान इस समय बढ़ा नहीं सकता । यदि सम्मान का हेतु कोई है तो वह है भारतवर्षकी दार्शनिक-विद्या; जोकि अनेक दार्शनिक ग्रन्थों और उपनिषदों से हमें मिलती है । यह एक ऐसी वस्तु है जिसको अभी तक हिन्दुओंको छोड़कर संसारकी कोई भी जाति प्राप्त न कर सकी (बौद्ध भी हिन्दुओंकी ही एक अवान्तर शाखा है) । इस विद्याके उच्चतम सोपान पर भारतको छोड़कर आज तक कोई भी देश नहीं पहुँचा । इसी विद्याका महत्त्व है कि विदेशीय विद्वान् लोग भी भारतवर्षका सम्मान करते हैं । प्रायः इन समस्त विद्याओंके भी प्रणेता ब्राह्मण ही थे । अनेकों देश तथा जातियां उन्नति करती हैं, और उन्नत होकर गिरती हैं । परन्तु गिरकर फिर उन्नत होना उनके लिए कठिन होता है । चाहे कोई देश गिरकर पुनः उन्नति करले परन्तु एक जातिके लिए गिरकर उठना असम्भव होता है। ब्राह्मणोंका ही यह महत्त्व है कि भारतवर्ष तथा हिन्दू जाति अनेक ठोकरें खाने पर भी अनेक बार पुनः उन्नति करती रही, अपने गौरवको यह जाति कभी भूली नहीं । हमारी सभ्यताको ब्राह्मणोंने ऐसी दृढ़ दार्शनिक भूमिका पर स्थिर कर रक्खा है कि चाहे सभ्यता का ऊपरी प्रासाद अनेक बार गिरता भी रहे परन्तु भूमिका कभी उखड़ नहीं सकती और फिर इसी भूमिका पर यह प्रासाद पहलीकी सी रीति पर अथवा बाह्यरूपमें कुछ परिवर्तन सहित पहिलीकी सी ऊँचाई तक पहुँच सकता है और पहुंचता रहा है, तथा अवश्य पुनः पहुँच जायगा । ऐसी सुदृढ़ और सुस्थिर भूमिका किसी भी सभ्यताको न मिली । इस कारण कोई भी सभ्यता भारतीय ब्राह्मण सभ्यताकी सी ऊंचाई तक पहुंच न सकी। न ही कोई सभ्यता इतनी देर तक स्थिर रह सकी और नाही पतनके अनन्तर पुनः इस प्रकार उठती रही। क्योंकि ये सब बातें भूमिकाकी दृढ़ता पर ही निर्भर होती हैं । ब्राह्मणोंके महत्त्वसे केवल भारतवर्षको ही लाभ नहीं हुआ, सारा संसार ब्राह्मणोंके ऋण से छूट नहीं सकता । उन्नतिके दिनोंमें भारतवासी चाहते तो पाश्चात्त्योंकी भांति सारे संसारको जीतकर दासतामें रखते। परन्तु भारतवासी ब्राह्मणोंके शिष्य थे । ब्राह्मणोंके प्रभावसे उनके मनमें भी विश्वप्रेम का भाव भरा था, वे शस्त्रको दुःखीके दुःख निवारण का साधन मानते थे, सुखीके सुखको नष्ट करनेका साधन नहीं । भारतवासियोंने भी संसारके अधिकांश लोगोंको जीत तो लिया, परन्तु शस्त्रसे उनको अपना दास नहीं बनाया, अपितु ज्ञानोपदेशसे उनको अपने समान बनाया । इस प्रकारसे शस्त्रका प्रयोग न करके उपदेश द्वारा की हुई यह जीत ऐसी है कि इसका अन्त होना असम्भव है। यह सब ब्राह्मणोंके महत्त्वका प्रभाव है।

इस समय ब्राह्मणका कर्तव्य—

यह तो ऊपर बता चुके हैं कि भारतवासियोंके मुखिया तथा भारतके बनाने वाले ब्राह्मण ही हैं । इसी कारण ऋग्वेदमें ब्राह्मणको जातिका शिर बताया है । शिर ही वस्तुतः सारे शरीर पर शासन करता है । सारे शरीरकी देखभाल, हित-अहित-विवेक, समस्त अङ्गोंको यथोचित कर्मोंमें लगाना, शरीरकी उन्नतिके मार्गको सोचना और उस मार्ग पर समस्त शरीरको चलाना यह सारा काम शिरका होता है । इस कारण जाति और देशके विषयमें इन सब कर्तव्योंको पूर्ण करना तथा औरोंसे कराना यह ब्राह्मणका धर्म है । ब्राह्मण समाजरूपी कुटुम्बका मुखिया है । यदि कुटुम्ब नष्ट हो जाए तो दोष उसके प्रधानका ही माना जाता है । कुटुम्बके समस्त व्यक्तियोंको उचित मार्ग पर चलाकर कुटुम्ब में सुख और शान्तिकी स्थापना करना कुटुम्बके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधानका धर्म होता है । इस कारण भारत-समाज के समस्त व्यक्तियोंको उचित मार्ग पर चलाकर इस समाजमें सुख और शान्तिको स्थापित करना ब्राह्मण का परम धर्म है । इस धर्मको पालन करनेके लिए ब्राह्मणको शास्त्रोक्त विधिसे अपनेमें शक्तिको उत्पन्न करना चाहिए । क्योंकि शक्तिके बिना ऐसे बड़े कामको पूरा करना असम्भव है । शक्तिको प्राप्त करके प्रत्येक ब्राह्मणको यह सङ्कल्प करना चाहिए कि "मैंने भारत समाजको सत्पथ पर लाकर भारत-वर्षमें पहले जैसी शान्ति और वैसा सुख स्थापित करना है।" तदनन्तर ब्राह्मणको कर्म-भूमिकामें उतर कर अपने संकल्पको पूरा करनेका प्रयत्न करना चाहिए । इस प्रयत्नमें हमें परशुराम जैसा बनना चाहिए । किसी बातसे डरना नहीं चाहिए । भगवान् श्री परशुराम ही ब्राह्मणोंके लिए परम आदर्श हैं । उनके जैसे त्यागी, उनके जैसे वीर, उनके जैसे उत्साही और उनके जैसे पराक्रमी सभी ब्राह्मण बनने चाहिएं । तभी भारतवर्ष उन्नति करेगा । यदि ब्राह्मण ऐसा न करें तो समझिए कि वे अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर रहे हैं । वे समाजके साथ अन्याय कर रहे हैं, प्रधान होकर प्रधानके धर्मसे गिर रहे हैं । यदि कोई ब्राह्मण कहे कि मुझे कोई प्रधान नहीं कहता, तो हम कहते हैं कि क्यों नहीं कहता ? प्रधानके गुणोंको अपनेमें उत्पन्न करो, सभी प्रधान मानेंगे । जो ब्राह्मण यह प्रधानताकी भावना मनमें नहीं रखता और तदनुसार प्रयत्न नहीं करता तो समझो वह बड़ा पापी है, वह नरक में पड़ेगा । इस कारण हे ब्राह्मणों ! जागो, उठो, देश को जगाओ, पुनः देशमें शान्ति और सुखकी स्थापना करो । देशके समस्त आभ्यन्तर तथा बाह्य शत्रुओं को नष्ट कर दो । 'ब्राह्मण' शब्दको अपयशसे बचाओ । यौगन्धरायण और चाणक्य जैसे बनो । सबके सब यदि परशुराम नहीं तो कम से कम परशुरामके शिष्य तो बनो । जिस प्रकार परशुराम जीने तपस्या और परमेश्वर भक्ति द्वारा शक्ति प्राप्त की थी उसी प्रकारसे तुम भी शक्तिमान् बनो । जिस प्रकारसे उन्होंने कठिनतम कार्य करके देशमें शान्ति स्थापितकी उसी प्रकारसे तुम भी करो । जिस प्रकारसे वे देशोपकार करते हुए देशके स्वामी बनकर भी देशके सेवाकारक पुत्रकी भांति ही रहे, जिस प्रकारसे उन्होंने स्वामी बनकर भी देशके धनको अपने विलासमें व्यय न किया, और जिस प्रकार से उन्होंने देशोपकारके लिए शस्त्र उठाकर भी अपने ब्राह्मणत्वको, त्यागको, तपस्याको, जितेन्द्रियताको तथा सन्तोषको नहीं छोड़ा, उसी प्रकारसे तुम सभी उनका अनुकरण करके स्वार्थको छोड़कर शुद्ध हृदय से अपनी जन्मभूमिकी ऐसी सेवा करो जिससे इसके समस्त दुःख दूर हो जाएं और पूर्ववत भारतवर्ष उन्नत हो जाए । तभी तुम सच्चे ब्राह्मण कहलाओगे और तभी देश उन्नति कर सकेगा ।

अक्षय-तृतीया

[पृष्ठ २३ का शेष]

अधिष्ठात्री हैं । 'तिथीशा वह्नि कौ गौरी' (मुहूर्त चिन्तामणि प्र० १ श्लो० ३) इस अक्षया तृतीयाके दिन सौभाग्य-शयन-व्रतमें भगवती और शिवका पूजन भी लिखा है । इस प्रकार भी यह तिथि शक्ति बढ़ाने वाली सिद्ध होती है ।

इसी तिथिमें यज्ञ पुरुष विष्णु भगवान् परशुराम रूपमें अवतीर्ण हुए हैं । इस कारण इस तिथिका माहात्म्य और भी अधिक हो गया है ।

अब मैं इस लेखका साररूप स्वनिर्मित एक श्लोक भी पाठकोंकी सेवामें निवेदित करता हूँ—

अर्केन्द्वोः शिवमस्ति तुङ्गजवलं चत्रादिभागस्थयो-
र्यस्यां या शरदादिभागसमया शुक्लादिभद्रांशगा ।
गौरीप्रीतिकरी युगादिरनिशं रामस्य जन्मोत्सवात
प्राप्ता मानमनल्पमक्षयफला सैषा तिथिः सेव्यताम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्षय-तृतीया

[लेखक—राजकुमारगुरु ज्यौतिषालङ्कार श्री० पं० तारादत्तजी राजज्यौतिषी]

—❀—

कर्म करनेसे कर्ममय अदृश्य शरीरमें भावी शुभाशुभ फलोंके बीज रूप अदृश्य पदार्थ संचित होते हैं। इनका नाम मीमांसा-शास्त्रमें अपूर्व है। जिस प्रकार अनुकूल समयमें बोया हुआ बीज उत्तम फलोंका कारण रूप होता है उसी प्रकार शास्त्रोक्त समयमें शरीर-रूप कर्मक्षेत्रमें बोया हुआ शुभ अपूर्व शुभ फलोंका कारण रूप होता है। इसी अभिप्रायसे शास्त्रमें धर्म कर्म करनेके लिए विशेष समय नियत किए गए हैं। इनमें एक अति प्रशंसनीय काल वैशाख शुक्ल तृतीया भी है। कृष्ण भगवान्‌ने युधिष्ठिर महाराजसे इसका फल इस प्रकार कहा है:—

अस्यां तिथौ क्षयमुपैति हुतं न दत्तं
तेनाक्षयेति कथिता मुनिभिस्तृतीया।
उद्दिश्य यत् सुरपितॄन् क्रियते मनुष्यै-
स्तच्चाक्षयं भवति भारत! सर्वमेव॥ (भविष्योत्तर)

[हे भरत कुलमें उत्पन्न! इस तिथिमें हवन किया हुआ और दिया हुआ नष्ट नहीं होता है। इसलिए मुनियोंने यह तृतीया अक्षया कही है। इस तिथिमें देवता और पितरोंके उद्देशसे जो कुछ मनुष्योंसे किया जाता है वह सब अक्षय ही होता है।]

इस तिथिमें त्रेतायुगका आरम्भ भी हुआ है:—

त्रेता सिततृतीयायां वैशाखे समपद्यत। (भविष्योत्तर)

[वैशाख शुक्ल तृतीयाके दिन त्रेता युगका आरम्भ हुआ।]

युगादि तिथिका फल—

या मन्वाद्या युगाद्याश्च तिथयस्तासु मानवः।
स्नात्वा दत्त्वा च हुत्वा च जप्त्वाऽनन्तफलं लभेत्॥
(महाभारत)

[जो तिथि मन्वादि या युगादि हैं उनमें स्नान दान हवन और जप करके मनुष्य अनन्त फल प्राप्त करता है।]

समयके अवयवोंके आरम्भमें प्रकट होने वाली विविध शक्तियोंकी मूल रूपा शक्तियां प्रकट होती हैं। ये उस उपार्जित अपूर्वको चिरस्थायी बनाती हैं। इस प्रकार युगादि तिथियोंमें दान आदिका अनन्त फल सुतरां युक्ति-संगत भी है।

इस समय सूर्य-चन्द्रमा राशि-चक्रके आदि विभागमें होते हैं। यह काल वर्षके आदि विभागमें तथा शुक्ल पक्षके आदि विभागमें है। इस प्रकार भी इस समय अपूर्वकी शक्ति बढ़ाने वाली मूल रूपा शक्तियोंका प्रकट होना युक्ति-सिद्ध होता है।

वैशाखी पौर्णमासीके दिन विशाखा नक्षत्र या उसके समीपका नक्षत्र होता है। विशाखा नक्षत्र रोहिणीसे ग्यारहवां नक्षत्र और पौर्णमासी तृतीयासे ग्यारहवीं तिथि होती है। इसलिए तृतीयाके दिन रोहिणी या उसके समीपका नक्षत्र होता है। इस प्रकार इस दिन चन्द्रमा उच्च बली होता है। यह मनोग्रह है, इसलिए इस समय मानसिक शक्तिकी उन्नति करने वाली शक्तियां प्रकट होती हैं।

शुक्ल पक्षकी द्वितीयाको चन्द्र-दर्शन होता है। तृतीयाके दिन चन्द्रमाके प्रभावसे बीज रूपा नवीन शक्तियां प्रकट होने लगती हैं। इस प्रकार इस समय चन्द्रमाके किरणोंकी आश्रित वर्धमान शक्तियां अपूर्वको बढ़ाती हैं और पुष्ट करती हैं। सूर्य भी इस समय उच्च बली होता है। यह आत्मग्रह है। इसलिए इस समय आत्म शक्ति भी अपूर्वकी अधिक सहायता करती है।

शक्तियोंकी अधिष्ठात्री भगवती पार्वतीजी तृतीयाकी

(शेष पृष्ठ २२ पर)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Gurukul Kangri College, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीपरशुरामाष्टकम्

[रचयिता— श्री पं० बलजिन्नाथजी शास्त्री B. A.]

रागद्वेषविवर्जितो निजतपस्तेजः प्रभोद्भासितः
कृत्ताऽधार्मिकबाहुना परशुना संशोभितांसस्थलः ।
दुष्टानां दमने सदैव कुशलः शापेन चापेन वा
लोकेऽस्मिन् भृगुनन्दनो विजयते रामः सशस्त्रो मुनिः ॥१॥

जो राग और द्वेषसे रहित हैं, जो अपने तपके तेजकी प्रभासे चमक रहे हैं, जिनका अंसस्थल (कन्धा) उस परशुसे सुशोभित हो रहा है जिसने अधार्मिक क्षत्रियोंके बाहुओंको काट डाला है और जो चाप (धनुष) अथवा शाप दोनों ही उपायों द्वारा दुष्टोंको दण्ड देनेमें कुशल हैं। वे शस्त्र धारण करने वाले मुनि भृगुनन्दन श्रीपरशुरामजी इस लोकमें जयशील हैं ॥१॥

युद्धे यस्य समो न कोऽपि भुवने जातोऽधिकः स्यात् कुतो ?
दाने यो महतो वदान्यनृपतीनुल्लंघ्य संशोभते ।
विप्रत्वाच्च सदा दयार्द्रहृदयो यस्तापसो निःस्पृहो
वीरोऽसौ त्रिविधो वशी विजयते श्रीजामदग्न्यो मुनिः ॥२॥

त्रिविध वीर (युद्धवीर दानवीर दयावीर) तथा जितेन्द्रिय श्रीजामदग्न्य मुनि सर्वोत्कृष्ट हैं। क्योंकि जब युद्धमें उनके समान वीर कोई भी इस संसारमें उत्पन्न ही नहीं हुआ तो उनसे अधिक कहाँ हो सकता है ? दानमें भी श्रीपरशुरामजी समस्त हरिश्चन्द्रादि दानशील क्षत्रियोंको भी मात कर गए। ब्राह्मणत्व के कारण स्वभावसे ही ये दयार्द्रहृदय हैं, तथा तपस्वी और निःस्पृह हैं। इस प्रकारसे ये सर्वोत्कृष्ट वीर हैं ॥२॥

मत्तक्षत्रियकृत्तकण्ठविगलद्रक्ताम्बुधौतायुधो
युद्धे कोटिरथाश्वकुञ्जरघनेऽप्येकः सदा निर्भयः ।
सत्त्वोद्रेकवशाज्जितेन्द्रियगणो दीप्तस्तपस्तेजसा
रौद्रोऽयं नु रसः सविग्रहगुणो वीरो नु शान्तो नु वा ॥३॥

मदोन्मत्त क्षत्रियोंके कटे हुए कण्ठोंसे बहते हुए रुधिर रूपी जलसे इनके शस्त्र धुले हुए हैं। करोड़ों रथों, घोड़ों और हाथियोंसे परिपूर्ण युद्धमें ये अकेले होते हुए भी सदा निर्भय हैं। सत्त्वगुणके आधिक्यके कारण इनकी इन्द्रियोंका सारा समूह विजित हो गया है। तपके तेजसे ये चमक रहे हैं। इस कारण क्या ये साक्षात् शरीरधारी रौद्र रस हैं ? अथवा वीर रस ? अथवा क्या शान्त रस ही तो नहीं ? ॥३॥

यं हन्तुं कथमप्यनन्यविधिना रामोऽशकद्राघवो
लङ्केशोऽपि स येन बन्धनगृहे बन्दीकृतो हेलया ।
तं विप्रोऽपि जघान वीरमतुलं यः कार्त्तवीर्यार्जुनं
लोकेऽस्मिन् निजवीर्यलब्धयशसे रामाय तस्मै नमः ॥४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस रावणको रघुनन्दन श्रीराम बड़ी कठिनतासे बड़े अपूर्व उपायों द्वारा मार सके, उसी रावण को कार्त्तवीर्य अर्जुन (सहस्रबाहु) ने विना किसी कठिन्यके बन्दी करके अपने कारागार (जेल) में बन्द कर रखा। इस प्रकारके उस अनुपम वीर सहस्रबाहुको भी जिस ब्राह्मणने मार डाला, तथा अपनी वीरता से जिसका यश इस संसारमें प्रसिद्ध है उन श्रीपरशुरामजीको हम नमस्कार करते हैं ॥४॥

मत्तक्षत्रियकण्ठकर्त्तनविधौ चापं करे धारयन्
ज्याघोषेण मनांसि भीतिगलितान्योत्कम्पयन् पापिनाम् ।
युद्धे क्षत्रसुरासुरैरपि सदाऽसह्यो भृगोर्नन्दनः
स्कन्धे तीव्रकुठारभृद्विजयते वज्रीव वृत्राहवे ॥५॥

मदोन्मत्त क्षत्रियोंके कण्ठोंको काटनेके लिए धनुषको हाथमें लेकर, डरके मारे गले हुए पापियोंके हृदयोंको मौर्वीके शब्दसे कम्पाने वाले तथा युद्धमें क्षत्रियों, देवताओं और असुरोंको भी हराने वाले, कन्धे पर तीव्र कुठारको धारण करने वाले, भृगुके नन्द श्रीपरशुरामजी वृत्रासुरके युद्धमें वज्रधारी इन्द्रके समान सर्वोत्कृष्ट वीर हैं ॥५॥

यद्भक्त्या परितोषितः परशुमप्यर्धं विभज्य स्वकं
प्रादात् तुष्टमनाः स खण्डपरशू रुद्रो धनुर्वेदभूः ॥
सोऽयं मत्तसहस्रबाहुदलने शस्त्रं निजं दीपयन्
शूलीव त्रिपुरासुरस्य हनने श्रीभार्गवो राजते ॥६॥

जिनकी भक्तिसे सन्तुष्ट हुए, अतएव प्रसन्न चित्त खण्डपरशु भगवान् रुद्रने जो कि धनुर्वेदके आदि गुरु हैं, अपने परशुको तोड़कर आधा टुकड़ा जिनको दे दिया वे परशुरामजी मदोन्मत्त सहस्रबाहुको मारनेके लिए अपने शस्त्रोंको चमकाते हुए ऐसे प्रतीत होते हैं जैसे कि त्रिपुरासुरको हनन करनेके लिए स्वयं भगवान् रुद्र हाथमें त्रिशूल धारण किए हुए हों ॥६॥

देशोऽयं परिभूयते रिपुबलैर्बाह्यैस्तथाऽऽभ्यन्तरै—
रार्या म्लेच्छकठोरदण्डदलिता दीनां दशां प्रापिताः ।
क्लिष्टेयं ननु जन्मभूमिररिभिर्मातेव ते रेणुका
तस्माद्भार्गववीर ! पाह्यशरणं देशं पुनर्भारतम् ॥७॥

हे वीर भार्गव राम ! आपकी माता रेणुकाकी भांति आपकी जन्मभूमि इस समय शत्रुओंसे पीड़ित हो रही है। आभ्यन्तर तथा बाह्य शत्रु इस देशका परिभव कर रहे हैं। म्लेच्छोंके कठोर दण्डोंसे आर्य पीड़ित हो रहे हैं। इस प्रकारसे वे दीन दशाको पहुंचाए गए हैं। इस कारण इस अनाथ देश भारतवर्ष की आप पुनः रक्षा कीजिए ॥७॥

भो ! भो ! भारतभूमिभूषणवरा ! धर्मप्रिया ! ब्राह्मणा !
नाथोऽस्माकमसौ त्रिलोकविजयी सत्तापसो भार्गवः ।
वर्षं भारतमुत्थिताः परिकरं बद्धोद्धरामः प्रियं
नास्माकं भयमस्ति भार्गववरो रामः सहायो हि नः ॥८॥

अरे ! भारतभूमिके भूषणरूप धर्मात्मा ब्राह्मणों ! तीनों लोकोंमें जयशील उत्तम तपस्वी श्रीभार्गवरामजी हमारे नाथ हैं। इस कारण उठो हम कमर बांधकर अपने प्यारे भारतवर्षका उद्धार करें। हमें किसीसे भी भय नहीं है, क्योंकि भार्गवशिरोमणि श्रीपरशुरामजी हमारे सहायक हैं ॥८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालका गाल

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र

सम्वत् २००० वि० का भीषण-भविष्य

[लेखक—श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय']

प्रिय पाठकवृन्द ! 'काल' क्या वस्तु है इस बात को यों तो कोई भी नहीं जानता, किन्तु व्यवहारमें उसका प्रयोग जाने अथवा अनजाने बूढ़ेसे बच्चे तक और विद्वान्से मूर्ख तक सभी करते रहते हैं। जिस वस्तुका इतनी प्रचुर मात्रामें व्यवहार होता हो उसको न जानना यह एक संसारका सबसे बड़ा आश्चर्य है। आश्चर्य भले ही हो, फिर भी इतनी आश्चर्यकर वस्तु को लोगोंने इतना अपना रक्खा है कि वह मानो अपनी आत्मा ही है। इसी लिए उसको बिना जाने भी उसके विषयमें सोचने समझनेकी आवश्यकता ही भासित नहीं होती। किन्तु 'कालका गाल' जब कभी सुननेमें आता है तो बड़ा ही भय लगता है। कारण सरसरी दृष्टिमें संसारका समाप्ति-स्थान काल है, इस बातके दोहरानेकी आवश्यकता ही नहीं। बिना पढ़े पढ़ाए ही कालका परिचय थोड़ा बहुत प्रत्येकको सर्वदा ही रहता है। परन्तु उसके गालकी भयानकताकी कल्पना प्राणिमात्रके हृदयोंको थर्रा देती है। कालका गाल ऐसा स्थान है जहाँ पर जाना अपनी इच्छासे प्रायः कोई भी रुचिकर नहीं समझता, किन्तु जाना तो सबके लिए अवश्यम्भावी ही है। हाँ, कभी कभी कोई प्रलयोत्सवमें शीघ्रगतिसे उसके गालमें विवश होकर चले जाते हैं, तो कभी मन्दगति से। शीघ्र गतिसे जाएँ अथवा मन्द गतिसे, प्रलयको उत्सव माना जाए अथवा दुःख, कालके गालमें जाना तो होगा ही। आप उस कालके गालको कितना ही भयानक मान रक्खें किन्तु विद्वान् लोगों का निर्णय है कि संसारका प्रत्येक व्यवहार इस कालकी क्रीड़ा मात्र है। वे कहते हैं कि 'काल' अपनी अर्धाङ्गिनी 'काली' के साथ सर्वदा चौसरका खेल खेलता रहता है। इस खेलमें करोड़ों ब्रह्माण्डोंके सृष्टि-स्थिति-विनाश हो जाते हैं। इस चौसरके खेल का वर्णन महाविद्वान् भर्तृहरिने कितना सुन्दर किया है देखिए—

यत्रानेके क्वचिदपि गृहे तत्र तिष्ठत्यथैको
यत्राप्येकस्तदनु बहवस्तत्र चान्ते न चैकः।
इत्थं चेमौ रजनिदिवसौ दोलयन्वापि चाक्षौ
कालः काल्या सह बहुकलः क्रिड़ति प्राणिशारैः॥

[काल महाराज अपनी महाराणी कालीके साथ चौसरका खेल खेल रहे हैं। प्राणी ही इस खेलमें गोटियाँ (शार) हैं। दिन और रात ये इनके दो पासे हैं, उनको बारम्बार हेर फेर रहे हैं। कभी किसी घर में कई शार (गोटियाँ) इकट्ठे हो जाते हैं, वहाँ खेलते खेलते पासोंके हेर-फेरसे एकाध ही रह जाता है। जहाँ एकाध था वहाँ बहुतसे इकट्ठे हो जाते हैं। अन्तमें फिर एक भी नहीं रहता, इस प्रकार अनन्त कोटि ब्रह्माण्डोंका कालके गालमें चले जाना ही एक महान् खेल हो रहा है।]

कभी कभी यह खेल अति शीघ्र गतिसे होता रहता है। वर्तमान विश्वव्यापी महासंग्रामको प्रारम्भ हुए ३॥ वर्ष हो चुके हैं। इन ३॥ वर्षोंमें क्या क्या हुआ, यह प्रायः सभीके समक्ष आचुका है, तथा अब इस महासंग्राम रूपी खेलकी तीव्रगति प्रारम्भ होगई है। इस वर्ष सं० २००० वि० के अन्त तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधेसे अधिक खेल पूरा हो जाएगा और न जाने कितने ही राष्ट्रवर प्राणिशारोंसे रिक्त हो जाएँगे। ये सब अपने आप ही सम्मुख आने वाला है। लिखने की आवश्यकता नहीं। वर्तमान सं० २००० वि० की जगल्लग्न-कुण्डली, वर्षलग्न-कुण्डलीका सम्यक्तया निरीक्षण करने और संसारके सुप्रसिद्ध शासनसूत्र सञ्चालकों, राष्ट्रकर्णधारोंकी जन्म कुण्डलियां और वर्तमान ग्रहपरिस्थितिका भलीभांति विचार करने से हमें जो ज्ञात हुआ वह संक्षिप्तरूपमें हम यहाँ देरहे हैं। अधिक विस्तृतरूपमें स्पष्टीकरण करनेके लिए इस समय हमारी परिस्थिति और राजनैतिक कारण दोनों ही बाधक हैं, अस्तु।

संवत् २००० वि० का भीषण भविष्य

गत चैत्र शु० ८ मंगलवार ता० १३ अप्रैल १९४३ से जो नवीन सौर-वर्ष सं० २००० वि० आरम्भ हुआ है यह समस्त संसारके लिए रौद्ररूपमें चिरस्मरणीय रहेगा। इसमें वर्षपति (राजा) चन्द्रमा जगल्लग्न कुण्डलीमें राहुके मुखमें अष्टम पड़ा है, यह राज्यवादियोंके लिए महान् विनाशका सूचक है। संसारकी अनन्त धनराशि एवं जनसमूह समुद्रके गर्भमें विलीन होंगे। समुद्रोंमें भयङ्कर उत्पात (जलयुद्ध तूफान बवण्डर आदि) होंगे। जलवायु प्रायः सर्वत्र दूषित रहेगा और युद्धमें यत्र-तत्र विषैली गैस प्रयोगकी आवश्यकता उपस्थित होगी। कुछ सम्राटोंके राजमुकुट धूलिसात् हो जाएँगे। संसारमें घोर विप्लव मचेगा। कई सहयोगी भविष्यदर्शी ज्योतिर्विन्महानुभावोंके मतमें "इस वर्ष आषाढ़ तक ही अधिक अनिष्ट है" और कल्कि-अवतार एवं सत्ययुगके प्रपञ्ची प्रचारक श्रावणसे सत्ययुगारम्भ बता रहे हैं। परन्तु हमें तो भाद्रपद. आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष मास समस्त संसारके लिए भीषण विनाशकारक प्रतीत हो रहे हैं। युद्ध, महामारी, विषूचिका, सन्निपात, संक्रामक रोग, उल्कापात, धूमकेतु-दर्शन, भूकम्प, आन्तरिक विद्वेष, गृहकलह, दुर्भिक्ष, अनावृष्टि, अतिवृष्टि आदिमेंसे कुछ उपद्रवोंका सूत्रपात तो ज्येष्ठसे ही आरम्भ हो जाएगा और आगे क्रमशः यह अशान्ति बढ़ती जाएगी। वर्षके राजा चन्द्र और मंत्री मंगलका मृत्युषडष्टक योग महान् अनिष्ट सूचक है। जगल्लग्नेश गुरु इस वर्ष अतिचारी होकर तीन राशिका स्पर्श कर रहा है इस कारण आर्य जातियोंमें उथल पुथल अत्यधिक होगी, आर्थिक स्थितिमें महान् उलट फेर होगा। भूमण्डलके कई भागोंमें सुवर्णका मूल्य अत्यधिक अव्यस्थित होगा। यद्यपि डाके, लूटमार, रक्तपात, गृह युद्धादि भयङ्कर घटनाएँ अधिक होंगी तथापि आर्यजनोंको भयभीत होनेकी विशेष आवश्यकता नहीं, क्योंकि मंत्री मंगल उन्हें विशेष साहस शक्ति एवं सूर्य आत्मबल बुद्धिबल प्रदान कर रहा है। जनताका बहुमत साम्राज्यवादसे विरोधी रहेगा।

इस वर्ष अमेरिकाको जन धनकी अधिक हानि उठानी पड़ेगी। श्री प्रेजीडेण्ट रूजवेल्टकी ग्रह स्थिति कुछ ऐसी है कि इस वर्ष उन्हें बहुत सावधानी, संयम एवं दूरदृष्टिसे कार्य करने हुए भगवद्भजन करना श्रेयस्कर है। रूस महादेशके लिए ग्रहस्थिति उतनी हानिकर नहीं जितनी कि श्री स्टालिनके लिए व्यक्ति दृष्टिसे है। यदि वे (स्टेलिन) अनीश्वरवादी न होते तो उन्हें भी हम तो यही सम्मति देते कि घड़ी आध घड़ी ईश्वरोपासना करना उनके लिए भी कल्याणकर ही है, अस्तु। जापानकी साम्राज्य लिप्सामें बहुतसी बाधाएँ आएँगी, किन्तु वह बढ़ती ही जाएगी। आषाढ़ के अनन्तर मिथुनका शनि होने पर किन्हीं महान् दो शत्रु राष्ट्रोंमें सन्धिकी सम्भावना है।

जगल्लग्न-कुण्डलीमें सप्तमभाव पर शनि राहुकी कर्तरी सूचित करती है कि संसारमें स्त्री-रोग और बालरोगोंकी वृद्धि होगी। स्त्रियोंके सतीत्वभङ्ग और अपहरणकी घटनाएँ अधिक होंगी; अतः स्त्री जातिको विशेष सावधान रहना चाहिए। यातायातमें दुर्घटनाएँ अधिक होंगी। यात्रियोंको अनेक आपत्तियाँ सहनी पड़ेंगी। खनिज पदार्थ विशेषकर तैल, पेट्रोल, लकड़ी आदि अत्यन्त दुष्प्राप्य हो जाएँगी। घर-घर कौटुम्बिक कलह होंगे। व्यक्तिमात्रका मन एक दूसरेके प्रति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सशङ्क बना रहेगा। पारिवारिक चिन्ताके कारण मनुष्योंकी मानसिक परिस्थिति अर्धविक्षिप्तसी हो जाएगी। इससे बड़े बड़े नेता भी नहीं बचेंगे। वात कफ जनित रोग अधिक होंगे। श्रावण मासमें संसारके कई भागोंमें आन्तरिक उपद्रव आरम्भ होंगे। इसका अन्तिम परिणाम घोर विप्लवके रूपमें ही दिखाई देगा। मार्गशीर्षके अनन्तर कई शत्रुराष्ट्रोंमें परस्पर शान्ति चर्चा चलेगी, परन्तु वह चर्चामात्र ही रहेगी फल कुछ नहीं निकलेगा। कारण फाल्गुनके अनन्तर सांसारिक परिस्थिति पुनः बिगड़ेगी। तात्पर्य यह कि इस वर्ष रोग, युद्ध, दुर्भिक्ष, महामारी, लूटमार आदि अनेक उपद्रवोंसे असंख्यप्राणी कराल कालके गालमें विलीन हो जाएँगे।

भारतवर्षके लिए

यह वर्ष भारतके लिए भी अत्यधिक कष्टकारक रहेगा। भारतीय जनता दारिद्र्य नारायणकी उपासिका अधिक होगी। जप तप संयम पूजा पाठ आदि धार्मिक कृत्योंकी ओर अधिकांश जनताकी रुचि बढ़ेगी। यह धार्मिक प्रवृत्ति ही अन्तमें इनका उद्धार भी करेगी। गुरुदेव तथा वर्षमंत्री भूमितनयकी अनुकूलता भारतीयोंको विशेषरूपसे प्राप्त होगी। नीतिमत्ता तथा बुद्धि-वैभव साहस आदि सद्गुणों का सहयोग भी इन्हें अवश्य प्राप्त होगा। इस लिए भारतवासियोंको अधिक व्याकुल होनेकी आवश्यकता नहीं। सबसे अधिक उत्तम योग यह है कि "सुन्दोपसुन्द" न्यायसे भारतके शत्रुओंका परस्पर लड़ कर ही घोर विनाश होगा। भारतके कई प्रकार के बाहरी तथा भीतरी शत्रु भी उत्पन्न होंगे, परन्तु वे अधिक हानि नहीं पहुंचा सकेंगे। वर्षान्तमें भारत का भविष्य उज्ज्वलताकी ओर अग्रसर होगा। किन्तु युद्ध अभी शीघ्र समाप्त नहीं होता।

भारतके कुछ प्रसिद्ध नेताओंके लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है, उनका स्वास्थ्य बिगड़नेकी सम्भावना है। चन्द्र राहुका योग तथा मंगलचन्द्रका षडष्टक इसकी सूचना दे रहे हैं। महात्मा श्रीगांधीजीके स्वास्थ्य सम्बन्धमें एक बार पुनः भारतको चिन्तातुर होना पड़ेगा। कुछ सुप्रसिद्ध भारतीय नेताओंके लिए अच्छे ग्रह-योग भी हैं। भविष्यत्की बातोंको सम्यक्तया समझना साधारण मनुष्योंके सामर्थ्यकी बात नहीं। भारतीय व्यापारकी स्थिति अतिशय शोचनीय हो जाएगी। वणिक् समुदाय अत्यन्त चिन्तातुर रहेगा। अन्न वस्त्रादि आवश्यक वस्तुएँ अत्यन्त मँहगी दुष्प्राप्य सी हो जाएंगी। मुद्राका मूल्य बहुत घट जाएगा। सस्ते मूल्य पर किसी भी वस्तुका मिलना असम्भव-सा हो जाएगा। पशुओंकी दशा अति दयनीय होगी। भारतको पूर्वोत्तर पश्चिम दिशा से इस वर्षमें भयकी अधिक सम्भावना है। भारतकी आर्थिक स्थिति विशेष सङ्कटग्रस्त रहेगी। गौराङ्ग महाप्रभुओंका कृपा 'कर' भारतवासियोंके शिर पर विशेष रूपसे रहेगा, जिससे भारतीय जनता 'करपात्री' बननेका सौभाग्य अथवा दुर्भाग्य प्राप्त करेगी। अधिक क्या, इस ऐतिहासिक वर्षमें संसारमें जो भी अनिष्ट न हो वह थोड़ा ही है, अस्तु। विस्तृत विचार हम गताङ्कोंमें प्रकट कर चुके हैं। जिन पाठकों ने न देखे हों वे पिछली फाइल मंगवा कर अवश्य देखें।

छुट्टियां हाईकोर्ट पंजाब और युक्तप्रान्त

ग्यारहवीं शरीफ— ता० १७ अप्रैल शनिवार
ईस्टर होली डे— ता० २३ से २६ अप्रैल शुक्र से सोमवार तक
मेला महावीर— ता० २३ मई रविवार
एम्पायरडे— ता० २४ मई सोमवार
भद्रकाली— ता० २६ मई शनिवार
मेला जोहड़—ता० ७ जून सोमवार
जन्मोत्सव सम्राट् षष्ठजार्ज— ता० ८ जून मंगलवार
निर्जलाएकादशी— ता० १४ जून सोमवार
बैंक हालीडे— ता० ३० जून बुधवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्वत् २००० वि० का भविष्य

संसारकी सामरिक सामाजिक और व्यापारिक परिस्थिति पर विचार

[लेखक—श्री० पं० सङ्कर्षणजी व्यास ज्यौतिषाचार्य]

विक्रमकी द्विसहस्राब्दीका यह नूतन-वर्ष अपनी फलकी विशेषताको लेकर इतिहासमें नवीन सुवर्ण युगका आरम्भ कराने वाला होगा।

कई लोग जो कल्कि-अवतारके एजेण्ट भारतमें विद्यमान हैं, वे चाहे सतयुगका आरम्भ करवा कर कल्कि अवतारके दर्शन ही करा दें, किन्तु ज्योतिष-शास्त्रके आधारसे युगमें कोई परिवर्तन है यह मानना विवादका विषय होगा। परन्तु कलियुगके रहते हुए भी यहां युगान्तरके प्रभावका आरम्भ अवश्य होगा। प्रत्येक युगोंमें दूसरे दूसरे युगोंका प्रभाव अन्तर दशाके अनुरूप हुआ करता है। तदनुसार इस महाकलिकालमें भी कई बार सत्य, त्रेता, द्वापर और कलिके प्रभाव रहे हैं और रहेंगे।

इसी प्रकार सं० २००० के वर्षसे भी किसी नवीन युगके प्रभावका आरम्भ अवश्यम्भावी है।

जब २ युगान्तर होने वाले हों उसके पूर्व जगत् में एक नवीन संहारकी लहर आती है। महामारी, प्लेग या युद्धसे संहार होकर भूमिका भार उतरता है! यही क्रम इस समय महायुद्ध और दुष्काल तथा रोगादिसे सर्वत्र (संहार चक्र ही) चल रहा है।

फलितशास्त्रके मन्थनसे भी यह वर्ष समस्त-भूमंडलमें परिवर्तनशील होगा। और भूमंडलीय मानचित्रमें लालरंगका खण्ड श्वेत और श्वेतका पीला, हरा, भूरा आदि रङ्गोंमें परिवर्तित होकर नवीन मानचित्रका निर्माण होगा।

बहुतसे छोटे छोटे राष्ट्र बड़े राष्ट्रोंमें लीन होकर कुछ ही नामधारी राष्ट्र स्थिर रह सकेंगे, जो आज बड़े राष्ट्र हैं वे कल छोटे दीखेंगे, और छोटे जगत् में बड़े राष्ट्रके नामसे माने जाएँगे।

संभवतः जर्मन, जापान, अमेरिका तथा ब्रिटेन ही जगत्में महान् राष्ट्र रह सकेंगे।

रशिया, चीन, इटेलिया, फ्रेंच दूसरी श्रेणीके राष्ट्रोंमें रहेंगे। शेष कुछ राष्ट्र जो इस महायुद्धके अनन्तर स्वतन्त्र होंगे वे उपर्युक्त महान् राष्ट्रोंमेंसे किसीके आधीन ही समझे जाएँगे। चीन, रशिया जापान, जर्मनसे युद्ध करते हुए अपनी छोटीसी आकृतिमें स्वतन्त्र रह सकेंगे।

संवत् २००० के वर्षमें जर्मन और रशिया निर्णयात्मक युद्ध लड़ेंगे, किन्तु ग्रीष्मकालमें रशियाका बहुत सा भाग नष्ट-भ्रष्ट हो कर महान् जन, धन, नगरोंकी हानिका कारण होगा। जर्मनोंको भी रशियासे लड़ते हुए अन्य राष्ट्रोंके साथ कई स्थान पर युद्धमें पराजयका लजीला समय अनुभव करना होगा।

आस्ट्रेलियामें जापानी लोग भी ब्रिटेन अमेरिकाके साथ निर्णयात्मक युद्ध ही छेड़ेंगे, किन्तु चीनकी बढ़ी हुई शक्तिसे लोहा लेना पड़ेगा।

(१) जापान रशियामें भी युद्ध छिड़ेगा, (२) स्पेन को तथा (३) टर्किशोंको युद्धमें उतरना पड़ेगा।

भूमध्यसागरमें तथा स्वेज, माल्टा, काकेशस और सीरिया, ईराक आदिमें भी युद्धका सन्देह बनेगा। भारतमें भी कई नगर उजड़ जाना सम्भव है। बंगाल और उसमें कलकत्ता, बिहार, उड़ीसा मद्रास, बम्बई, इधर यू० पी०में बनारससे कानपुर पर्यन्त भयावह स्थिति होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन और रशिया आपसमें महान् जन-धन हानिसे घबड़ाकर किसी मध्यस्थके बहानेसे सन्धिके प्रयत्नमें रहेंगे। इनकी सन्धिके पूर्व ही जर्मन ब्रिटेन अमेरिका भी सन्धिके गुप्त प्रयत्नमें जोरोंसे रहेंगे।

सम्वत् २००० का ग्रीष्मकाल बहुत महत्त्वका है, निर्णयात्मक युद्धसे सर्वत्र नर-संहार ही दिखाई देगा। भारतमें भी अनेक ग्राम विध्वस्त हो रक्तपात से नरमुण्डोंका दिग्दर्शन होगा। कई बड़े नगर भूमिसात् हो सकेंगे।

राजनैतिक वातावरणसे भारतमें शासनिक उलझनें बहुत उपस्थित होकर सर्वत्र अशान्ति बन जाएगी। महासभा और भारतके शासक-वर्गमें तीव्र मतभेद रहेगा। वाइसरायका परिवर्तन होगा। कौन्सिलमें पुनः नवीन सदस्य नियुक्त होंगे। सदस्यों की नियुक्तिसे अल्प तथा बहुसंख्यक जातिमें मत-भेद फैला दिया जावेगा। सामाजिक दंगे भी बहुत होंगे। महात्माजी को एक बार और अपने जानकी बाजी लगा देना सम्भव होगा।

श्रावण-भाद्रपदमें युद्धकी समाप्ति सम्भव होगी, समाप्ति प्रायः सन्धि पर ही निर्भर है। यदि इन मासोंमें युद्ध समाप्त न हो सका तो फिर कुछ वर्ष और खिंच जावेगा। भारतकी आर्थिक समस्या बड़ी जटिल हो जावेगी। अन्न निष्पत्ति पर्याप्त होते हुए भी दुष्काल बना दिया जावेगा। बहुत सी प्रजा अन्न तथा वस्त्र विहीन हो आत्मघात करने पर उतारू होगी। स्थिति सम्पन्न भी भर पेट खा नहीं सकेंगे। कागजी मुद्रासे भारतमें तीव्र असन्तोष रहेगा।

यदि श्रवणमें युद्ध समाप्त हो गया तो भारतमें भी सुख शान्तिकी लहर शीघ्र ही आजावेगी और जागतिक स्वतन्त्रताकी नींव पड़ जावेगी। भारतमें एक बार बड़े बड़े राष्ट्रनायक स्वयं आकर परिस्थिति का अध्ययन करेंगे, बड़े बड़े नेताओंसे मिलेंगे तथा भारतके भी तटस्थ दलके नेता बाहर बुलाए जावेंगे। शासनमें युद्धोत्तर सुधारकी स्थाई सुदृढ़ स्थिति बन-कर एक शान्तिका कारण होगी। श्रावणके अनन्तर राजनैतिक बन्दियोंकी मुक्ति हो जावेगी। भारतके अनुकूल वातावरणका आरम्भ होगा। युद्धोत्तर भारतकी क्या दशा होगी यह निश्चितसा होकर युद्धमें भारतका सहयोग आरम्भ हो जावेगा। भारत की स्वतन्त्रता और सहायतासे द्वीपान्तरीय युद्ध पर अच्छा प्रभाव होगा। भूमंडलीय शासन-सुधारमें भारतीय नेताओंको श्रेय प्राप्त होगा। अटलांटिक चार्टरमें नया सुधार होगा, अमेरिकाके द्वारा भारत का मतभेद दूर होगा। अमेरिकामें नवीन राष्ट्रपति होगा और वह युद्धके विरुद्ध अपना मत रक्खेगा। इंग्लैण्डके शासनमें भी बड़े २ सूत्रधारोंका परिवर्तन होगा, इस परिवर्तनसे युद्धमें शिथिलता आकर शान्तिका वातावरण बनेगा।

नवीन शासनमें समुद्र पर अधिकार प्रत्येक राष्ट्रके लिए समानरूपसे रहेगा। व्यापारिक सुवि-धाएँ प्रत्येक देशकी एकसी होंगी, किन्तु ठेकेदार कुछ ही चुने हुए राष्ट्र होंगे। यातायातमें जाति या देश का भेद नहीं रहेगा, कुछ देश तथा जातिका इस युद्धके अन्तमें महान् पतन होगा। बड़े बड़े समृद्ध राष्ट्र और वहाँके लोग निरुद्योगी होकर दुर्भिक्षका अनुभव करेंगे। कई राष्ट्र ऋणसे दबकर अपने राष्ट्रका बड़ा भाग दूसरोंके अधिकारमें दे देंगे। भारत भी अपने अनुपातसे अर्थकष्टमें आवेगा। गदरके जैसी जहाँ कहीं क्रान्ति रहेगी। रक्तपात बहुत होगा। शासनिक नूतनता अवश्य होगी, घरेलू युद्ध से सर्वत्र अशान्ति रहेगी तथा अविभाज्य भारतके विभाग होनेकी कल्पना जोर पकड़ेगी। साम्प्रदायिक विरोधसे नेतावर्ग बहुत तंग आजावेंगे। शासन सभाका कई बार निर्माण हो परस्परकी फूटसे बिगाड़ होगा। राजा लोगोंके द्वारा भी बहुत उत्पात होंगे। कुछ राजा लोग अवश्य त्याग दिखावेंगे और देश-हितमें भाग लेकर प्रसिद्धि पावेंगे।

द्वीपान्तरोंसे भारतको अच्छी सहायता रहेगी। भारतके लिए एक नवीन सरकार स्थिर होकर सैनिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगठनमें उत्पात रहेगा। बर्मासे आसाम बंगाल का कुछ भाग जुड़ जाना सम्भव है, किन्तु संसारकी नवीन शासनप्रणाली स्थिर होजाने पर शीघ्र ही सन्तोषप्रद स्थिति बन जावेगी।

बम्बई, राजपूताना, बंगाल, बिहारके यातायात साधन बिगड़ जावेंगे। व्यापारी-वर्गकी मनमानी नीतिसे अन्न, वस्त्र दुर्लभ हो जावेंगे। सरकारी हस्तक्षेपसे सुधारका प्रयत्न होगा, किन्तु परिणाम इसका विरुद्ध होगा। निष्पत्ति उत्तम होगी किन्तु भावोंकी गड़बड़से तथा शासकोंकी कूट नीतिसे सबको नपा तुला ही अन्न प्राप्त होगा। भूमिस्थ दूषित वायुके द्वारा ग्रीष्ममें महामारीका प्रकोप होगा। वृष्टि विशेष होगी, तथा वृष्टिकी अधिकता से एक फसल बिगड़ जाना सम्भव है, किन्तु यही वृष्टि भारतको संहारसे बचा भी सकेगी।

स्त्रियोंमें, बच्चोंमें रोगसे मृत्यु संख्या बढ़ेगी। ईरान, टर्की तथा भारतके पूर्वमें भूकम्पकी संभावना है।

मालवप्रान्त भी अन्य देशकी दूषित वायुका शिकार होगा, अन्न वस्त्र सुलभ होते भी बाहरकी माँगसे अपने देशवासियोंको सुलभ नहीं हो सकेगा। दोनों फसलें साधारण होंगी।

वर्षमें रुई, साटन, रंगीन वस्त्र तेज रहेंगे। लोह, जसद, कथीर, तांबा, इस्पतन, व्लुचिंग, शोरा, नमक, ग्रीस, व्हेसलेनके भाव तेज। पेट्रोल भावमें नरमाई आवेगी। चांदी सोनामें मन्दी तेजी बहुत हो श्रावण के बाद नरमाई रहेगी। वर्षका उत्तरार्ध सुन्दर हो जगत्में शान्तिका कारण हो व्यतीत होगा।

सम्वत् २००० की छहों ऋतुएँ

वसन्त—वायु विशेष, बालकोंमें पीड़ा, स्त्रियोंमें भूत बाधा अधिक, वृद्धोंमें वायु विकार, गेहूँ, चना, कपासकी उत्तम निष्पत्ति तथा बाजारमें साधारण मन्दीके पश्चात् तेजी रहे। वस्त्रमें कण्ट्रोल किन्तु प्रभावहीन। धातुका व्यापार तेज रहे, शेअर, हुण्डी, लेपड़में मन्दीके अनन्तर तेजी, एक-दो दिन आकाश में गर्भ रहे और कहीं बून्दा-बाँदी भी हो। राजनैतिक हलचल विशेष। भारतके पक्षमें प्रधान मन्त्रीके विचार, किन्तु नेतावर्गमें असन्तोष। गान्धीजीकी मुक्ति चर्चा चले।

ग्रीष्म—वायु विशेष किन्तु अधिक उष्ण 'लू'—का प्रकोप। बच्चोंकी वृद्धोंकी विशेष मृत्यु। स्त्रियोंमें प्रसव विशेष और वेदना अधिक तथा शस्त्र चिकित्सा की आवश्यकता रहे। अन्न निष्पत्ति उत्तम, कण्ट्रोल हटकर व्यापारियोंकी मनमानीसे पुनः कण्ट्रोल सम्भव हो। हैजेका उत्पात रहे। नवीन अन्न ही भूमिके दूषित वाष्पके प्रभावसे रोगोत्पादक रहे। युद्धका भारतमें आक्रमणात्मक प्रभाव हो, राज-बन्दियोंका छुटकारा हो। तथा राजनैतिक परिस्थिति में सुधार हो, साम्प्रदायिक दङ्गोंका भय हो, सर्वत्र लूट खसोट अधिक रहे। वस्त्र, रुई, शेअर आदिमें बहुत तेजी रहे।

वर्षा—वृष्टि विशेष, पूर्वोत्तर देशमें जलप्रलय, कहीं भूकम्प भी सम्भव हो। बहुतसे नगर-ग्राम वृष्टि की अधिकतासे नष्ट-भ्रष्ट होंगे। युद्धका उपद्रव जोरों पर रहेगा, किन्तु शीघ्र ही वर्षके उत्तरार्धमें युद्धमें शिथि-लता आजावेगी, भारतमें सुख शान्ति सम्भव होगी। राष्ट्रपतियोंका सम्मेलन होगा। सन्धिकी शर्तें नियत होंगी। बाजारमें तेजी मन्दी पर्याप्त होकर अन्तमें एक अच्छी मन्दी होगी। चांदी, स्वर्णमें मन्दीका जोर रहेगा। युद्धोत्तर व्यवस्था पर विचार होगा।

शरद्—शीतका आरम्भ होगा। किन्तु कुछ उष्णता ही रहेगी। वृष्टि साधारण होगी। फसल १० आना निष्पन्न होगी। चेचक, तथा निमोनिया, प्लेग भी कहीं कहीं सम्भव होगा। यदि वर्षामें युद्ध बन्द न हुआ तो पुनः भारतके पूर्व तथा उत्तरमें नर-संहार होगा। यातायात साधन बिगड़ जावेंगे, बाजार में तेजी पर्याप्त रहेगी। सम्पूर्ण शरद्काल तेजीमें निकलेगा, पश्चिममें कहीं भूकम्प होगा। धान्यराशि देशान्तर निकल जावेगी। रुई—कपासकी फसलमें रोग लगेगा, नवीन सीजन तेजीसे आरम्भ होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोना चांदीका अभाव रहेगा, धातु मात्र बहुत तेज होगी।

हेमन्त—शीतका बहुत जोर रहेगा, बहुतसे पक्षाघात विषम निमोनिया वाले कालके ग्रास होंगे। बच्चों में भी मृत्यु संख्या बढ़ेगी; अन्नमें पाले पड़नेकी सम्भावना है। मावठा जोरका होकर अनाजमें खराबी करेगा। शीतसे कहीं कहीं पानी जम जावेगा, रोगादि निष्पत्ति अधिक होगी, दुष्काल कई स्थानोंमें रहेगा। अन्नके दर्शन दुर्लभ होना सम्भव है, रूई-वस्त्र साधारण तेजी। स्वर्णमें मन्दी।

शिशिर—शीतका प्रभाव जोरदार रहेगा। अन्न-निष्पत्ति साधारण ॥) आना फसल सम्भव होगी। राज नियन्त्रणसे अन्न प्राप्ति सुलभतासे सम्भव होगी। स्त्रियोंमें रोगोपद्रव अधिक, पशुओंमें रोग रहे। राजनैतिक वातावरणमें सुधार। रुई, कपास, वस्त्र भाव तेज। कागजी मुद्रासे देशमें असन्तोष, धातुमय मुद्राका चलन सम्भव होगा। चोरोपद्रव, यत्र तत्र क्रान्ति होकर रक्तपात, सर्वत्र सामाजिक उपद्रव होंगे। राजनैतिक अशान्ति दूर होगी।

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

[लेखक—श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

वैशाख	शुक्ल	१	बुधवार	ता० ५ ,,	चन्द्रदर्शन
,,	,,	३	शुक्रवार	ता० ७ ,,	अक्षया ३ श्रीपरशुराम जयन्ती
,,	,,	७	मंगलवार	ता० ११ ,,	श्रीगङ्गासप्तमी
,,	,,	८	बुधवार	ता० १२ ,,	बुधाष्टमी अन्नपूर्णा८
,,	,,	१०	शुक्रवार	ता० १४ ,,	वृष संक्रान्ति मु० ४५ पुण्यकाल मध्याह्नोपरान्त
,,	,,	११	शनिवार	ता० १५ ,,	मोहिनी एकादशी व्रत स्मार्त्तोंके लिए
,,	,,	१२	रविवार	ता० १६ ,,	,, ,, ,, वैष्णवोंके लिए
,,	,,	१३	सोमवार	ता० १७ ,,	सोमप्रदोषव्रत
,,	,,	१४	मंगलवार	ता० १८ ,,	श्रीनृसिंह १४ जयन्ती व्रत
,,	,,	१५	बुधवार	ता० १९ ,,	सत्यव्रत वैशाख स्नान समाप्ति
ज्येष्ठ	कृष्ण	३	शनिवार	ता० २२ ,,	श्रीगणेश ४ व्रत
,,	,,	११	शनिवार	ता० २९ ,,	अपरा (भद्रकाली) एकादशी व्रत स्मार्त्तोंके लिए
,,	,,	१२	रविवार	ता० ३० ,,	अपरा एकादशी व्रत वैष्णवोंका
,,	,,	१३	सोमवार	ता० ३१ ,,	सोमप्रदोषव्रत वटसावित्री पूजनारम्भ
,,	,,	३०	बुधवार	ता० २ जून	वट सावित्री ३० व्रत
ज्येष्ठ	शुक्ल	२	शुक्रवार	ता० ४ जून	चन्द्रदर्शन
,,	,,	१०	रविवार	ता० १३ ,,	श्रीगङ्गादशहरा
,,	,,	११	सोमवार	ता० १४ ,,	निर्जला एकादशीव्रत
,,	,,	१२	मंगलवार	ता० १५ ,,	मिथुन संक्रान्ति मु० १५ पुण्यकाल ५ घटी उपरान्त भौमप्रदोषव्रत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्येष्ठ	शुक्ल	१४ गुरुवार	ता० १७ जून	सत्यव्रत
आषाढ़	कृष्ण	४ सोमवार	ता० २१ ,,	श्रीगणेश ४ व्रत
,,	,,	११ सोमवार	ता० २८ ,,	योगिनी एकादशी व्रत
,,	,,	१२ मंगलवार	ता० २९ ,,	भौमप्रदोषव्रत
आषाढ़	शुक्ल	२ रविवार	ता० ४ जुलाई	श्रीजगदीशरथयात्रा चन्द्रदर्शन पुष्यार्कयोग
,,	,,	९ रविवार	ता० ११ ,,	भड्डली नवमी

महापुरुषोंकी जयन्तियां निर्वाण-दिन और प्रसिद्ध मेले

वैशाख	शुक्ल	२ गुरुवार	ता० ६ मई	छत्रपति श्रीशिवाजी जयन्ती
,,	,,	४ शनिवार	ता० ८ मई	भक्तराज श्रीसूरदास जयन्ती
,,	,,	५ रविवार	ता० ९ मई	अद्वैताचार्य श्रीशङ्कराचार्य जयन्ती
,,	,,	१० शुक्रवार	ता० १४ मई	जगद्गुरु श्रीनारायणभट्ट जयन्ती
,,	,,	१३ सोमवार	ता० १७ मई	श्रीवेदव्यास जयन्ती
ज्येष्ठ	कृष्णा	९ शुक्रवार	ता० २८ मई	स्व० श्री गोखले जन्मदिन
ज्येष्ठ	शुक्ल	२ शनिवार	ता० ५ जून	हिन्दुआंसूर्य महाराणा प्रताप जयन्ती
,,	,,	६ बुधवार	ता० ९ ,,	स्व० श्री महाराणी लक्ष्मीबाई पुण्यदिन
आषाढ़	शुक्ल	२ रविवार	ता० ४ जुलाई	स्व० स्वा० विवेकानन्द पुण्यदिन
वैशाख	कृष्ण	३० मंगलवार	ता० ४ मई	मेला पञ्जोर (कालका)
आषाढ़	,,	२ रविवार	ता० २० जून	मेला सोलनदेवी वघाटराज्य
,,	,,	३० शुक्रवार	ता० २ जुलाई	स्व० दादाभाई नवरोजी पुण्यदिन
,,	शु०	९ रविवार	ता० ११ जुलाई	काश्मीरमण्डल जन्मदिन

त्रैमासिक मुहूर्तादि विचार

[लेखक—श्री पं० जगन्नाथप्रसाद जी ज्यौतिषी जगनजी]

[इस अङ्कके छपनेमें कुछ विलम्ब हो जानेके कारण वैशाख कृ० ३० पर्यन्तके मुहूर्त अनावश्यक समझ कर यहां नहीं दिये गये। —सम्पादक]

विवाह मुहूर्त्त

वैशाख शुक्लपक्षमें—

ति० १ बुधवार ता० ५ मई रोहिणी भे रे० ८ ।।ऽ। श०बु०यु०।।ऽ।। । ल० १२ अं० ८ उपरान्त

२ गुरुवार ता० ६ मई रो० भे रे० ७ ।।ऽ। श०बु० यु०।ऽ नृ० प०ऽ।।ल० १२

३ शुक्रवार ता० ७ मई मृग० भे रे० ९ ।।ऽशु०।।।।। ल० ६ दिवा ल० १२

११ शनिवार ता० १५ मई उ० फा० भे २७ घ० या० रे० ७ ऽ गु० ऽ।।ऽमं०।।।।ल० ३

१४ मंगलवार ता० १८ मई स्वा० भे रे० ८ ।ऽ।। ।।ऽ।।ल० अन्यगो०

१५ बुधवार ता० १९ मई अनु० भे रे०७ ।।।ऽसू० ऽ नृ०ऽ।।ल०११

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्येष्ठ कृष्णपक्षमें

४ रविवार ता० २३ मई उ० षा० रे० ६ ।।।।ऽगु० ऽ रो० पं० ऽऽ१६।। ल० गो०
११ शनिंवार ता० २६ मई उ० भा० रे० ८ ।।।।।। ऽऽ।।ल०११।१

ज्येष्ठ शुक्लपक्षमें

५ मंगलवार ता० ८ जून मघा भे रे० ७।ऽ।।ऽके० ऽचौ०।।।।ल०१
६ बुधवार ता० ६ जून मघा भे रे० ७।ऽ।।ऽ के० ऽ चो० ।।।। ल० अन्यगो० दि० ल० ७

आषाढ़ कृष्णपक्षमें

२ रविवार ता० २० जून उ० षा० रे० ८ ।।।।ऽनृ० ऽ।।ल०दि० ७

आषाढ़ शुक्लपक्षमें

६ गुरुवार ता० ८ जुलाई उ० फा० रे० ८ऽ श० ।।।।ऽनृ०।।।।ल० अन्यगो०
७ शुक्रवार ता० ६ जु० उ० फा० रे० ८ ऽ श० ।।।।ऽनृ० पं० ।।।।ल० दि० ५ हस्ते ऽ बृ०।।।। ऽ।।ल० अन्यगो०
६ रविवार ता० ११ जु० स्वाति भे रे० ८ ।।।।ऽ मं० ।ऽ।। ल० गो०
१० चन्द्रवार ता० १२ जु० स्वा० भे रे० ६ ।।।। ऽ मं० ।।।।। ल० दि० ५

उपनयन मुहूर्ता:

वैशाख शुक्लपक्षमें

ति० २ गुरौ ता० ६ मई ल० २ श०पू०ल० ३ श्रे०के०पू०
३ भृगौ ता० ७ मई ल० ३ के० पू०
५ रविवार ५ घ० या० ता० ८ मई ल० १ सूं० पू०, ल० २ श० पू०
१० शुक्रवार ता० १४ मई ल० २ श०पू०,३के०पू०
१२ रविवार ता० १६ मई ल० ३ के० पू०

ज्येष्ठ कृष्णपक्षमें

५ चन्द्रवार ता० २४ मई ल० ३-४ सम

ज्येष्ठ शुक्लपक्षमें

२ शुक्रवार ता० ४ जून ल० २ सू० श० पू०, ल० ४ रा० चं० पू०
१० रविवार ता० १३ ल० २-४ रा० पू०

द्विरागमनादि अन्य आवश्यक मुहूर्त

वैशाख शुक्लपक्षमें

ति० २ गुरुवार ता० ६ मई द्विरागमन, अन्न प्राशन, सीमन्त, पुंसवन
३ शुक्रवार ता० ७ मई द्विरागमन, अन्न प्राशन, सीमंत, पुंसवन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध।
६ चन्द्रवार ता० १० मई द्विरागमन, कर्णवेध, जलपूजा।
७ भौमवार ता० ११ मई सीमंत पुंसवन।
१३ सोमवार ता० १७ मई अन्नाशन, कर्णवेध, चूड़ाकरण।

ज्येष्ठ कृष्णपक्षमें

ति० १ गुरौ ता० २० मई जल-पूजा
२ शुक्रवार ता० २१ मई चूड़ाकरण
५ चन्द्रवार ता० २४ मई अन्नप्रा०, सीमन्त, पुंसवन, २८ घ० उप० जलपूजा।
७ बुधवार ता० २६ मई चूड़ाकर्म, अन्नप्राशन, कर्णवेध १३ घ० या०
१३ सोमवार ता० ३१ मई चूड़ाकर्म, अन्नप्राशन, कर्णवेध।

ज्येष्ठ शुक्लपक्षमें

२ शुक्रवार ता० ४ जून चूड़ाकर्म, अन्नप्राशन, कर्णवेध, सीमन्त, पुंसवन, जलपूजा २३घ.या.
४ चन्द्रवार ता० ७ जून ११ घ० उप०, अन्नप्रा०, कर्णवेध, जलपूजा, पुंसवन, सीमन्त, चूड़ाकर्म
१३ बुधवार ता० १६ जून ५ घ० उप०, अन्नप्रा०, कर्णवेध, जलपूजा घ० २२ यावत्
१५ शुक्रवार ता० १८ जून सीमन्त पुंसवन जलपू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आषाढ़ कृष्णपक्षमें

२ रविवार ता० २० जून पुंसवन, सीमन्त, चूड़ा-कर्मस्तु विप्राणामेव
१३ बुधवार ता० ३० जून सीमन्त पुंसवन अन्नप्रा०

आषाढ़ शुक्लपक्षमें

२ रविवार ता० ४ जुलाई पुंसवन सीमन्त
७ शुक्रवार ता० ६ जु० सीमन्त पुंसवन जलपूजा
१० सोमवार ता० १२ जुलाई अन्नप्राशन

गृहारम्भ मुहूर्त्त

वैशाख शुक्ला ११ शनिवार ता० १५ मई ल० ३ के० पू०, घ० ५
" " १३ चन्द्रवार ता० १७ मई घ० १६ यावत् ल० ३ के० पू० ल० ५

गृह प्रवेश मुहूर्त्त

वैशाख शुक्ला ११ शनिवार ता० १५ मई ल० २ श० पू० ल० ५
" " १३ सोमवार ता० १७ मई ल० २ श० पू० ल० ५
ज्येष्ठ कृष्णा ६ शुक्रवार ता० २८ मई घ० १३ उप० ल० ६
" " ११ शनिवार ता० २६ मई ल० २ ल० ३ के पू० ल० ६ आवश्यके
ज्येष्ठ शुक्ला ८ भृगौ ता० ११ जून ल० २ श० चं० पू०, ल० ३ के० पू० आवश्यके

प्रसूता स्नान मुहूर्त्त

वैशाख शुक्ला २ गुरुवार ता० ६ मई
" " ३ भृगुवार ता० ७ " सम
ज्येष्ठ कृष्णा १ गुरुवार ता० २० मई
" " ५ चन्द्रवार ता० २४ " सम
" " १३ सोमवार ता० ३१ " "
ज्येष्ठ शुक्ला १ गुरुवार ता० ३ जून
" " २ शुक्रवार ता० ४ "
" " ७ गुरुवार ता० १० "
आषाढ़ कृष्णा २ रविवार ता० २० जून
" " ५ मंगलवार ता० २२ "

सामान्य यात्रा मुहूर्त्तः

वैशाख शुक्लपक्षमें

ति० २ गुरुवार ता० ६ मई पूर्व
३ शुक्रवार " ५ " पूर्व दक्षिण
५ रविवार " ६ " दक्षिण घ० ६ उप०
७ मंगलवार " ११ " पश्चिम घ० २२ या०
१० शुक्रवार " १४ " पूर्व उत्तर
११ शनिवार " १५ " दक्षिण घ. २७ या.

ज्येष्ठ कृष्णपक्षमें

१ गुरुवार ता० २० मई उत्तर पश्चिम
३ शनिवार " २२ " उत्तर घ. १० या.
५ सोमवार " २४ " दक्षिण घ. २५ उप०
७ बुधवार " २६ " द० प० घ. १३ या.
११ शनिवार " २६ " उत्तर पश्चिम
१३ सोमवार " ३१ " उत्तर १० घ० यावत

ज्येष्ठ शुक्लपक्षमें

२ शुक्रवार ता० ४ जून दक्षिण घ. २२ या०
३ रविवार " ६ " दक्षिण ४ घ. या.
४ चन्द्रवार " ७ " पश्चिम उ० ६ घ० उ.
७ गुरुवार " १० " उत्तर पूर्व २३ घ. या.
१३ बुधवार " १६ " पश्चिम घ. ५ उप. २२ यावत्
१५ शुक्रवार " १८ " पूर्व उत्तर

आषाढ़ कृष्णपक्षमें

१ शनिवार ता० १६ जून उत्तर
५ मंगलवार " २२ " पूर्व १२ घ. या. तदुपरान्त पश्चिम
७ गुरुवार " २४ " पश्चिम उ० ४ घ. उप
१० रविवार " २७ " २२ घ. उप. पूर्व उत्तर घ० ३० यावत्
१३ बुधवार " ३० " पूर्व घ० २२ याव०

आषाढ़ शुक्लपक्षमें

२ रविवार ता० ४ जुलाई उत्तर
५ बुधवार ता० ७ " पूर्व ७ घ० या०
७ शुक्रवार ता० ६ " दक्षिण पूर्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक क्रय-विक्रय विज्ञान

[लेखक—विद्याभूषण श्री पं० मोहन शर्मा विशारद, पूर्व सम्पादक "मोहिनी"]

सम्प्रति व्यवसायमें नित्य नयी नयी प्रथाओं और भिन्न भिन्न प्रणालियोंका प्रवर्त्तन हो रहा है। जो व्यवसायी इस नवीनताको आदर्श स्वरूप मानकर, इसका व्यवहारतः अनुगमन कर रहे हैं; उनकी व्यापारिक सफलता का पल्ला भारी है और जो अपनी पुरानी और दकियानूसी ढब पर ही अड़े हैं, उनका इस तुमुल प्रतियोगितामें बुरी दशा हो रही है। दूसरे शब्दोंमें प्राचीन व्यापारिक पद्धतियोंके दिन लद गए; अब प्रत्येक स्थान पर नवीन प्रणालियोंका बोलबाला है। आजकी नवीनताके अनन्य उपासक ही उद्योग देवता को सन्तुष्ट करनेमें समर्थ हैं। यह परिवर्त्तन इस सीमाको पहुँचा है कि पूर्व कालमें जो क्रय-पद्धति प्रचलित थी उसमें भी परिवर्तन करनेका प्रयोजन हो गया है। आज हम व्यवसायके परिचालनार्थ किस प्रकार नयी नयी प्रणालियोंका अवलम्बन कर रहे हैं और उद्योग समूह तथा क्रेता वर्गके पक्षमें सफलताकी समस्याका हल निकालनेके लिए क्या करना आवश्यक है—इसीके मूल तत्त्वोंकी प्रस्तुत प्रबन्धमें विवेचना की जाती है।

क्रय क्षमताका वृद्धि

आधुनिक व्यवसाय क्षेत्रके नाना उद्योग धन्धोंमें जो द्रुत-वेगसे परिवर्तन घटित हो रहे हैं, पहिले उन्हींके सम्बन्धमें जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है। आज केवल व्यवसाय पद्धतिमें ही परिवर्तन हो रहा हो सो नहीं—पर देखा जाय तो प्रकृत रूपसे व्यवसाय क्या है—इस सम्बन्धकी मूल धारणामें भी परिवर्तन हुआ है। पहिलेके लोगोंका यह विश्वास था कि जहां तक हो माल सुलभ मूल्य पर खरीदकर उसे यथासम्भव उच्च मूल्य पर बेच लेनेसे व्यवसाय की भलीभांति परिचालना हो सकती है। उस समय खरीदार भी कई निर्दिष्ट श्रेणियोंमें विभाजित थे। अतः इस विश्वासको आंच नहीं आने पाती थी। परन्तु आजकी अवस्था इसके सर्वथा विपरीत हुई जान पड़ती है। जैसे हममेंसे अनेकोंका पहिले साधारणतः यही विश्वास था कि निजी उपयोग और सवारी आदिके लिए एक मात्र धनी लोग ही मोटरें रख सकते हैं। नवीन युगकी यह आश्चर्यजनक वाहन खरीदने और रखनेकी भला निर्धनोंको सुविधा कहां? पर यथार्थमें हमारी यह धारणा नितान्त आमूलक थी और जो आज दिन विशेष रूपसे प्रत्यक्ष सिद्ध है। कहनेका प्रयोजन नहीं कि वर्तमानमें देशके भीतर प्रत्येक श्रेणीके मनुष्य मोटर, लारी आदिका खुलकर व्यवहार कर रहे हैं। देशके धनी मानी, कृषिजीवी, नौकर पेशा लोग, तथा अन्य अनेक श्रेणियोंके लोग भी इस समय सब मिलाकर दो करोड़, एक लाख, चालीस हजारसे भी अधिक मोटर, लारी आदिका व्यवहार कर रहे हैं। मोटरोंके मूल्य में क्रमशः ह्रास होनेसे ही देशवासियोंके पक्षमें उनकी खरीदगी के लिए एक होड़सी लग गयी और धीरे धीरे देशमें गाड़ियां अधिक संख्यामें खरीदी जाने लगीं। यदि फोर्ड गाड़ीके आविष्कारक और विक्रेता मि० हेनरी फोर्ड आरम्भमें ही फोर्ड गाड़ीके निर्माण व्ययका लेखा जोखा लगाकर— उसमें लाभके अङ्कों को भी जोड़कर गाड़ीका मूल्य नियत करते, तब गाड़ी का मूल्य अचिन्तित रूपसे बढ़ जाता और खरीददारोंकी भी संख्याका मान आजके जैसा नहीं होता। इस लिए यह स्पष्ट है कि किसी भी व्यवसायकी साधनामें खाली अटकल और एक विश्वास पर दृढ़ रहनेसे काम नहीं चलता। माल सहसा सुलभ और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सस्ते दामों पर क्रय किया जाय और उसे यथेष्ट रूप से उच्च मूल्य पर बेचा जाय—इससे व्यापारको किसी प्रकार ढकेला तो जा सकता है पर उसे ठीक ठीक अग्रगति नहीं दी जा सकती और न इससे क्रय क्षमता ही वृद्धिको प्राप्त होती है।

निर्माण व्ययके निर्णयकी रीति

किसी भी मालकी तैयारीमें जितता व्यय पड़ता हो—उसीके अनुसार बेचनेके मूल्यका निर्णय होता है। व्यवसाय क्षेत्रमें स्मरणातीत कालसे ही मूल्यके निर्द्धारणमें लोग यही नीति वर्तते आरहे हैं। परन्तु, यह स्यात् किसीने नहीं सोचा कि जिस श्रेणीके मनुष्य यह माल खरीद करेंगे, वे इस प्रकारसे निर्द्धारित किए गए मूल्य पर उसे एक ही झपाटेमें खरीदनेको समर्थ हैं या नहीं ? यहां कहना पड़ेगा कि मि० हेनरी फोर्डने अपने अङ्गीकृत व्यवसायमें इसके सर्वथा विपरीत प्रणालीका अवलम्बन किया था। और उसमें इन्हें जिस भांति कृतकार्यता रही, आज दिन वह सर्वानुमोदित सत्यके रूपमें इनकी जग प्रसिद्धि परसे प्रकट ही है। इन्होंने जिस फोर्ड गाड़ी की परिकल्पना की थी, लोग उसे किस मूल्य पर खरीद कर सकेंगे, यह पहिले ही स्थिर कर लिया और गाड़ीके निर्माणमें कितना क्या व्यय पड़ेगा—इस ओर ध्यान न देते हुए लोगोंकी क्रय-क्षमताके अनुसर ही उसके मूल्य नियत कर दिए। अब निर्द्धारित मूल्य पर बनी गाड़ियां बेचनेसे उत्तरोत्तर लाभ होता रहे और घाटेमें न उतरना पड़े— इस अभिप्रायसे वे निर्माण व्ययकी एक निर्दिष्ट सीमा रखकर गाड़ी निर्माण करनेकी अपेक्षाकृत और अल्प व्यय साध्य नयी नयी प्रणालियोंकी खोजके प्रयत्नमें जुट पड़े। परिणाम यह हुआ कि घाटेमें पड़नेकी सम्भावनाएँ एक बार ही जाती रहीं। मि० फोर्डकी उद्भावनी शक्ति और निर्माण-व्यय निर्णय करनेकी इस विचित्र पद्धतिने उन्हें कालान्तरमें धनकुबेर ही नहीं जगदादरणीय व्यवसायपति बना दिया। आज व्यवसाय बुद्धिसे युक्त जगत्के श्रेष्ठ व्यापारियोंमें जो सर्वापेक्षा अग्रगण्य माने जाते हैं, वे भी इस समय मि० फोर्डकी इस नीतिके कायल हैं और उनकी भूरि भूरि सराहना करते नहीं थकते हैं। उन सबका भी यही एकान्त निर्णय है कि मालके निर्माण व्यय परसे विक्रीके मूल्यका निर्द्धारण करना भूल है अपितु विक्रीके मूल्य परसे ही निर्माण-व्ययको नियन्त्रित रख सकते हैं।

मालको एक साथ अत्यधिक परिमाणमें उत्पन्न कर उसके व्यय और विक्रीके मूल्यको इस भांति नियन्त्रित रक्खा जाय जिससे अधिक संख्याके लोग उस मालको क्रय करनेमें समर्थ हों। एक साथ अधिक परिमाणमें मालका उत्पादन करनेसे उसके व्ययकी मात्रा न्यून पड़ती है और तब कर्मचारियों तथा श्रम-जीवियों आदिके पारिश्रमिकको बढ़ानेका भी सम्भव रहता है। यदि तैयार मालका निर्ख कम रक्खा जाय, और उसकी तैयारीके लिए नियोजित कर्मचारियोंको उनके परिश्रमके मापके अनुसार ठीक ठीक वेतन चुकाया जाय तो वे स्वयं ही इस स्वनिर्मित मालको खरीदकर उसका व्यवहार करें। तैयार मालका मूल्य कम हो और पारिश्रामिककी मात्रा अधिक न हो तो वे उसे क्रय करनेमें सर्वथा अक्षम ही रहेंगे। एक साथ अधिक परिमाणमें मालका उत्पादन करना और माल बेचना इन दोनों कामोंमें घनिष्ठ सम्बन्ध विद्यमान है। व्यवसाय नीतिके विशेषज्ञोंके मतानुसार इस भांतिसे मालके उत्पादन और विक्रयकी कोई निर्दिष्ट सीमा नहीं रहती। अपितु एक साथ अधिक माल उत्पादन किए जानेके फलस्वरूप उसकी बिक्रीका क्षेत्र प्रत्ययातीत-रूपसे सहसा विस्तृत तो उठता है। केवल मालको उत्पन्न कर उसे बाजारमें विक्रयार्थ उपस्थित करनेसे काम नहीं चलता, वरन् उत्पन्न द्रव्य समूहके अनुपात में ग्राहकोंकी संख्याको बढ़ाना ही आजकी व्यावसायिक सफलताका मूलमन्त्र माना जा रहा है। अतः द्रव्य समूहके उत्पादन और विक्रयकी इन युक्तियों और समग्र सूक्ष्मताओंको जाने बिना आज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई सफल व्यवसायिक होनेका प्रमाण नहीं दे सकता। क्योंकि व्यापारिक प्रतिस्पर्द्धामें टिकने और निज व्यावसायको अग्रगति देनेके लिए इन तात्त्विक सूत्रोंका व्यवहार प्रत्येकके पक्षमें सर्वथा अपरिहार्य्य है।

विक्रयके व्याघातका निवारण

अमेरिकाके कतिपय सुप्रसिद्ध व्यवसायी मिलकर मालके उत्पादन और विक्रयके सम्बन्धमें अनवरतरूपसे नाना प्रणालियोंकी खोज और आविष्कार में लग रहे हैं। इस दिशामें उनके इन समग्र प्रयत्नोंका उद्देश यही है कि क्रेतावर्ग आवश्यक और नित्य व्यवहार्य द्रव्य समूहको प्रायः स्वल्प मूल्यमें प्राप्त कर सकें और व्यापारीके पक्षमें इनके उत्पादन और विक्रयमें भी हानिका द्वार बन्द हो जाय। तदनुसार उन्हें अपनी इन खोजोंमें किसी सीमा तक सफलता अवश्य हुई है और वहां इन समस्याओंके सुलझाव के लिए आये दिनों नयी नयी पद्धत्तियोंका अवलम्बन किया जारहा है।

वहाँका कोई भी व्यापारी केवल अपने ही धन्धे की हानिके निवारणार्थ उपाय नहीं करता, अपितु अन्य सम्बन्धित व्यवसायी भी जिससे अपनी अपनी हानिसे मुक्ति लाभ पा सकें, सब उपाय इसी विशाल दृष्टिकोणको लेकर अनुष्ठित होते हैं। जैसे कोई चीनी मिट्टीके बर्तनोंका कारखानेदार है तो जिसकी खदानसे वह "चायना क्ले" प्राप्त करता है और जिनके द्वारा उसने बर्त्तन बिकवानेकी व्यवस्था कर रक्खी है, इन दोनों श्रेणियोंके लोगोंसे ही उसका अटूट सम्बन्ध सिद्ध हुआ। यदि इनके व्यवहार और योग्यतामें कोई त्रुटि होने लगे तब जो लोग इन बर्त्तनोंका व्यवहार करते हैं, उन सबोंको अधिक मूल्य पर बर्त्तन क्रय करनेको बाध्य होना पड़ेगा। खेत, खदान और जंगल आदिसे साधारणतः जो कच्चा माल प्राप्त होता है, उससे ही नित्य व्यवहार्य द्रव्य समूह या पक्के मालकी तैयारी होती है। यह सब कच्चा माल पहिले कारखानोंमें एकत्र किया जाता है, अनन्तर नाना द्रव्यके रूपमें परिणत होकर बड़े व्यापारियोंसे साधारण दुकानदारों तक के हाथमें पहुंचकर अपने सुप्रचारका विशाल और विस्तृत क्षेत्र बना लेता है। परन्तु इसमें जहां कहीं भी जितने परिमाणकी हानि होगी, इसके विक्रय का स्रोत भी उसी परिमाणके बहावसे प्रवाहित होता चलेगा। जिन्होंने अधिक परिमाणमें द्रव्य समूहका उत्पादन किया है वे अधिक मात्रामें बेचने और खपानेकी व्यवस्था कर सकेंगे और इसी लिए प्रतियोगिताकी कलाबाजियों की हानिसे उत्पन्न हुए बिक्रीके अन्तरायको भी अधिकारमें कर लेंगे।

क्रेतावर्गका कर्त्तव्य

खरीदार लोग किसी भी कारखाने अथवा कारोबारके लिए माल खरीदते समय हानिके निवारणमें प्रकृत सहायक हो सकते हैं और उनके अपने कारखानोंमें जिससे एक साथ अधिक माल उत्पादन हो सके; इसके लिए उपाय पूर्वक सफलता पा सकते हैं, यहाँ उन्ही तत्त्वों पर चर्चाकी जाती है। मुख्यतः निम्न लिखित दो उपायोंसे इन उद्देशोंका साधन होना सम्भव है।

(१) पहिले तो व्यापारीगण अपने निजके कारखानोंमें ही हानिके निवारणकी उपयुक्त व्यवस्था कर सकते हैं। अर्थात् वे किसी भी व्यवसायके लिये मालका संग्रह करते समय ऐसी वस्वएँ खरीद कर रक्खें जो ग्राहकोंके लिए रुचिकर हों। ग्राहकगण उन्हें एक बार ही खरीदकर न रह जाएँ अपितु उनकी खरीदगीके लिए बारम्बार आते रहें।

(२) मालकी खरीदगीके विषयमें क्रेता व्यापारियों का यह दृष्टि बिन्दु होना आवश्यक है कि वे जिनसे माल विक्रयार्थ खरीद करते हैं, उन्हें यह अवसर दें कि वे अधिकाधिक परिमाणमें माल तैयार कर सकें। ऐसा होनेसे व्यय पर नियन्त्रण रखनेमें उन्हें सुविधा होगी और बचतको वे आंशिकरूपसे मालके मूल्यकी कमीमें प्रयुक्त कर सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधन पदार्थोंकी श्रेष्ठता क्यों आवश्यक है ?

जब उपादान पदार्थ मालकी तैयारीके लिये यथोचित रूपसे उपयोगी सिद्ध नहीं होता तो उसके द्वारा माल तैयार किये जाने पर उसका मूल्य अनिवार्य रूपसे बढ़ जाता है। अतः इसके लिये विदेशोंमें और हमारे देशमें भी इतस्ततः बड़े कारखानोंसे सम्बद्ध एक एक गवेषणागार या परीक्षागृह बना हुआ रहता है, जिसमें उपादान पदार्थोंकी उनकी निर्माण-प्रणालियोंकी बहुविधि परीक्षा की जाती है और उनके उत्कर्षके लिये भी योग्य उपाय जुटाए जाते हैं। इन परीक्षागृहोंके अस्तित्वकी इसी लिये महिमा है कि इनके द्वारा साधन पदार्थोंकी भलीभांति जांच-पड़ताल होती है और इसके अनन्तर उनसे जो द्रव्य समूह तैयार होता है उसकी बढ़ोतरी और अच्छाईमें फिर कोई बाधा खड़ी नहीं होती। प्रथम तो तैयार माल कामके लिए उपयोगी बन जाता है, दूसरे उसे सुलभ मूल्य पर भी दे सकते हैं। क्योंकि परीक्षागृहों के इस परीक्षा-क्रमका मूलभूत उद्देश्य होता है कि माल तो उत्कृष्ट श्रेणीका तैयार हो और वह जिन साधन पदार्थोंके सहयोगसे तैयार किया जाय — उसमें व्यय बाहुल्यकी गुञ्जायश न रहे। जैसे कि मोटरोंके निर्माण कार्यमें 'इस्पात' की उपयोगिता पर नयी नयी खोजें होनेके बाद अब नयी चलनकी मोटरोंके भार (वजन) में न्यूनता आगयी है और इससे उनका उत्कर्ष साधन होनेके कारण मूल्य भी किसी सीमा तक घट गया है। यद्यपि छोटे छोटे कारखानोंके स्वामी ऐसे स्वतंत्र परीक्षागृह खोलनेमें असमर्थ हैं पर हमारे देशके बाहर जहां व्यापारी लोग संघबद्ध होकर काम करनेके अभ्यासी हैं, वहां एक ही परीक्षागार कई छोटे छोटे कारखानोंकी हिमायत करता है। जिससे नाना द्रव्य अपेक्षाकृत स्वल्प मूल्यमें तैयार होकर अपने प्रचारका आप ही विस्तृत क्षेत्र खड़ा कर लेते हैं।

उत्पादनकर्त्ता और विक्रेताकी सहयोग नीति

यह निर्विवाद निश्चित है कि जिन सब उपादानों की सहयोगितासे माल तैयार होता है, उनके समवेत मूल्यके आधार पर ही उत्पन्न द्रव्य समूहके मूल्यका निर्भर है। अतः निर्माताको चाहिये कि वह सदा यही चेष्टा रखे कि साधन पदार्थ उसे यथासम्भव थोड़े मूल्य पर मिल जाएं। परन्तु इसमें भी इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि साधन पदार्थोंको चतुराई और प्रवञ्चनासे इस प्रकार सस्ता खरीद न करें कि उत्पादनकर्त्ताको सहसा क्षतिग्रस्त होना पड़े। वरन् उत्पादनकर्त्ता जिससे एक बारमें प्रचुर परिमाण का माल तैयार कर सकें, इसके लिए ही उनकी सहायताका दृष्टिकोण रखना दूरदर्शिता सम्मत है। इसके फलस्वरूप व्ययका पल्ला हलका होनेसे मालकी कीमतें औसत दर्जे आप ही न्यून हो जाती हैं और तब लाभालाभकी समस्या पर सोचने बैठनेकी आवश्यकता नहीं होती।

इसके अतिरिक्त द्रव्य समूहके निर्माताओंको यदि निर्माण व्यय न्यून करनेमें प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूपसे सहायता पहुँचाई जाय तो उससे जो पैसा बचेगा वह स्थायी निधि रूप सिद्ध होगा। और उससे फिर क्रेता, विक्रेता और व्यवहारकर्ता तथा वे लोग जिनके कारोबारकी गाड़ी किसी कारण बीचमें अटक गयी है, सब ही बारीबारीसे यथेष्ट लाभ ले सकेंगे। कहनेका प्रयोजन नहीं कि जिस एक व्यवसायसे सम्बन्धित अन्य कई व्यवसाय अपने लिये उचित लाभ न पा सकते हों तो वह सर्वोत्कृष्ट व्यवसाय कदापि नहीं है। द्रव्य समूह के निर्मातागण एक साथ अधिक परिमाणका माल क्योंकर तैयार कर सकते हैं और उन्हें इस दिशामें किन उपायोंसे उत्तेजन और सहारा दिया जा सकता है — इसके लिये नीचे दिये सूत्र विशेष रूपसे हितावह सिद्ध हैं:—

(१) खरीददारको चाहिये कि वह उन वस्तुओं की खरीद करे जो थोड़े परिमाणमें तैयार होती हैं पर बाजारमें उनकी चाल अच्छी है। इससे खरीददार तो लाभमें रहेगा ही पर निर्माताको भी द्रव्योंके निर्माण कार्यमें प्रगति देना अनिवार्य हो उठेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) द्रव्यसमूहके निर्माताको उत्पन्न द्रव्यके किसी अंश विशेषकी बिक्रीके सम्बन्धमें निश्चयता पर पहुँचाना आवश्यक है। यदि क्रेता-वर्ग ऐसा कर सके तो इससे भी निर्माताको निर्माणकार्यकी दिशामें एकाधिक सुविधाएं प्राप्त हो रहें और वह थोड़े व्ययकी साधन सामग्रीसे अधिक फल देने वाले ऊंचे मालको तैयार करनेमें समर्थ हो जाए।

(३) आधुनिक विज्ञान-सम्मत प्रणालीसे कार्य का परिचालन करनेमें व्ययभार किस प्रकार थोड़ा पड़ता है — इसकी उत्पादनकर्ता और विक्रेताको पूर्ण अभिज्ञता होना आवश्यक है। ताकि वह व्ययबाहुल्यसे बचते हुए अपने अपने कामका संचालन व्यवस्थित रूपसे कर सकें।

थोड़ी पूंजीके साधारण उद्योग धन्धे—

हमारे उपरि लिखित क्रय-विक्रय-विज्ञान सम्बन्धी लम्बे-चौड़े विवरण परसे कई स्यात् यह कहेंगे कि इसकी उपयोगिता केवल बड़े बड़े कारखानों और बड़े बड़े खरीददारोंके लिये ही सम्भव है। किन्तु छोटे छोटे कारखाने इस सारे उपदेशको न तो कार्यरूपमें परिणत कर सकते हैं और न इसका सहज सुयोग ही पा सकते हैं। अतः इस जिज्ञासाके समाधानमें यहां यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि ऊपरकी पद्धत्तियां जिस भांति बड़े कारखानों और बड़े खरीदारों के लिये लागू हैं उसी भांति कुछ फेर बदलके साथ उनका छोटे कारखानोंके लिये भी उपयोग हो सकता है। फिर देखा जाय तो अब तक जितने भी व्यवसाय अपनी उन्नतिकी चरम सीमा पर पहुंचे हैं, उनका आरम्भिक स्वरूप एक प्रकारसे छोटा ही था। यदि उन्हें छोटेसे बड़े रूप और दायरेमें लानेके बहुविध प्रयत्न न किये गये होते तो उनकी छुटाई भी आजतक कहां टिकती? जो व्यवसाय सफलताके सिरे पर पहुँचते हैं उनकी कार्य प्रणाली और तत्सम्बन्धी समग्र-सूक्ष्मताओंका अध्ययन करनेसे यह स्पष्ट हो गया है कि छोटे कारखाने यदि छोटे कारखाने ही रह जाएँ तब उनका वर्षों पर्यन्त टिक सकना असम्भव ही है। परन्तु जिन छोटे कारखानोंमें उच्च श्रेणीकी विविध वस्तुएँ तैयार होती रहती हों, वे छोटे होकर भी बड़े कारखानोंके मुकाबिलेका काम करते हैं और इसलिये उनका जीवन कभी भयावह स्थितिमें नहीं पड़ सकता।

कार्य-व्यवसाय चाहे छोटा हो या बड़ा, पर उसकी आड़में विक्रीके योग्य समस्त वस्तुओं और विलास द्रव्योंको एक साथ अधिक परिमाणमें उत्पादन किया जाय और अधिक परिमाणमें ही बेचा जाय। परन्तु, बड़े कारखाने एक साथ, एक बारमें जितने अधिक परिमाणका माल उत्पन्न कर सकते हैं— छोटे कारखाने उतना नहीं कर सकते। तो भी छोटे कारखानोंके पक्षमें इससे भय करना आवश्यक नहीं है। बल्कि इस प्रतियोगितामें अवतीर्ण होकर देखना चाहिये कि अपनी बढ़तीके लिये कहां तक सुयोग और सुविधाका मार्ग खुला है। यदि यथेष्ट सूझ बूझके साथ एक बारमें एक ही साथ अधिक परिमाणका माल निकालना आरम्भ कर दिया गया तो इससे भविष्य शीघ्र ही उज्वलतर हो उठेगा और फिर कारखानेका अस्तित्व विलुप्त होनेकी आशङ्का एक बार ही जाती रहेगी। छोटे उद्योग धन्धोंके अस्तित्व का मार्ग निरापद बनाये रखने और उन्हें समीचीन उन्नतिकी ओर ले जानेके लिये भी सदैव यही नीति बर्तनेका प्रयोजन है।

आज दिन वाणिज्य व्यवसायमें क्रेताका स्थान ऊंचा माना जा रहा है। साथ ही अधिक परिमाणमें माल उत्पन्न करने और बेचे जानेकी नयी प्रथाका प्रवर्त्तन होनेसे उसका यह गुरुत्व और भी बढ़गया है। केवल निजके व्यवसायके सम्बन्धमें ही नहीं बल्कि समाजके सब सम्बन्धोंमें ही क्रेताका गुरुत्व बराबर है। उत्पादन कर्त्ता और विक्रेता यह दोनों चाहें तो अपनी व्यवहार कुशलता और श्रेष्ठ कार्य-प्रणाली की सहायतासे क्रेता वर्ग पर अपने विश्वासकी छाप लगा सकते हैं परन्तु फिर भी वे प्रत्येक अवस्थामें क्रेता वर्गकी सहानुभूति पर ही आश्रित हैं। बिना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रैमासिक व्यापार चन्द्रिका

[लेखक—ज्योतिषरत्न दैवज्ञमणि श्री० पं० गङ्गाप्रसादजी ज्यौतिषी]

[ज्योतिश्शास्त्रके अनुसार वस्तुओंका महर्घ समर्घ निकालने में विद्वान् लेखक अच्छे अनुभवी माने जाते हैं। व्यापारीवर्गके लाभार्थ 'श्रीस्वाध्याय' में आपने अपना यह पहला लेख चैत्र शुक्ल १० से आषाढ़ शुक्ल १० पर्यन्त प्रकाशनार्थ भेजा है। चैत्र शुक्ल और वैशाख कृष्णमें ज्यौतिषीजीने जो अपने विचार लिखे थे वे प्रायः यथार्थ सिद्ध हुए हैं। हमें खेद है कि आपके महत्त्वपूर्ण विचार निश्चित समय पर हम पाठकों तक नहीं पहुंचा सके, अतः व्यापारीवर्ग एक मासके लाभसे वञ्चित रहा। विलम्ब हो जानेके कारण चैत्र शुक्ल और वैशाख कृष्णका विचार देनेसे कोई लाभ न समझ कर अब हम वैशाख शुक्ल १ से ज्यौतिषीजीका लेख यहां प्रकाशित कर रहे हैं। आशा है व्यापारीवर्ग और विद्वान् लेखक विवशताके लिए क्षमा करेंगे। भविष्यमें ठीक निश्चित समय पर अङ्क प्रकाशित करनेका प्रबन्ध किया गया है। इस लेखमें प्रकाशित ग्रहयोगोंके समयका उत्तरदायित्व पूर्णरूपेण विद्वान् लेखक पर ही है। —सम्पादक]

जिस देशका वाणिज्य-व्यवसाय दिनपर दिन उन्नत होता है वह देश सर्वश्रेष्ठ एवं आदर्श देश गिना जाता है। वहाँका एक छोटा-सा व्यापारी भी वाणिज्य-कलाका विलक्षण विद्वान् ही नहीं किन्तु एक आदर्श व्यापारी समझा जाता है। ऐसे ही समृद्धि-शाली देशके उन्नतिशील व्यवसायी पुरुषोंके पथपर समस्त व्यापारी जगत् चलता है। उन लोगोंके जरासे इशारे पर सम्पूर्ण जगत्के व्यापार कार्य्यका सञ्चालन होने लगता है और यह बात है भी ऐसी ही।

वाणिज्य-कलामें प्रवीणता प्राप्त करनेके लिए हमारे पास दो ही साधन हैं। एक लौकिक, दूसरा शास्त्रीय। किस देशमें किस समय किस कारणसे किस वस्तुका क्या भाव है? और भविष्यमें किन किन चीजोंके विषयमें विशेषज्ञ व्यापारियोंकी कैसी धारणा है? इस प्रकारके ज्ञानको "लौकिक साधन" कहते हैं। और इन्हीं पूर्वोक्त सब बातोंको पहिले से जान लेना "शास्त्रीय साधन" कहलाता है। ये दोनों साधन रथ-चक्रवत् परस्पर सापेक्ष हैं, एक दूसरेके आधीन हैं। इनमेंसे एक भी ऐसा नहीं है जिसे मुख्य वा गौण कहा जा सके। उच्चकोटिके व्यापारीके लिए इन साधनोंकी विविध सामग्रियों का संग्रह करते रहना बहुत ही आवश्यक है। वर्तमान समयमें उक्त दोनों साधनोंमेंसे पहिला (लौकिक साधन) तो इतना सुलभ हो गया है कि लोग घर बैठे सारे संसारके व्यापार सम्बन्धी समाचार जब चाहें तब जान सकते हैं। इसके लिए उन लोगोंके पास चिट्ठी, तार, अखबार, टेलीफोन वायरलेस, रेडियोफोन आदि कई एक सुलभ साधन हैं। किन्तु दूसरे (शास्त्रीय-साधन) की परम

अच्छे खरीदार जुटाये मालको धड़ल्लेसे बेचा नहीं जा सकता और मालकी अच्छाईसे खरीददारके प्रसन्न हुए बिना उत्पादकको भी उसके उत्पादनार्थ ठीक २ प्रोत्साहन प्राप्त नहीं हो सकता। अतएव मानना पड़ेगा कि क्रेता वर्गकी प्रसन्नता और मनस्तुष्टि पर ही प्रकारान्तरसे प्रत्येक व्यवसायकी उन्नति और अवनति निर्भर करती है। ईश्वर करे, भारतमें आर्थिक स्वतन्त्रता-सूर्यका शीघ्र ही उदय हो जिससे इस देशके लोग भी आधुनिक क्रय-विक्रय विज्ञानकी उन्नतिमें किसी भी अन्य समुन्नत और समृद्ध देशसे पीछे न रह जाएँ। यहांके व्यापारकी कीर्ति देश देशान्तरोंके व्यापारिक क्षेत्रमें गूंज उठे। कच्चे मालके तो हम आज भी धनी हैं पर पक्का माल भी तैयार करें और उसे संसारके कोने २ में फैला दें। एवमस्तु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपयोगी अमोघ सामग्रीका प्रायः लोप ही होता चला आता है । जिस प्रकार त्रिकालदर्शी महर्षियोंने अन्यान्य विषयों पर भविष्य-फल जाननेके लिए अनेकानेक सुगममार्ग बतलाये हैं, वैसे ही व्यापार सम्बन्धी प्रत्येक वस्तुकी तेजी मन्दी और व्यापारका लाभदायक समय जान लेनेके लिये कई एक अद्भुत चमत्कारी ग्रन्थ निर्माण किये हैं, जिनमें "बृहद्रत्नमञ्जूषा" ग्रन्थ अब नाम शेष ही रह गया है । उसका दर्शन होना अत्यन्त दुर्लभ है । जिन विद्वानों के पासमें है वह इस ज्ञानको बढ़ानेका यत्न नहीं करते । इस कारण व्यापार सम्बन्धी तेजी मंदीका ज्ञान कई पीढ़ियोंसे विद्वान् ब्राह्मणों और उच्च-कोटि के व्यापारियोंसे कोसों दूर हट गया है। इस त्रुटि को दूर करनेके लिए आजकल तेजी मन्दी बताने वाले ग्रन्थोंमें इस समय नरपति-जय-चर्योक्त "सर्वतोभद्र चक्र" नामक ग्रन्थका ही सर्वत्र विशेष आदर और प्रचार है। किन्तु उसके द्वारा निश्चय किये हुवे प्रत्येक वस्तुके भाव ताव कभी सही मिलते हैं और कभी नहीं मिलते हैं । बड़े बड़े विद्वान् और व्यापारियोंको उस निर्णयसे वास्तविक सन्तोष नहीं होता । इसका एकमात्र कारण यही है कि उन लोगोंके पास इस सर्वतोभद्रके रहस्यको खोल देने वाली कोई विशेष महत्त्व प्रदर्शक इसके मुकाबले की समर्थन करनेकी दूसरी विधि होना आवश्यक है। क्योंकि प्रत्येक बातका नियम यह है कि पहले उसका जनरल विचार, बादमें डिटेल विचार होना विशेष फलोपयुक्त रहता है । सर्वतोभद्रचक्रसे दैनिक वास्तु नक्षत्र-वेधसे अर्घनिरूपण होता है । किन्तु उसके जनरल सिद्धान्तके न होनेसे उसका फल अधूरा रह जाता है । इस त्रुटिकी पूर्ति करने का साधन श्रीवराहमिहिराचार्यकृत 'बृहद्रत्नमञ्जूषा' के अर्घ निरूपण नामक प्रकरणमें दिया है। जिसे मैं आप सज्जनोंकी सेवामें समर्पित करता हूं । तेजी मन्दीका जनरल पीरियड मुख्य चन्द्र-शृङ्गोन्नतिके ऊपर निर्भर है, जिसकी भारतके उच्चकोटिके अर्घ-निरूपण करने वाले आचार्योंने प्रत्येक मासके शुक्ल पक्षकी द्वितीयाको चन्द्र-दर्शन करनेकी प्रथा चिरकालसे बना दी है । उस दिन चन्द्रमाका कौन सा शृङ्ग (कोना) कितना ऊंचा है और गत मास की शुक्ल द्वितीयाको किधरका कोना कितना ऊंचा था ? इत्यादि जानने योग्य कितनी ही बातें वेध-गणित द्वारा वा प्रत्यक्ष चन्द्र स्थितिको जानकर एक महीने तककी प्रत्येक वस्तुकी जनरल तेजी मन्दी-सहजमें ही अनुमान हो जाती है । फिर दैनिक वा साप्ताहिक सर्वतोभद्र-चक्रके नक्षत्र-वेधसे मिलान करके दोनों तरफसे तेजीका बानक बने तो वह वस्तु अवश्य ही तेज होगी । और दोनों तरफसे मन्दी आवे तो वह वस्तु अवश्य ही मंदी होगी । समतामें सम रहेगी । यह विचार शत-प्रतिशत सत्य ही होता है । हां, मैंने केवल थोड़ा परिश्रम इस विषय पर किया है। श्रीमान् सम्पादक महोदय की प्रेरणासे त्रैमासिक अर्घनिरूपणके तत्त्वको स्पष्ट करनेकी चेष्टा करता हूं । इससे यदि व्यापारी जनता तथा विद्वत्-समाजका किञ्चिदपि सन्तोष हुआ तो मैं अपने परिश्रमको सफल समझूंगा और भविष्य में इसके ऊपर विशेष चमत्कारिक विषय अर्पण करूंगा ।

तेजी मन्दी फलप्रदर्शक ग्रहयोग

ता०	घं० मि०	ग्रहयोग	व्यापारिक फल
११ मई	७। ५६	शु० ने० केन्द्र	चांदीमें भयानक घटाबढ़ीकी पवन चलेगी।
१५ ,,	१४। २५	मं० गु० त्रिकोण	गेहूं और चना खरीदनेका चांस है।
२१ ,,	१३। ५	सू० ने० ,,	लोहेके भाव तेजीकी चेष्टा करके टिके रहेंगे।
२७ ,,	१२। ३५	बु० ने० ,,	कपड़ा व छींटका कपड़ा नफा पेश करेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ता०	घं० मि०	ग्रहयोग	व्यापारिक फल
२ जून	७। ४३	गु० शु० युतिः	चांदी और रुईकी तेजीकी सूचना है।
३ ,,	११। ३०	मं० ह० तृतीयैकादश।	तेजीका अच्छा उछाला आगया है।
७ ,,	१। ४५	शु० ने० ,,	चांदीकी मंदी खात्मेका इश्तहार बांटती है।
६ ,,	१४। २४	सू० श० ,,	गेहूँ चनेकी मंदी इन्तिहाई पैगाम सुना रही है।
१३ ,,	१। ५२	बु० ने० त्रिकोण	अलसीके तेज भाव शुक्रिया अदा करेंगे।
,, ,,	१। ५४	शु० ह० तृतीयैकादश।	सटोरियोंको चांदी रुईका उत्तम चान्स है।
१६ ,,	१६। २८	मं० रा० त्रिकोण	स्टाक मार्केटोंकी नरमाई थोड़ा ही देर मौका देगी।
२१ ,,	१६। ६	सू० ने० केंद्र	आर्य सेनापतिसे जाविन्त्रीकी मुठभेड़ होगी।
२५ ,,	१३। ५८	शु० श० तृतीयैकादश।	सर्व धातुओंके भाव करेन्सीका मुलाहिज़ा करेंगे।
२८ ,,	१। ३०	गु० ने० ,,	सर्व वस्तुओंके मंदीका रुख रुखसत मांगने लगेगा।
३० ,,	१०। २७	बु० श० युति	मजदूरोंका आंदोलन सूत रुईकी तेजीका कारण होगा।
२ जुलाई	१८। १४	सू० चं० ,,	रुईका वायदा तेजीका मुन्तजिर बनेगा।
५ ,,	२०। ७	चं० रा० ,,	कड़क भावोंमें चांदी सूत अलसी बेचनेका चांस है।
६ ,,	७। ४६	बु० ने० केंद्र	मंदीवाला सटोरिया चमका देना चाहेगा।
८ ,,	७। ५४	मं० शु० त्रिकोण	चावल और सूतके बेचनेका चान्स है।
११ ,,	६। ४७	मं० गु० केंद्र	तेजी वाला राहु बगैर शिरके पगड़ी बांधने लगेगा।
१२ ,,	२। २	मं० चं० प्रतियोग	आजके बाद मंदियोंकी उम्मेद मत रखना।
१४ ,,	१०। ४३	चं० शु० केंद्र	सूत चांदी रुईके ऊंचे दाम बेचनेके चांस हैं।

वैशाख शुक्ल पक्षका सारांश

सुदी १ बुधवारको चन्द्र-दर्शन मु० ३० का होगा और इसी दिन मिथुन राशिका भृगु हुआ है। इसका असर रुईमें २) से १३), चांदीमें १।) से ३) तक, सूतमें ।) से ।।) तक ३।। दिनमें मंदी लावेगा। नजराना लगाकर व्यापार करनेका चांस है। सुदी ६ सोमवारसे वक्री बुध कृतिका पर सूर्यके योगसे सुदी १० शुक्रवार तक चांदीमें २।।) से ७।।) तक, रुईमें १०) से १८) तक, अलसीमें ।।।) से १।।) तक, तोरियामें ।।) से १) तक तेजीके चांस हैं। सुदी १२ सोमवारसे मीन राशि पर मंगल जानेसे १५ बुधवार तक रुई सम, सूत-चांदीमें मंदीकी हवा २।। दिन तक चलेगी। करीब १।।) से २) तक चांदीमें, सूतमें ।।) से ।।।) तक मंदी आनेके योग हैं।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षका सारांश

इस मासमें पांच गुरुवार तथा पांच ही शुक्रवार हैं। पश्चिम दिशामें विग्रह, प्रजामें भय तथा असन्तोष, रोगका उपद्रव, अग्निका भय, लोगोंकी बुद्धि मलीन हो। बदी २ भृगुवारसे ७ बुधवार तक चांदीमें ६) से ८) तक सोनेमें १) से २) तक, रुईमें १५) से २०) तेजी आवे। बदी ६ गुरुवारसे ३० बुधवार तक इस अवधिमें कर्क पर गुरु तथा शुक्रके योग (गु० शु० युतिः) बुधका पूर्वमें उदय होनेसे रुईमें मंदी होकर तेजी ५) से ७) तक, चांदीमें सटोरियोंकी बेचवालीसे मंदी होकर तेजी ३) से ५) तक, सूतमें ।।।) से १।) तक, तोरियामें ।।) से ।।।) तेजी के चांस हैं। सोनेमें १) से २) तक तेजी।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षका सारांश

सुदी २ शुक्रवारको चन्द्र दर्शन मुहूर्ता ३० सुदी ४ चन्द्रवारका मार्गी बुध, मृगे रवौ घटी ०।१ इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगसे शु० १ से शु० ४ तक रुईमें ६) से ७) तक चांदी २) से ३) तक, सूतमें ।=) से ।।) तक मंदी आवे।

सुदी ५ मंगलवारसे सुदी १५ शुक्रवार तक र० श० युतिके योगसे दुनियांमें अशांति, युद्धकी गर्मीसे रुईमें १५) से २०) तक, चांदीमें ५) से ८) तक, सूतमें १।।) से ३) तक तेजीके चांस हैं। इस मासमें व्यापारकी काया-पलट, संसारमें अशांति, राजाओंको चिन्ता, अर्थकी हानि होना संभव है। व्यापारियोंको अच्छा लाभका चान्स है। सटोरियों का भाग्य जोरदार रहेगा। सोनेमें सुर्खी रंग बदलेगी, १) से १।।) तक तेजी होगी।

आषाढ़ कृष्ण पक्षका सारांश

इस मासमें पांच शनिवार हैं सो ईशान्य और पश्चिम देशमें महा अशांति उत्पन्न हो। अन्नकी तेजी तथा अग्नि भय भारतवर्षमें होगा। आर्द्रा पर सूर्य द्वितीयाका क्षय होनेसे कपड़ा सूत व सर्व वस्तु मंहगी होवें। बदी १ शनिवारसे बदी ८ शुक्रवार तक चांदीमें १०) से १२) तक, सोनेमें १।।) से २) तक, सूतमें ।।।) से १।) तक, रुईमें १२) से १५) तक, तोरियामें १।) से १।।) तक तेजीके चान्स हैं। बदी ९ शनिवारसे बदी ११ सोमवार तक मंदी-तेजीके उछाले दो-दो घंटे बाद आते रहेंगे। व्यापारी वर्गको सोच-समझके काम करना चाहिए। बदी १२ से ३० शुक्रवार तक सिंह राशि पर शुक्रके आते ही सफेद वस्तु कपड़ा, रुई, चांदीके भाव मजबूतीसे तेजीका इन्तजार करेंगे। इस मासमें ग्रह योगसे कपड़ा व धोती जोड़ा लोगोंको मिलना कठिन हो जावेगा। संसारको भांति भांतिकी आपत्तियाँ सहनी होंगी।

आषाढ़ शुक्ल १० तकका सारांश

सुदी २ को चन्द्र-दर्शन मुहूर्ता ३० बदी ४ को बुधका अस्त पूर्वमें होनेसे बढ़े हुए बाजार स्थिर हो जावेंगे। योद्धाओंके विश्रामका अवसर होगा। सटोरियोंकी बेचैनीसे मंदीका उछाला आवेगा। इन दश दिनमें अखबारोंकी खबरों पर बाजार रुख नरम होकर समय २ पर गर्मीसे गिरे हुए भावोंकी मंजिल बाजार रुख पूरी करेगा। इसके आगे बड़े भारी डबल चांस हैं।

सूचना—श्रीस्वाध्यायके ग्राहकोंसे निवेदन है कि पक्ष सारांश व्यापारिक (तेजी मंदी) के चांसोंका मिलान, हमारे बनाए हुए तारीख वार (ग्रहयोग) चमत्कारिक व्यापारिक फलके साथ कर लेवें, यदि दोनोंकी राय एक मिल जावे तो शत प्रतिशत (चांस) ठीक समझें। यदि एक तरफ मंदी लाईन, दूसरी तरफ तेजी लाईन हो तो चांसका फल आधा समझें।

रुई कपासकी तेजीकी तीन सीधी लाइनें

[लेखक—श्री पं० मोहनलाल जी शर्मा ज्योतिषी]

(१) ता० २३ मईसे २७ मई ४३ तक।
(२) ता० ६ जूनसे १६ जून तक।
(३) ता० २४ जूनसे २ जुलाई तक।

यह लाइन रुई कपासके लिए खास कर होगी और तेजी ही करेगी। यह लाइन जिस दिन आरम्भ होवे उस दिन प्रातःकाल रुई कपासका जो भाव हो, उस भावसे तेजी चलती है और तेजी होकर मंदी भी आती है, किन्तु जहांसे भाव चले थे उससे मंदी कभी नहीं आती। अन्तमें फिर तेज होवे। इस लाइन के अनुसार व्यापारीको नुकसान तो कभी नहीं होता, मिलता लाभ ही है। पाठक इसका अनुभव अवश्य करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापारिक तेजी मन्दी और ज्योतिष

[लेखक—श्री प्रो० बी० सी० मेहता म्यूनिस्पल कमिश्नर]

[प्रो० महता महोदय पाश्चात्त्य ज्योतिश्शास्त्रानुसार रुई आदि वस्तुओंकी तेजी-मंदी बताने में सिद्धहस्त हैं, यह लिखनेकी आवश्यकता नहीं। आपके विचारोंसे पाठकोंने पर्याप्त लाभ उठाया, इसका हमें महान् हर्ष है। आप ब्यावर (राजपूताना) के एक सुप्रसिद्ध उत्साही नवयुवक हैं। समय व्यतीत हो जानेके कारण आपके लेखका भी यहां उत्तरार्ध (मईसे) ही प्रकाशित किया जा रहा है। —सम्पादक]

मई मासमें तीन सप्ताह तक रुईका ट्रेन्ड मन्दीका रहेगा परन्तु चौथे सप्ताहसे फिर रुई उग्ररूप धारण करेगी। इस मासमें रुईसे भी अधिक सोना और चांदी पर इसका प्रभाव पड़ेगा। क्योंकि इस अवधि में शुक्र राहुका योग होगा तथा बृहस्पतिका Aspects समीप सरकेगा। अतः रुईमें तथा चांदीमें तेजी होगी। सम्भावना तो ऐसी की जाती है कि ३०–४० रु० एक एक दिनमें जरीला रुईमें बढ़ेंगे। हर रीएक्शन में खरीदना तथा तेजी लगानी चाहिए।

जून मासमें यह ट्रेन्ड बराबर चलता रहेगा। क्योंकि ता० २ जूनको बृहस्पति और शुक्र की युति होगी यह युति भी रुई और चांदीमें तेजीकी द्योतक है। राहु और गुरुका योग भी इसी मासमें होगा; अतः यह मास (जून) भारतकी जनरल जनताके लिये अत्यन्त कठिनाई एवं आपत्तिका समझना चाहिए। प्रत्येक प्रकारकी वस्तुओंके व्यापारियोंको चाहिए कि अपना व्यापार अत्यन्त सावधानीसे करें। अभी सितम्बर तक बड़ी ही जबरदस्त घट-बढ़ और व्यापारिक उथल-पुथलका समय है सो पूरी तरह ध्यान रक्खें। जनतामें इस महीनेमें अत्यधिक अशांति फैलनेकी आशंका है। राहू और बृहस्पतिका योग भारतके लिए अत्यन्त आपत्तिजनक दिखाई देता है। प्रभुसे प्रार्थना करनी चाहिए जिससे शांति प्रदान हो।

प्रार्थना

[कवयिता—श्री पं० चम्पालालजी कविशेखर]

किस दोषसे रुष्ट हुए इतने निठुराई जो यों अपना रहे हो,
सुख ले कर देके विपत्ति घनी दुखकी वरषा बरसा रहे हो।
जितने ही पुकारते आरत हो उतने ही वृथा इठला रहे हो,
इस देशके बन्धन काटनेको बतला दो प्रभो! कब आरहे हो॥

जब दीन अधीन हो भारतके अति जीर्ण कलेवर हो रहे हैं,
बन ज्ञान विहीन दे स्वत्व सभी अपना गुण गौरव खो रहे हैं।
अरि बालकोंके नित शोणितसे मिल मञ्जुल मेदिनी धो रहे हैं,
तब आप रमा सँग आनँदमें बतला दो प्रभो! कहाँ सो रहे हैं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्यका सायन मेष राशिमें प्रवेश

[ले०—श्री पं० मन्नूभाई पी० शुक्ल]

[लेखक सामुद्रिक शास्त्र और व्यापारिक समर्घ महर्घके विशेशज्ञ विद्वान् हैं। आपका उक्त लेख अंग्रेजीमें हमारे पास आया था। यह लेख अन्य ज्योतिष सम्बन्धी लेखोंके साथ धर्मस्तम्भमें जाना चाहिए था, किन्तु अनुवादमें विलम्ब हो जानेके कारण (ज्योतिष प्रेमी जनता और व्यापारियोंके लिए उपयोगी समझ कर) यहां प्रकाशित किया जा रहा है। —सम्पादक]

इस वर्ष ता० २१ मार्च १९४३ ई० को घं० १८। ३५ स्टे० टा० पर सूर्यका सायन मेष राशिमें प्रवेश हुआ। इसका संसार पर प्रभाव निम्नलिखित होगा—

सायन पद्धतिके अनुसार ग्रह स्थिति

लग्न सिंह (स्थिर) राशिका है और उसमें राहु स्थित है। मङ्गल (युद्ध प्रियग्रह) उसको पूर्ण दृष्टिसे देखता है। चन्द्रमा द्वितीय, नेपच्यून तृतीय और बुध अष्टम स्थानमें क्रमशः स्थित हैं। बुध व्यापारका अधिपति है। नवम स्थानमें सूर्य और पीछे शुक्र हैं। एकादश स्थानमें शनि और हर्शल हैं। बृहस्पति जो वैभव सुखका दाता है उच्च राशिमें द्वादश स्थानमें प्रतिष्ठित है। पञ्चमका अधिपति गुरू है और इस स्थानको शनि और हर्शलकी पूर्ण दृष्टि है। नेपच्यून और बुध नीच राशिमें हैं। लग्नमें राहु है और तृतीय और पञ्चम स्थान पर मङ्गलकी दृष्टि है— गुरु अष्टम स्थान पर (जो इनका स्वक्षेत्र है) दृष्टि रखता है। अष्टममें बुध नीच राशिमें स्थित है। इन सब बातोंका राज सम्बन्धी परिस्थिति और वर्तमान संग्राम पर पूर्ण प्रभाव पड़ेगा।

ग्रहोंकी इस परिस्थितिसे धार्मिक, कानूनी और विद्याके विषयोंकी उन्नति और प्रगति होगी। विदेशी व्यापार आरम्भमें सङ्कटका सामना करेगा और अन्त में उन्नति प्राप्त करेगा। सरकारी शासन पद्धतिमें फेर-फार होगा और अपयशका भय रहेगा।

राजनीतिक क्षेत्रमें अशान्ति रहेगी और धारा-सभामें द्वंद्व और वैमनस्य अधिकांशमें रहेगा। व्यापार और व्यापारी जगतमें हानिकी आशङ्का रहेगी। शुभ दृष्टिगत नेपच्यून सुधारकी ओर लाभदायक होगा, परन्तु मङ्गलके कारण जनतामें अशान्तिका भी अभाव पूरा रहेगा। प्रजातन्त्रकी ओर शासनका ध्यान जाएगा और महत्त्वपूर्ण सुधारोंकी आशाकी वृद्धि होगी। वायसरायकी कौंसिल में भी फेर फार होगा। जूनसे दसवीं अगस्त तकका समय अच्छा नहीं है। दसवीं अगस्तके अनन्तर शुभ कामोंकी उन्नति अच्छी होगी। अर्थ-सचिव कर बढ़ायेंगे। खांड, गुड़, गेहूँ, सट्टाई व्यापार, मशीनें, इन्श्योरेंस, रुई, इन वस्तुओंके टेक्समें विशेष वृद्धि होगी। व्यापारियोंके लिए परिस्थिति दुर्बल रहेगी और मजदूर संस्थाओंके लिए लाभदायक साबित होगी। बैङ्कों और नफे पर प्रतिबन्ध पड़ेगा। और वस्तुओंके दरमें बहुत अस्थिरता रहेगी। बुधका सिंहमें प्रवेश भी व्यापार और वाहन यात्रा आदिके लिए अशुभ है। रेलवेकी दुर्घटनाएँ बढ़नेकी सम्भावना है। समाचार पत्रों पर भी प्रतिबन्ध पड़ेगा। परन्तु १० सितम्बरसे वातावरण सुधर जाएगा।

संग्रामके विषयमें अनेक संधि चर्चाएँ फैलेंगी। विशेषकर २७-२९ जून। ५-१० अगस्त। १५-१७ अक्तूबर और ११-१४ नवम्बरके समय में। उक्त समय व्यापारियोंके लिये भी बहुत सावधानी सूचक है। १०-१२ सितम्बर और २८ दिसम्बरसे २ जनवरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९४४ का समय व्यापारमें बहुत ऊँचा नीचा करेगा। कर्कका राहु सोने चांदीके भावोंमें अंतर डालेगा। १९-२०, २८-२९ जून। २४-२५ अगस्त और १२-१३ नवम्बरका समय राष्ट्रिय उन्नतिके लिये श्रेष्ठ है।

पार्लियामेण्टमें भी फेरफार होनेकी आशा है। जुलाई तक स्पेन और पुर्तगालको भी कदाचित् रण-क्षेत्रमें उतरना पड़ेगा।

मईके पहिले और अन्तिम सप्ताहमें जल (समुद्र) युद्ध सम्बन्धी दुर्घटनायें सुनाई पड़ेंगी। जिससे व्यापारको बहुत हानि पहुंचेगी। ८ अक्तूबरके पश्चात् समय परिवर्तन होता है और राष्ट्रिय ऐक्य तथा राष्ट्रिय शासनके लिये यह समय अच्छा प्रमाणित होगा। व्यापार भी चमकेगा।

इस वर्ष चन्द्र-ग्रहण जलचर राशि, कर्कमें होगा इसलिये वर्षा, तूफान, पवनका वेग अधिक रहेगा और मनुष्य जीवनकी बहुत हानि होगी। विशेषकर इन प्रदेशोंमें—पंजाब, बंगाल, अफगानिस्तान, रूस, अरबस्थान, मेक्सिको और प्रशिया।

रेलवे वायु यान और मोटरकी दुर्घटनायें बहुत सुननेको मिलेंगी। स्त्री जाति तथा महान् पुरुषोंके लिये यह समय अच्छा नहीं है। पाप और अराजकता की संख्या बढ़ेगी और विश्वासघात तथा अनाचार से बहुत दुःख फैलेगा।

यद्यपि रेलवे और अन्य वाहनके सेयरोंका मूल्य बढ़ेगा परन्तु लेखकों और प्रकाशकोंके लिये समय कष्टकारक आवेगा। विषैले जन्तुओंका प्रकोप बढ़ेगा और मरण संख्या मध्य आयु वालोंमें अधिक रहेगी।

ये सब फलादेश अधिकतर निम्न लिखित देशोंके लिये विशेष प्रभावकारी रहेगा—इंगलेण्ड, डेन्मार्क, जर्मनी, पेलेस्टाईन, पोलेण्ड, सीरिया, बोहेमिया, सिसली, फ्रांस, इटली, उत्तर रोमानिया, अरबस्तान, आस्ट्रेलिया, हंगरी, स्पेन, काश्मीर, मैसूर, महाराष्ट्र, काठियावाड़, गुजरात, रूस, जापान, अमेरिका, बम्बई प्रदेश और मिश्र।

क्या रोगोंके कारण रोगाणु हैं

[पृष्ठ ५० का शेष]

प्राप्त देहकी वह प्रकृतिस्थ वा स्वस्थ अवस्था है, जिसमें देहमें विजातीय द्रव्य विद्यमान न रहनेके कारण प्रकृतिको उनको निकालनेके प्रयत्न वा नामान्तर से तात्कालिक रोगके प्रादुर्भावकी आवश्यकता ही नहीं रहती है। और यदि रोगीकी प्राकृतिक चिकित्सा की जाय और उसको विषैले द्रव्योंसे बचाकर प्राकृतिक रहन सहन और युक्त आहार विहार द्वारा ही नैसर्गिक स्वास्थ्य प्रदान किया जाय तो वह आजकलकी अप्राकृतिक चिकित्साओंके पश्चात् प्रभावों (After effects) से सर्वथा सुरक्षित रहेगा और उसमें रोग प्रतिरोधकी शक्ति बहुत काल तक विद्यमान रहेगी। जब तक वह प्राकृतिक जीवन निर्वाह में स्थिर रहेगा, उसको कोई रोग न सतायगा। प्राकृतिक-स्वास्थ्य-शास्त्रकी तो यही मुख्य कामना है—

"सर्वे च सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्॥"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या रोगोंका कारण रोगाणु है ?

[ले०—श्री प्रोफेसर 'प्रसाद' प्राकृतिक-स्वास्थ्य-शास्त्रोपाध्याय]

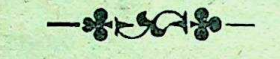

आजकल एलोपैथिक डाक्टरोंकी प्रचारित यह विभीषिका जन साधारणमें फैली हुई है कि रोगोंके कारण कीटाणु हैं; यहां इस लेखमें उनकी भ्रमपूर्ण मान्यताकी विवेचना वैज्ञानिक रीतिसे की जाती है। किसी पदार्थके कारण-कार्य सम्बन्धकी स्थापनाके लिए हमको उनके आधारभूत मूलसूत्रात्मक तीन सिद्धान्तोंको अवश्य मानना पड़ेगा।

(१) कारण कार्यसे प्रत्येक दशामें पूर्व विद्यमान रहता है। वह उसके पीछे कदापि नहीं होता, जैसे मिट्टीके घड़ेके बननेसे पूर्व कुम्हार सदा विद्यमान रहता है।

(२) कारणमें कार्यको उत्पन्न करनेकी क्षमता वा सामर्थ्य अवश्य होनी चाहिए, जैसे कि कुम्भकारमें घड़ा बनानेकी सामर्थ्य है।

(३) इस बातका भी प्रमाण होना चाहिए कि किसी विशिष्ट कारणके अतिरिक्त और कोई वस्तु उस कार्यको उत्पन्न नहीं कर सकती है।

अब हम इन मूल सूत्रात्मक सिद्धान्तोंको तथा-कथित रोगाणुवाद पर घटाते हैं।

उक्त प्रथम सूत्रके प्रकाशमें यह देखना है कि क्या किसी विशेष रोगके विशेष रोगाणु उस रोगसे पूर्व प्रत्येक दशामें विद्यमान रहते हैं या पाये जा सकते हैं ? यह कहना पर्याप्त न होगा कि कुछ रोगाणु दृश्य और कुछ अदृश्य होते हैं। यदि वे रोगकी प्रथम दशामें अणुवीक्षण-यंत्र (Microscope) द्वारा भी दृष्टिगोचर नहीं हो सकते तो उनकी विद्यमानताका प्रमाण क्या है ?

द्वितीय मूल-सूत्रके अनुसार क्या रोगाणुमें रोग को उत्पन्न करनेकी क्षमता उसी प्रकार विद्यमान है, जिस प्रकार कुम्भकारमें ही घड़ा बनानेकी सामर्थ्य है ? इन दोनों प्रश्नोंके उत्तरोंका विचार हम एक साथ ही करेंगे। यदि इन दोनों प्रश्नोंका उत्तर रोगाणुवादके पक्षमें मिल जायगा तो अगले प्रश्न पर भी वह पूरा उतर जायगा। पूर्वोक्त दोनों प्रश्नोंके विमर्शके लिए हम दो आप्त-पुरुषोंकी साक्षियां उद्धृत करते हैं जो पाश्चात्त्य प्रतिवादी पक्षके ही हैं।

Healthy life London के अक्टूबर और दिसम्बरके सन् १९२८ के अंकोंमें प्रकाशित डा० बेडोई बेली (Dr. Beddoe Bayly) के भाषणमें बतलाया गया है कि उनके हस्पतालमें गलान्तर्पदाह (Diphtheria) के भयानक रोगके जो रोगी आए, उनमें १४ से लेकर ४० प्रतिशत तकमें उक्त रोगके अणु (Germ) विद्यमान न थे। अपने कथनके समर्थनमें उक्त डाक्टरने सर विलियम ओसलर (Sir William osler) जैसे सर्वमान्य चिकित्सा-शास्त्रदिग्गजका अकाट्य प्रमाण उपस्थित किया है। उसने डाक्टर मुठु (Dr. Muthu) और अन्य कई डाक्टरोंके उद्धरण भी यह प्रमाणित करनेके लिए दिए हैं कि राजयक्ष्मा (Tuberculosis) में रोगाणु इस रोगकी बहुत पिछली दशामें दिखलाई देते हैं और वे पूतिदशा (putrescent=सड़नकी अवस्था) की उत्पत्ति है। एक और श्लेश्मज्वर (Influenza) के सम्बन्धमें भी उसने उक्त डाक्टर मुठुका उद्धरण दिया है जो इस प्रकार है—

"In typical cases of Influenza it (the germ) is absent."

अर्थात् श्लेश्मज्वरके प्रमुख रोगियोंमें रोगाणु विद्यमान न था।

डाक्टर टोपले (Dr. Topley) का उद्धरण भी दिया है, जो इस प्रकार है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"We have lost faith in one of our supposed causal organisms during the world-wide influenza epidemic." संसारभर में फैली हुई श्लेष्मज्वरकी महामारीमें हमने अपने माने हुए कारणरूप रोगाणुओंमें विश्वासको खो दिया है। आन्त्रज्वर (Typhoid) के विषयमें भी उसने विपरीत विचार की समर्थक साक्षी डाक्टर हेमर (Dr. Hamer) के भाषणसे इस प्रकार उपस्थित की है—

"That it is typhoid fever, which leads to the development of the bacillus, and not vice-versa, and that the bacillus should be looked upon as effect rather than cause."

'आन्त्रज्वर ही रोगाणुके विकासका कारण होता है। इससे विपरीत नहीं होता, अर्थात् रोगाणुसे आन्त्रज्वरकी उत्पत्ति नहीं होती है और रोगाणुको कारण न मानकर कार्य ही मानना चाहिए।

डा० हेमर (Dr. Hamer) के भाषणमें और भी कई बातें हैं किन्तु; रोग और रोगाणुके सम्बन्धमें कारण कार्यभाव नहीं है और बहुधा रोगसे रोगाणु की उत्पत्ति क्रिया होती है, इस बातके प्रमाणके लिए ऊपरका उद्धरण पर्याप्त है। प्राकृतिक स्वास्थ्यशास्त्रका सिद्धान्त बिलकुल यही है जो डा० हेमरके उपर्युक्त भाषणके उद्धरणमें कहा गया है। कई अवस्थाओंमें रोगाणु रोगकी प्राकृतिक उत्पत्ति (पैदावार= Natural products) ही होते हैं।

यह मानना कठिन है कि औषध चिकित्सकोंकी श्रेणीमें गण्यमान्य विद्वान् इन घटनाओंका ज्ञान न रखते हों। डा० लिवनार्ड विलियम्स (Dr. Leonard Williams) भी एक ऐसे ही विद्वान् औषध चिकित्सक हैं। वे उपवास, मर्यादित और संयत भोजन और अग्नि पर न पके हुए आहारके पोषक हैं। वे लिखते हैं—

"रोगाणुओंको दोष देना सुगम है, किन्तु पवित्रताका जीवन बिताना कठिन होता है। वास्तविक बात यह है कि प्राकृतिक रोगाणुनाशक द्रव्य स्वयं हमारे देहमें ही विद्यमान रहते हैं; किन्तु देह पूर्ण और स्वस्थ दशामें होनी चाहिए। प्राकृतिक जीवाणुनाशक द्रव्योंकी सहायतासे ही देहको पूर्ण और स्वस्थ रखा जा सकता है और प्रकृतिके ये जीवाणुनाशक द्रव्य सदा बनी रहने वाली वस्तुएँ हैं। वे सूर्य की धूप, प्रत्यग्रपवन (ताजा वायु) विशुद्ध जल और शारीरिक व्यायाम हैं और ये सब मिलकर रोगको हटानेके लिए किसी रसायनशालामें बनी हुई किसी रहस्यमयी अत्यन्त सूक्ष्म रोगाणुनाशक औषधिकी अपेक्षा कहीं अधिक समर्थ हैं।"

इसके आगे उक्त डाक्टर महाशयने जीवाणुवाद को माननेके भयङ्कर परिणाम दिखलाए हैं। उन्होंने दाँतोंकी स्वच्छता और रक्षाके लिए प्रयुक्त टूथ-पेस्ट और मञ्जनों आदिके रूपमें प्रयुक्त रोगाणुनाशक द्रव्योंके प्रयोगसे दन्तमांसों (मसूड़ों Gums) के नष्ट हो जानेका विशेष उल्लेख किया है और यह भी बतलाया है कि दूधको उबालकर उसमेंके भोज्यौजों (Vitamins) को नष्ट कर डालनेसे जिन शिशुओंको उक्त उबाला हुआ दूध पिलाया जाता है, उनका स्वास्थ्य भी नष्ट हो जाता है।

जब तक हमारे शरीरमें शुद्ध रक्त विद्यमान है, वह सब प्रकारके तथाकथित रोगाणुओंको नष्ट कर डालनेकी शक्ति रखता है। कई परीक्षणों द्वारा यह प्रमाणित हो चुका है कि तथाकथित रोगाणु स्वस्थ शरीरका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। वीएना (Vienna) नगरके प्रसिद्ध प्रोफेसर डा० पेटेनगोफ़र (Dr. Pettan Gofer) ने उक्त नगरकी युनिवर्सिटी में रोगाणुवाद (Bacteriology) पर भाषण देते हुए अपने शिष्योंके देखते देखते उनको यह बतलाते हुए कि रोगाणु कोई भी रोग उत्पन्न नहीं कर सकते, इसके प्रत्यक्ष प्रमाणके रूपमें विषूचिका (Cholera) के लाखों कीटाणुओंसे भरा हुआ एक गिलास पी लिया और उससे उनको कुछ मितलाहटके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं हुआ। इसी प्रकार शीतलाके तथाकथित रोगाणुओंको शरीरमें प्रविष्ट करके दिखलाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उससे शीतला रोग न होनेके परीक्षण भी करके दिखलाये जा चुके हैं। इससे यह पूर्ण प्रमाणित हो जाता है कि रोगाणु रोगोत्पादनके कारण नहीं हैं। इन उदाहरणोंसे हमारे पूर्व प्रस्तावित दूसरे इस मूल सूत्र कि "कारणमें कार्यको उत्पन्न करनेकी क्षमता होनी चाहिए" से यह सिद्ध हो जाता है कि रोगाणुओं में रोगोत्पादनकी क्षमता नहीं है। यदि वह उनमें होती तो उसका प्रत्यक्ष प्रभाव सर्वत्र होना चाहिए था। कारणके गुण कार्यमें सर्वदा और सर्वत्र प्रकट होने चाहिएँ। क्या कारण है कि उक्त परीक्षणोंमें रोगाणुओंका कुछ भी प्रभाव न हुआ। इससे तो यही सिद्ध होता है कि उनमें रोगोत्पादनकी शक्तिका लेश भी नहीं है और वह रोगाणुवादियोंका भ्रम मात्र है।

हमारे ऊपर वर्णित तीसरे मूल-सूत्रके अनुसार यह भी प्रमाणित होना चाहिए कि किसी विशिष्ट कारणके अतिरिक्त और कोई वस्तु उस कार्यको उत्पन्न नहीं कर सकती है। किन्तु हम ऊपर विचार कर चुके हैं कि रोगाणुओंकी विद्यमानताके बिना भी रोगोंका प्रादुर्भाव वा जन्म होता है। इससे यही स्थापना होती है कि रोगाणु रोगोंका कारण नहीं हैं, प्रत्युत उससे सर्वथा भिन्न एक अन्य कारण शरीरमें अप्राकृतिक वा विजातीय द्रव्योंकी विद्यमानता ही रोगोंकी उत्पादक है। इन विजातीय द्रव्योंको चाहे आप त्रिदोष कह लीजिए वा मानवदेहको बनाने वाले पञ्चतत्वोंकी विषमता कहें; बात एक ही है। मिथ्या आहार विहार द्वारा इन पञ्चतत्वोंकी, वा प्राचीन वैद्यककी परिभाषामें उनसे ही निर्मित वात, पित्त, कफ़की अस्त-व्यस्तता (गड़बड़) से ही रोगोंकी उत्पत्ति होती है और उनके सुधार वा उनमें समता लानेसे ही रोगोंका निवारण होता है। प्राकृतिक-स्वास्थ्य-शास्त्रमें इन पञ्चतत्त्वों वा पञ्चमहाभूतोंके उपचारों वा प्रयोगोंके द्वारा ही रोगोंका मूलोच्छेद किया जाता है। प्राकृतिक-स्वास्थ्य-शास्त्रकी विशेषता और उसका मुख्य सिद्धान्त यही है कि प्राकृतिक युक्त आहार विहारके द्वारा ही देहको प्रकृतिस्थ बनाया जाय। रोगोंके दबानेके लिए देहमें कोई विजातीय वा विषैले द्रव्य प्रविष्ट न किए जाँय वा रोगप्रतिरोध (Immunitv) के नाम पर देहमें कोई रोग द्रव्य जो Syrum वा Lymph के नामसे प्रसिद्ध हैं, प्रविष्ट न किए जाँय। आजकल इस रोगप्रतिरोध (Immunity) की रेतकी भीत्तिके आधार पर पाश्चात्य देशोंके दो बड़े व्यवसाय पनप रहे हैं। उनमेंसे एक तो सीरम चिकित्सा (Sero-therapy) है और दूसरा इसके लिए अपेक्षित सीरमका निर्माण है। Lymph वा लसिका निर्माण भी इसीके अन्तर्गत है। सीरम रुग्ण रुधिरके सारके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। वह जन्तुओंके देहमें विष प्रवेश करके और इस प्रकार उनको रोगी बनाकर, उनके रुग्ण रक्तको देहसे निकाल कर, उससे तैयार किया जाता है। जनता, विशेषतः रोग-भयाहत जनता, किसी भी ऐसी बातका विश्वास कर लेती है, जो बढ़ा चढ़ाकर गम्भीरतापूर्वक विज्ञानके नाम पर कही जाय। क्योंकि रोगभयके कारण जनताके मनोंमें इतना विवेक नहीं रहता है कि वह सच झूठका निर्णय कर सके। इस सीरम चिकित्सा और विविध प्रकारके टीकोंसे जनताके स्वास्थ्यका जो नाश हो रहा है और आगे आने वाली सन्तति को उससे जो अमित अकथनीय हानि पहुँच रही है, उसके वर्णनके लिए यहाँ अवकाश नहीं है। उसके लिए एक प्रथक् निबन्धकी आवश्यकता है। अन्तमें हम पूरे विश्वासके साथ यह कह सकते हैं कि प्राकृतिक-स्वास्थ्य-शास्त्रके अनुयायियोंको तथाकथित रोगाणुओंकी पूर्णतः उपेक्षा करनी चाहिए। प्राकृतिक-स्वास्थ्य-शास्त्रके सिद्धान्तानुसार रोगाणु केवल प्रकृति के मलशोधक व्यक्ति वा भङ्गी हैं। वे उन कोषाणुओं को देहसे बाहर निकालनेमें सहायता देते हैं जो देहमें काममें आकर निरर्थक हो चुके हैं और इस प्रकार वे हमारे शरीरका संशोधन करते रहते हैं। रोगके पश्चात् जो बहुत काल तक उस रोगसे सुरक्षित रहने की दशा वा रोगप्रतिरोध अवस्था (Immunity) कही जाती है, वह भी रोग द्वारा शरीरकी संशुद्धिसे

[शेष पृष्ठ ४७ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमहावीरजीका लंका निरीक्षण

[लेखक—श्री पं० देवदत्तजी शर्मा]

[पाठकवृन्द ! आजकलकी पाश्चात्त्य बाह्य सभ्यताकी चकाचौन्धमें अन्धे होकर लोग कहने लग पड़े हैं कि ऐसी उन्नति पहले कभी थी ही नहीं। वास्तवमें आधुनिक शस्त्रास्त्र-सामग्री, विमान तथा विलास सामग्रीसे सैंकड़ों गुना अधिक सामग्री तथा सुव्यवस्थितता महात्मा रावणके शासनमें विद्यमान थी यह बात इस लेखके पढ़नेसे पाठक भली भांति समझ लेंगे। रावणके शासनमें आजकलसे भौतिक उन्नति अत्यधिक होने पर भी आज जैसी अशान्ति उस समय कहीं नहीं थी। इसी कारण भगवान् श्री रामने भी बारम्बार रावणको महात्मा कहा है। उस समयकी उन्नतिका इस लेखसे थोड़ा बहुत अनुमान हो सकता है। सुयोग्य लेखकने तत्कालीन सभी बातों पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। लेख मननीय है। — सम्पादक]

वीर शिरोमणि श्रीहनुमान्‌जी भगवान् रामके आदेश पर महारानी सीताके अन्वेषणमें समुद्र पार लङ्का गए थे। उनका लङ्का जाना और उनके द्वारा लङ्का-दहन तो सभी जानते हैं, परन्तु उन्होंने लौटकर भगवान् रामको लङ्काकी जो परिस्थिति बतलाई, वह सर्वसाधारणमें अपना वास्तविक महत्त्व प्राप्त नहीं कर सकी। यह सारा विवरण ऐतिहासिक दृष्टिसे अभूतपूर्व महत्त्वका है। हनुमान्‌जीके जीवनके अनेकों दृष्टिकोण हो सकते हैं, पर प्रागैतिहासिक कालका स्वाध्याय करने वालोंके लिए उनकी इस दैनिकी (डायरी) का स्वाध्याय अत्यन्त रुचि-पूर्ण और आकर्षक है।

राक्षसोंको अनार्य कहा जाता है। पर आपकी दैनिकीसे यह सिद्ध होता है कि समस्त लङ्कावासी वैसे ही आर्य और वेदानुयायी थे जैसे तत्कालीन भारतीय आर्य। हनुमान्‌जी जब सीताजीकी अन्वेषणामें लंका गए तो उन्होंने लङ्काके घर घरमें वेदपाठ, वेदगायन, हवन और यज्ञ होते देखे, तथा दैनिक पञ्चमहायज्ञ होते भी देखे। उन्होंने महारानीका पता लगानेके लिए लङ्कापति रावणके विशाल प्रासादका ही नहीं, एक-एक घरका कोना कोना ढूंढा। प्रत्येक घरका निर्माण, उसकी सजावट, रहन-सहन और गृह वासियोंके आचार-विचार तथा वेष-भूषाको भी ध्यानसे देखा और लौटकर इन सब बातोंकी विस्तार पूर्वक भगवान् रामसे चर्चा की थी। उन्होंने वहाँ घर-घर हवनकुण्ड बने हुए देखे। स्थान स्थान पर वेदियाँ देखीं। उन्होंने वहाँ ऐसे असंख्य राक्षस देखे जिनमें आर्यों जैसे सम्पूर्ण गुण थे; जैसे सत्य-भाषण, मृदुभाषण, शौर्य, गुरुभक्ति और गुरुओंकी आज्ञा मानना। दूरदर्शिता तथा उनमें फुर्तीका जीवन था। वे बीसवीं शताब्दीके तथाकथित सभ्य समाज से कहीं अधिक सभ्य और अनेक बातोंमें उनसे अधिक उन्नत थे। जैसे सभामें झूठ नहीं बोलते थे और सभामें ऊँचे स्वरसे बात करना निषिद्ध था। एक दूसरेका नाम लेकर नहीं पुकारते थे। राक्षसों का शासन प्रजातन्त्रात्मक था। उनकी सत्य-प्रियता और न्याय-प्रियताका यह ज्वलन्त प्रमाण है कि जब रावण महारानी सीताका अपहरण करके उन्हें लंका में ले आया तो उसके नाना, दोनों छोटे भाइयों, मन्त्रियों, सभासदों और राजमहिषी तकने भरी सभामें उसके इस कार्यकी निन्दा की। यद्यपि रावण की यह कार्यवाही केवल प्रत्युत्तरमात्र थी और उसने अपनी बहिनके अपमानका प्रतिशोध लेनेके भावसे प्रेरित होकर किया था; तथापि विभीषण अन्त पर्यन्त इसका विरोध करता रहा और अन्तमें इसी कारण अपमानित होकर उसे अपने देशका भी परित्याग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना पड़ा । अपने राजाकी स्पष्ट आलोचना करना साधारण नैतिकताका कार्य नहीं है। हम राक्षसों और विशेषकर लंकाके राजपरिवारको इस विशेषता का धनी पाते हैं।

लङ्काके स्त्री-समाजके सम्बन्धमें भी हनुमान्‌जीने जो कुछ देखा और लौटकर भगवान् रामको सुनाया उस पर प्रत्येक सभ्यजाति गर्व कर सकती है। उनका पारिवारिक जीवन और आचार-सम्बन्धी शुद्धता भारतीय आर्य ललनाओंसे किसी अंशमें न्यून नहीं थी । यह भी एक विचित्र संयोग है कि उस समयमें भी तीन प्रसिद्ध सतियां समकालीन थीं, अर्थात् महारानी सीता, महारानी तारा और महारानी मन्दोदरी। इनमेंसे दो (सीता और मन्दोदरी) का सम्बन्ध विपक्षसे था, अर्थात् महारानी सीता आर्योंमें और महारानी मन्दोदरी राक्षसोंमें । रामायणके रचयिता संसारके आदि कवि महर्षि वाल्मीकिने सुन्दरकाण्डके पाँचवें सर्गमें महारानी सीताकी पतिभक्तिकी प्रशंसा तो की है, पर तुलना नहीं की । कारण स्पष्ट है कि उन्हें ऐसा अभीष्ट नहीं था और इसका कारण यही था कि लङ्काकी स्त्रियोंका पारिवारिक जीवन आर्यजातिकी स्त्रियोंसे अधिक न्यून नहीं था।

लङ्काका वैभव

लङ्काके वैभव पर महर्षि वाल्मीकिने बहुत कुछ लिखा है। और जो कुछ लिखा है उससे स्पष्ट है कि लङ्काके राक्षसोंकी सभ्यता और संस्कृति बहुत उन्नत थी । यहाँ तक कि अपने समकालीन आर्योंसे अधिक उन्नत थे । वे समस्त धातुओंका प्रयोग जानते और करते थे । यह सत्य यूरोपियन अन्वेषकों, ऐतिहासिकों और विद्वानोंके लिए आश्चर्यजनक है कि लङ्काके राक्षस भी धातुओंसे सुपरिचित थे। रामायण युग हिन्दूकाल गणनाके अनुसार लाखों वर्ष पहलेका है । लङ्कामें जब हनुमान्‌जी गए तब लोहा, सोना, चांदी, रत्न और उपरत्नोंका बाहुल्यसे उपयोग होता था । लङ्काकी दुर्ग-प्राचीर सोनेकी बनी हुई थी । हनुमान्‌जीने लङ्काकी स्त्रियोंको रत्नजटित सोनेके आभूषण पहने देखा । उन्हें ऐसे बहुमूल्य आभूषण एक या दो जगह नहीं, घर-घर पर दिखाई दिए । उन्हें लङ्कामें सोने-चांदीके रत्नजटित पात्र, मनमोहक चित्रकारी और स्थापत्य कलाके सर्वोत्कृष्ट उदाहरण मिले । उन्होंने लङ्कापतिके राजभवनमें प्रत्येक वस्तु स्वर्ण-निर्मित देखी, जो रत्नोंसे जड़ी हुई और अपूर्व थी । हनुमान्‌जीको रावणके भवनमें भोग सामग्री इतनी बाहुल्यतासे मिली कि उन्हें अपने जीवनमें प्रथम बार रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्दकी तृप्ति हुई । यह बात विचारणीय है कि हनुमान्‌जीके लिए किसी राजभवनमें जाने का यह सर्वप्रथम अवसर नहीं था। वह वानरराज सुग्रीवके अत्यन्त विश्वासपात्र और मित्र थे, प्रायः सुग्रीवके राजभवनोंमें आते जाते रहते थे। परन्तु वहाँ उनकी तृप्ति नहीं हुई। आज उन्हें इस तृप्तिका आनन्द पहली बार प्राप्त हुआ। कारण स्पष्ट है और वह यह कि वानरराजके प्रासादमें यह भोग सामग्री नहीं थी। यहाँ उन्होंने एक ऐसा कालीन देखा जिसपर संसार भरकी समस्त-वस्तुएँ चित्रित थीं । लङ्कामें कौशेय (रेशमी) वस्त्र पहननेकी परिपाटी प्रचुर मात्रामें थी। ज़रदोजीका काम भी राक्षस जानते थे । भगवान् रामने स्वयं अपनी आंखोंसे रावणको ज़रदोजीके काम वाले वस्त्र पहिने देखा था ।

किसी सभ्य जातिकी उन्नतिका हाल जाननेके लिए सामाजिक अवस्था जाननेके बाद स्थायत्य-कला का ज्ञान प्राप्त करना भी आवश्यक है। हनुमान्‌जी ने लंकामें तीन प्रकारके भवन देखे— (१) 'पद्म' ये कमल पुष्पकी भांति चारों ओर खुलते थे। (२) 'स्वस्तिक' इन घरोंमें पूर्वकी ओर द्वार नहीं होता था। और (३) 'वर्द्धमान' इन घरोंमें दक्षिणकी ओर द्वार नहीं होता था। लंकामें ७-८ भूमिका (मंजिल) के घर प्रायः देखे जाते थे। कोई घर उपवनसे शून्य नहीं, प्रत्येक घर और उसका उपवन चतुष्कोण था। समस्त नगरके भवन पंक्तिबद्ध थे। जब भगवान् राम लंका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की प्राचीरके नीचे पहुँच गये थे तो वे एक दिन अपने मन्त्रियों और सेनापतियोंको साथ लेकर एक पर्वत की चोटी पर चढ़े, जिससे लंकाकी शोभा देख सकें। वानरोंका तो कहना ही क्या ? स्वयं भगवान् राम भी लंकाका वैभव, सौन्दर्य और ऐश्वर्य देख कर अवाक् रह गये। उन्होंने उसकी तुलना देवराज इन्द्र की राजधानीसे और उनके उपवनको नन्दन-वन बतलाया है। हनुमान्जीने लंकाके प्रत्येक घरमें ८ प्रकारके कमरे देखे जैसे (१) आपानशाला, (२) पानशाला, (३) चित्रशाला, (४) निशाशाला, (५) पुष्पशाला, (६) दिनविहारशाला, (७) व्यायामशाला और (८) विलासशाला।

प्रत्येक घरमें सुचिक्कणतल और सुन्दर बहुमूल्य रत्नोंसे चित्रित गवाक्ष द्वारिका (खिड़की) युक्त भित्तियां थीं। महर्षि बाल्मीकिने अपने ग्रन्थमें भारत के तीन महानगरों— अपने नायककी जन्म-भूमि अयोध्या, उनकी ससुराल जनकपुरी और उनके मित्र सुग्रीवकी राजधानी किष्किन्धापुरीका भी वर्णन किया है। परन्तु जो वैभव लंकाका दिखाया है वह इन नगरोंका नहीं। यद्यपि ये तीनों नगर उस युगके प्रधान नगर थे। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि लंकाका वैभव और ऐश्वर्य उनसे बढ़ा चढ़ा था। महर्षि बाल्मीकिने लंकाका जो वैभव दिखाया है— उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि राक्षस संसारकी उन उन्नत और सभ्य जातियोंमेंसे थे जिनका इतिहासको पता है और जिन पर मनुष्यमात्र अभिमान कर सकता है। केशर, कस्तूरी, अगर, चन्दन और कपूरका व्यवहार राक्षसोंमें सर्वसुलभ था। वे नृत्य और गायनके भी बहुत प्रेमी थे। हनुमान्जीने रावणके राजप्रासादमें पचासों प्रकारके वाद्य-यन्त्र देखे।

सैनिक-शक्ति

जब हनुमान्जी लंकामें सीताजीको खोजने गए तो उन्होंने लङ्कावासियोंको कील-कांटोंसे सुसज्जित पाया। वे लङ्कावालोंकी इतनी भारी सुसज्जितताएं (तैयारियां) देख कर न केवल भयभीत हो गए अपितु विजयसे भी प्रायः निराश-से होगए। उन्होंने भगवान् रामके सामने यह स्वीकार किया कि लङ्का की दुर्ग-रचना इतनी सुदृढ़ है कि नल, नील, सुग्रीव, अङ्गद और मेरेमें ही वहाँ पहुँचनेकी सामर्थ्य है। साम, दान, भेद और बाहुबलसे लङ्काका विजय नहीं किया जा सकता। स्वयं भगवान् रामको लङ्काके अजेय होनेका विश्वास था और वे लङ्काकी प्राचीर के समीप पहुँच जानेके समय तक ऐसा विश्वास प्रकट करते रहे थे। वे बात बातमें रावणकी सैनिक-शक्तिके अभेद्य होनेकी प्रशंसा करते। यदि मित्रों, मन्त्रियों और सेनानियोंका प्रोत्साहन तथा राजमहिषीको रावणके बन्धनसे छुड़ानेका विचार बाधक न होता तो वे लङ्का पर चढ़ाई करनेका कदापि साहस ही न करते और सम्भवतः वे उसकी आवश्यकता भी न समझते।

नगर-प्राचीरको अभेद्य माना जाता था। उस पर बड़ी बड़ी भीमकाय तोपें चढ़ी हुई थीं। तोपोंके अतिरिक्त प्राचीर पर एक विशेष यन्त्र भी लगा हुआ था, जो तीर और पत्थरोंकी वर्षा किया करता था। प्राचीरके बाहर एक बहुत गहरी और भयानक खाई थी जो पानीसे भरी थी। अन्दरसे निकलनेके लिए चार मार्ग थे और वे भी ऐसे सेतुओंसे सुसज्जित थे कि इच्छा और आवश्यकतानुसार इकट्ठे किए जाते थे। नगर एक बहुत ऊंची पर्वतमाला पर बसा हुआ था। प्राचीर रक्षक अत्यन्त सावधान रहते थे। यहां तक कि वे वायुकी गतिसे भी परिचित रहते थे। उन दिनों भारतीय आर्योंको केवल धनुषबाणका प्रयोग ही ज्ञात था। परन्तु राक्षसोंके पास चतुरंगिणी सेना भी विद्यमान थी। जब रामने लङ्का पर आक्रमण किया तो रावणके पास १० सहस्र हाथी, १० सहस्र रथ, २० सहस्र सवार और एक कोटि तथा कई लाख पैदल सिपाही थे। युद्ध-पद्धतिका प्रकार भी वही था जो आज पाश्चात्य देशोंमें प्रायः प्रचलित है। धनुषबाणके अतिरिक्त उनके पास शूल, मुद्गर, शक्ति,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तोमर, परशु, कृपाण, भुशुण्डी, गदा, भाला, पट्टिश, परिघ, मूसल, वज्र, क्षेपणी और शतघ्नी आदि अनेक प्रकारके अस्त्र-शस्त्र थे। उनकी अपेक्षया वानर-सेनाकी युद्ध-कला अत्यन्त प्रारम्भिक थी, अर्थात् लात, घूंसा, मुक्का, थप्पड़ मारना, दांतोंसे काटना तथा वृक्ष और पत्थर फैंकना। सारी वानर-सेनामें गदाका प्रयोग दो ही चार आदमी जानते थे। शेष अस्त्र-शस्त्रोंसे सभीके सभी अपरिचित थे। उन दिनों लङ्काकी बस्ती १० करोड़ थी। एक बार जब रावण ने कुबेर पर आक्रमण किया तो उसकी अधिनायकता में ६० लाख योद्धा लड़ने गये थे।

उनके पास विमान भी थे। रावणका पुष्पक-विमान जगत्प्रसिद्ध था। लंकाको विजय करके भगवान् राम उसीमें बैठ कर अयोध्या गए थे। यह विमान साधारण नहीं था। उसका विशाल आकार देख कर भरतजी भीत हो गए थे। उन्होंने समझा था कि कोई राक्षस अयोध्याको नष्ट करने आया है। और पहाड़का पहाड़ ही उठा लाया है। उसके अन्दर के प्रमोद-स्थान, जल-क्रीड़ाके लिए सरोवर बने हुए थे। उसमें सुरक्षित गुप्तगृह (तहखाने) भी थे। विमान पर जड़ाऊ काम किया हुआ था। वह मानसिक इच्छासे ही गति करता था। विभीषण जब लङ्कासे भागा तो वह भी विमानमें बैठ कर आकाश-मार्गसे ही गया था और १०० मील निमेष मात्रमें पार कर लिये थे। यह विमान आकाशमें ठहर सकता था। ऊपर ठहर कर ही विभीषणने रामसे बातें की थीं। आधुनिक विमानोंमें यह विशेषता नहीं है।

रावण का चरित्र

हनुमान्जीने रावणके चरित्रकी बड़ी प्रशंसा की है। उन्होंने भगवान् रामसे लङ्काका वर्णन करते हुए रावणको एकसे अधिक बार महात्मा कह कर पुकारा है। स्वयं भगवान् रामने भी उसे धर्मात्मा कहा है और उनके वंशकी उच्चता तथा महत्ताकी प्रशंसा की है। साथ ही उपालम्भ भी दिया है कि उसने ऐसा कुलीन और धर्मज्ञ होकर मेरे साथ ऐसा अत्याचार किया। सम्पाती और लङ्काकी रक्षक देवी लङ्काने भी उसे महात्मा रावण कह कर पुकारा है। जिस रात हनुमान्जी लङ्कामें गये उससे अगले दिन अमावस्या थी। उन्होंने अमावस्याके दिन होने वाले यज्ञकी विशेष सुसज्जितताएं (तैयारियां) देखीं। भगवान् राम पर विजय पानेके लिए उसने अपने प्रासादमें विशेष यज्ञका अनुष्ठान किया और वेदके पण्डितोंकी पूजा की। उसके प्रासादमें एक मन्दिर भी था जिसकी भव्यताकी महर्षि बालमीकिने मुक्त-कण्ठसे प्रशंसा की है।

सं० २००० वि० के दैनिक ग्रह

यह पुस्तक गत हेमन्ताङ्कके साथ प्रकाशित हुई थी। अब इसकी बहुत थोड़ी प्रतियां शेष हैं। अतः अब जो इस दूसरे वर्षके नये स्थाई ग्राहक होंगे, उन्हींको यह पुस्तक बिना मूल्य भेजी जा सकेगी। नवीन ग्राहकोंमें भी जो सज्जन गणित ज्योतिष जानते हों वे ही मंगवावें, क्योंकि यह सर्वसाधारणके उपयोगकी पुस्तक नहीं है।

प्रथम वर्षके ग्राहकोंसे—प्रथम वर्षके ग्राहकोंके पास द्वितीय वर्षका प्रथमाङ्क (शरदङ्क) भेजा जा चुका है किन्तु उनमेंसे कुछ ग्राहकोंने द्वितीय वर्षका मूल्य अभी तक नहीं भेजा। वे कृपया अपना मूल्य शीघ्र भेज दें। यदि उन्हें ग्राहक न रहना हो तो जो प्रथमाङ्क उनके पास पहुंचा है उसका मूल्य ।।।) भेज दें अथवा वह अङ्क सुरक्षित रूपमें लौटा दें। क्योंकि अब इस प्रथमाङ्ककी सब प्रतियां समाप्त हैं। आशा है प्रेमी पाठक अपना मूल्य या अङ्क भेज कर 'श्रीस्वाध्याय' को हानिसे बचाएंगे। —व्यवस्थापक।

CC-0, In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आभार-प्रदर्शन

इस अङ्कके प्रकाशनमें कुछ विलम्ब हो जानेसे प्रेमी पाठकोंको जो कष्ट हुआ उसके लिए हम क्षमा-प्रार्थी हैं और इस अवधिमें उन्होंने इस 'वसन्ताङ्क' के लिए असंख्य पत्र तथा कई ग्राहकोंने तो तार भेजकर 'श्रीस्वाध्याय' के प्रति अपने जिस अनन्य प्रेम और गुणग्राहकताका परिचय दिया उसके लिए हम उन सभी ग्राहकोंके अत्यन्त आभारी हैं। जहाँ सर्व साधन सम्पन्न 'साधना' 'धारा' आदि जैसे कई सुप्रसिद्ध मासिक पत्रोंने कई बार अपने युग्माङ्क (एक मासके विलम्बसे दो महीनोंका एक ही अङ्क) प्रकाशित किये हैं, वहाँ प्रेस आदिकी सर्व सुविधाओं से शून्य एकाकी कार्यकर्ता द्वारा दैवी कारणोंसे 'श्रीस्वाध्याय' के इस अङ्कमें २०-२५ दिनका विलम्ब हो जाना कोई बड़े आश्चर्यकी बात नहीं। आशा है प्रेमी पाठक इसे अनुचित न मानकर आगे भी अपना पूर्ण सहयोग देनेकी कृपा करते रहेंगे। भविष्यमें 'श्रीस्वाध्याय' सदा निश्चित समय पर पाठकोंकी सेवामें पहुंचता रहेगा। हम उन पाठकोंको विशेष रूपसे धन्यवाद देते हैं जिन्होंने अपना मूल्य भेजकर तथा दूसरोंसे भी भिजवाकर अमूल्य सहायता की है।

'श्रीस्वाध्याय' में सर्वाधिक सहायता हमारे महामान्य संरक्षक बघाट-महीमहेन्द्र धर्ममार्तण्ड श्री १०५ मान्. राजा साहब दुर्गासिंह जी बहादुर सी० आई० ई० सोलन नरेश महोदय और भरतपुरके रावराजा साहब कैप्टन श्री १०५ मान् गिरिधारीशरणसिंह जी महोदय तथा सहायकोंमें श्री १०५ मती माजी महाराणी साहिबा सिरमौरीजीने की है। इन महानुभावोंकी उदार सहायतासे ही यह अङ्क पाठकों तक पहुंच सका है अतः हम उक्त श्रीमानोंके चिरकृतज्ञ हैं। शेष सहायक महानुभावोंकी भी पर्याप्त सहायता रही है, उनके भी हम आभारी हैं।

ज्योतिश्शास्त्रके प्रकाण्ड पण्डित वयोवृद्ध विद्वान् श्री पं० मीठालाल जी व्यास, श्री पं० शक्तिप्रसादजी शुक्ल, श्री ला० श्यामलालजी चौपड़ा, श्री पं० वैजनाथजी उपाध्याय, श्री ला० जगन्नाथजी अग्रवाल, श्री ला० गङ्गानारायणजी अग्रवाल, श्री पं० शिवशरणजी राजोपाध्याय, श्री बा० हसराजजी इन्सपेक्टर, श्री पं० गोविन्दजी मिश्र, श्री पं० कन्हैयालाल राधारमणजी शास्त्री वैद्यभूषण ज्यो०, श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्यो० आदि २ कई सज्जनोंने 'श्रीस्वाध्याय' के प्रचारमें पूर्ण सहयोग दिया अतः इन सज्जनोंके भी हम आभारी हैं।

श्री पं० बलजिन्नाथजी शास्त्री, श्री पं० तारादत्त जी राज ज्यो० आदि जिन विद्वान महानुभावोंने अपने मौलिक लेखों द्वारा इस अङ्कको अलंकृत किया उनके हम अत्यन्त आभारी हैं। वि० भू० श्री पं० दीनानाथजी शास्त्री सारस्वत, श्री अवनीन्द्रकुमारजी विद्यालंकार, श्री भूपेन्द्रनाथजी बन्धोपाध्याय एम० ए० श्री पं० कृष्णचन्द्रजी ओझा, श्री मनुभाई पी० शुक्ल, श्रीपं० श्रीगोपालजी शास्त्री, श्री पं० दीनानाथजी शास्त्री आदि २ कई सुप्रतिष्ठित मान्य विद्वानोंने अपने गवेषणापूर्ण मौलिक लेख इस अङ्कके लिए भेजनेकी कृपा की, उन सबके हम हृदयसे आभारी हैं। इन महानुभावोंकी रचना इस अङ्कमें प्रकाशित न हो सकी इसका हमें खेद है। ये लेख यथावसर क्रमशः आगामी अङ्कोंमें प्रकाशित होंगे।

दैनिक—'हिन्दुस्तान' 'विश्व-बन्धु'। साप्ताहिक—'कर्मवीर' 'स्वराज्य' 'केसरी' 'सिद्धान्त' 'श्रीवेङ्कटेश्वर-समाचार' 'अङ्कुश'। मासिक—'कल्याण' 'माधुरी' 'विक्रम' 'वीणा' 'धारा' 'साधना' 'भारतीय-धर्म' 'चण्डी' 'विश्वभारती' 'व्रजभारती' 'जीवन-साहित्य' 'सन्मार्ग' आदि २ कई पत्र पत्रिकाओं के उन सहयोगी सम्पादकोंके भी हम अत्यन्त आभारी हैं जो परिवर्तनमें अपने बहुमूल्य पत्र भेजकर हमें सहयोग दे रहे हैं।

—हरदेव शर्मा त्रिवेदी, सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्यायके गतांक

'श्रीस्वाध्याय' के प्रथम वर्षके चारों अङ्क और वर्तमान वर्षके विगत दो अङ्कोंकी भारतके गण्य मान्य धुरन्धर विद्वानों एवं सुप्रसिद्ध समाचारपत्रोंने भूरि-भूरि प्रशंसा की है । इनमें सभी लेख सारगर्भित मौलिक और ठोस सामग्री लिए हुए हैं। साथ ही प्रत्येक अङ्ककी भविष्यवाणियाँ ६५ प्रतिशत ठीक मिली हैं। इस सम्बन्धमें कुछ प्रसिद्ध पत्रों और विशिष्ट विद्वानोंकी विस्तृत सम्मतियोंमेंसे कतिपय सम्मतियोंका कुछ भाग गताङ्कोंमें प्रकाशित किया जा चुका और अब भी कुछ विशेष २ नई सम्मतियाँ प्रत्येक अङ्कमें (दो पृष्ठोंमें) प्रकाशित की जाती हैं। इतने पर भी कई सहृदय विद्वानोंकी सम्मतियां रह ही जाती हैं। यदि उन सबको अक्षरशः प्रकाशित की जावे तो एक बड़ी पुस्तक बन सकती है। इसीसे आप अनुमान लगा सकते हैं कि ये अङ्क कितने ठोस और उपादेय होंगे । प्रथम वर्षके चारों अङ्कोंकी प्रतियाँ अब बहुत थोड़ी शेष हैं; अतः इसका (प्रथम वर्षकी फाईलका) मूल्य अब ३॥) रु० निर्धारित किया गया है।

नवीन ग्राहकोंको विशेष लाभ

'श्रीस्वाध्याय' के स्थाई ग्राहक वर्षारम्भसे ही बनाए जाते हैं, अर्थात् जिस वर्षमें जो ग्राहक हो उसको आश्विनके प्रथमाङ्कसे आषाढ़ तकके चारों अङ्क लेने आवश्यक हैं। अब इस द्वितीय वर्षमें जो नये ग्राहक होंगे उनको (यदि वे चाहेंगे तो) प्रथम वर्षकी फाईल ३) रु० में दे दी जावेगी। और तीनों उपहार पुस्तकें (श्रीपञ्चस्तवी, श्रीपरशुराम स्तोत्र, श्रीसप्तपदीहृदय) तथा "सं० २००० वि० के दैनिक ग्रह" नामक ।।) मूल्यकी पुस्तक बिना मूल्य भेजी जा सकेगी । इसके लिए उनको २।-) वर्तमान द्वितीय वर्षका मूल्य और ३) प्रथम वर्षकी फाईलके तथा =) चारों उपहार पुस्तकोंका मार्ग व्यय कुल ५।।) मनीआर्डर द्वारा भेजना होगा।

कई ग्राहक वर्षके बीचके किसी अङ्कसे (पौष, चैत्र या आषाढसे) ही ग्राहक बनानेके लिए लिखकर हमें बाध्य करते हैं, किन्तु हमारा नियम वर्षारम्भसे (आश्विनमाससे) ही वर्षभरके लिए स्थाई ग्राहक बनानेका है। जो सज्जन आश्विनके पहले या पीछेके एक दो अङ्क लेना चाहें उनको मार्गव्यय (डाकखर्च) सहित ।॥-) तेरह आने प्रति अङ्कके हिसाबसे पहले मनीआर्डर द्वारा भेजना चाहिए। लिफाफेमें टिकट भेजना उचित नहीं है। 'श्रीराष्ट्रालोक' अब समाप्त है, द्वितीय संस्करण छपने पर सूचना दी जाएगी।

आवश्यक सूचना

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको भी नहीं भेजा जाता, अतः कोई सज्जन नमूनेके लिए बाध्य न करें । यदि एक प्रति (नमूनार्थ) मँगवानी हो तो उसके लिए ।॥-) तेरह आने भेजने आवश्यक हैं । जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको संस्थाकी ओरसे उत्तर दिया जाएगा । 'श्रीस्वाध्याय' की रूपरेखा (नियम उद्देश्य आदि) तीन पैसेका)॥। टिकट प्राप्त होने पर भेजी जा सकेगी । पुराने ग्राहकोंको रुपया भेजते समय कूपन पर अपना ग्राहक नम्बर लिखना आवश्यक है। 'श्रीस्वाध्याय' का प्रत्येक अङ्क प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ल दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानी से भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास न पहुँचे तो पहले अपने स्थानीय पोस्टआफिस (डाकघर) में पूछताछ करके १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए। जिन ग्राहकोंने अपना द्वितीय वर्षका मूल्य अभी तक नहीं भेजा है वे शीघ्र भेजदें।

पत्र व्यवहारका पता—व्यवस्थापक श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (शिमला)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीदुर्गा भवन

यह जानकर हमारे भारतीय सम्पूर्ण नर-नारियों को परम हर्ष होगा कि "श्रीदुर्गा-भवन" की स्थापना हो गई है। इसमें श्रीदुर्गाभगवतीके सम्बन्धमें जितना भी वाङ्मय होगा उस सबका संग्रह किया जायगा। अच्छे २ योग्य विद्वानोंसे अन्वेषण कराया जाएगा, तथा क्रम-बद्ध सुचारु रूपसे उसका विवरण भी प्रकाशित होगा। इस समय दुर्गासप्तशतीकी सात आठ टीकाएं तथा छः सात प्रकारकी भिन्न २ रूपोंमें मुद्रित पुस्तकें इसमें संगृहीत हो चुकी हैं। अतः "श्रीस्वाध्याय" के पाठकों एवं अन्य सज्जनोंसे भी प्रार्थना है कि जिन-जिन लोगोंको सप्तशतीके सम्बन्धमें जो भी कुछ विशेष ज्ञान हो वह लेखबद्ध कर नीचे लिखे पते पर भेजनेकी कृपा करें। जितनी प्रकारकी पुस्तकें, टीकाएं, भाष्य, अनुवाद, निबन्ध आदि जो भी कुछ हों एक-एक प्रति भेज कर अनुगृहीत करें। यह संस्था लोकोपकारक है इस कारण विशेषतः अमूल्य ही भेज कर इस शुभ कार्यमें सहयोग प्रदान करें। जो महानुभाव मूल्य लेकर भेजना चाहें, वे अपनी पुस्तकोंके विवरण तथा मूल्यकी पृथक् सूची बनाकर हमारे पास भेजें।

श्रीस्वाध्यायसदन

श्रीस्वाध्यायसदन एक ऐसी संस्था होने जा रही है जो भारतमें एक सर्वोच्च अन्वेषकका कार्य करेगी। अपने लोकोपकारी कार्योंसे राष्ट्र तथा धर्मकी भली-भांति सेवा करती हुई उनकी उन्नतिका प्रयत्न करेगी। इसमें संस्कृत तथा हिन्दीके सब विषयोंके ग्रन्थ संगृहीत होंगे और वाङ्मयका अन्वेषण, अनुशीलन तथा उसका स्वाध्याय होगा। उसके सक्रिय प्रचारका भी प्रयत्न किया जायगा। इस संस्थाके द्वारा अच्छे २ विद्वान् तथा कार्यकर्ता पुरस्कृत होंगे।

सर्व प्रथम इस संस्थाने "श्रीस्वाध्याय" नामक त्रैमासिक पत्र प्रकाशित करना प्रारम्भ किया है, जिसके द्वितीय वर्षका तृतीयाङ्क "वसन्ताङ्क" के रूपमें आपके हाथोंमें ही है। इसे शीघ्र ही मासिक करनेका आयोजन किया जा रहा है। अतः राष्ट्र, धर्म, जाति तथा स्वातन्त्र्यसे प्रेम रखने वाले सभी भारतीय सज्जन तन-मन-धनसे इस संस्थाको उन्नत एवं अखिल भारतमें आदर्श बनानेके लिए हाथ बटानेमें सङ्कोच न करते हुए सबका हित करेंगे।

पत्र व्यवहार का पता—व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

श्रीस्वाध्यायसदनका ज्योतिष-विभाग

इस विभागमें ज्योतिष सम्बन्धी प्रत्येक कार्य शास्त्रानुसार सन्तोष-जनक रीतिसे किये जाते हैं। जन्मपत्र वर्षफलमें आयुः, सन्तान, स्त्री, धन, व्यापार, नौकरी, शरीरका सुखदुःख, भाग्योदयादिका पूरा पूरा विचार शास्त्रप्रमाणानुसार लिखा जाता है। प्राचीन तथा नवीन दोनों पक्षसे गणित होता है, दोनों पद्धतियोंका पारिश्रमिक (फीस) भिन्न २ है। जन्मपत्रकी फीस ११) रु० से १०००) रुपये तक। वर्षफल ५) से १००) रु० तक। एक भावका सूक्ष्म विचार (यथार्थ निर्णय) के ११) रु०। आयुर्विचार (अंशायुर्गणित, मारकेश विचार मृत्यु-समय-स्थान-रोग-मोहादि निर्णय सहित) राजा महाराजा एवं सेठ साहुकारोंसे १००) रु०, सर्वसाधारणसे २५) रु०। टेवा बनानेकी फीस २) रु०, भारतसे बाहर अन्य देशोंमें उत्पन्न हुए बालकोंके शुद्ध इष्ट और केवल लग्न कुण्डली बनानेकी फीस ५) रु०, विवादास्पद प्रश्न पर शास्त्रानुसार व्यवस्था बतलाने की फीस ५) रु०, शुद्ध विवाह मुहूर्त्त और ग्रहमेलापक (कुण्डली मिलान) के २) रु०, सामान्य प्रश्न १।) रु०।

प्रत्येक कार्यकी आधी फीस पेशगी मनीआर्डर द्वारा पत्रके साथ ही भेजना आवश्यक है। बिना प्रारम्भिक (एडवांस) प्राप्त हुए कार्य-आरम्भ नहीं किया जाएगा। उत्तर प्राप्त करनेके लिए जवाबी कार्ड अथवा टिकिट भेजना आवश्यक है।

पता—व्यवस्थापक श्रीस्वाध्यायसदन [ज्योतिषविभाग] सोलन (पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No. L.

श्रीग्रन्थमालाका प्रथम पुष्प

श्रीपञ्चस्तवी

(श्रीमद्धर्माचार्य भगवत्पाद प्रणीत)

यह एक अत्यन्त प्राचीन तथा भक्तोंके सम्पूर्ण मनोरथों को पूर्ण करने वाला श्रीमहामायाका स्तोत्ररत्न है। लाखों भक्तोंने अनुभव किया है और आगे भी करेंगे कि यह स्तोत्र-रत्न संसारमें अद्वितीय है।

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम श्रीमदमृतवाग्भवाचार्य प्रणीत कुछ प्रकाशित तथा अप्रकाशित ग्रन्थरत्न

श्रीपरशुरामस्तोत्र

यह एक अत्यन्त ओजस्विनी भाषामें लिखा हुआ भगवान् श्रीपरशुरामका स्तोत्र है। भारतके अनेकों पत्र पत्रिकाओंने तथा विद्वानोंने इसकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। राष्ट्रभाषानुवाद सहित सचित्र द्वितीय संस्करण छपकर तैयार है।

श्रीराष्ट्रालोक

अत्यन्त सरल तथा सरस संस्कृतभाषामय इस ग्रन्थके अध्ययनसे नस २ में राष्ट्रप्रेम व उत्साह भर जाता है। राष्ट्रिय व्यक्तियोंके सम्पूर्ण कर्तव्य, राष्ट्रको स्वतन्त्र व उन्नत करनेके उपाय, राष्ट्र किसे कहते हैं ? उस पर किसका अधिकार होता है ? इत्यादि विभिन्न राष्ट्रिय विषयोंका सम्पूर्ण ज्ञान होजाता है। बड़े २ राष्ट्रिय नेताओंने इसकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। अधिक क्या, गागरमें सागर है। राष्ट्रभाषानुवाद सहित द्वितीय संस्करण प्रकाशित करनेका प्रयत्न हो रहा है। मूल प्रथम संस्करण समाप्त है।

श्रीसप्तपदीहृदय

(राष्ट्रभाषानुवाद सहित)

भारतीय आर्यविवाह-संस्कारमें सप्तपदी नामक क्रिया कितनी सुन्दर एवं महत्त्वपूर्ण है यह तो पाठकोंको विदित ही है। किन्तु इस सप्तपदीका वास्तविक रहस्य आज तक किसी भी विद्वान्ने खोल कर नहीं लिखा। "एकमिषे" इत्यादि सूत्रोंके यथार्थ रहस्यको खोल कर भारतीय आदर्शके राष्ट्रिय रूपमें यह श्रीसप्तपदीहृदय नामक ग्रन्थ लिखा गया है। विशेष क्या आदर्श-दाम्पत्य-जीवनका तत्त्व इस पुस्तकमें भरा पड़ा है।

श्रीआत्मविलास

(सुन्दरी राष्ट्रभाषा व्याख्या सहित)

मनुष्यमात्रके लिए परम कल्याणकारी व सन्मार्ग-प्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थरत्न है, जिसके प्रकाशित होते ही दार्शनिक जगत्में हलचलसी मच गई और सैकड़ों प्रतियां हाथोंहाथ लग गईं। इस ग्रन्थको पढ़नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शान्त होता है, संसार बाहर भीतर सम्पूर्णरूपसे आनन्दमय प्रतीत होता है। अतः यदि आप भी आत्मा क्या है ? परमात्मा क्या है ? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है ? हम क्या हैं ? और हमें क्या करना चाहिए ? दर्शन किसे कहते हैं ? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहां होता है ? उनकी उपपत्ति क्या है ? आदि २ आध्यात्मिक गूढ़ रहस्योंसे भलीभांति परिचित हो कर आत्म-साक्षात्कार करना चाहते हैं तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजिये। आपके सभी सन्देह दूर हो कर अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा। मूल्य २) रु० मात्र।

शीघ्र प्रकाशित होनेवाला

श्रीराष्ट्रालोकका

श्रीराष्ट्रसञ्जीवन संस्कृतभाष्य

इसके विषयमें संक्षेपसे ही हम पाठकोंको सूचित करते हैं कि यह ग्रन्थरत्न सम्पूर्ण साहित्यसागरका सार है। इसके जोड़का ग्रन्थ आज तक संसार भरके किसी भाषाके साहित्यमें नहीं लिखा गया। ग्रन्थ क्या है, सम्पूर्ण राष्ट्रिय विषयोंका हृदय है। ग्रन्थमें प्रणेताने स्वाभाविक पूर्ण विज्ञानके आधार पर सम्पूर्ण मानव-कर्तव्य तथा स्वभावका उस विशेषतासे प्रतिपादन किया है कि जो एक अत्यन्त नवीन, सुललित, स्वभाव-शुद्ध तथा प्रकृति-सिद्ध हो सकता है। इस ग्रन्थका स्वाध्याय प्रत्येक राष्ट्रहितैषीका परम प्रधान कर्तव्य है। न पढ़ने वाले आजन्म पछतायेंगे। कईसौ पृष्ठोंमें यह ग्रन्थ समाप्त हुआ है।

सूचना—श्रीआत्मविलासको छोड़ कर शेष सभी मुद्रित ग्रन्थोंके मार्गव्यय (दो आने) प्राप्त होनेपर "श्रीस्वाध्याय" के ग्राहकोंको बिना मूल्य दी जावेंगी।

पता— श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस देहलीमें छप कर श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (शिमला) से प्रकाशित।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रैमासिक

श्रीः

श्रीस्वाध्याय

[ग्रीष्माङ्क]

वर्ष
२
सं० २०००

संख्या
४
आषाढ़

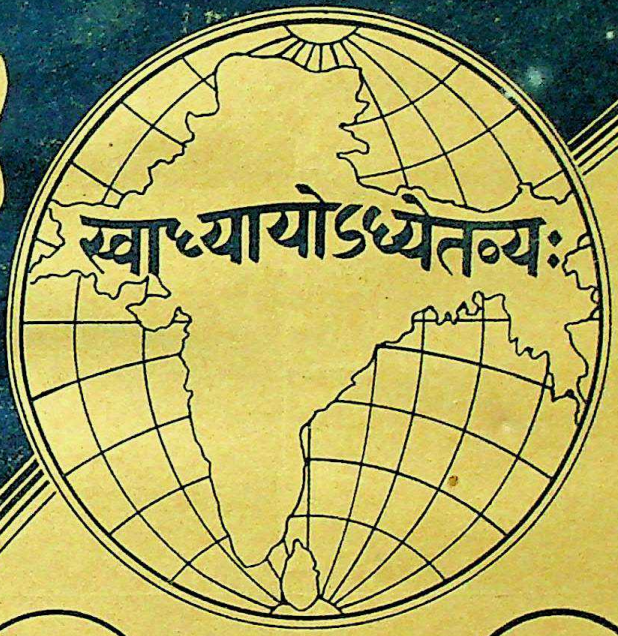

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः

वार्षिक
मूल्य
२।-)

इस अङ्क
का मूल्य
।।।)

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१ श्रीस्वाध्यायके नियम उद्देश्य आदि	२
२ प्रभुसे ! [कविता] कवयिता—श्री पं० चम्पालालजी विशारद कविशेखर 'मञ्जुल'	७
३ सफल द्वितीय वर्ष, ले०—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी	८
४ युद्ध	९
५ शान्तिरस्तु, ले०—श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज	११
६ श्रीगणपति पूजन, ले०—वि० भू० वि० वा० श्री पं० दीनानाथजी शर्मा शास्त्री सारस्वत	१३
७ नागपञ्चमी	१७
८ आशा [कविता] कवयिता— श्री पं० हरिश्चन्द्रजी जोशी 'मञ्जुल'	१८
९ श्रावणी-रक्षाबन्धन, ले०— श्री पं० गौतमजी शास्त्री	१९
१० श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	२२
११ देवीनवरात्र, ले०— राजकुमारगुरु श्री पं० तारादत्तजी राजज्यौतिषी	२४
१२ सत्ययुगका सूर्यग्रहण, ले०— श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी	२५
१३ भारतीय ज्यौतिष-प्रणाली, ले०—ज्योतिर्विद्यारत्न श्री पं० कृष्णचन्द्रजी ओझा केतकी पञ्चाङ्गकर्ता	२६
१४ चन्द्रग्रहणका संसार पर प्रभाव, ले०—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी	२९
१५ काल, दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र, ले०— श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी	३२
१६ सूर्यका सायन कर्क राशिमें प्रवेश, ले०—गणकभास्कर श्री पं० सखारामजी जोशी शास्त्री	३६
१७ वर्तमान विश्वव्यापी संग्राम और ज्यौतिष, ले०—श्री पं० विशुद्धानन्दजी गौड़ ज्यौतिषाचार्य	३७
१८ त्रैमासिक पर्वव्रतादि निर्णय, ले०—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी	३९
१९ त्रैमासिक व्यापार-चन्द्रिका, ले० ज्योतिषरत्न दैवज्ञमणि श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्यौतिषी	४१
२० त्रैमासिक व्यापार-विमर्श (तेजी मन्दी) ले०—श्री पं० बिहारीलालजी शर्मा दैवज्ञ	४४
२१ विषूचिका (हैजा) ले०—वैद्यभूषण श्री पं० कन्हैयालालजी शास्त्री ज्योतिर्विद्	४८
२२ यास्क और पाणिनिका समय, ले०—श्री पं० बलजिन्नाथजी शास्त्री बी० ए०	५२

मूल्यवृद्धिकी सूचना—

तीसरे वर्षका प्रथमाङ्क (नववर्षाङ्क)

'श्रीस्वाध्याय' का यह अङ्क अत्यन्त उपादेय सामग्रीसे अलंकृत रहेगा। इसमें बड़े ही मार्मिक सुन्दर लेखोंका चयन किया जा रहा है। भारतके सुप्रतिष्ठित धुरन्धर विद्वान् इसमें अपनी मौलिक रचनाएं भेजेंगे। यह अङ्क गत सब अङ्कोंसे अत्यन्त सुन्दर सुरुचिपूर्ण हितकर आकर्षक और आकारमें (पृष्ठ संख्यामें) भी बड़ा होगा। एक दो चित्र देनेका भी प्रयत्न किया जाएगा। इस अङ्कका मूल्य १।) होगा और चारों अङ्कोंका वार्षिक मूल्य ३) रु० होगा। परन्तु स्थायी ग्राहक यदि अपना तृतीय वर्षका वार्षिक मूल्य भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा ता० १४ सितम्बर १९४३ ई० पर्यन्त मनीआर्डर द्वारा भेज देंगे तो उन्हें ३) रु० न देकर २।-) ही देने पड़ेंगे और १।) रु० मूल्यका यह विशेषाङ्क भी उन्हें इसी मूल्यमें प्राप्त हो सकेगा। इस तिथिके (ता० १४ सितम्बरके) पश्चात् प्रत्येक ग्राहकको वार्षिक मूल्य ३) तीन रुपये देने होंगे। इस अङ्कके साथ ही ग्राहकोंका द्वितीय वर्षका मूल्य भी समाप्त हो रहा है, अतः पुराने और नये सब ग्राहकों को इस अवसरसे लाभ उठाना चाहिए।

पता— व्यवस्थापक "श्रीस्वाध्याय" सोलन (शिमला)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ श्रीः ❀

श्रीस्वाध्याय

[त्रैमासिक-पत्र]

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—

बघाटमहीमहेन्द्र धर्ममार्तण्ड

राजा साहब श्री १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर C. I. E. सोलन (शिमला)

रावराजा कैप्टेन श्री १०५ मान् गिरिधारीशरणसिंहजी भरतपुर।

सहायक—

श्री १०५ मती मांजी महाराणी साहिबा (सिरमौरीजी) बघाटराज्य।

श्रीमान् सरदार कुँवर रणदीपसिंहजी नाहन (सिरमौर)

श्रीमान् कुंवर शिवसिंहजी B. A., L-L. B. सेशन जज सोलन।

श्रीमान् कुँवर ईश्वरीसिंहजी सुपरिण्टेण्डेण्ट कोर्ट आफ वार्ड्स उदयपुर (मेवाड़)

श्रीमान् सरदार जगजीतसिंहजी ढिल्लों B. A., L-L. B. नाभा।

सम्पादक—

ज्योतिषमार्तण्ड ज्योतिर्विद्यारत्न दैवज्ञमणि गणकरत्न

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिश्शास्त्री

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

सभस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना "श्रीस्वाध्याय" का उद्देश्य है।

संचालक गणोंके नियम—

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जाएँगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५०) से ३००) रु० तक प्रति वर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जाएँगे।

सम्मान्य ग्राहक—

(३) जो सज्जन २।—) से अधिक ५०) रु० तक प्रति वर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के सम्मान्य ग्राहक माने जाएँगे।

श्रीस्वाध्यायके नियम—

(१) 'श्रीस्वाध्याय' (जब तक त्रैमासिक रहेगा तब तक) आश्विन शुक्ल १०, पौष शुक्ल १०, चैत्र शुक्ल १० और आषाढ़ शुक्ल १० को प्रकाशित हुआ करेगा। इस त्रैमासिक संस्करणका वार्षिक मूल्य २।—) है। एक प्रतिका ।॥) स्थाई ग्राहक आश्विनसे ही बनाये जाते हैं। श्रीस्वाध्यायके स्थाई ग्राहकोंको हमारी "श्रीग्रन्थमाला" की सभी अद्भुत अमूल्य पुस्तकें बिना मूल्य (मुफ्त) दी जावेंगी। ऐसी सर्वोपयोगी अमूल्य पुस्तकें कोई भी मासिक पत्र प्रतिवर्ष अपने ग्राहकोंको बिना मूल्य नहीं देता। यह 'श्रीस्वाध्याय' के ग्राहकोंको विशेष लाभ है। पर्याप्त संरक्षक, सहायक और ग्राहक होने पर बहुत शीघ्र ही 'श्रीस्वाध्याय' मासिक कर दिया जायगा।

(२) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय सदनकी ओरसे प्रार्थना पूर्वक मँगवाये जाएँगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथा समय प्रकाशित हो जावेंगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियाँ और विनिमय (परिवर्तन) के पत्र पत्रिकायें सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (पंजाब) के पतेसे भेजने चाहिएँ।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढ़ाने तथा उसे लौटाने या न लौटाने का सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। जिस अस्वीकृत लेखको सम्पादक लौटाना स्वीकार करें, उसका डाक और रजिस्ट्रीका व्यय लेखक को भेजना होगा। अधूरे लेख नहीं लिये जाते।

विज्ञापन छपाईके नियम—

१ पृष्ठ या दो कालमकी छपाई	२०)	प्रति अङ्क
आधा पृष्ठ या एक कालमकी छपाई	११)	"
चौथाई पृष्ठ या आधा " "	६)	"

पूरे वर्ष या चार अंकोंमें एक पृष्ठकी छपाई ६५) रु० होगी।

त्रैमासिक 'श्रीस्वाध्याय' के पृष्ठका आकार २०×३० अठपेजी। कालम स्थान ८×३ इञ्च है।

आधे पृष्ठसे अधिक विज्ञापन देनेवालोंको 'श्रीस्वाध्याय' बिना मूल्य भेजा जावेगा। छपाईकी रकम पेशगी प्राप्त होने पर ही विज्ञापन पत्रमें छापा जावेगा।

विशेष जानने के लिए—
व्यवस्थापक श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)
से पत्र व्यवहार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्याय

(त्रैमासिक पत्र)

श्रीस्वाध्याय—अत्यन्त लोकप्रिय हो रहा है। कारण—

श्रीस्वाध्याय—मोक्ष रहस्य तथा दार्शनिक मतमतान्तरोंका परिचय करानेमें अद्वितीय पत्र है।

श्रीस्वाध्याय—धर्मके मर्म समझनेमें अत्यन्त सुन्दर सरल रीतिसे सहायता करता है।

श्रीस्वाध्याय—द्रव्योपार्जन तथा संरक्षण करनेके अनेक प्रकारोंको बतलाता है।

श्रीस्वाध्याय—सांसारिक सुख, स्वास्थ्यसाधन तथा कला-कौशलका तत्त्व प्रकाशित करता है।

श्रीस्वाध्याय—भारतीय इतिहास प्रकाशित करनेका असाधारण साधन है।

श्रीस्वाध्यायको—भलीभांति पढ़ने और समझनेसे मनुष्य स्वावलम्बी, निर्भय, उदार, आर्य एवं व्यवहारकुशल हो कर संसारयात्रामें विजयी हो सकता है।

श्रीस्वाध्यायने—अपने प्रथमाङ्कके साथ ही आगामी वर्ष भरके भारतीय वेधसिद्ध दैनिक सूक्ष्मग्रह तथा शर, क्रान्ति, योग प्रतियोग आदि प्रचारित करनेका दृढ़ निश्चय करके महान् लोकोपकार किया है।

श्रीस्वाध्यायके लिए—भारतके प्रसिद्ध विद्वानोंकी सुन्दर २ सम्मतियां और महापुरुषोंके आशीर्वाद प्राप्त हो रहे हैं।

श्रीस्वाध्यायसे—भारतीय महान् आदर्श तथा हमारी प्राचीन विद्याओंका पुनरुद्धार होगा।

श्रीस्वाध्यायका—पठन पाठन प्रत्येक प्रकारके उन्नति मार्गका प्रबोधन करायेगा।

श्रीस्वाध्यायमें—राष्ट्रको स्वतन्त्र करनेके प्रत्येक वैध उपायोंके साथ दर्शन, अर्थशास्त्र, ज्यौतिष-गणित-फलित-मुहूर्त, संस्कार, व्रतोत्सवादि निर्णय, दायभागादि धर्मशास्त्र निर्णय, सामाजिक व्यवस्थाएँ, संसारकी सामाजिक-धार्मिक-राजनैतिक व व्यापारिक परिस्थिति पर महत्त्वपूर्ण चमत्कारी भविष्य-वाणियां, आयुर्वेद, भूगोल, खगोल, महापुरुषोंके जीवन-चरित्र, विज्ञानके चमत्कार, ग्रन्थ-परिचय समालोचन इत्यादि विषयों पर अनुभवी विद्वानोंके गम्भीर लेख प्रकाशित होते हैं।

पता—व्यवस्थापक श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (पंजाब)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्यायको—

भारतीय विचक्षणवर्ग किस दृष्टिसे देखता है—

'श्रीस्वाध्याय' पर प्राप्त हुई सम्मतियोंमेंसे भारतके सम्मानित धुरन्धर विद्वानों एवं राष्ट्रिय प्रसिद्ध पत्रोंकी सम्मतियाँ प्रथम और द्वितीय वर्षके गताङ्कोंमें क्रमशः प्रकाशित की गईं थीं। उसके अनन्तर प्राप्त हुई अनेकों सुप्रसिद्ध साहित्य महारथियों और राष्ट्रिय प्रमुख पत्रोंकी सम्मतियोंमेंसे कुछ-एकका संक्षिप्त भाग यहाँ और देखिये—

उज्जयिनीकी सुप्रसिद्ध श्रीजीवाजी अबझरवेटरी (वेधशाला) के सुपरिण्टेण्डेण्ट ज्योतिर्विज्ञानके प्रकाण्ड पण्डित श्री आर० व्ही० वैद्य एम० ए० बी० टी० महोदय लिखते हैं —

"·····मैं आपको हार्दिक धन्यवाद देता हूं। आपका कार्य प्रशंसनीय है। श्रीस्वाध्यायमें धर्म-विषयक व ज्योतिष विषयक जो लेख प्रकाशित हुए हैं उन्हें देखते हुए यह कहनेमें मुझे यत्किञ्चित् सङ्कोच नहीं होता कि पञ्जाब जैसे प्रान्तमें आपने सचमुच बहुत ही अच्छा कार्य प्रारम्भ किया है।·····"

❀ ❀ ❀ ❀

पंजाब-प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनके मंत्री सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध विद्वान् डाक्टर श्रीपरशुरामजी शर्मा लाहौरसे लिखते हैं—

"·····श्रीस्वाध्यायको मैं जिस चावसे पढ़ता हूं उसका वर्णन नहीं कर सकता। उसके लेख ऐसे उच्च कोटिके हैं कि पढ़ने वाले उनसे बहुत लाभ उठा सकते हैं। अधिक इस विषयमें मैं क्या कहूँ। मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूं।·····"

❀ ❀ ❀ ❀

जैन-धर्मशास्त्रके सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध विद्वान् श्री १०८ जैन मुनि श्री कुन्दनलालजी महाराज जगरावांसे लिखते हैं —

"·····श्रीस्वाध्याय अपने ढङ्गका एक ही पत्र है, इसने अपने लेखों द्वारा अपना नाम सार्थक कर दिया है। इसने हिन्दी संसारमें अपनी बहुमुखी भूमिकाका परिचय दिया है। पत्र अनेक दृष्टियोंसे संग्रहणीय है। धर्मवृद्धिमें हिन्दूधर्मकी बहुत सेवा की है, इस लिए प्रत्येक हिन्दू जैनमत वालोंका कर्तव्य है कि धर्म अर्थ मोक्षकी वृद्धिके लिए 'श्रीस्वाध्याय' का अध्ययन अवश्य करें। मैं हृदयसे 'श्रीस्वाध्याय' का सर्वत्र सर्वथा पूर्ण प्रचार चाहता हूं और इसे त्रैमासिकसे मासिक रूपमें देखना चाहता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री १०८ जैन मुनि श्री वीरविजयजी महाराज दिल्लीसे लिखते हैं —

".....श्रीस्वाध्यायके लेखोंको पढ़नेसे अतीव सन्तोष प्रदान होता है, क्योंकि प्रत्येक विषय स्वाध्याय पर ही निर्भर है।.....ऐसे पत्रको पढ़नेसे बुद्धिकी तीक्ष्णता प्रकट होती रहती है, इस लिए सबसे यह निवेदन है कि वे इस पत्रको अवश्य पढ़ा करें। 'श्रीस्वाध्याय' निर्विघ्नता पूर्वक सफलता प्राप्त करता हुआ भारतभूमिकी सेवा करता रहे यही मैं चाहता हूं।....."

❀ ❀ ❀ ❀

श्री प्रोफेसर बी० एल० आनन्द दयालसिंह कालेज लाहौरसे लिखते हैं —

The peculiarity of your Journal is the forecast about the rise and fall in the prices of various commodities. Your claim to specialize in astronomical forecast is substantiated by the four articles on things to happen in the quarter beginning with the month of Asharh. I understand that you make such forecasts about all the four quarters of the year.

The paper, printing and genera get up of the Journal are all of a superior type. I hope your Journal will soon come to be rusked with other well established Hindi monthlies of long standing such Vishal Bharat, Madhuri, Saraswati and Kalyan.

❀ ❀ ❀ ❀

खण्डवाका सुप्रसिद्ध राष्ट्रिय साप्ताहिक "कर्मवीर" अपने ३० जनवरी १९४३ के अङ्कमें लिखता है—

".....राष्ट्रपति लेख मौलिक और विचारणीय है। आपके विचारसे जिसे हम भारतमाता कहते हैं, कोई भी राष्ट्रवादी पुत्र उसका पति कहलानेका अधिकारी नहीं, ठीक है। प्रहयोग चमत्कार और तेजी मन्दी विचारमें लिखे हुए फल सत्य निकले हैं। आचार्य चरणके आत्मानुभव अकाट्य हैं ही। ..... पत्रमें ज्योतिष पर अधिक चर्चा है और उसका प्रतिपादन भी बड़ा सन्तोषप्रद है। सम्पादकजीने 'दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र' लेखमें भविष्य विचार लिख कर संसारके समक्ष यह बात अक्षरशः सत्य करके बता दी है कि ग्रहोंका प्रभाव कैसा पड़ता है और विचारपूर्वक लिखने पर ज्योतिष विद्या कैसी मार्ग प्रदर्शिका हो सकती है।.....संस्थापक और सम्पादक महोदय हिन्दी भाषामें विशेषतया ज्योतिष विद्या पर प्रकाश डालने वाले पत्रको अवतरित करनेके उपलक्षमें बधाईके पात्र हैं। आपने एक अत्यन्त कमीकी पूर्ति की है। हम तेजी मन्दी पर विचार करने वाले व्यापारी, देशप्रेमी, पुरातत्त्वज्ञ एवं साधारण लोगोंसे भी इसका ग्राहक होनेके लिए अनुरोध करते हैं। त्रैमासिक उपादेय है। सम्पादन और मुद्रण भी उत्तम।....."

इनके अतिरिक्त अनेकों मान्य विद्वानों और पत्रोंकी शुभ सम्मतियां यहां स्थानाभावके कारण प्रकाशित नहीं हो सकीं। यथावसर आगामी किसी अङ्कमें प्रकाशित करनेका प्रयत्न करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्यायमें क्या क्या होगा ?

विज्ञ पाठकोंको 'श्रीस्वाध्याय' के उद्देश्य तथा नीतिका ज्ञान तो भली भांति हो ही गया है। इसमें जो मोक्षादि पांच प्रधान स्तम्भ रक्खे गये हैं—उनके अन्तर्गत किन २ विषयों पर लेख लिखे जा सकते हैं ? इसकी एक संक्षिप्त सूची हम नीचे दे रहे हैं। इस तालिका द्वारा हमारे विद्वान् लेखकोंको विषय चुननेमें सुविधा होगी।

मोक्षस्तम्भमें—

भारतीय दर्शनोंका संक्षिप्त परिचय। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त (शाङ्कर रामानुज निम्बार्क, माध्व श्रीकण्ठ भास्कर आदि मतोंका संक्षिप्त सार) शैव (त्रिक प्रत्यभिज्ञा पाशुपत आदि मतोंका संक्षिप्त परिचय) शाक्त (दक्षिण वाम कौल तन्त्र सिद्धान्त त्रैपुर आदि मतोंके संक्षिप्त परिचय) पारमार्थिक मोक्ष, व्यावहारिक मोक्ष आदि आदि।

धर्मस्तम्भमें—

वेदोंका स्वाध्याय। राष्ट्रिय शिक्षा। घरेलू शिक्षा। स्त्री शिक्षा। धर्म रहस्य। धर्ममें स्मृतियोंका स्थान। कल्प सूत्र। स्त्रीधन। दत्तक-दाय। दाय-भाग। प्रायश्चित्त विधान। पर्व व्रतोत्सवादि निर्णय। मुहूर्तादि निर्णय। पर्व किस प्रकार मनाये जायें। पर्व और त्यौहारोंका राष्ट्रिय महत्त्व। पर्व मनानेमें धार्मिक दृष्टिसे हानि लाभका विचार। ज्योतिश्शास्त्रानुसार तात्कालिक शुभाशुभ योग और भविष्यवाणियां। राशिफल। खगोलके ग्रह नक्षत्रादिकोंका परिचय।

अर्थस्तम्भमें—

अर्थ शास्त्र। चाणक्यके विचार। घरकी व्यवस्था। पारिवारिक आय व्यय। राष्ट्रको समृद्ध करनेके उपाय। यातायातमें अर्थ प्राप्ति। व्यापार। ज्योतिश्शास्त्रानुसार महर्घ समर्घ (तेजी मंदी) विचार। खानोंसे अर्थ प्राप्ति। आर्थिक दृष्टिसे कलाओंका विचार। पर्व और आर्थिक दृष्टि। युद्धसे आर्थिक हानि लाभ। कृषि (धान्य, फल, शाक-भाजी, ईख, कपास आदिके उत्पादन) से अर्थ प्राप्ति आदि आदि।

कामस्तम्भमें—

आयुर्वेद। शरीरके सभी अवयवोंको सुन्दर सुदृढ़ स्वस्थ ओजस्वी बनानेके उपाय। दीर्घजीवी बननेके उपाय। रसोईघर। कलाकौशल। घरकी स्वच्छता और पवित्रता। बच्चोंका पालन पोषण। भृत्योंके साथ व्यवहार। पशुपालन आदि आदि।

इतिहासस्तम्भमें—

इतिहास जाननेके साधन (ताम्रपत्र दानपत्र मुद्रा शिलालेखादि) संस्कृत-साहित्यका इतिहास। भारतीय ग्रन्थ और ग्रन्थाकारोंके परिचय। भौगोलिक परिचय (देशकी सीमायें नदियां पर्वत तीर्थ नगर ग्राम आदि) प्राचीनकालमें भूमण्डलके समस्त देश प्रान्त नगरादिकोंके जो नाम और सीमा थी उनके वर्तमान नाम और सीमाका विवेचन। महापुरुषों (दानवीर युद्धवीर धर्मवीर मृत्युवीर शास्त्रार्थवीर विशिष्टविद्वान् भगवद्भक्त राष्ट्रभक्त सिद्ध सती ज्ञानी आदि) के जीवन चरित्र। प्रत्येक वस्तु पर ऐतिहासिक दृष्टिसे विचार।

विशेष—

इसके अतिरिक्त 'श्रीस्वाध्याय' में कुछ सामयिक लेख भी रहेंगे। प्रत्येक अङ्कको त्रैमासिक अवधिमें जो जो विशेष पर्व त्यौहार या जिन २ अवतारों एवं महापुरुषोंकी जयन्तियां आवेंगी उन उन पर विशेष रूपसे प्रकाश डाला जावेगा। आगामी अङ्क (शरदङ्क) के लिए विद्वान् महानुभाव सर्व प्रथम निम्न विषयों पर सुविचारपूर्ण लेख भेजनेकी अवश्य कृपा करें।

विजयादशमी दशहरा, शरत्पूर्णिमा, श्री हनुमान्जीका जीवनचरित्र, हनुमान्जीके जन्मका शास्त्रीय निर्णय, श्री हनुमान्जीकी स्वामिभक्ति, चिरञ्जीवी हनुमान्, दीपावली, अन्नकूट, भ्रातृद्वितीया, वष्टिकाकर्षण (रस्साकशी), गोपाष्टमी, महाकाल-भैरव-जयन्ती, श्रीदत्तजयन्ती, मल्लद्वादशी आदि आदि।

सब लेख श्रावण शु० १५ ता० १५ अगस्त १९४३ पर्यन्त "सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (पञ्जाब)" इस पते पर पहुंचना आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः। ❀ श्रीः ❀ स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम्।

श्रीस्वाध्याय

[ग्रीष्मांक]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृहणीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम्।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति॥ [राष्ट्रालोक]

वर्ष	सोलन, आषाढ़ शु० १० सोमवार	संख्या
२	सं० २००० वि०	४

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै॥

—अ० वा० आचार्य

प्रभुसे !

[श्री पं० चम्पालालजी विशारद कविशेखर 'मंजुल']

हमें सौंप विदेशियोंके करमें नित नाकों चने विनवा रहे हो।
क्रमशः इन देशके द्रोहियोंके दृढ़ मन्दिर भी चिनवा रहे हो॥
कवि 'मंजुल' बोलनेके भी प्रभो अधिकार सभी छिनवा रहे हो।
अपने प्रिय भारत देशको क्यों दुखकी घड़ियाँ गिनवा रहे हो॥ १॥

लड़ते ही रहें सब आपसमें अभिमान औ द्वेषके पाले पड़े।
पुनि बार हि बार अकालनके कवि 'मंजुल' घोर कसाले पड़े॥
करते भी सदा श्रम अन्न बिना मुखमें उपवासके ताले पड़े।
सरताज थे दानियोंमें जो कभी उन्हें दानेओंके अब लाले पड़े॥ २॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफल द्वितीय वर्ष

वाचक वृन्द ! अखिल भारतीय श्रेष्ठ त्रैमासिक 'श्रीस्वाध्याय' का यह द्वितीय वर्ष भी इस अङ्कके साथ समाप्त हो रहा है। इसने इन दो वर्षोंमें अत्यन्त कठिन परिस्थितिमें भी जो कुछ यथाशक्ति राष्ट्र सेवा की है उसका श्रेय हमारे श्रीमान् संरक्षक, सहायक, माननीय विद्वान् लेखक तथा प्रेमी पाठक महोदयोंको ही है। स्वराष्ट्र स्वजाति स्वशिक्षा आदि आत्मवस्तुओंसे प्रेम रखने वाली भारतीय जनता आगे भी इसी प्रकार तन-मन-धनसे यदि सहायता करती जाएगी तो यह अङ्कुर एक महान् कल्पवृक्षकी भांति अपने राष्ट्रकी सेवा कर सकेगा। अतः हमारी पत्रके संरक्षक सहायकों तथा प्रेमी ग्राहकोंसे सविनय साग्रह प्रार्थना है कि तृतीय वर्षमें पदार्पण करनेके लिए संस्थाको आप महानुभावोंके सहयोगकी अत्यधिक आवश्यकता है। आशा है इस पत्रकी उन्नतिके लिए सभी सहृदय महानुभाव अधिकसे अधिक सहायता प्रदान कर हमें गत वर्षोंसे भी अधिक सुदृढ़ समुचित सफल सेवा करनेका सुअवसर देंगे।

पं० बलजिन्नाथजी शास्त्री, वि० भू० पं० दीनानाथजी शास्त्री, अवनीन्द्रकुमारजी विद्यालङ्कार, पं० गौतमजी शास्त्री, पं० शक्तिप्रसादजी शुक्ल, ला० श्यामलालजी चोपड़ा, पं० बैजनाथजी उपाध्याय, पं० शिवशरणजी राजोपाध्याय, पं० गोविन्दजी मिश्र, बा० हंसराजजी इन्सपेक्टर आदि २ सज्जनोंने 'श्रीस्वाध्याय' के प्रचारमें पर्याप्त सहयोग दिया। यह उनके सौजन्यके अनुकूल ही है।

श्रीस्वाध्यायसदनके संस्थापक एवं प्रधानाध्यक्ष पूज्यपाद श्री १०८ आचार्यजी महाराजका लगाया हुआ यह अङ्कुर अब दो वर्षका हो चुका है। उन्हींके प्रदर्शित मार्गानुसार मैंने इस अङ्कुरको यथाशक्ति सींचा है। हो सकता है कि इस सेवामें (सम्पादन कार्यमें) मुझ जैसे अल्पज्ञ व्यक्तिसे कई त्रुटियाँ भी हुई हों और विद्वानोंने अपने सहज-सौजन्य-स्वभाव वश वा आत्मीयताके कारण उन दोषोंको भी गुण-रूपमें ही ग्रहण किया हो। किन्तु अपनी त्रुटियाँ अपने आपको भासित नहीं होतीं, अतः भारतके उन सभी वयोवृद्ध ज्ञानवृद्ध सहृदय विद्वानोंसे सानुरोध निवेदन है कि 'श्रीस्वाध्याय' में उन्हें जो त्रुटि दिखाई देती हो उसकी सूचना हमें अवश्य देवें और पत्र पर अपनी शुभ सम्मति तथा सुविचार भी प्रकट करें। इस प्रकार नीरक्षीर-न्यायसे सहृदयता पूर्वक भेजे गये सभी सुविचारोंका हम सर्वदा सहर्ष स्वागत करेंगे।

गताङ्कमें प्रकाशित हमारी सूचनाके अनुसार अधिकांश ग्राहकोंकी मूल्यवृद्धिके सम्बन्धमें सम्मतियाँ आ चुकी हैं। अधिक ग्राहकोंकी सम्मति यह है कि—"अग्रिम अङ्क (तीसरे वर्ष) से 'श्रीस्वाध्याय' का वार्षिक मूल्य १) रु० बढ़ा दिया जावे और प्रत्येक अङ्क ८० पृष्ठका ही प्रकाशित होता रहे।" प्रेमी ग्राहकोंके इस सत्परामर्शके हम आभारी हैं। इनकी (पाठकोंकी) अभिरुचिका ध्यान रख कर ही हमने तीसरे वर्षका प्रथमाङ्क एक छोटेसे विशेषाङ्क के रूपमें प्रकाशित करनेका निश्चय किया है और आगेके लिए भी कागजका प्रयत्न किया जा रहा है। यदि पर्याप्त मात्रामें कागज मिल गया तो अगले सब अङ्क ८० पृष्ठके ही दिये जावेंगे। इसके लिए वार्षिक मूल्य १) रु० न बढ़ा कर केवल ॥≡) आने मात्र ही बढ़ा रहे हैं। परन्तु जो ग्राहक भा० शु० १५ ता० १४ सितम्बर १९४३ ई० तक अपना वार्षिक मूल्य मनिआर्डर द्वारा भेज देंगे उन्हें ये ॥≡) भी अधिक नहीं देने पड़ेंगे। आशा है हमारे सभी सहृदय पाठक इस योजनासे सन्तुष्ट हो कर हमें अधिकाधिक सहयोग देते रहेंगे। —हरदेव शर्मा त्रिवेदी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध

निखिल संसारमें जितने भी पदार्थ दृष्टिगोचर होते हैं अथवा हो सकते हैं, उन सभीकी ओर यदि दृष्टिपात किया जाय तो सर्वत्र एक विलक्षण गतिमत्ता दिखाई देगी। यदि पदार्थमें गतिमत्ता न रहे तो पदार्थकी बाह्य सत्ता ही लुप्त हो जाएगी। अपनी सत्ताको निरन्तर बनाए रखना प्रत्येकका अभीष्ट हुआ करता है। इस कार्यमें किसी प्रकार-की भी बाधा सह्य नहीं। किन्तु आर्य पुरुष इसी बाधाको दूर करनेके लिए भगवच्छक्तिसे निरन्तर प्रार्थना करते रहते हैं कि —

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याऽखेश्वरि !।

[त्रैलोक्यकी सम्पूर्ण प्रकारकी बाधाओंको दूर करें क्योंकि आप सर्व समर्थ हैं।]

किन्तु अनार्य पुरुष केवल अपने संकुचित स्वार्थ की पूर्तिके लिए किसीका भी इष्ट पूर्ण नहीं होने देते। अस्तु।

अभीष्ट कार्यमें बाधा सह्य हो अथवा न हो उसका आना भी उतना ही अपरिहार्य है, जितना कि पदार्थमात्रका गतिमान् रहना। इस बाधाको दूर करनेके लिए ही युद्ध हुआ करते हैं। इसी कारण यह कहना पड़ता है कि युद्ध यह एक अपरिहार्य बात है। इसको कितना ही आप टालते जाएँ यह फिर भी मुंह फाड़े समक्ष खड़ा ही रहता है। यह यमराजका चाराध्यक्ष गुप्तसे गुप्त छिद्रोंका सदा अन्वेषण करता ही रहता है। इसको यदि सहस्राक्ष भी कह दिया जाए तो भी कोई अत्युक्ति न होगी। आर्य पुरुष अपने स्वभावके अनुरूप इस युद्धके आर्यजनोचित स्वागत-सत्कारमें लगे रहते हैं। अनार्य पुरुष अपने स्वभावके अनुरूप इस युद्धको अपनी रुचिका पूर्णकारी समझ कर अपना सहायक बनानेका निरन्तर प्रयत्न करते रहते हैं। देव तथा दैत्य दोनोंका ही यह युद्ध सहायक होने पर भी यमराजकी आज्ञाका उल्लङ्घन कभी नहीं करता; अतएव मुमुक्षुस्वभाव देवताओंको अन्तमें विजय तथा शान्तिका लाभ कराता है, एवं बुभुक्षु-स्वभाव दैत्योंको अशान्ति प्रदान करता है। जुआरी जुएमें कितना ही जीते अथवा हारे उसे शान्ति कभी नहीं मिलती। इसी प्रकार अनार्य पुरुषोंको युद्ध कितनी ही बार जय लाभ कराए, पुनरपि वे इसके सम्मुख नयीसे नयी मांग उपस्थित करते ही रहते हैं। कारण वे लोभसे ग्रस्त हैं। यह लोभ ही दूसरोंके स्वत्व पर आक्रमण करा कर आततायी बनाता है। श्रीराष्ट्रा-लोकमें इस विषयमें कितना सुन्दर लिखा है—

आक्रामन्त्यन्यराष्ट्राणि लोभोपहतचेतसः।

[लोभसे ग्रस्त चित्त वाले पुरुष ही दूसरे राष्ट्रों पर तथा दूसरोंके राष्ट्रों पर आक्रमण किया करते हैं।]

दूसरे स्थानमें इसी ग्रन्थमें लिखा है कि—

सहस्रगुणवन्तोऽपि बुद्धिमन्तोऽप्यराष्ट्रियाः।
धनप्रभुत्वलोभेन भवन्त्येवाऽऽततायिनः॥

[अराष्ट्रिय पुरुष सहस्र गुणवाले हों, बुद्धिमान् हों तो भी धन और प्रभुत्वके लोभसे ग्रस्त होनेके कारण अवश्यमेव वे आततायी हो जाते हैं।]

बुभुक्षाकी पूर्ति अनन्त कालमें भी करना सम्भव नहीं। अनार्य सदा बुभुक्षु ही हुआ करते हैं। उनकी कामना ज्यों ज्यों पूर्ण होती जाए त्यों त्यों वह बढ़ती ही जाती है। ऐसे लोगोंको उपलक्षित करके ही मनु महाराजने कहा है—

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाऽभिवर्धते॥

[उन उन कामनाओंके उपभोग करने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामनाएं शान्त नहीं होतीं; वह तो हवनीय द्रव्य पड़ने पर अग्निके समान बढ़ती ही जाती हैं]

अनार्योंकी बुभुक्षा भी इसी प्रकार निरन्तर बढ़ती ही रहती है। इसी कारण अन्तमें अनार्योंको हारका हार गलेमें युद्ध महाराजकी ओरसे उपहार रूपमें अवश्य मिला करता है। उससे उन्हें शान्ति मिले अथवा न मिले, इसकी चिन्ता वृथा है। अनार्यों को जीते-जी शान्ति-लाभकी सम्भावना नहीं। आर्य पुरुष अपना सर्वस्व भी अनार्योंको समर्पण करदें फिर भी अनार्योंको वे सन्तुष्ट नहीं कर सकते। आर्य अपनी चमड़ीकी पनही बना कर अनार्योंके चरणोंमें समर्पण करें तो भी अनार्य सन्तुष्ट न होंगे, प्रत्युत वे आर्योंको निःशेष खा डालना चाहेंगे, यही उनका स्वभाव है। अनार्योंको कई बार सन्तुष्ट करने के लिए युद्धने उन्हें विजय लाभ कराया किन्तु प्रत्येक विजय पर अनार्य अधिकाधिक बुभुक्षु अशान्त तथा आततायी होते गये। इस अशान्तिने, इस बुभुक्षाने, इस आततायीपनने उन्हें अत्यधिक अनार्य बनाया तथा उनसे महान्से महान् पाप कराया। "बुभुक्षितः किं न करोति पापम्?" [बुभुक्षु पुरुष कौनसा पाप नहीं करता?] इस आततायीपनका फल अन्तमें "समूलं च विनश्यति" यही उचिततम हो सकता है। महाभारत युद्धका कारण यही हुआ था। दुर्योधनने अनार्यपथका पथिक बनते हुए साम्राज्य मदसे उन्मत्त होकर भगवान् श्रीकेशवसे कहा था—

सूच्यग्रं नैव दास्यामि विना युद्धेन केशव!।

[अये केशव! सूईका अग्रभाग भी बिना युद्धके नहीं दूंगा, यह मेरा निश्चय है।]

भगवान् केशवने दुर्योधनको बहुत समझाया किन्तु दुर्योधनने एक भी न मानी। अन्तमें उसको शव होना ही पड़ा। पाण्डवोंने सबकुछ दे दिया, केवल पांच गाँव उपजीविकाके लिए माँगे थे, किन्तु दुर्योधन ने उस प्रस्तावको भी रद्दीकी टोकरीमें फेंक दिया, इसका परिणाम हुआ युद्ध। युद्धमें "समूलं च विनश्यति" हुआ। दुर्योधनने समझा था कि मेरी शक्ति अपार है। युद्ध मुझे अवश्य जय लाभ कराएगा। किंतु युद्धने जान लिया था कि उन्मादग्रस्त दुर्योधन तथा उसके अनुयायियोंका हित अब जीते जी नहीं। भगवान्ने कहा—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत!।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

[हे भारत! जब जब धर्मकी अवनति तथा अधर्म का अभ्युदय होने लगता है तभी मैं अपने आपका आविष्कार करता हूँ। धर्मकी सुव्यवस्थाके लिए समय समय पर सन्नद्ध ही रहता हूँ। धर्मकी सुव्यवस्था सत्पुरुषोंके संरक्षण तथा पापियोंके विनाशके बिना नहीं हो सकती। अतः प्रत्येक समयमें इन दोनों कार्योंके लिए मैं सर्वथा कटिबद्ध ही रहता हूं।]

अर्जुनने भगवान्की आज्ञाको शिरोधार्य किया। पाण्डव सन्तुष्ट हुए। उन्होंने बाह्य किसी भी अनाशंसनीय वस्तुकी याचना नहीं की। इसी कारण लोगों को भी वे शान्ति प्रदान कर सके। पाण्डवोंको आर्य स्वभावके कारण सार्वभौमपद प्राप्त हो गया। दुर्योधन के पास सूच्यग्र भी न रहा। सारा साम्राज्योन्माद शरीरके समेत नष्ट होगया, क्योंकि वह आततायी हो गया था। आततायी पुरुषको युद्धमें अवश्य ही यही फल मिलना चाहिए। इसी लिए धर्म्य युद्धकी सदा विजय ही होनी चाहिए। शिवमस्तु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्तिरस्तु

कहीं भी जाइये, किसीसे भी मिलिये, प्रयत्न आपका सदैव शान्तिके लिए ही होगा । यह बात सम्मुख सूर्य्यके समान ही सच है कि आप प्रत्येक उद्योग शान्तिके लिए ही करते हैं । जागते हैं शान्तिके लिए, सोते हैं शान्तिके लिए । खाना पीना उठना बैठना जाना आना बोलना चालना सभी क्रियाएँ शान्तिके लिए ही की जाती हैं । मरना तक शान्ति के लिए ही हुआ करता है । अधिक क्या कहें यदि बुद्धिके परलेपार भी जाकर देखा जाए तो भी यही ज्ञात होगा कि प्रत्येक व्यापार शान्तिके लिए ही हो रहा है । मरते हैं शान्तिके लिए, जीते हैं शान्तिके लिए। जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति तथा तुरीया यह प्रत्येक दशा शान्तिके लिए ही अभीष्ट है, किन्तु शान्ति-प्राप्ति किसीको हुई या नहीं इसका यदि सूक्ष्म अन्वेषण करने लग जाएँ तो ज्ञात होगा कि छोटेसे बड़े तक सभी प्राणी अशान्तिके कराल करसे ग्रस्त हैं, तथापि चाहते हैं शान्ति । प्राप्तव्य वस्तुके अनुकूल उपायके बिना वह प्राप्त नहीं हो सकती । अभीष्ट वस्तु प्राप्त होने पर शान्ति हो जाती है । किंतु अभीष्ट वस्तुओंका सम्भार इतना विशाल है कि समुद्रके समान उसका पार ही नहीं दीखता। अतः समस्त वस्तुएँ यावत् पर्यन्त प्राप्त ना हो जाएँ तावत् पर्यन्त शाश्वत शान्ति नहीं हो सकती । इसी कारण अत्यन्त जन्म-मरणकी शृङ्खलामें प्राणिमात्र आबद्ध हो रहा है । प्रकाशको मुट्ठीमें करनेके लिए यदि उसकी किरणोंको पकड़ने लग जाएँ तो अनन्त जन्मोंमें भी सम्पूर्ण प्रकाश मुट्ठीमें न आएगा, कारण यह उपाय अवैध है। प्रकाशका केन्द्र—उद्भव स्थान —ही यदि मुट्ठीमें आजाए तो उसकी किरणें अपने आप मुट्ठीमें आजाएँगी । यह उपाय वैध है। हाँ, यदि किसीको किरणोंके पकड़नेमें ही आनन्द प्राप्त होता हो तो वह किरणें पकड़ता जाए उसके लिए हमारी ओरसे निषेध नहीं। एक सहस्र कोसकी यात्रा करके गन्तव्य स्थानको यदि प्राप्त करना है तथा वह भी शीघ्रसे शीघ्र, तो बीचमें विश्राम करनेसे यह काम कैसे बनेगा ? अथवा शीघ्रसे शीघ्र पहुंचाने वाले यान का त्याग करके यह कार्य कैसे सिद्ध होगा ? वहां तो वैध उपायका ही अवलम्बन करना होगा।

भगवान श्री वासुदेव अर्जुनसे इसीलिए कहते हैं कि हे अर्जुन !

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥

[अरे अर्जुन ! यह जो तू अपनी आंखोंसे विशाल वस्तुओंका भाण्डार देख रहा है यह सब केवल मेरी अपनी माया है। इसमें अनन्त गुण भरे पड़े हैं। अतएव यह माया किसीको भी अपना पार नहीं पाने देती, इसके गुणों से इस मेरी मायाको पार करने वाला प्राणी स्वयं ही बंध जाता है। मैं सबका आत्मरूप हूँ, इसी कारण वह मेरी माया मेरे से अन्य किसीको भी अपने परलीपार नहीं जाने देती, चाहे वह कितना ही बलशाली क्यों न हो। यह भी साधारण नहीं दैवी है। हाँ, यदि आत्माराम मुझ आत्मरूपको ही जो प्राप्त कर लें तब तो वे पुरुष इस मेरी मायाको अवश्य पार कर लेते हैं।]

यह है वैध उपाय। किन्तु उपायका ज्ञान होने पर भी यदि वह कार्यरूपमें नहीं लाया जायगा तो उपेयकी प्रतिपत्ति नहीं हो सकती तथा परतन्त्र पुरुष उपाय भी नहीं कर सकता। व्यवहारमें शान्ति राष्ट्रके स्वातन्त्र्य पर ही अवलम्बित है । परतन्त्र राष्ट्रमें शान्ति आकाश कुसुमसे अधिक योग्यता नहीं रखती । श्रीराष्ट्रालोकमें कितना सुन्दर लिखा है, देखिये—

न स्वतन्त्रं स्वराष्ट्रं ये कर्तुमिच्छन्ति मानवाः।
ततोऽधिका महामूर्खाः सन्ति केऽत्र भुवस्तले ॥

[जो मानव अपने राष्ट्रको स्वतन्त्र नहीं करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहते, संसारमें इस पृथ्वीकी पीठ पर उन मनुष्यों से बढ़कर महान् मूर्ख कौन हो सकते हैं ?]

अतः शान्ति-स्थापनाके लिए राष्ट्रको स्वतन्त्र करना होगा । परमार्थतः देखा जाय तो बाह्य प्रत्येक वस्तुकी कामना करना अशान्तिकी जड़ है यह निश्चित है। यह महामाया बड़े-बड़े ज्ञानी जनोंको भी मूढ़ बना देती है। महर्षि मार्कण्डेय कहते हैं—

ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥

[वह महामाया है, अघटित घटना पटीयसी है। वह देवी है- साधारण लोगोंकी वहां पहुँच नहीं। वह भगवती है — कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्त्तुं समर्थ है। वह बड़े-बड़े ज्ञानियोंके चित्तोंको हठात् अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है और उनको मूढ़ बना देती है । मानो मूढ़ होनेके लिए ही उनमें चेतना देती है।]

अतः इस महामायाकी कृपाके बिना कोई भी प्राणी शान्ति प्राप्त नहीं कर सकता । स्वातन्त्र्य प्राप्तिके लिए इस महामायाकी प्रसन्नता अत्यन्त अपेक्षणीय है। महर्षि मार्कण्डेय कहते हैं—

तया विसृज्यते विश्वं जगदेतत् चराचरम्।
सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये ॥
सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी।
संसारबन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी ॥

[यह चराचर सम्पूर्ण जगत्, तथा इससे भी सूक्ष्म सम्पूर्ण विश्व महामाया द्वारा विचित्ररूपसे निर्माण किया गया है । वह यह महामाया ही यदि प्रसन्न हो जाए तो नर मुक्ति-लाभ कर सकते हैं । पारमार्थिक मुक्ति भी इसीकी कृपा पर निर्भर है । व्यावहारिक मुक्ति तो इसकी कृपा पर अवलम्बित है ही । प्रत्येक अभीष्टका प्रदान इसकी प्रसन्नताके हाथ है । व्यावहारिक तथा पारमार्थिक मोक्ष प्राप्ति की हेतुभूत सर्वश्रेष्ठ सनातन विद्या उसी महामाया का स्वरूप है । संसार तथा उससे होने वाले बन्धन का कारण भी वही यह महामाया है । वह बड़े-बड़े ईश्वरोंकी भी ईश्वर है।]

एवंच कहना न होगा कि शान्ति-प्राप्तिके लिए महामायाकी प्रसन्नताकी कितनी अधिक अपेक्षा है। मार्कण्डेय महर्षिकी महामाया तथा भगवान् वासुदेव को अस्मच्छब्द-प्रतिपाद्य वस्तु एक ही है। अतः शान्ति प्राप्त करनेके लिए इस महामायाकी प्रत्येक प्रकारसे आराधना करनी ही होगी। उसकी प्रसन्नता से सम्पूर्ण अभीष्ट प्राप्त होते हैं; फिर कहीं भटकना नहीं होगा । व्यवहारमें शत्रुओंका बिना विनाश किये चुपचाप बैठकर अन्याय सहनेका नाम शान्ति नहीं, वह मूर्खता है, नपुंसकता है । श्री राष्ट्रालोक में इस विषयमें कितना सुन्दर लिखा है, देखिये—

यया शान्त्या पराधीनं राष्ट्रं भवति सा न हि।
शान्तिः, किन्तु नितान्तं सा केवलं क्लीबता मता ॥

[जिस शान्तिसे राष्ट्र पराधीन हो जाता है, राष्ट्रोंकी स्वतन्त्रता नष्ट हो जाती है, वह शान्ति नहीं है, किन्तु वह बड़ी भारी क्लीबता नपुंसकपन है यह विद्वानोंका निर्णय है।]

जो पुरुष लोक-व्यवहारमें शान्ति लाभ नहीं कर सकते वा करा सकते, पारमार्थिक शान्तिलाभमें वे पुरुष किस प्रकार समर्थ हो सकते हैं ? पारमार्थिक शान्ति के लिए तो बड़ी भारी तपस्याकी आवश्यकता है । हां, यह बात सर्वथा युक्त है कि पारमार्थिक शान्ति जिनको प्राप्त हो जाती है वे ही व्यावहारिक शान्ति की वास्तविक व्याख्या तथा स्थापना कर सकते हैं। ऐसे ही उन महापुरुषोंका कहना है—

विहाय कामान् यः सर्वान् पुमाँश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति ॥

[जो पुरुष सम्पूर्ण बाह्य वासना तथा आन्तर वासनाओंका सर्वथा त्याग कर देता है, आत्म तृप्त होनेके कारण जिसे किसी प्रकारकी स्पृहा नहीं होती, बन्धन कारक ममत्व जिसका निवृत्त हो चुका हो, अतएव जिसका दुष्ट अहङ्कार निवृत्त हो विशुद्ध हो चुका है, शान्तिकी प्राप्तिका परम प्रेमास्पद वही पुरुष अधिकारी होता है।]

पाठकवृन्द ! आत्म वस्तुकी प्राप्ति तथा उसके संरक्षणसे ही शान्ति रह सकती है। यावत् पर्यन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगणपतिपूजन

[लेखक—विद्याभूषण विद्यावागीश श्री पं० दीनानाथ जी शर्मा सारस्वत शास्त्री]

प्रायः कृष्णपक्षकी चतुर्थीमें श्रीगणेशका व्रत हुआ करता है, यह पाठकोंने 'श्रीस्वाध्याय' के पर्व-व्रतादि निर्णयमें सम्भवतः देखा होगा। उसी श्रीगणेशके विषय में शङ्कैकधन लोग बहुतसे कुतर्क उपस्थित किया करते हैं। उस विषयमें 'श्रीस्वाध्याय' के धर्मस्तम्भमें कुछ लिखना असामयिक एवं अरुचिकर न होगा। धर्म-प्रेमीजनोंका अवधान इधर प्रार्थनीय है।

आजकल वादियोंकी विचित्र प्रकृति दिखाई देती है। हमारे शास्त्रोंमें जिस देवका वर्णन या पूजन दीखे; उसमें तो वे श्रद्धा नहीं रखते। परन्तु जिसका स्पष्ट वर्णन न मिले; वहाँपर वे अशास्त्रीयता-की घोषणा करनेको उद्यत हो जाया करते हैं। इसको यों समझिये — शास्त्रोंमें इन्द्र, सूर्य, अग्नि, वरुण आदि देवपूजनको देखकर भी वे उसे नहीं करना चाहते। परन्तु गणेश-पूजनको थोड़ा देखकर वे कहते हैं कि यह अर्वाचीन है।

परन्तु वे लोग नहीं जानते कि देवता बहुत हैं। समयकी महिमासे अथवा रुचि वैचित्र्यसे कभी किसी देवकी प्रधानता हो जाती है, कभी दूसरे की। आजकल अवतारोंमें भगवान् कृष्णकी महिमा बहुत बढ़ गई है। उसका कारागार (जेलखाने) में उत्पन्न होना, अन्यायी राजाओंसे विरोध, उसकी राजनीति, उसकी शत्रूच्चाटन नीति, उसकी गो सेवा, उसकी उपदेश शैली, उसका सब प्रकारके पुरुषोंको प्रसन्न करना, यह सब कुछ वर्तमान समयके अनुकूल होनेसे, अवतार न माननेवालोंको भी प्रभावित किये बिना नहीं रहता। तो फिर भगवान् श्रीकृष्ण जहां प्राचीन भक्तोंके उपास्य हुए; वहांपर वे अर्वाचीन शिक्षितोंके लिये भी श्रद्धास्पद हो गये हैं।

भगवान् श्रीराम भी प्रसिद्ध अवतार हैं। उनकी महिमा भी अधिक मात्रामें रही है, परन्तु वर्तमान कालके शिक्षितगण कई कारणोंसे उन्हें अपनी आलोचनाका विषय बनाते हैं। तब आजकलकी पुस्तकोंमें श्रीकृष्ण-स्मरणात्मक मङ्गल अधिक मात्रामें और श्रीरामका स्मरण अल्प मात्रामें देखकर, क्या श्रीरामका मङ्गलाचरण अशास्त्रीय वा अर्वाचीन हो जायगा ? यदि नहीं, तब उन्हें यहांपर भी इसी प्रकार जानना चाहिये। जर्मनीमें श्रीगणेशका स्वस्तिक रूपमें बहुत प्रचार है। यदि भारतके नव-शिक्षितोंपर भी उसका प्रभाव किसी प्रकार पड़ जाय, तो यहां पर भी प्राचीन कालकी भांति गणेश-पूजनका अधिक प्रचार हो सकता है।

"कलौ चण्डी विनायकौ" इस कथनके अनुसार गणेशका प्रधानतासे कलियुगमें प्रचार होता है। तब पूर्वयुगकी पुस्तकोंमें उसकी अल्पता देखकर उससे गणेश पूजनकी अर्वाचीनता नहीं हो सकती। अन्य यह भी बात है कि पहले यह शैली हुआ करती थी कि—गणेशपूजन विधिपूर्वक पृथक् करके तब ग्रन्थ का प्रणयन हुआ करता था। इस कारण ग्रन्थ-के आदिमें उसका उल्लेख आवश्यक नहीं था। इसीलिये ही बहुत सी प्राचीन पुस्तकोंके आदिमें मंगलाचरण भी दिखाई नहीं देता। तब क्या इससे

संसारमें जिसकी अपनी वस्तु उसके अपने ही अधिकारमें न होगी तावत् पर्यन्त शान्ति कभी नहीं हो सकती। अतः शान्ति-स्थापनाके लिए अपनी अपनी वस्तु का अपने अपने पास रहना आवश्यक है। प्रत्येक राष्ट्र के वहांके राष्ट्रियोंके ही शासनमें रहनेसे ही व्यवहारमें शान्ति होगी। यही शान्ति का वैध उपाय है। अधिक फिर। शान्तिरस्तु॥

—अ० वा० आचार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वादी लोग मङ्गलाचरणको भी अर्वाचीन मानने लगेंगे ? ऐसा नहीं हो सकता। हमारे पूर्वज मङ्गलाचरण प्रेमी अवश्य थे। जैसा कि महाभाष्यमें कहा है—

"मङ्गलादीनि मङ्गलमध्यानि मङ्गलान्तानि शास्त्राणि प्रथन्ते" । (१।३।१)

"मङ्गलाचरणं शिष्टाचारात् फलदर्शनात् श्रुतितश्च ।" (सांख्यदर्शन ५।१)

फिर भी उन पूर्वजोंके शास्त्रोंमें स्पष्टतया मङ्गल न दीखनेसे प्रतीत होता है कि वे अपने मनमें अथवा पृथक् मङ्गल अवश्य किया करते थे। फिर कई उत्तरकालिक विद्वान् शिष्य-शिक्षाके लिये ग्रन्थके आरम्भमें भी अपने इष्टदेवका स्मरण करने लगे; परं गणेशके सर्वसाधारण होनेसे पृथक् ही उसकी स्तुति आदि कर लिया करते थे।

अन्य बात यह भी है कि अथर्ववेदकी नौ शाखाओंमेंसे छः शाखाओंका विनियोग नक्षत्रकल्प आदि पांच सूत्रोंमें किया गया है। उनमें नक्षत्रकल्पमें नक्षत्र आदियोंकी भिन्नभिन्न शान्तियें कही गई हैं। दूसरे वैतानसूत्रमें अमावस्या पूर्णिमा आदिके यज्ञोंका विधान है। तीसरी संहिताविधिमें जिसका दूसरा नाम कौशिकसूत्र है—शत्रूच्चाटन, भूत, प्रेत, पिशाच, बालग्रहादियोंके हटानेके कर्म, दुःस्वप्ननिवारण, पापनक्षत्रोत्पत्ति शान्ति तथा अभिचारिक कर्मोंका निरूपण है। चौथे आङ्गिरसकल्पमें अभिचार कर्मोंका स्वतन्त्रतासे वर्णन तथा निवारण वर्णित किया गया है। पांचवें शान्तिकल्पमें गणेशपूजा, ग्रहपूजादि वर्णित किये गये हैं। भिन्न भिन्न सूत्रोंमें जो गणेश नवग्रहादिकी पूजाविधि नहीं दिखलाई गई; उसका कारण यही है कि प्रत्येक कर्ममें शान्ति कर्मकी आवश्यकता हुआ करती है। प्रत्येक गृह्यसूत्र वा प्रत्येक संस्कारमें शान्तिकर्मका उल्लेख करनेसे गौरव हो जाता है। अतः परिभाषा रूपमें एक ही शान्तिविधि नियत कर दी गई है। दूसरे स्थानोंमें उसे ही आभ्युदयिक स्वस्तिवाचनादि नामोंसे संकेतित किया गया है। वर्तमान कात्यायनी शान्ति उक्त सूत्रके आधारपर ही बनाई गई है। गृह्यसूत्रके प्रारम्भमें कुशकण्डिकाकृत्य और सर्वयज्ञशेष एक ही बार उपदिष्ट किया गया है। फिर तो "एष एव विधिर्यत्र क्वचिद् होमः" इस कथनके अनुसार सब जगह वह विधि निरूपित नहीं की गई।

इसी प्रकार शान्तिकल्पमें एक बार उल्लेख करनेसे फिर प्रत्येक सूत्रमें पृथक् उल्लेख अनावश्यक समझा गया है। तब गणेश वा ग्रह-पूजा सूत्रविरुद्ध सिद्ध न हुई। जो लोग प्रत्येक गृह्यसूत्रमें, प्रत्येक संस्कारमें ग्रह गणपत्यादि पूजन वर्णित न देखकर उसकी अकर्तव्यता मानते हैं, उनके मार्गप्रदर्शक स्वामी दयानन्दजीने अपनी संस्कारविधिके चतुर्थ पृष्ठमें लिखा है कि—"सब संस्कारोंके आदिमें निम्नलिखित मन्त्रोंका पाठ और अर्थ द्वारा एक विद्वान् वा बुद्धिमान् पुरुष ईश्वरकी स्तुति प्रार्थना और उपासना स्थिर चित्त होकर परमात्मामें ध्यान लगाके करें।" यहां पर प्रष्टव्य यह है कि—क्या स्वामीजीसे लिखे मन्त्र वा प्रार्थना प्रत्येक गृह्यसूत्र वा संस्कारके आदिमें लिखे गये हैं ? यदि नहीं लिखे गये, इसी प्रकार गणपति एवं नवग्रहादि पूजन भी यदि प्रत्येक सूत्रमें नहीं लिखे गये, तब वादियोंका क्या अधिकार है कि उसकी अकर्तव्यता मानें ?

यदि वेदमन्त्रोंमें उक्त प्रक्रियाके उल्लेख न होनेसे उसकी अप्रामाणिकता मानी जाए, तब तो वैवाहिकपद्धतिमें वर्णित सप्तपदी आदि प्रक्रियाओंका भी किसी संहिताके मूल मन्त्रमें उल्लेख न होने से, उनका भी अवैदिकत्व उपस्थित होगा; पर यह उन्हें भी अनिष्ट होगा। इसी प्रकार गणेशपूजनके विषयमें भी जानना चाहिये। अब इस सम्बन्धमें हम प्राचीन ग्रन्थोंके प्रमाण उपस्थित करते हैं—

याज्ञवल्क्यस्मृतिके आचाराध्यायके गणपतिकल्पमें कहा गया है—

विनायकं सम्प्रपूज्य ग्रहाँश्चैव विधानतः ।
कर्मणां फलमाप्नोति श्रियं प्राप्नोत्यसंशयम् ॥२९३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार गणेशपूजन स्मार्त सिद्ध हुआ। विनायक गणेशको कहते हैं। कात्यायनस्मृतिमें कहा गया है—

गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्चतुर्दश।
कर्मादिषु तु सर्वेषु मातरः सगणाधिपाः।
पूजनीयाः प्रयत्नेन ॥ १।१३

इसी स्मृतिका दूसरा नाम गोभिलस्मृति भी है। उसमें भी यही श्लोक हैं। याज्ञवल्क्यस्मृतिके आचाराध्यायके २७१ पद्यमें कहा है—

विनायकः कर्मविघ्नसिद्ध्यर्थं विनियोजितः।
गणानामाधिपत्ये च रुद्रेण ब्रह्मणा तथा॥

तब यदि विनायक (गणेश) पूजा न की जाय, तो कर्मोंके विघ्न कैसे हटें ?

प्राचीन पुस्तक मानवगृह्यसूत्रमें कहा है—

"एतैः खलु विनायकैराविष्टा राजपुत्रा लक्षणवन्तो राज्यं न लभन्ते। कन्या पतिकामा लक्षणवत्यो भर्तृन्न न लभन्ते। स्त्रियः प्रजाकामा लक्षणवत्यः प्रजा न लभन्ते। अध्येतॄणामध्ययने महाविघ्ना भवन्ति।" (२।१४। १–२–३)

यहांसे लेकर २१ सूत्र तक विनायकोंका वर्णन है। तब उनकी शान्तिके लिये विनायक स्वामीका पूजन आवश्यक है। इसीलिये—

"नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमः।"(यजु०१६।२५)

इस वेदमन्त्रमें गणपतिको नमस्कार किया गया है। यद्यपि इस मन्त्रका देवता रुद्र है, तथापि "आत्मा वै पुत्रनामासि" पारस्करगृह्यसूत्र १।१८।२ के इस वचनसे पिता पुत्रका अभेद प्रसिद्ध है। इसी कारण ही "रुद्रस्य गाणपत्यं मयोभूरेहि" ११।१५ इस यजुर्वेदके मन्त्रमें रुद्रका भी गणपतित्व दिखलाया गया है। आर्यसमाज द्वारा प्रकाशित वैदिक प्रेस अजमेरमें मुद्रित यजुर्वेदमें इस मन्त्रका 'गणपति देवता' माना गया है।

जो कि प्राचीन ग्रन्थोंके आरम्भमें गणेशका मङ्गल नहीं मिलता, यह आक्षेप किया जाता है; उसमें यह जानना चाहिये कि उनमें अन्य देवता वा परमात्माका भी मङ्गलाचरण नहीं दीखता। तब क्या अन्य देवता वा परमात्माका मङ्गलाचरण अर्वाचीन हो जायगा ? ऐसा नहीं। हमारे पूर्वज पहिले गणेशादि देवताओं की पृथक् पूजा करके तब ग्रन्थका आरम्भ करते थे। इस लिए देवपूजक होते हुए भी ग्रन्थमें उसका आडम्बर नहीं करते थे। इसका सङ्केत हम पहले कर चुके हैं।

इसमें दूसरा भी एक कारण है। वह यह कि गणेशका "स्वास्तिक" यह नाम भी प्रसिद्ध है। गृह्यसूत्रोंमें स्वस्तिवाचन प्रत्येक कर्ममें आता है। स्वस्तिक (गणेश) पूजन भी उसके अन्तर्गत हो जाता है। इसी लिए गणेश-पूजन कहीं कहीं पृथक् शब्द से नहीं मिलता।

"मङ्गलार्थं स्वस्त्ययनं .....।
प्रयुज्यते विवाहेषु" ..... (५।१५२)

यह मनुस्मृतिका श्लोक है। इससे विवाह आदिमें स्वस्तिवाचन सिद्ध होता है। स्वस्तिक-पूजन भी वही हुआ। इसी लिए ही विवाहादि पद्धतियोंमें भी स्वस्तिवाचन अथवा आभ्युदयिक आदि शब्दोंसे गणेशादि पूजन इष्ट होता है। तब 'विवाहोंमें गणेश-पूजन अशास्त्रीय है' यह कहने वाले असत्य सिद्ध होते हैं।

जर्मनी में रहने वाले वेदों के पक्षपाती हैं। इधर से उन्होंने अपनी पताका पर स्वस्तिक (गणेश-चिह्न) को स्थान दे रक्खा है। इससे स्पष्ट है कि वे भी इसे वैदिक मानते हैं। जैसे— यहांके देश-भक्त राष्ट्रिय-पताकाका अभिवादन करते हैं। वैसे ही वहां वाले स्वतिकका अभिवादन करते हैं। जब जर्मन-पताकामें स्वस्तिक (गणेशचिह्न) को स्थान दिया गया था; उस समय वहांके पुरातत्त्ववेत्ताओंने गवेषणा करके कहा था कि स्वस्तिकका प्रचार पांच सहस्र वर्ष के पूर्व भी था। इसी प्रकारका ही मत जर्मन इतिहासकारोंका एवं भूगर्भ-विशेषज्ञोंका भी है। मि० हावेलका कथन है कि स्वस्तिक आर्योंके निवास-स्थानमें प्रमुख द्वार पर प्रयुक्त किया जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। युद्ध समयमें भी पताकाओं में उसे स्थान दिया जाता था। न केवल आर्यावर्त्तमें, प्रत्युत मेसोपोटामिया, बेबीलोनिआ, ट्राय, इटली आदि देशोंमें जब भूगर्भकी खुदाई हुई; वहां पर भी स्वस्तिकका चिह्न मिला। दक्षिण यूरोपमें भी पत्थर कालसे इसका प्रचार पाया गया है। सिसली और क्रीटमें स्वस्तिकका प्रचार प्राचीन कालसे चला आ रहा है। स्पेन और इटलीके इतिहासमें स्वस्तिकका अस्तित्व बहुत कालसे आ रहा है। अमेरिकामें भी उसका प्रचार पाया जाता है। भारतमें तो अब भी इसका पर्याप्त प्रचार है। पाणिनिने भी इसकी चर्चा की है। हिन्दू राजाओंके सिक्कोंमें भी स्वस्तिक प्रयुक्त किया जाता था।

हिन्दुओंके विवाह आदि कार्योंमें, पूजास्थलोंमें, व्यापारकी बहियोंमें, विशेष उत्सवोंमें, कुआं आदिमें, द्रव्यकी पेटियोंमें, सिन्दूर आदिसे स्वस्तिक (गणेश-चिह्न) बनाया जाता है। स्वस्तिकाङ्कित आभूषण भी पाये जाते हैं। मन्दिरों वा घरोंके दरवाजों पर भी स्वस्तिक प्रयुक्त होता है। आकाशमें भी एक स्थलमें स्वस्तिकाकृति विद्यमान है। जैन बौद्धोंमें भी उसका प्रचार है। लामाओंके दार्जिलिङ्गके महाकाल मन्दिर में भी अभी तक स्वस्तिक उत्कीर्ण है। इस प्रकार स्वस्तिककी प्राचीनता तथा सार्वत्रिकता सिद्ध हुई।

भगवद्गीतारहस्यके "गीता और ईसाइयोंकी बाइबल" नामक प्रकरण पृष्ठ ५६० में लोकमान्य पं० बालगङ्गाधर तिलकने लिखा है—

"उसी चिह्नको स्वस्तिक रूपमें वैदिक तथा बौद्ध-धर्म वाले ईसाके सैकड़ों वर्ष पहलेसे ही शुभदायक चिह्न मानते थे और प्राचीन संशोधकों ने निश्चय किया है— मिश्र आदि पृथ्वीके पुरातन खण्डोंके देश ही में नहीं, किन्तु कोलम्बस से कुछ शतक पहले अमेरिका के पेरू तथा मैक्सिको देशमें भी स्वस्तिक चिह्न शुभदायक माना जाता था"।

इस प्रकार गणपति पूजा प्राचीन सिद्ध हुई। अन्य बात यह भी है कि— ५ इस स्वस्तिक चिह्नमें ध्यान देनेसे पता चलेगा कि इसमें गणेशका बीजमन्त्र 'गं' चारों ओर रखा हुआ है। आजकल उसीका विकृत वा विपरीत चिह्न प्रसिद्ध हो गया है।

"सर्वकार्येष्वसिद्धार्थो·····
गणेशप्रतिमां न्यसेत्" (२।५२)

शातातपस्मृतिके इस प्रमाणसे कार्यसिद्धिके लिए गणेशमूर्ति का पूजन शास्त्रीय सिद्ध हुआ। अन्य प्रमाण वहां पर २।५३, ३।२२ इन पद्योंमें देखे जा सकते हैं। इस प्रकार गणेशपूजन स्मार्त्त भी सिद्ध हुआ। उसे केवल पौराणिक कहने वाले निरस्त हो गए।

स्वामी दयानन्दजीने भी ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका' के आरम्भमें कहा है कि—

'हे सर्वविद्यामय! सर्वार्थवित्! मदुपरि कृपां विधेहि, यया निर्विघ्नेन वेदार्थभाष्यं सत्यार्थं पूर्णं वयं कुर्वीमहि' (पृ० ७) "अस्मिन् वेदभाष्यकरणानुष्ठाने ये दुष्टा विघ्नास्तान् प्राप्तेः पूर्वमेव परासुव दूरं गमय" (ऋ. भा. भू. पृ. ३)

यहां पर स्वामीजीने भी विघ्नोंके निराकरणके लिए प्रार्थना करके एक प्रकारसे गणेशको मान लिया है। तभी तो सत्यार्थप्रकाशके प्रथम समुल्लास पृ० १० में स्वामीजीने लिखा है— 'गणसंख्याने' इस धातुसे 'गण' शब्द सिद्ध होता है, और इसके आगे 'ईश' वा 'पति' शब्द रखनेसे 'गणेश' और 'गणपति' शब्द सिद्ध होते हैं। "ये प्रकृत्यादयो जड़ा जीवाश्च गण्यन्ते संख्यायन्ते तेषामीशः स्वामी पतिः पालको वा'। यहां पर थोड़ा ही भेद रहा। हमने गणपतिको देव विशेष माना और स्वामीजीने उसे बड़ा देव परमात्मा माना। उद्देश्य दोनोंका समान ही हुआ। अद्वैत पक्षमें तो देवताओंकी भी स्वतन्त्र सत्ता नहीं होती; केवल एक ब्रह्म ही होता है। इससे विघ्न हटानेके लिए विघ्नाधिपतिकी पूजा प्रार्थना स्वामीजी के मतमें भी सिद्ध हुई।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागपंचमी

इस वर्ष ६ अगस्त शुक्रवारको नागपञ्चमी है। शास्त्र-व्यवस्थाके अनुसार इस दिन सर्पोंको दूध पिलानेसे, वासुकीकुण्डमें स्नान करनेसे, द्वारके दोनों ओर गोबरसे सर्पकी आकृति बना कर उसकी दधि, दूर्वा, कुशा, गन्ध, अक्षत, पुष्प, मोदक और पकवान आदि द्वारा पूजा करनेसे सर्पोंका भय नहीं रहता। गुजरातमें मिट्टीसे सर्पकी मूर्ति बनाते हैं और उसकी पूजा करते हैं; बंगालमें लोग नाव पर बैठ कर नदीके बीचमें चले जाते हैं और मनसा-देवीके गीत गा कर उन्हें प्रसन्न करते हैं। संयुक्तप्रांत में इस दिन अखाड़े भी लगते हैं और वर्षाकालमें व्यायाम करने वाले युवक मल्लयुद्ध करते हैं।

धार्मिक दृष्टिकोणसे भी देखा जाय तो यह पर्व विषधर सर्पोंको भी दूध पिला कर उन्हें वश में करनेकी शिक्षा देता है और यह बात अस्वाभाविक नहीं जान पड़ती। कहते हैं सर्प जिसका नमक खा लेता है उसपर फिर चोट नहीं करता, इसलिये कहीं-कहीं दूधमें थोड़ासा नमक भी मिला देते हैं। कुछ सर्प दूधमें अपना विष भी छोड़ जाते हैं। बहुत से सर्प विषैले नहीं होते, उनसे खेतोंकी रक्षा भी होती है। कृतज्ञ भारतवासी आजके दिन उन्हें दूध पिलाकर इस प्रकारका बदला भी चुकाते हैं। इस प्रकार यह पर्व (त्योहार) प्राणिमात्रके साथ प्रेम-पूर्ण व्यवहार करनेका पाठ पढ़ाता है।

इस पर्वके साथ एक ऐतिहासिक संस्मरण भी जुड़ा है। उत्तर भारतके निवासी पहले नाग-पूजा न करते थे। दक्षिण भारतमें ही होती थी। महाभारत कालके अन्तमें उत्तर और दक्षिणकी संस्कृतियोंका समन्वय हुआ और उत्तर भारतमें भी नाग-पूजा होने लगी। पुराणोंमें 'नाग' शब्द का व्यवहार किया है और कहा गया है कि ये 'पाताल' में रहते हैं। नाग शब्दके दो अर्थ हैं—सर्प और नाग जाति। पातालके भी दो ही अर्थ हैं—भूमिके नीचेका भाग और विन्ध्य मेखलाके उस पारका देश। पुराणोंमें ही लिखा है कि बलि पातालके राजा थे, अंग-बंग-कलिंग उनके ही राज्य थे। यहां नाग और पातालके दोनों अर्थ उपयुक्त बैठते हैं। नाग जाति भी दक्षिण भारतमें थी और अब भी है। महाभारतके अन्तमें नागजाति बहुत प्रबल हो गई थी। उसके राजा तक्षकने अभिमन्युके पुत्र परीक्षितकी हत्या कर डाली थी। परीक्षितके पुत्र जनमेजयने नागोंका नाश ही कर दिया था। महाभारतके आदि पर्वमें जनमेजयके नाग-यज्ञका उल्लेख आता है। अन्तमें एक ऋषिके प्रयत्नसे सन्धि हो गई। काका साहब कालेलकरने अपनी 'जीवित त्यौहारों' नामक पुस्तकमें लिखा है कि "इस सन्धिके स्मरणमें ही आर्योंने 'नागपञ्चमी' को अपने त्यौहारों में स्थान दिया और नागपूजाका विधान कर दिया।"

संयुक्तप्रान्तमें नागपञ्चमीके दिनको 'गुड़िया' भी कहा जाता है। इस दिन पुरुष प्रातःकाल जंगलसे शीसमके हरे लट्ठे काट लाते हैं, उन्हें लाल और काले रङ्गसे रङ्ग लेते हैं और जुलूस बनाकर गाँव के एक ही स्थान पर एकत्रित होते हैं, गाँवकी कुमारी लड़कियाँ पहले ही पहुंच जाती हैं। वे कपड़ेकी गुड़ियाँ भूमि पर डालती हैं और पुरुष अपने लट्ठोंसे उन्हें पीटकर लट्ठे फेंक देते हैं या अपने-अपने खेतमें गाड़ देते हैं। फिर सब स्नान करके घर लौटते हैं। इस प्रथासे ऐसा ज्ञात होता है कि इस दिन जनमेजयने नाग जाति पर विजय प्राप्त की थी; फलतः यह विजयका स्मारक त्यौहार है। पराजितोंके पुतले जला कर या पीट कर उत्सव मनाना भी बहुत पुरानी प्रथा है। दशहरेके दिन कागजका रावण आज भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलाते हैं। बर्मामें पिछले युद्धमें जर्मनीकी पराजय पर कैसरका पुतला सड़क पर घसीटा गया था और मन्दिरके पास जलाया गया था।

नागपञ्चमीके पहले आसाढ़ की पूर्णिमाके दिन भी एक पर्व मनाया जाता है। उस दिन गाँव वाले अपने अपने घरकी भितियों पर बाहरकी ओर और चारों ओर गोबरकी मोटी रेखा खींचते हैं और द्वार पर एक कागज चिपकाते हैं, उसपर वीररसका एक श्लोक लिखा जाता है, जिसमें अर्जुनके १० नाम होते हैं, जैसे --

अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः।
विभत्सुर्विजयी पार्थः सव्यसाची धनञ्जयः॥

इस पर्वका अर्थ यह बताते हैं कि इस प्रकार नागका घरमें प्रवेश नहीं हो सकता। वर्षाके कारण सर्प अपने बिलोंसे बाहर आ जाते हैं, अतएव उन्हें रोकनेके लिए यह उपाय सम्भव हो सकता है। परन्तु यह भी कहा जा सकता है कि जिस समयमें नाग-जातिने आक्रमण किया होगा और जनमेजयने गाँवोंके बाहर प्राचीर बनाने और घर-घरमें अपने पुरुषार्थी पूर्वज अर्जुनके नामसे वीरता संचारित करने की व्यवस्था की होगी। इस व्यवस्थाके पूर्ण होने पर श्रावण शुक्ल ५ को नागजातिकी पराजय हुई होगी और विजय स्मारकके रूपमें यह उत्सव मनाया गया होगा। पश्चात् सन्धि हो जाने पर सम्भव है उत्सवको नागपूजाका रङ्ग दे दिया गया हो और समस्त भारतमें उसी रूपका प्रचार हुआ हो। फिर भी कहीं-कहीं पुराना रूप ही अधिक प्रचलित रह गया है, यद्यपि नागपूजा वहाँ भी होती है परन्तु गौण रूपमें।

पुराणोंमें जिन शब्दोंके दो अर्थ होते हैं उनके दोनों अर्थ ग्रहण किए जाते हैं। हमने दोनों रूप उपस्थित कर दिए हैं। हमारे लिए दोनों ही आदरणीय हैं। प्राणिमात्रसे प्रेम करने वाले भारतीय सापोंको दूध भी पिलायें और साथ ही साथ महावीर अर्जुन का स्मरण कर योद्धा भी बनें।

आशा

[कवयिता—श्री पं० हरिश्चन्द्रजी जोशी 'मंजुल']

तू मेरे जीवनकी संगिन
मन उपवन की हरियाली।
मुझको तो मतवाली करती
आप स्वयं भी मतवाली॥ १॥

नीरस जीवनमें रस सरिता-
बन कर तू लहराती है।
उसकी तरल तरङ्गोंसे ही
नीरसता धो जाती है॥ २॥

उलझन में उलझे इस मनको
तू ही तो सुलझाती है।
कभी कभी तो मुझे रिझाने-
में ही तू तुल जाती है॥ ३॥

आशे! तू विरहीकी आशा
पतझड़में हरियाली-सी।
जन-जीवनकी सूत्र धारिणी
तममें तू दीवाली-सी॥ ४॥

मानसमें मानस-मराल-सी
रहती है पटरानी-सी।
कभी कभी तू ही बन जाती
कविकी करुण कहानी-सी॥ ५॥

तूने ही तो मुझे सुनाया था
बचपनमें यौवन गीत।
तू ही अब करती जाती है
मनमें सुखकर सृष्टि पुनीत॥ ६॥

आशे! बसी रहो इस मनमें कहीं छोड़ ही ना जाना।
तुम बिन रहकर आह! अकेला हो जाऊंगा दीवाना॥ ७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रावणी-रक्षाबन्धन

[लेखक—श्री पं० गौतमजी शास्त्री]

ब्राह्मणोऽस्येतिमन्त्रेण प्रत्यक्षमवगम्यते ।
चत्वारो ब्राह्मणाद्या वै वर्णाः सृष्टाः स्वयंभुवा ॥१॥
यथाधिकारमेवैषां कर्माण्यपि पृथक् पृथक् ।
मन्वादिधर्मशास्त्रेषु वर्णितानि यथाक्रमम् ॥२॥
किमुद्दिश्य प्रवर्तन्तां स्वेषु कर्मसु मानवाः ।
अतो वर्णक्रमेणैवमुद्देश्यानि निबोधत ॥३॥
ब्राह्मणो विद्यया ह्यर्च्यः क्षत्रियो बलसंवृतः ।
वैश्यो धनेन सम्पन्नः शूद्रः सेवायुतः सदा ॥४॥
एवमुद्देश्यसिद्ध्यर्थं श्रावण्याद्या यथाक्रमम् ।
चतुर्णामेव वर्णानां पर्वाण्युक्तानि पण्डितैः ॥५॥

पाठक महानुभाव! इस समय "श्रावणी-रक्षा बन्धन" आदि प्राचीन पर्वों (त्यौहारों) का विषय इतना अन्धकार-ग्रस्त है कि इनके सम्बन्धमें लेखनी उठाना मादृश अबोध व्यक्तिके लिये एक प्रकारसे अनधिकार चेष्टा करना, अथवा धृष्टतापूर्ण साहस करनेके बराबर है। क्योंकि जितने भी धार्मिक अथवा ऐतिहासिक ग्रन्थ उपलब्ध हो रहे हैं, उनमें उक्त पर्वोंके सम्बन्धमें कहीं पर भी कोई आद्योपान्त लेख नहीं मिलता, परन्तु समस्त पर्वोंकी इति-कर्तव्यताके विषयमें पद्धतियां अवश्य मिलती हैं। जिनसे यह तो सुतरां प्रमाणित होता है कि इनका कोई मूलभूत समय अवश्य रहा होगा; जोकि कालके गर्भमें लीन हो गया, ऐसा प्रतीत होता है "एकसम्बन्धिज्ञानमपरस्मारकं भवति" इस सिद्धान्त के अनुसार पद्धति ही इस बात का प्रमाण है क्योंकि "सति कुड्ये चित्रस्योल्लेखनं सम्भवति" यह भी एक सिद्धान्त बात है। पद्धति तभी तो बनाई गई जबकि पहले किसी कालमें उक्त पर्व बने होंगे।

कौन इतिहास नहीं जानता कि हमारे इस अभागे देश पर कितनी शताब्दियोंसे विदेशी आक्रान्ताओंके निर्दयतापूर्ण आक्रमण होते आ रहे हैं। इनके द्वारा न केवल हमारी साम्पत्तिक अवस्थाको ही क्षतिग्रस्त होना पड़ा, अपितु इससे बहुत अधिक हमारी धार्मिक-सामाजिक एवं नैतिक स्थितिको धक्का पहुँचा है। यवनोंके राजत्वकालमें हमारे धार्मिक मन्दिरों धार्मिक-ग्रन्थों तकको नष्ट भ्रष्ट किया गया, उसी विप्लवका यह परिणाम है कि आज हम अपने धार्मिक पर्वोंके विषयमें वह जानकारी नहीं रखते, जो रखनी चाहिये थी। परन्तु फिर भी हमें ईश्वरका धन्यवाद करना चाहिये कि हमारा वैदिकधर्म और उसकी संस्कृति व सभ्यता अपना अस्तित्व रक्खे हुए है। यह सब श्रेय हमारे उन धर्म-धुरन्धरोंको है जिन्होंने तात्कालिक धर्मान्ध राज्योंके कष्ट सहन कर हमारी सभ्यता और संस्कृति की जी तोड़ रक्षा की। परन्तु हमें इस समय इस बातका बड़ा आश्चर्य है कि हमारे कई नवशिक्षित महानुभाव इन पर्वों पर पूरी आस्था (श्रद्धा) नहीं रखते। इन्हें ज्ञात नहीं कि किसी देश अथवा जाति के अस्तित्वको रखनेमें इस प्रकारके धार्मिक या सामाजिक पर्वोंका ही मुख्य हाथ होता है। हमारा कोई भी ऐसा पर्व नहीं है जिससे हमें धार्मिक सामाजिक एवं नैतिक शिक्षा नहीं मिलती। ऐसी दशामें हम सबका परम कर्तव्य यही है कि हम अपने पर्वोंको बड़े समारोह पूर्वक मनाया करें, अस्तु। अब मैं अपने प्रस्तुत विषयकी ओर आता हूँ।

पाठक वृन्द! यह मैं पहले ही कह चुका हूँ कि मैं कोई ऐसा भारी लेखक नहीं हूं जो आपको इत्थं भूत निश्चय करा सकूँ। जहां तक हो सका मैं अपने टूटे-फूटे विचारोंके प्रकट करनेका भरसक यत्न तो करूंगा ही, परन्तु प्रार्थना है कि आप हंसदृष्टि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से उसमेंसे सारासारका विचार कर सार ग्रहण करनेकी कृपा करेंगे।

जैसे कि ऊपर लिखा गया है कि सृष्टिके आरम्भ कालमें ही सृष्टिकर्ताने ब्राह्मणादि चार वर्णोंको उत्पन्न कर एक सुयोग्य पिताकी भांति उनके लिये भिन्न-भिन्न कर्मोंकी व्यवस्था कर क्रमशः विद्याशक्ति, बलशक्ति, धनशक्ति और सेवाशक्ति रूप चार शक्तियोंके प्राप्त करनेका आदेश किया। जैसा कि "य आत्मदा बलदा" इत्यादि वेदवाक्यसे प्रकट है। क्योंकि संसारका यावत्कार्यकलाप उपर्युक्त चतुर्विध शक्ति पर ही अवलम्बित है और यह बात भी प्रमाणसिद्ध है कि इस चतुर्विध शक्तिका किसी एक व्यक्ति द्वारा सदुपयोग नहीं किया जा सकता था। जैसा कि आज हम प्रान्तकी शासिकामें यही ईश्वरीय नियम काम करता हुआ देखते हैं। प्रत्येक प्रान्तमें भिन्न भिन्न कार्यों पर भिन्न भिन्न योग्यताके ही अधिकारी (मन्त्री) नियुक्त किये जाते हैं, जिनको अपने अपने कार्यका पूरा उत्तरदायित्व होता है, ऐसा होनेसे ही प्रान्तमें सब प्रकारसे सुख-शान्ति तथा विद्या, कला-कौशल एवं व्यापार आदिका पूरा प्रबन्ध होता रहता है। इसी प्रकार परमात्मा ने — (जो कि एक बड़ी से बड़ी शासिका) भी इसी आवश्यकताकी पूर्त्तिके उद्देश्यसे ब्राह्मणादि चार वर्णोंकी परिषद् बना कर भिन्न भिन्न उद्देश्योंकी प्राप्ति और उनकी श्रीवृद्धिके लिए भिन्न-भिन्न कार्य करनेका अधिकार दिया। जिससे सांसारिक कार्यकलाप सुचारु रूपसे चलता रहे; इत्यादि।

यदि कोई कहे कि "ईश्वरको ऐसा करनेकी क्या आवश्यकता, वह स्वयं प्रभु है, उसमें कर्तृत्वादि सब प्रकारकी सामर्थ्य विद्यमान है, इससे उसकी सर्वशक्तिमत्ता जाती रहेगी" आदि आदि। सो हमारे विचारमें इस विषयमें ऐसी कल्पना निर्मूल है, क्योंकि यदि ईश्वरको ही सांसारिक छोटे बड़े सब कार्योंका कर्ता मान बैठेंगे और जीवोंको निष्क्रिय, तब इसका आशय यह हुआ कि ईश्वर भी कर्मफलके बन्धनके पचड़ेमें पड़ जायगा और जीव जो कल्प-कल्पान्तरोंसे कर्मफलके बन्धनमें पड़े हुए हैं मुक्त हो कर निर्द्वन्द और निष्कलङ्क हो बैठेंगे। अतः यही मानना ठीक है, जैसा कि ऊपर कहा गया है कि ईश्वरने ब्राह्मणादि चार वर्णोंको ही भिन्न भिन्न अधिकार दे कर संसार-क्षेत्रमें भेजा। इतिहास इस बातका साक्षी है कि जबसे भी ब्राह्मणादि चारों वर्ण अपने कर्तव्यपथसे भ्रष्ट हुए हैं तभीसे देशको अथवा यों कहिए कि संसार मात्रको अनेकानेक प्रकारके कष्टोंने धर दबाया है। यावत्काल उक्त वर्ण अपने अपने कार्य पथ पर आरूढ़ रहे तावत्काल ही संसारमें क्षत्रियोंका एकाधिपत्य राज्य, ब्राह्मणोंका तपोमय तेज, वैश्योंका आसमुद्रान्त व्यापार, एवं शूद्रोंका सामाजिक बल अक्षुण्ण रहा।

पाठकगण! आइये अब श्रावणीके सम्बन्धमें विचार कर लें। वस्तुतः "श्रावणी" का अभिप्राय है श्रावण मासकी पूर्णिमा तिथि विशेष, जो कि "मञ्चाः क्रोशन्ति" इतिवत् लक्षणा द्वारा पूर्णिमा तिथिमें किये जाने वाले कर्मविशेषकी ओर संङ्केत करती है, जिसे 'ऋषि-तर्पणी' अथवा 'ऋषि-श्राद्ध' भी कहना चाहिये।

जैसा ऊपर कहा गया है कि विद्या शक्ति प्राप्त करना ब्राह्मणका ही मुख्य कर्तव्य है; वेद कहता है—

"विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम
गोपाय मा शेवधिष्टेऽहमस्मि" इत्यादि।

उक्त विद्या कोषके योग-क्षेमके सम्बन्धमें यत्नशील रहना ब्राह्मणका जन्म सिद्ध अधिकार है। बस, इसी नियमके निर्वाहार्थ ब्राह्मण लोग श्रावणीके दिन अपने उन ज्ञाननिधि पूर्वजों (ऋषि-मुनियों) की अर्चा-पूजा करते तथा उनकी जीवनियोंका अध्ययन कर उनके पथ पर चल कर अपने सुधार करनेका व्रत धारण किया करते हैं और एक प्रकारसे उक्त प्रतिज्ञा में अपनेको बांधते हैं। क्योंकि कहा भी तो है "व्रतेन दीक्षामाप्नोति" इत्यादि। परन्तु जैसा कि ऊपरके लेख से स्पष्ट है कि कई एक राजनैतिक सम्प्लव-विप्लवों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के चक्रमें पड़ कर ब्राह्मणोंको उक्त परम्परागत मर्यादा पर चलना-चलाना दुष्कर हो गया। अतः इन्होंने श्रावणीके पर्वको दूसरा रक्षाबन्धनका रूप दे दिया, और 'रक्षा-सूत्र' द्वारा अपने यजमानोंका रक्षाबन्धन करने लगे। जिससे वे सर्पादि हिंस्र जीव जन्तुओं और ज्वरादिके प्रकोपसे बचे रहें, इत्यादि। यदि कोई अनभिज्ञ जो यन्त्रादिके प्रभावको नहीं समझता कहे कि — "क्या इस प्रकार हाथमें एक लाल डोरा (सूत्र) बांधनेसे भी किसीकी रक्षा हो सकती है" तो हम कहते हैं हाँ, हो सकती है और अवश्य हो सकती है, परन्तु उभय ओरके व्यक्तियोंमें अटूट श्रद्धा और अक्षुण्ण विश्वास होना चाहिए।

मन्त्रे तीर्थे द्विजे देवे दैवज्ञे भेषजे गुरौ।
यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी॥

यदि मंत्रोंमें यह शक्ति नहीं तो वैदिक कर्म-कलाप सारेका सारा सांसारिक जनोंके लिये एक विडम्बना मात्र सिद्ध होगा।

"रक्षा-बन्धन" एक क्रिया विशेषका नाम है, परन्तु कभी २ किसी स्थान पर द्रव्य परक भी देखा जाता है। इसका सत्य अर्थ है— "किसी की रक्षाके लिये बन्ध लगाना"। भागवतके दशम-स्कन्धमें लिखा है कि बालकृष्णजीकी रक्षाके लिये यशोदाजी ने ब्राह्मणों द्वारा रक्षा-बन्धन कराया, और भी प्राचीन ग्रंथोंमें ऐसे अनेक प्रसंग मिलते हैं। "रक्षा-बन्धन" एक ऐसी व्यापक तथा सार्वकालिक क्रिया है जिसका यथा अवसर सर्वत्र सूपयोग होता हुआ देखा या सुना जाता है। देखिये, बरसात के दिनों में चतुर किसान यदि अपने धान आदिके क्षेत्रोंका समयसे पूर्व ही रक्षा-बन्धन कर देता है (जिसे व्योड़ या डौल) कहते हैं तो क्या उसके खेतको (सौंके आ दका) कोई भय (हानि) हो सकती है? इसी प्रकार अन्य ऊख आदिके क्षेत्रोंका भी कांटोंकी बाड़ आदिसे रक्षा-बन्धन ही तो किया जाता है। यही नहीं पूर्वकालमें जब कि शत्रुओंके आक्रमणोंका भय रहता था, तब अमृतसर, लाहौर, पटियाला, नाभा आदि समृद्धिशाली नगरोंके रक्षार्थ दुर्ग और खाई बना कर रक्षा-बन्धन किया गया।

कहाँ तक लिखें बड़े बड़े सामरिक स्थलोंमें चतुर (दक्ष) सेनापति वही समझा जाता है और उसीको ही विजय भी प्राप्त होती है जो कि अपने सैनिक शिविरका भलीभांति रक्षा-बन्धन करना जानता है। वस्तुतः ऐसे ही व्यक्तिको सेनाध्यक्ष बनाया जाता है। यहाँतक कि सभी मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि प्राणी सर्दी-गर्मी, आन्धी आदिसे बचाव रखनेकी दृष्टिसे जो अपने लिये घर घौंसले बनाते हैं, क्या यह सब-कुछ रक्षा-बन्धनकी क्रिया नहीं तो और क्या है?

कहते हैं किसी समय राजपूतानेमें अत्याचारियों के अत्याचारोंसे अपनी सुरक्षार्थ कई आर्य महिलाओं ने तात्कालिक वीर पुरुषोंको रक्षा (राखी) देकर उनसे भाईका नाता स्थापित किया और उक्त वीर पुरुषोंने उस राखीकी प्रतिष्ठार्थ उस महिलाकी रक्षा के निमित्त अपने प्राण तक न्योछावर कर दिये। यह है रक्षा-बन्धन और उसका महत्त्व। इस पर और भी बहुत कुछ लिखा जा सकता है, यदि अवसर मिला तो फिर कभी लिखनेका यत्न किया जाएगा।

अब मैं पाठकोंसे क्षमा प्रार्थनाके साथ साथ आशा करता हूँ कि आपमेंसे कोई और योग्य महानुभाव इन पर्वोंके सम्बन्धमें प्रकाश डालनेकी कृपा किया करें तो जनताका और भी भारी उपकार होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी

अतीव भयानक समय था। आसुरी मनोवृत्तियोंके आतङ्कसे दिगन्त कम्पायमान हो रहे थे। उत्पीड़ित मानवताके करुण चीत्कारसे माता वसुन्धराका वक्षःस्थल थर्रा रहा था। दैवी सदाचार-नीति आसुरी दुर्नीति द्वारा पददलित हो कर कराह रही थी। असुरोंका साम्राज्य था। इन राक्षसी भावापन्न मानवोंके रक्तरञ्जित और पापवासनापूर्ण हृदयोंमें लौकिक और वैदिक धर्मकी अवहेलनाका आभास स्पष्ट रूपसे वर्तमान था। कंस जैसे अन्यायी और अविचारपूर्ण शासकोंकी शोषण-नीतिसे प्रजामें त्राहि-त्राहि मची हुई थी। ऐसे दुष्कालमें प्रजाको सहसा भगवान्‌के धर्म-संरक्षक और लोक-रञ्जक व्यक्त-स्वरूपका स्मरण हो आया। उसका हृदय चमक उठा। उसने विचार किया, कि जब शङ्ख-चक्र गदा-पद्मधारी भगवान् अनेक बार असुरोंकी जघन्यताको रौंदकर वेद और लोकधर्मकी रक्षामें प्रवृत्त हो चुके हैं; निरङ्कुश शासकोंकी कलुषित शासन-नीतिका दमन कर संसारमें सुख शान्तिकी स्रोतस्वती बहा चुके हैं; तब यह कैसे सम्भव है, कि वर्त्तमान समयमें मूक प्रजाके हार्दिक आर्त्तनादको वे न सुनेंगे। अवश्य सुनेंगे। भगवान्‌की दयामयी सौम्य मूर्त्ति धर्मको इस पतितावस्थासे बचानेके लिए निश्चय ही जागरूक और आतुर हो उठी होगी। इसी कल्पनासे ओत-प्रोत हो कर प्रजा भगवान्‌के उस लोकरञ्जक दिव्य-स्वरूपके प्रत्यक्ष दर्शनके लिए आकुल हो उठी और वह अत्यन्त सतृष्ण भावसे उस पावन घड़ीकी प्रतीक्षा करने लगी। सहसा वह पावन समय आ पहुँचा। भादोंकी अँधेरी रात थी। आकाशमण्डल मेघ-पंक्तियोंसे आच्छादित था। विद्युत्‌की चमक कभी-कभी इस अन्धकारको चीरकर अपनी क्षणिक आभाका आभास दे देती थी। बड़ा ही भयावह प्रकृतिका स्वरूप था। ऐसे भयावने समयमें वसुदेव-देवकी कंस-कारागारकी प्राचीरोंमें बन्द भगवन्नामकी माला जप रहे थे। कारागार अन्धकारकी छायासे व्याप्त था। एकाएक उनके नेत्रोंके सम्मुख किसी दिव्य ज्योतिके स्फुरणका अनुभव हुआ। उन्होंने देखा, कि जिस पवित्र प्रतिमाके दर्शनार्थ दीर्घकालसे वह अश्रुओंकी वियद्‌गङ्गामें अवगाहन कर रहे हैं; वही मूर्त्ति उनके विपज्जालको छिन्न और कारागारके नारकीय जीवनसे उद्धार करनेके लिए साक्षात् उनके समक्ष अवस्थित है। बहुत देर तक आत्मज्ञानहीन हो कर वह दम्पती भगवान्‌की दर्शनीय दिव्य-मूर्त्तिको पिपासु नेत्रोंसे अपलक देखते रहे। उनकी समस्त कष्ट-साधना भगवान्‌के श्रीचरणोंमें तद्‌गता हो गई; उन्हें इस बातका किञ्चित् ज्ञान न रहा, कि हम भगवान्‌की किन शब्दोंमें स्तुति करें। उनकी स्तोत्र-प्रस्फुटन-प्रणाली विकृत होने लगी। सहसा भगवान्‌के दिव्य-दन्तोंकी चमकसे कारागार ज्योतिर्मय हो गया; भगवान् हँसने लगे। इसके पश्चात् भगवान्‌ने कष्टसाधना-विगलित दम्पतीको सान्त्वना प्रदान करते हुए कहा, कि हम असुरोंके नारकीय कृत्योंसे पृथ्वीका उद्धार, अन्याय और अत्याचारसे जनताकी रक्षा, संसारमें पुनः लोकधर्मकी प्रतिष्ठा और आपको कारागारके कष्टसाध्य जीवनसे मुक्त करनेके लिए संसारमें अवतीर्ण हो रहे हैं। यदि आप इसी समय हमें सुरक्षित रूपसे गोकुल पहुंचा देंगे, तो हमारी पूर्वोक्त साधनाएँ सफल होनेमें किञ्चित् विलम्ब न होगा; असुरोंको उनके दुष्कर्मोंका स्वाद चखानेमें हम कदापि विफल मनोरथ न होंगे। आपका यह कार्य निर्विघ्न सम्पन्न होगा, आपकी मार्ग-जन्य बाधायें अपहृत हो जायेंगी। यह कह कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान् अन्तर्ध्यान हो गये। अचानक कारागारका प्रशान्त अन्तस्तल रोदित शिशुकण्ठकी ध्वनिसे गूँज उठा। कैसी माया है! भगवान् बालक बनकर रोने लगे!

भगवान् श्रीकृष्ण निरापद् गोकुल पहुँचाये गये और वहाँ उन्होंने अपने जीवनके प्रारम्भिक कालमें कितने ही लोक-धर्म विरोधी नर-पिशाचोंका वध कर जनतामें शान्ति-संस्थापनका प्रयत्न किया। भगवान् कृष्णके इस दैवी बलको देख कर जनताकी ऊसर हृदय-भूमिमें आशा-लतिकायें पल्लवित होने लगीं। ग्रीष्म ऋतुमें प्रखर मार्त्तण्डकी ज्योतिसे तपे हुए शरीर को शीतल छाया मिल जानेमें जो आनन्द है; वही आनन्द तत्कालीन तड़पती मानवताको अनुभूत हुआ। कंस द्वारा आतङ्कित प्रजाका हाहाकार-रव न्यून हो चला; अब वह निराश न थी। इसके अनन्तर भगवान्ने अपनी यौवनलीलामें पदार्पण करते ही मानवताके उत्तापकोंका हृदय दहला दिया; प्रपीड़क खोज-खोजकर विनाशोन्मुख किये जाने लगे। पापात्माओंने श्रीकृष्णके विनाशकी अनेक चेष्टाएँ कीं; उन्होंने अनुमान किया, कि यह महापुरुष जीते-जी हमें सुख की नींद लेने न देगा; इसकी उपस्थिति-में हम शान्तिका अनुभव कर नहीं सकते; अतएव इस स्वेच्छाचारके मार्गावरोधी कण्टकको उखाड़ फेंकना अत्यन्त आवश्यक है। किन्तु अपनी इस दुश्चेष्टामें वे सर्वथा निष्फल रहे; उन्हें स्वयं अपने दुष्कर्मोंका प्रतिफल भोगना पड़ा।

इसके पश्चात् भगवान् श्रीकृष्णने पृथ्वीसे अन्याय्यों और अत्याचारियोंका अस्तित्व मिटानेके लिए महाभारत जैसे विश्व-व्यापी महायुद्धका आह्वान किया। देशके समस्त राजाओं और साधारण-जनताको इस महायुद्धमें सम्मिलित होनेके लिए सादर निमन्त्रित किया गया। पशुता और मानवताका द्वन्द्व था। दोनों ही पक्ष अपने विनाशकारी विराट् आयोजनोंके साथ सम्मुखस्थ हुए। इसी समय अर्जुन आत्मीयोंको ही अपने बाणका लक्ष्य समझ कर अतीव व्याकुल हुए और उन्होंने कहा, कि भगवन्! धनुष मेरु-खण्ड हो रहा है, बाण हाथोंमें चिपक रहे हैं। वह अत्यन्त कातर दृष्टिसे भगवान्की ओर अवलोकन करने लगे। अर्जुनकी इस शिथिलताको देख कर भगवान् श्रीकृष्णको बड़ा ही आश्चर्य हुआ और उन्होंने अर्जुनके उस मोहमूलक वासना-जालको छिन्न करनेके लिए गीता जैसी पावन वाग्धाराका अजस्र प्रवाह परिचालित किया, जिसमें स्नान कर अर्जुनके हृदयकी कालिमा धुल गई, उनका हृदय चमक उठा और उसी चमक द्वारा उन्होंने भगवान्के विराट् स्वरूपका दर्शन किया। उन्होंने देखा, कि अखिल ब्रह्माण्ड भगवान्के उदरमें समाया हुआ है और उसमें कितने ही महायुद्धोंका अविराम सञ्चालन हो रहा है। वह चकित हो गये। तत्काल ही अपने सैनिकोंको सामूहिक व्यूह-रचनाके लिए आज्ञापित कर वह स्वयं गाण्डीवकी भयावनी टङ्कार-से दिशाओंको निनादित करने लगे।

गीताके आध्यात्मिक मीमांसक ज्ञानहीन कर्म-योगको सर्वथा हेय बतलाते हैं, उनका मत है कि ज्ञानहीन कर्मयोग अनात्माकी उपासना है; नास्तिक या जड़वाद है। कर्मयोगकी दृष्टिसे गीताकी मीमांसा करनेवाले महानुभाव कर्महीन ज्ञानयोगको अनुप-योगी और दम्भमूलक बताते हैं; उनकी सम्मतिमें कर्महीन ज्ञानयोग निरर्थक है। आध्यात्मिक भावोंके प्रचारसे ही देश दुर्बल हो कर परतन्त्रताकी बेड़ियोंसे जकड़ा गया है। जो हो, गीता दोनों ही वर्गोंके विवेचक विद्वानों द्वारा अत्यधिक आदरकी दृष्टिसे देखी गई है। एक ओर वह मानव-जीवनके विविधि कर्त्तव्य-क्षेत्रोंमें लोक-धर्म पालनका आदेश देती है; सफलता और समुन्नतिका मार्ग प्रशस्त करती है। दूसरी ओर अध्यात्म-गङ्गाका पावन प्रवाह बहाकर जीवनमें परम सुख-शान्तिकी सृष्टि करती है; अतः निस्सङ्कोच कहा जा सकता है कि श्रीकृष्णकी वाग्-विभूति गीता समस्त संसारके हृदयमें पूर्ण प्रतिष्ठाके साथ आसीन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवीनवरात्र

[लेखक—राजकुमार गुरू श्री पं० तारादत्त जी राज ज्यौतिषी]

अनन्तरूपा भगवतीने कन्यारूपसे—अविवाहित स्त्रीरूपसे—धर्मद्वेषी दैत्योंका संहार किया था। इसी अभिप्रायसे कन्या-पूजन भी देव्युपासनाका अङ्ग माना गया है। अतएव भगवती विशेषतः कन्याओं की अधिष्ठात्री प्रतीत होती है। प्रतीत होता है कि, शुम्भादि दैत्योंके संहारके लिए अवतीर्ण सर्वव्यापिनी भगवती राशि-चक्रमें कन्या-राशि नाम वाली देवीके रूपसे विशेषतः विश्वपालन कर रही है। इसके अस्तकालमें सिंहराशिके इसके नीचे होनेसे सिंह-वाहिनी नाम भी ठीक चरितार्थ होता है।

"एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा।"

(सप्तशती)

इस वचनके अनुसार सामान्यतः सब देवियाँ भगवतीके भेद हैं।

आश्विन शुक्लपक्षके आरम्भमें आत्मग्रह सूर्य और मनोग्रह चन्द्रमाके नित्य कन्याराशिमें होनेसे और चैत्र शुक्लपक्षारम्भमें कन्याराशिमें उनकी पूर्ण दृष्टिके नित्य होनेसे भगवतीसे आत्मा और मनका विशेष सम्बन्ध होता है। इस प्रकार इन दो प्रतिपदाओंसे दुर्गा तिथि नवमी तक शास्त्रोक्त नवरात्रोपासना युक्तिसे भी सिद्ध होती है।

प्रतीत होता है कि पक्षारम्भमें कन्यार्कका प्रभाव संपूर्ण पक्षमें होता है, इस लिए पक्षारम्भके अनन्तर तुलार्क होने पर भी फलाभाव नहीं होता।

कन्यां गते सवितरि शुक्लपक्षेऽष्टमी तु या।
मूल नक्षत्र संयुक्ता सा महानवमी स्मृता॥

(भविष्य पुराण)

[सूर्यके कन्या राशिमें होने पर मूलनक्षत्र सहित जो शुक्लाष्टमी होती है वह महानवमी कही है।]

कन्या संस्थे रवौ हीषे या शुक्ला तिथिरष्टमी।
तस्यां रात्रौ पूजितव्या·····(जयसिंह कल्पद्रुम)

[कन्यागत सूर्यमें आश्विनमासमें जो शुक्लपक्ष की अष्टमी होती है, उसमें भगवतीकी पूजा करनी चाहिए।]

इन वाक्योंमें कन्यार्कमें भगवतीकी उपासनाका माहात्म्य स्पष्ट है।

अमङ्गलमय मृतपक्षके समाप्त होने पर मङ्गलके बीज सूक्ष्म-विश्वमें व्याप्त होने लगते हैं। इस समय नवरात्रोपासनासे मृतपक्षके प्रभावकी शान्ति भी योग्य है। जयसिंहकल्पद्रुममें लिखा है कि पूर्वकालमें इस शुभ अवसरमें भगवतीने नवमीके दिन दैत्यों का संहार किया था। प्रतिपदासे अष्टमी तक प्रति दिन एक एक शस्त्र धारण किया था।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदासे वर्षारम्भ होता है और आश्विन अमावस्याके दिन वर्षार्द्ध समाप्त होता है। अतः वर्षमें दो वार भगवतीकी उपासनाके अभिप्राय से नवरात्र-पूजा नियत करना साधारण रीतिसे भी युक्त प्रतीत होता है।

आर्ष-विज्ञान अतीन्द्रिय अनन्त और अचिन्त्य है। यह अल्पबुद्धिसे किंचिन्मात्र मनन है।

अब मैं इस लेखका साररूप स्वनिर्मित एक श्लोक भी पाठकोंकी सेवामें निवेदित करता हूं—

कन्याराश्यात्मिकेयं जयति
भगवती सैव या दैत्य सङ्घं
कन्यारूपा जयद्या प्रमुदित-
वदना पूजनात् कन्यकानाम्।
इष्टं संपादयन्ती बहुविध-
भजनैर्याश्विने शुक्ल पक्षे
पुंसां तिथ्याः कृशानोर्नवतिथिषु
तथा चैत्रमासे सितेऽर्द्धे॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्ययुगका सूर्यग्रहण

पाखण्डियोंके प्रपञ्च पर पानी

[लेखक—श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी, सम्पादक श्रीस्वाध्याय]

कुछ भोली-भाली भारतीय जनताको यह भ्रम या विश्वास-सा हो रहा है कि "श्रावण कृष्ण अमावस्या रविवार ता० १ अगस्त १९४३ ई० को बड़ा भारी सूर्यग्रहण होगा। इसके स्पर्शकाल पर्यन्त कलियुग रहेगा और मोक्षकालसे सत्ययुगारम्भ हो जाएगा।" इस निराधार भ्रम वा गप्पको जनतामें प्रचारित करने वाले कुछ सतयुग और कल्कि अवतारके एजेण्ट (कलिदूत) हैं। इस सूर्यग्रहणका सर्वाधिक प्रचार करने वाले प्रसिद्ध-प्रपञ्ची स्वामी राजनारायणजी फाजिल्का वाले और दूसरे ऋषि आश्रम ब्रह्मपीठ अहमदाबादके सनातनधर्म गुरु श्री हरेराम ब्रह्मर्षि महाराज हैं। इन दोनों कल्किदूतों (कलिदूतों) ने अपनी 'चेतावनी' और 'सतयुग-दर्शन' नामक पुस्तकमें लिखा है कि—

"सं० २००० विक्रम श्रावण अमावस्याको जब कलियुग समाप्त हो कर सत्ययुग आयेगा तब सूर्य-ग्रहण ऐसा होगा कि सारा गह जायगा अन्धेरा हो जायगा, यह ग्रहण कलियुगके अन्त समय होगा और सूर्यका उदय सत्ययुगके आरम्भ में होगा।" इत्यादि।

यहाँ हम सर्वसाधारण जनताको सूचित किये देते हैं कि यह (सूर्यग्रहणकी) नितान्त निराधार गप्प अथवा भोली जनताकी आंखोंमें धूल झोंकना मात्र है। इस दिन यहाँ भारतमें कहीं भी ग्रहण का स्पर्शमात्र भी नहीं है। इन कलिदूतोंके जो अन्धविश्वासी भक्तगण कल्कि-अवतारके दर्शन और सत्ययुगके सुखद-स्वप्न देख रहे हैं उन्हें अब सावधान हो जाना चाहिए। हम तो आजसे दश वर्ष पहलेसे ही (जबसे इन कलिदूतोंने यह अवाञ्छनीय आन्दोलन उठाया था तभीसे) इस मिथ्या प्रपञ्चका खण्डन करते आये हैं। पहले समाचार पत्रोंमें इस आन्दोलनका खण्डन किया, अनन्तर सम्पूर्ण 'चेतावनी' का अक्षरशः सप्रमाण युक्तियुक्त खण्डनके रूपमें "चेतावनी-समीक्षा या सत्ययुगका स्वप्न" नामक पुस्तक सं० १९९३ में प्रकाशित करके जनतामें बिना मूल्य वितीर्ण की थी * इसके कुछ वर्ष अनन्तर ही बेचारे प्रथम कल्किदूत स्वामी राजनारायणजीको तो सत्ययुगारम्भ और कल्कि-अवतार प्रकट होनेके पूर्व ही अपने सुकर्मों वा दुष्कर्मोंसे इस ससार संसारसे ही उठ जाना पड़ा। अब इनके अनुयायी द्वितीय कल्किदूत ब्रह्मर्षि हरेराम महाराज और उनके १७ वर्षीय सुपुत्र ब्रह्मनिष्ठ योगेन्द्र बाल-ब्रह्मचारी श्री गुरुदेव ब्रह्मर्षि महाराज विद्यमान हैं। जिस प्रकार स्वामी राजनारायणजी ने अपनी चेतावनी पृष्ठ ३९ पर लिख रक्खा है कि—

"श्रीभगवान् कल्कि सं० १९९९ में सब प्राचीन ऋषियों और महर्षियों सहित सबसे पहले बंगाल देशमें प्रकट होंगे फिर मगध, बिहार, हरिद्वार, देहली, मथुरामें आयेंगे। मथुरामें कुछ ठहरेंगे, कुछ काल पश्चात् सारे संसारमें फिरेंगे, पञ्जाब और ईरान होकर पश्चिममें जावेंगे।"

इसी प्रकार या ठीक इसी की छाया (प्रतिलिपि) ब्रह्मर्षि हरेरामजी महाराजने अपनी गुजराती भाषा

---

* सं० १९९६ में 'चेतावनी समीक्षा' का नवीन परिवर्द्धित सचित्र द्वितीय संस्करण हमने "श्री सत्य-सन्देश कार्यालय गुड़गावां (पंजाब)" से प्रकाशित करवाया है। इसका मूल्य ॥) है। पाठक उक्त पते से मँगवाकर देख सकते हैं। —लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की "नूतन सत्ययुग दर्शनम्" नामक पुस्तकमें की है। पृष्ठ १३ में आपने लिखा है —

"कल्किजी संवत् १९९९ ना वैशाख सुद बीजे पृथ्वी पर प्रसिद्ध थशे, साथे सिद्ध पुरुषो महर्षिओ आवशे, बंगाल, मगध, बिहार, दिल्ही, हरद्वार, मथुरा पधारी विश्रान्ति धरशे, अने फरीथी पञ्जाब, ईरान, पश्चिम, अने अखिल भारतमां इच्छा प्रमाणे विचरशे, अनेक दुष्टोंनु दमन करशे।"

इसी पुस्तकमें आगे पृष्ठ ५५ पर आपने पुनः लिखा है कि —

"कल्कि भगवान् सं० १९९९ ना वैशाख सुद बीजे सुप्रसिद्ध थशे, तेमना अंगथी दिव्य सुगंध आवशे तेथी ब्रह्माण्डनो दुर्गन्ध वायु शुद्ध थशे, सर्वना मन ब्रह्म स्वरूपमां आनन्द प्रकाश पामशे" इत्यादि।

अब इन सत्ययुगपंथी कलिदूतोंके अन्धभक्त अनुयायियों और ब्रह्मर्षि हरेरामजी महाराजसे हम पूछते हैं कि कहाँ हैं आपके वे कल्कि अवतार? अब तो सं० २००० का वैशाख मास भी समाप्त हो चुका है, किन्तु अभी तक न तो आपके कल्कि अवतार कहीं प्रकट हुए और नाहीं उनके साथी किसी ऋषि मुनिने ही किसीको दर्शन देनेका कष्ट किया; इसका क्या कारण है?

पाठक वृन्द! इस लेखसे आपने भली भांति समझ लिया होगा कि यह केवल पाखण्डियोंका प्रपञ्च मात्र है। जिस प्रकार इन कलि-कलुषित-स्वान्त कल्कि-दूतोंने अपना पाखण्ड-प्रपञ्च-जाल प्रथित किया है उसी प्रकार इनके कपोल कल्पित कल्कि अवतार एवं सत्ययुग भी संसारमें सुख शान्ति (अशान्ति) का साम्राज्य स्थापित करेंगे। वास्तवमें न अभी कल्कि-अवतार हुआ है और नाहीं कलि-युगान्त, सत्ययुगारम्भ, वा सूर्यग्रहण ही है। अब इन लोगोंका यह प्रपञ्च जाल बहुत कुछ नष्ट हो चुका है और २० दिन तक जब सूर्यग्रहणका स्पर्शमात्र भी नहीं होगा तब स्वयमेव इनके यत्किञ्चिच्छेष प्रपञ्च पर भी पानी फिर जाएगा।

भारतीय ज्यौतिष-प्रणाली

[लेखक—ज्योतिर्विद्यारत्न श्री पं० कृष्णचन्द्र जी शर्मा ओझा केतकी पञ्चाङ्गकर्ता]

यद्यपि 'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्कोंमें मैंने यह बात शास्त्रीय प्रमाणों द्वारा भली-भांति सिद्ध कर दी है कि 'हमारे भारतीय आर्य महर्षियोंका मत यही है कि वेध-प्रणालीको मुख्य मानकर वेधोंसे जो ग्रहोंके मान निश्चित हों उसी मानसे पञ्चाङ्ग निर्माण कर उस पञ्चाङ्गसे समग्र धार्मिक क्रियाएँ मुहूर्त फलित आदि सम्पादन करनी चाहिएँ। तथापि भारतमें ऐसे भी विद्वान् हैं जो कि स्थूल गणितको त्यागने और सूक्ष्म गणितको स्वीकार करनेमें सङ्कोच करते हैं और उसके लिए यह कह देते हैं कि सूक्ष्म-वेध युक्त मानोंके स्वीकार करने पर धर्म निर्णयमें बाधा पहुँचती है (एकादशी प्रदोष आदि व्रतोंके निर्णयमें क्षति पहुँचती है) किन्तु ज्योतिष-शास्त्रके बिना धर्मशास्त्रीय निर्णय हो नहीं सकता और वेध लिए बिना तथा वेधोंसे परिमाणोंको जाने बिना ज्योतिष यह निर्णय ही नहीं कर सकता। इसी लिए वेधोंसे सूक्ष्म परिमाणोंको जान कर और उस पद्धतिसे पञ्चाङ्ग निर्माण कर धार्मिक क्रियाएँ करनी चाहिएँ। महर्षि वृद्धगर्गने कौष्टुकी प्रमुख ऋषियोंको जो उपदेश दिया वह वराहमिहिराचार्यने अपनी बनाई बृहत्संहितामें यों लिखा है —

"कालज्ञानमिदं पुण्यमाद्यं हि ज्ञानमुत्तमम्।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिसृक्षुणा पुरा वेदा न तत्सृष्टं स्वयंभुवा ।।
वेदाङ्गमाद्यं वेदानां क्रियाणां च प्रसाधकम् ।
ज्योतिर्ज्ञानं द्विजेन्द्राणामतो वेद्यं विदुर्बुधाः ।।
ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य सर्वस्योक्तं शुभाशुभम् ।
ज्योतिर्ज्ञानं च यो वेत्ति स तु वेत्ति परां गतिम् ।।
तस्मात् पूर्वमधीयीत ज्योतिर्ज्ञानं द्विजोत्तमः ।
धर्मसूत्रं ततः पश्चाद्यज्ञकर्मविधिक्रियाम् ।।
यज्ञाश्चायुष्यहोमाश्च चूड़ोपनयनादि च ।
साम्राज्यं पौर्णमास्यं च पितृदैवततर्पणम् ।।
सर्वारम्भाश्च जगतो लोके च विविधाः क्रियाः ।
न ज्योतिषं विना तासां प्रवृत्तिरुपलभ्यते ।।
एवमाद्याः समस्ताश्च क्रिया ज्योतिषसंश्रिताः ।।"

इन प्रमाणोंसे स्पष्ट है कि ज्योतिर्ज्ञान (कालज्ञान) ही मुख्य है; बिना ज्योतिष-शास्त्रके कुछ भी नहीं कर सकते। पहले ज्योतिषशास्त्र तदनन्तर धर्मशास्त्र ("धर्मसूत्रं ततः पश्चाद्") है। भावार्थ यह है कि मूलतः ज्योतिषशास्त्र है और पश्चात् धर्मशास्त्र है। ज्योतिष वेधतुल्य मानोंके और गणितके आधीन है, अतः अति सूक्ष्म मानोंको स्वीकार कर पञ्चाङ्ग निर्माण करना चाहिए यही आर्य महर्षियोंका परम्परा से मत चला आता है। उसीके अनुसार भारतीय आर्योंको अपने धार्मिक कार्य करने चाहिएँ यही गर्गाचार्यादि ऋषियोंका आदेश है। यदि हमें ऋषियोंका मान रखना है और परम्परासे चली आई प्रणालीको ही मानना है तो "वेधतुल्य" परिमाणोंको ही स्वीकार करना होगा। भारतमें वेध प्रक्रिया कुछ समयसे लुप्तप्राय हो जानेसे संशोधनका कार्य कुछ वर्षों तक शिथिल ही रहा, फिर भी कहीं न कहीं भारतमें विद्वान् वेध लिया ही करते थे। केशव दैवज्ञ गणेश-दैवज्ञ भी वेध लेनेमें निपुण थे, तथा इनके पूर्व भास्कराचार्य जैसे वेध विद्यामें अगाध विद्वान् हो गए हैं। तथा ब्रह्मगुप्त जैसे विद्वानोंने वेधों से ज्योतिषशास्त्रोंके परिमाणोंको जान कर प्राचीन सिद्धान्तोंमें अन्तर देख कर उसे संशोधन कर ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त ग्रन्थ रचा। एवं भारतीय अनेक विद्या के व्यासङ्गी शास्त्रसंशोधक जयपुर नरेश महाराजा जयसिंहजीने अपनी जयपुर राजधानीमें ही नहीं अपि तु दिल्ली, मथुरा, उज्जैन, काशी आदि स्थानोंमें वेधशालाएँ बनवाकर भारतीय वेध पद्धतिका पुनरुज्जीवन किया और वेधनिपुण विद्वानोंको आश्रय दे वेध लेना प्रारम्भ किया। उनकी (महाराजा जयसिंहकी) वेधशालाओंमें अनेकों यन्त्र हैं तथापि "जयप्रकाश" नामक यन्त्रका आविष्कार सम्राट् श्री० महाराजा जयसिंहजीने ही किया। इस परसे उनकी अथाङ्ग विद्या की कल्पना हो सकती है और इस यन्त्रसे क्रान्ति, भोग, उन्नतांश, दिगंश, लग्न, दशम, याम्योत्तर लङ्घन आदि ठीक ठीक जाने जाते हैं। और भी छोटे मोटे जयपुर में बहुत यंत्र हैं। जिसमें राशिवलय यंत्र १२ हैं, वे बहुत प्रेक्षणीय हैं और उनमें ताराओंके तथा ग्रहोंके वेध बहुत ही शीघ्र और सुगम रीतिसे ले सकते हैं। यदि सब यंत्रोंका वर्णन लिखें तो एक बड़ी भारी पुस्तिका बन जायगी। जिन पाठकोंको यंत्रोंकी सूची और वर्णन देखना हो वे सम्राट् जगन्नाथजी तथा डा० सर विलियम हण्टर तथा स्व० बापूदेव शास्त्री सी० आई० ई० एवं श्री पं० गोकुलचन्द्रजी भावन आदि विद्वानोंकी लिखी हुई पुस्तकें देख सकते हैं, जिनमें यंत्रवर्णन वेधपद्धति आदि आदिका सविस्तर वर्णन दिया गया है। इस प्रकार भारतवर्षमें वेधपद्धति प्रचलित है और वेधकार्य होरहा है। ऐसी वेधशालाओंसे ज्योतिष महासभा वा राजा महाराजा भारतमें बेध लेनेके कार्य प्रचलित रक्खें तो आशा है कि भारतीय ज्यौतिष-शास्त्र उज्ज्वल कीर्तिको प्राप्त होगा और जनताका ज्योतिषशास्त्र पर जो अविश्वास-सा हो रहा है वह भी नष्ट हो जाएगा और ज्योतिष क्या है ? तथा पञ्चाङ्गोंका आकाशीय घटनाओंसे क्या सम्बन्ध है ? यह साधारण व्यक्ति भी भलीभांति जान सकेगा। जिस हेतुसे वेधशालायें निर्माण की गई थीं वह हेतु अब नष्टप्राय दिखाई देता है और भारतमें यह एक प्रेक्षणीय वस्तु रह गई हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि इन वेधशालाओंमें दूरवीक्षणयंत्र (टेलिस्कोप) आदि नवीन सूक्ष्म यन्त्रोंकी स्थापना भी कर दी जाय तो भारतीय शास्त्रवेत्ता ग्रिनिचकी वेधशालाको भी हेय कर सकते हैं। यह कार्य कोई कठिन नहीं है। जयपुरकी वेधशाला जयपुर राज्याश्रित है और उज्जैनकी वेधशाला ग्वालियर महाराजाश्रित है। उक्त दोनों वेधशालाओंमें क्रमसे महान् धुरन्धर खगोलज्ञ ज्योतिर्विद् पं० केदारनाथजी तथा श्री आर० व्ही० वैद्य एम० ए० बी० टी० ये दोनों अध्यक्ष (सुपरिन्टेन्डेन्ट) हैं, आप कार्यकुशल वेधविद्यामें निपुण और महान् विद्वान् हैं। यदि उक्त दोनों महानुभाव इस प्रश्नको अपने हाथमें ले लें तो भारतमें ही नहीं अपितु भारतीय शास्त्र द्वीपान्तरोंमें भी झलक उठेगा और भारतीय जनता आशाकी दृष्टिसे इन दोनों वेधशालाओंको देखेंगी। इस समय जनतामें जो मतभेद वादविवाद आदि हो रहे हैं वह शीघ्र ही मिट कर उसका निर्णयके रूपमें इन वेधशालाओंमें कार्य हो सकता है। इंदौर राज्याश्रित पञ्चाङ्ग संशोधन सभाके अध्यक्ष पं० दीनानाथजी शास्त्री चुलेटने पर्याप्त परिश्रम कर उक्त सभा द्वारा वादविवाद कर पौष्णांत का ही झगड़ा स्व० गो० स० आपटे महोदय से वादविवादात्मक प्रश्नोत्तरोंसे मिटानेका जो प्रयत्न किया वह स्तुत्य है और उन्हींके परिश्रमके फलस्वरूप अ० भा० सम्मेलन भी इन्दौरमें हुआ था। उसमें कई प्रस्ताव भी पास हुए, इस परसे जनताको आशा थी कि आगे भी इसी गतिसे कार्य हो कर भारतीय ज्यौतिष-शास्त्र उन्नतिके मार्ग पर रहेगा। किन्तु आज ७ वर्ष होगये दूसरा सम्मेलन होना तो दूर रहा; इन्दौर राज्याश्रित पञ्चाङ्ग-संशोधन-सभा भी स्थगित सी दिखाई देती है। श्री चुलैट शास्त्रीजीने गत सं० १९९५ में अखिल भारतमें भ्रमण कर साथमें कई छोटे मोटे यंत्र दूरबीन आदि लेकर सशास्त्र पद्धति व्याख्यान द्वारा बड़ेबड़े नगरमें प्रमाणित करते हुए अनेक स्थानोंमें शाखाएं भी स्थापित कीं। किन्तु उसके आगेका कार्य जो होना चाहिये वह नहीं होनेसे जनताका धैर्य अधिक नष्ट होता जा रहा है। इसमें हम कार्यकर्ताओंको दोष देना नहीं चाहते, परन्तु कार्यकर्ताओंको जिस प्रमाणमें जनताकी ओरसे प्रोत्साहन मिलना चाहिये उस प्रमाणमें प्रोत्साहन नहीं मिलने पर कार्यकर्ता निरुत्साही बन जाते हैं, यह स्वयं सिद्ध बात है। इससे विद्वान् सुज्ञ बंधुओंको अधीर तथा निरुत्साही नहीं बनना चाहिए। प्रयत्न तथा अपना कार्य करते चले जाना चाहिये, जिससे भावी पीढ़ी भी उसका लाभ ले सके। नहीं तो "उत्पद्यन्ते विलीयन्ते" के न्यायसे कई समिति तथा संस्थायें जहांके तहां कार्यको स्थगित कर नष्टप्राय हो जाती हैं। परन्तु यहां तो कार्यकर्ता हैं, विद्वान् हैं, वेधशालायें हैं उनको राज्याश्रय हैं, मासिक वेतन तथा जागीरें हैं ऐसे स्थानोंसे यह कार्य नहीं होगा तो कहांसे होगा ? आशा है विद्वान् बन्धु इस कार्यकी ओर लगे ही रहेंगे और भारतीय ज्योतिषशास्त्रकी उच्चता अखंड भूगोलमें स्थापित करेंगे। गत वर्षसे उज्जैन वेधशालाकी ओरसे श्री वैद्य महोदयने एफेमेरीज (सायन पञ्चाङ्ग) प्रकट करना प्रारम्भ किया है। इसमें सायनग्रह, क्रांति, शर, युतियां आदिका समय, अनेक स्थानके रविउदय लानेकी विधि, लग्न, दशम आदि कई विषय दिये हैं। इसमें विशेषता यह है कि श्री वैद्यजीने पाश्चात्योंका किसी प्रकार भी आश्रय न लेते हुए भारतीय ज्योतिर्वेत्ताओंके बनाए सूक्ष्म ग्रंथ केतकी ज्योतिर्गणित आदि ग्रंथों द्वारा गणित कर बहुत ही परिश्रम कर उक्त एफेमेरीज प्रकट किया है। भारतमें कई लोग रेफेल्स एफेमेरीज अथवा अमेरिकन एफेमेरीजमें समयान्तर संस्कार देकर इंडियन एफेमेरीज प्रकट करते हैं। किन्तु यह बात पराधीनताकी है और भारतीय ज्योतिष शास्त्रको शोभा नहीं देती है, यह प्रयत्न श्री वैद्यजीका स्तुत्य है। उसमें हस्तदोषसे कहीं भूल होना संभव है; भारतीय विद्वान् बंधु हस्तदोषकी ओर लक्ष्य न दे कर आदर की दृष्टिसे देखेंगे तो भावीमें यही एफेमेरीज विराट् स्वरूप धारण करके अत्यंत सूक्ष्म गणित द्वारा जनताकी सेवा कर सकेगा और लाखों मुद्रिकायें (रुपये) जो प्रति वर्ष परदेश द्वीपान्तरोंमें जाती हैं वे सब भारतमें ही रहा करेंगी।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्द्रग्रहणका संसार पर प्रभाव

[लेखक—श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी सम्पादक श्रीस्वाध्याय]

वर्तमान सं० २००० वि० श्रावण शुक्ला पूर्णिमा रविवार तदनुसार ता० १५ अगस्त १९४३ ई० को किंचिन्न्यून पूर्णग्रास चन्द्रग्रहण होगा। यह प्रशान्त-महासागरका पश्चिमी भाग, अतलान्तक महासागर, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, हिन्दमहासागर, एशिया, पूर्व-दक्षिण यूरोप, दक्षिण-पूर्व अफ्रिका, अमेरिका, यूरोपका पूर्वीभाग और हमारे भारतवर्ष में सर्वत्र दृष्टि गोचर होगा। सूक्ष्म—दृश्य—गणनानुसार रविवारको रात्रिमें भारतीय नवीन प्रचलित (एक घण्टा परिवर्द्धित) स्टेण्डर्ड टाइमसे इस ग्रहण का स्पर्शादि काल निम्न लिखित है।

रात्रिमें स्टेण्डर्ड टाइम	घं०	मि०
स्पर्श (ग्रहण आरम्भ)	०	३१
मध्य	२	१
मोक्ष (ग्रहण समाप्ति)	३	३२

सर्वग्रहण (पर्वकाल) ३ घण्टे १ मिनट का है।

यह स्पर्शादिका समय किसी एक स्थानका नहीं है, अपितु नवीन (परिवर्द्धित) स्टेण्डर्ड टाईम के अनुसार सम्पूर्ण भारतवर्षमें ऊपर लिखे समय पर ही स्पर्श मोक्ष होता हुआ दिखाई देगा। घड़ी रेडियो टाइम वा स्थानीय पोस्ट-आफिससे ठीक मिली हुई होना आवश्यक है। छाद्य छादक कक्षा भेद न होनेके कारण चन्द्रग्रहणका स्वरूप (ग्रास) भी सर्वत्र एक जैसा ही दिखाई देता है। इस सम्बन्ध में विशेष निर्णय अर्थात् चन्द्रग्रहण कैसे कब और क्यों होता है? चन्द्रमा ग्रहण और राहु क्या वस्तु है? इनसे हमारा क्या सम्बन्ध है? ग्रहणमें दान जपादिका विशेष महात्म्य और भोजनादिका निषेध क्यों है? इत्यादि कई महत्त्वपूर्ण ज्ञातव्य बातोंका शास्त्रीय और वैज्ञानिक रीतिसे सप्रमाण विस्तृत विवेचन हम 'श्रीस्वाध्याय' के प्रथम वर्षके दूसरे अङ्क (हेमन्तांक) में 'ग्रहण विवेचन' शीर्षक लेखमें कर चुके हैं। जो सज्जन देखना चाहें वहाँ देख सकते हैं। इस अङ्ककी प्रतियां बहुत थोड़ी शेष हैं। प्रथम वर्षकी पूरी फाइलका मूल्य ३॥) रु० और इस हेमन्ताङ्कका मूल्य १) रु० है।

इस चन्द्रग्रहणकी ग्रास-स्थिति और स्पर्श-मोक्षादि दिशा ज्ञापक चित्र नीचे दिया जाता है। कई पञ्चाङ्गोंमें यह ग्रहण खग्रास लिखा है किन्तु वास्तवमें पूर्णग्रस्त नहीं होगा। दक्षिणकी ओर बहुत थोड़ा चन्द्र-विम्ब शेष रहेगा जो एक श्वेत रेखा-सी दिखाई देगी।

ग्रहण मध्यकाल में (रात्रि दो बजे) ग्रास स्वरूप और स्पर्शादि स्थान प्रदर्शन

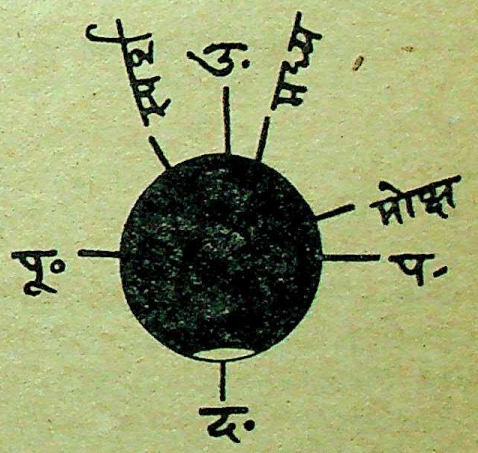

इस ग्रहणका वेध समर्थ धर्मप्राण पुरुषोंको मध्याह्नोत्तर (दिन के) ३ बजकर ३१ मिनटसे और पुत्रवान् गृहस्थियों तथा अशक्त बाल वृद्ध रोगियों-को सायङ्काल ६ बजकर ३१ मिनटसे मानना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए। ग्रहण वेधमें भोजनादि करना निषेध है। ग्रहणमें यदि कोई पवित्र तीर्थ-स्थान मिल जाय तो सर्वोत्तम है। अथवा जहाँ जैसा स्थान उपलब्ध हो वहीं स्नान भगवद्भजन और यथा शक्ति दान करना आवश्यक है। ग्रहणमें देश पात्र द्रव्यकी शंका नहीं करनी चाहिए। भगवान् व्यासने लिखा है।

सर्वं गंगासमं तोयं सर्वे ब्रह्मसमा द्विजाः।
सर्वा भूमिः कुरुक्षेत्रं ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः॥

ग्रहण के समय घरके (गरम या ठण्डे) जलसे ले कर कूप, तड़ाग, झरना, झील, नदी, तीर्थ, समुद्र पर्यन्तमें स्नान करनेका उत्तरोत्तर विशेष माहात्म्य है। यथा—

शीतमुष्णोदकात्पुण्यमपारक्यं परोदकात्।
भूमिष्ठमुद्धृतात्पुण्यं ततः प्रस्रवणोदकम्॥
ततस्ततोऽपि गङ्गाम्बु पुण्यं पुण्यस्ततोऽम्बुधिः।

ग्रहणके स्पर्श होते ही स्नान करके शुद्धासन पर बैठ कर भगवन्नाम जप ध्यानादिमें लग जाना चाहिए। ग्रहणके मध्यमें हवन और देवार्चन होता है। यहाँ अर्धरात्रोत्तर स्टे० टा० १–३० से २–३० पर्यन्त हवनादि कृत्य कर सकते हैं। दान तथा श्राद्धादिका सङ्कल्प २-३० के उपरान्त होना चाहिए, लिखा भी है—

स्पर्शे स्नानं जपं कुर्यान्मध्ये होमं सुरार्चनम्।
मुच्यमाने प्रदातव्यं मुक्ते स्नानं विधीयते॥

राशियोंको शुभाशुभ

यह ग्रहण धनिष्ठा नक्षत्र और वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु, मकर और कुम्भ राशि वालोंको दुःख शोक चिन्तादि अशुभ फलदायक है। मेष, सिंह, वृश्चिक और मीन राशिवालोंको शुभ है। जिन राशियों को यह ग्रहण अशुभ है वे लोग और गर्भवती स्त्रियां ग्रहणका दर्शन न करें; इन्हें कल्याणार्थ भगवद्भजन और यथाशक्ति दान हवनादि अवश्य करना चाहिए।

ग्रहणका संसार पर प्रभाव

श्री वराहमिहिराचार्यके मतसे इस ग्रहणके मास, वार, नक्षत्र, राशि, पर्वेश, खांश, वर्ण, ग्रास आदिके शुभाशुभ फलका निष्कर्ष यह है—

ब्राह्मणादि चारों वर्ण, म्लेच्छ, धनिकवर्ग, अण्डज प्राणि, निन्द्यकर्मा, मांत्रिक, भिषक्, वृद्ध-पुरुष, शस्त्रजीवी, शिल्पज्ञ, कलाविद्, विद्वान्, प्रधानपुरुष, सेनानायक, व्यापारी, योद्धा, काश्मीर, पुलिन्द (म्लेच्छ देश), चीन, यूनान, कुरुक्षेत्र, दिल्ली, गांधार, काबुल, पेशावर, सीमाप्रान्त प्रदेश, मध्य देश, काम्बोज, हिन्दूकुश पर्वत, मद्रास, ट्रावन्कोर, जालन्धर प्रदेश, बङ्गाल, बिहार, आसाम, पूर्वीय युक्तप्रान्त और समुद्रतटवर्ती प्रदेश वासी लोग इस ग्रहणके अनिष्ट-प्रभावसे पीड़ित रहेंगे। चोर, डाकू, लुटेरे अदि आततायी लोगों और युद्ध दुर्भिक्षादिके भयसे प्रजामें आतङ्क वृद्धि हो। संसारमें अवर्षण, जलप्लावन, भूकम्प, आंधी, तूफान, युद्ध, दुर्भिक्ष महामारी आदिके अनेक उपद्रव हों। शरद् ऋतुमें उत्पन्न होने वाले धान्यके नाशसे संसारमें दुर्भिक्ष एवं रोग वृद्धि हो।

ग्रहण मध्यकालीन लग्न कुण्डली

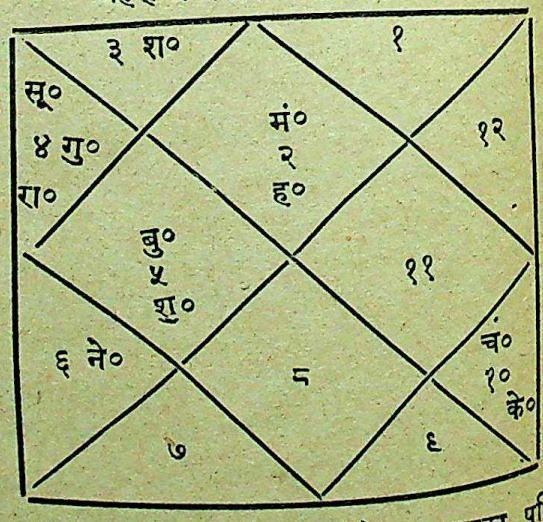

ग्रहण स्थिर लग्नमें हो रहा है अतः इसका परिणाम दीर्घकाल (बहुत समय) पर्यन्त होता रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधिभौतिक संकटोंसे राष्ट्रसम्पत्ति, कृषि (खेती) खनिज-द्रव्य और व्यावहारिक आवश्यक वस्तुओंकी हानि होगी। ग्रहण पृथ्वीतत्त्वराशिमें होनेके कारण भूमिसे उत्पन्न होनेवाले पदार्थ कृषि (फसल) व्यापार और साम्पत्तिक या देशकी आर्थिक स्थिति चिन्ताकारक बनी रहेगी। अधिकारारूढ व्यक्ति एवं राजवर्ग संत्रस्त रहे। लग्नमें मंगल हर्शल योगके कारण सर्वसाधारण जनता और श्रमिक-वर्गको कष्ट अधिक हो। संसारमें सामूहिक असह-योग हड़ताल और यत्र तत्र क्रान्ति हो। संसारके कई प्रसिद्ध पुरुषों पर भयङ्कर आपत्ति आवे; जिनमेंसे कुछ एककी अकास्मिक मृत्यु होना भी सम्भव है। विशेषकर सेनापति, सैनिक, डाक्टर, सर्जन, युद्ध-पोत, व्योमयान, जलयान और विध्वंसक-यानोंके अधिकारी, युद्ध, मारकाट, अग्निप्रलय आदिके लिए अनिष्ट योग है। इसी प्रकार रेलवे कर्मचारी, शास्त्रीय संशोधक, वैमानिक और विक्षिप्त-मस्तक लोगोंको क्षोभ सन्ताप अधिक हो। धन स्थानमें शनि होनेके कारण राज्य कर (टेक्स) आर्थिक स्थिति, व्यापार, धनोत्पादक धन्दे व्यवसाय आदिकी स्थिति समाधान कारक न रहेगी। करोंमें नये-नये उलट फेर होंगे। किसी एकाध बड़े कारखाने या बैंकका दिवाला निकलेगा। वृद्ध मनुष्य, भूस्वामी (जमींदार) कृषक और श्रमजीवियोंको सन्ताप हो। तृतीय स्थानमें सूर्य गुरु राहु होनेके कारण रेलवे मोटर तथा व्योमयान सम्बन्धी दुर्घटनाएं अधिक होंगी। डाक और तार विभागका यातायात सम्बन्ध और व्यवस्था सन्तोषप्रद न रहेगी। देशकी शिक्षण संस्थाएँ, समाचारपत्र, लेखक, प्रकाशक, ग्रन्थकार, न्यायाधीश, वकील, बड़े आढ़ती, धनाढ्य व्यापारी और धार्मिक कार्य करनेवाले लोगोंके लिए यह समय अनिष्ट कारक रहेगा। चतुर्थ स्थानाधिप सूर्य चतुर्थसे व्ययमें और चतुर्थमें बुध शुक्र हैं अतः राजा अधिकारीवर्ग और राष्ट्रकी सुस्थिति एवं उन्नतिके लिए यह समय अनिष्टकारक रहेगा। उच्चवर्ग और सामान्य लोगों (सर्वसाधारण जनता) में मनोमालिन्य हो कर झगड़े बढ़ेंगे। कृषकवर्ग, बौद्धिक परिश्रम करनेवाले, परराष्ट्रिय वकील, कला कौशल सम्पन्न लोग, चित्रकार, गायक, स्त्रियाँ, विवाहोत्सव और नवीन सन्ततिके लिए यह समय संकटग्रस्त रहेगा। पंचमेश पंचमसे व्ययमें और पंचममें नेपच्यून है अतः नाटक गृह (आमोद प्रमोद स्थान) विहार स्थान और विद्यालयोंके लिए अनिष्ट योग है। बच्चोंकी मृत्यु संख्या अधिक हो। किसी उच्चवर्गके मनुष्य पर महान् आपत्ति आवे या मृत्यु हो। जनन संख्या बहुत न्यून हो। संसारमें गुप्त-षड्यन्त्र क्रान्ति राजद्रोह द्रव्य-हानि ठगी धोखेबाजी अकिंचनता (दिवालखोरी) और सामाजिक साम्प्रदायिक क्लेशोंकी घटनाएँ अधिक होंगी। मकर राशिका चन्द्रमा नवम पड़ा है अतः धार्मिक समस्याएँ जटिल हों, अथवा प्रत्येक सम्प्रदाय वा मतमतान्तरोंमें परस्पर कलह हो। समुद्रोंमें मेघ तूफान अतिवृष्टि एवं युद्धादि द्वारा भयङ्कर हानि हो। समुद्र तटवर्ती लोगोंके लिए यह समय महान् अनिष्टकर दिखाई देता है।

जहाँ जहाँ यह ग्रहण दिखाई देगा वहाँ और जर्मनी, पोलैंड, जापान, अमेरिका, इंगलैंड, बेल्जियम, इजिप्ट, अफगानिस्थान, टरकी, बल्गेरिया, ग्रीस तथा भारतवर्षमें विशेषकर उत्तर-भारत, बंगाल, बिहार, आसाम, ब्रह्मदेश, प्रयाग दिल्ली, द्वारका, कृष्णा गौतमी और मध्यदेशमें इस ग्रहणका फल अधिक होगा। ग्रहणका फल प्रायः ६ मास पर्यन्त होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल

"कलयति जगदेष कालोऽतः"

देवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र

[लेखक—श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय']

दृश्यमान समस्त नश्यमान है। दृश्यमानका अर्थ यह नहीं कि जो बाह्य-चक्षुके साथ ही सम्बद्ध हो सकता हो। अपने आपकी कल्पना शक्तिसे जो भी आबद्ध किया जाता है वह सभी पदार्थ मात्र दृश्यमान कहा जा सकता है। कारण सभीका कल्पक मूल अपने आप आत्मस्वरूप है। वह अपने सम्पूर्ण कल्पित वस्तु-भण्डारको साक्षात् देखा ही करता है। इसी कारण आत्माको श्रुतियोंने साक्षी कहा है—"साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च" समस्त कल्पित वस्तु-सम्भार ही संसार कहा जाता है। इसी संसारको अस्थिर होनेके कारण जगत् कहा जाता है। "गच्छतीति जगत्" अतः कहना न होगा कि समस्त संसार चला जाता है तो उसे स्थिर कैसे कहा जाय? उसको कलन करनेके कारण ही आत्मा को काल कहा जाता है। पानीके बुलबुलोंको जिस प्रकार पानी कहनेमें कोई आपत्ति नहीं, उसी प्रकार प्रत्येक कल्पित पदार्थ भी संकुचित दृष्टिसे काल कहा जा सकता है। फिर भी सांसारिक सुव्यवस्थाकी दृष्टि से किसी शक्ति-विशेषको 'काल' कहा गया है। इस शक्तिके ऊपर ही प्रत्येक पदार्थका परिवर्तन निर्भर है। यह काल अपनी इच्छानुसार परिवर्तन करता रहता है। देखिये किसी अनुभवी महापुरुषने कितना सुन्दर कहा है—

कालः खलु विषमबलः परिभवसन्मानदः कालः।
कालः करोति पुरुषं दातारं याचितारं च॥

[कालका बल (शक्ति) असाधारण है। अपमान तथा सम्मान इन दोनोंको देनेवाला काल ही है। काल ही पुरुषको दाता और याचक (मंगता) बनाया करता है।]

लाखों वर्ष भारतीय आर्य दाता प्रसिद्ध थे, किन्तु आज कालने उन्हें याचक बना दिया है। अगणित समयसे समस्त भूमण्डल पर भारत जगद्गुरुत्वके सम्मानसे सम्मानित रहा; किन्तु आज उसे असभ्य जंगली कृषक दीन दरिद्र दास आदि पदोंसे अपमानित होना पड़ रहा है। इन बातोंसे भारतको शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। शक्तिकी उपासनासे विमुख होनेके कारण ही उस शक्तिका अकृपापात्र भारत हो रहा है। शक्तिमान्का अपमान नहीं हुआ करता। शक्तिमान् कभी परमुखापेक्षी याचक नहीं होता, अस्तु।

अहमहमिकासे आहोपुरुषिका (अत्यधिक अभिमानीपन) ग्रस्त आधुनिक राष्ट्रोंको कालके सम्मुख कल क्या करना पड़ेगा इस विषयमें आज कोई क्या कुछ कह सकता है। किन्तु काल सूचक ग्रहोंके चार तथा सम्बन्धोंसे जो कुछ हमें भासित हो रहा है, उसको बहुत संक्षिप्त रूपेण 'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी पाठकोंके समक्ष लेख बद्ध रूपमें उपस्थित कर रहे हैं। इसके पूर्व हम समस्त भारत प्रेमी जनता को आग्रहसे कहना चाहते हैं कि वे राष्ट्रकी त्रिविध शक्तिकी वास्तविक उपासनासे मुख न मोड़ें, यदि अपनी उन्नति चाहते हैं। इस विषयमें श्रीराष्ट्रालोक के शब्दोंमें ही सुनिये—

राष्ट्रकाली राष्ट्रलक्ष्मीस्तथा राष्ट्रसरस्वती।
सेवनीया प्रयत्नेन भोगमोक्षप्रदायिनी॥

[राष्ट्रमें विराजमान काली (अन्याय विनाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति) लक्ष्मी (ऐश्वर्य व्यवस्थापिका शक्ति) सरस्वती (विद्या बुद्धि प्रसारिका शक्ति) की प्रत्येक राष्ट्रियको प्रयत्नसे उपासना करनी चाहिए, कारण यह त्रिविध शक्तिकी उपासना ही व्यावहारिक समस्त सुख स्वातन्त्र्य तथा पारमार्थिक सुख स्वातन्त्र्य (मोक्ष) की देने वाली है।]

इस त्रिविध शक्तिकी यथा विधान उपासना करने वाले अपने आपके कृपाभाजन अवश्य होते हैं। फिर उन्हें सङ्कुचित काल आत्मीयतासे वञ्चित नहीं कर सकता। वर्तमान ग्रहपरिस्थितिको देखते हुए विवश होकर हमें लिखना पड़ रहा है कि भारतके लिए भी कैसे कैसे आकाशीय ग्रहोंके कुयोग आ रहे हैं, उन पर विशेष रूपसे ध्यान दे कर अपनी त्रिविध शक्ति-सञ्चयके लिए अगला निम्नलिखित लेख सावधानी से पढ़ें।

विक्रमकी द्विसहस्राब्दीका यह ऐतिहासिक वर्ष सं० २००० समस्त संसारके लिए कितना भयङ्कर सिद्ध होगा, इसका विस्तृत विवेचन हम 'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्कोंमें पर्याप्त मात्रामें कर चुके हैं। गताङ्क (वसन्ताङ्क) में इसी स्तम्भमें हमने लिखा था कि— "हमें तो भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष मास समस्त संसारके लिए भीषण विनाश सूचक प्रतीत हो रहे हैं" इत्यादि। अब ये भयङ्कर मास सन्निकट आ पहुँचे हैं और 'श्रीस्वाध्याय' का आगामी "नववर्षाङ्क' पाठकोंके हाथोंमें पहुँचनेसे पूर्व ही नभोमण्डलमें कई अशुभ योग घटित हो जाएँगे, जिनका अनिष्ट परिणाम (जन धन विनाशके रूपमें) भूमण्डल पर होना आरम्भ होगा। प्रेस प्रतिबन्धोंके कारण अपनी ओरसे अधिक कुछ न लिख कर उन्हीं कुछ विनाशकारक ग्रहयोगोंका शास्त्रीय दिग्दर्शन मात्र हम यहाँ पाठकोंको करा देते हैं।

(१) पहला अशुभ योग आषाढ़ शुक्ला एकादशीको बना है। इस दिन मङ्गलवार और एकादशी पूर्ण ५१ घटी होनेसे यह दुर्भिक्ष कारक है। यथा—

आषाढ शुक्लैकादश्यां शन्यादित्यकुजैः समम्।
सम्पूर्णतिथिभागश्चेत्तदा दुर्भिक्षमादिशेत्॥

(२) दूसरा अशुभयोग आषाढ शु० १५ शनिवारका है।

उजियाली आषाढकी पूनम निरखी जोय।
वार शनैश्चर जो मिले विरले जीवे कोय॥

(३) तीसरा अशुभयोग इस वर्षमें कर्क संक्रांति और मकर संक्रांतिका एक ही वार (शुक्रवार) में होना है।

कर्क मकर दो बहन हैं बैठे एकहि वार।
तो धरती का पति मरे (वा) पड़े अचिन्ता काल॥

(४) चौथा अशुभयोग श्रावण कृष्ण ३० रविवारको कर्कराशिमें पांचग्रह एकत्र होना है। यह महामारी, राजयुद्ध, देश विप्लव, दुर्भिक्ष, छत्रभङ्ग, परचक्रभय, जननाश, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, उत्पात, भूकम्प, अग्निप्रलयादि उपद्रवोंसे नाना प्रकारका दुःख सूचक है। लिखा भी है—

एकराशौ यदा यान्ति चत्वारः पंचखेचराः।
प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा॥

इसका सप्रमाण विशेष विवरण 'श्रीस्वाध्याय'के प्रथम वर्षके चतुर्थाङ्क (ग्रीष्माङ्क) पृष्ठ ३७ में दिया गया है।

(५) पांचवां अशुभयोग श्रावण शु० १५ रविवारको चन्द्रग्रहणका है। इसका फल इसी अङ्कमें 'चन्द्रग्रहणका संसार पर प्रभाव' शीर्षक लेखमें देखिये।

(६) छठा अशुभयोग श्रावण शु० ११ गुरुवारको मिथुनराशिमें शनिके प्रवेश करने पर आरम्भ होता है। इस शनिके कारण संसारमें भयङ्कर दुर्भिक्ष, पश्चिममें (यूरोप अमेरिका आदिमें) भीषण संग्राम, सर्वत्र क्लेश, हाहाकार। अन्न वस्त्र रुई कपास सूत धातु सोना चांदी लोहा ताम्बा नमक तिल गुड़ अत्यन्त मंहगे और दुष्प्राप्य हो जावें। संयुक्त राज्य अमेरिका बेल्जियम ईजिप्ट लण्डन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरमेनिया त्रिपोली और वेल्स (मेलबोर्न) प्रदेश पर मिथुन राशिका प्रभाव अधिक है, अतः उक्त प्रदेशोंमें शनिका विनाशकारी प्रभाव अधिक होगा। भारतमें अयोध्या मिथिला चम्पा कौशाम्बी (कौसम) कौशिकी अहिच्छत्र गया विन्ध्य अन्तर्वेदी (गंगा यमुनाके बीचका प्रदेश) मेखला कान्यकुब्ज प्रयाग और मध्यदेशमें भी इसका १४ मास पर्यन्त अनिष्ट परिणाम रहेगा। आस्ट्रेलिया फ्रांस स्पेन इटली टर्की पुर्त्तगाल आदि देशों और समुद्रतटवर्ती नगर प्रांतों पर विशेषकर पश्चिम दिशामें शनिकी दृष्टि रहेगी अतः इन प्रदेशोंमें भी विनाशका भीषण ताण्डव होगा। लिखा भी है—

यस्मिन्भागे संस्थितः पापखेट—
स्तद्भागस्था नाशमायान्ति देशाः।
यस्मिन् वर्षे मृगशीर्षे छायापुत्रो यदा भवेत्।
कुञ्जराः प्रलयं यान्ति सर्ववस्त्रमहर्घता॥
भ्रमन्ति सौम्यभे सौरिर्भारते वै विशेषतः।
साकेतं मिथिला चम्पा कौशाम्बि कौशिकी तथा॥
अहिच्छत्रं गया विन्ध्यमन्तर्वेदिश्च मेखलाः।
कान्यकुब्जं प्रयागं च मध्यदेशो विनश्यति॥
मिथुने च यदा सौरिर्दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्।
पश्चिमे दारुणं युद्धं नृपाणां च महद्भयम्॥
मिथुनस्थे सूर्यपुत्रो युद्धं गोदावरीतटे।
भवेच्च नात्र सन्देहो हाहाभूतं जगत्त्रयम्॥
छत्रभङ्गश्च भवति सपापा मेदिनी भवेत्।
सर्वत्र जायते क्लेशो महेशवचनं यथा।
अन्नं महर्घतां याति मनुष्याणां च पीडनम्॥
पूर्वे वा मध्यदेशे वा रस सूत्र महर्घता।
दुर्लभा धातवः सर्वे युद्धं मासाँश्चतुर्दश॥
देशेषु जायते सर्वं सत्यमेतद्वरानने!। इत्यादि॥

१४ मासके अनन्तर मिथुनके शनिका उत्तरार्ध संसारमें कुछ सुख शान्तिकारक एवं शत्रु राष्ट्रोंमें सन्धिकारक सिद्ध हो सकता है।

(७) सातवाँ अशुभ योग इस वर्षमें बृहस्पतिका अतिचारी हो कर मिथुन कर्क सिंह इन तीन राशियों का स्पर्श करना है। इसका फल करोड़ों सैनिकोंके शवों (मृतदेहों) से पृथ्वी पूर्ण हो। राजविग्रह दुर्भिक्ष रोग (महामारी) आदिसे प्रजा संत्रस्त हो उठे। यथा—

अब्दमध्ये यदा जीवः क्रमाद्राशित्रयं स्पृशेत्।
तदा सुभटकोटिभिः प्रेतपूर्णा वसुन्धरा।
पीड़ा व्याधिभयं तत्र दुर्भिक्षं राजविग्रहम्।

इस बृहस्पतिका प्रभाव अफ्रिका, हालेण्ड, चीन, आस्ट्रेलिया, फ्रान्स, भारतवर्ष, मेक्सिको, न्यूजीलेण्ड, मोरक्को, ब्राजील, टर्की, स्पेन, रूस, इङ्गलेण्ड, जर्मनी, डेन्मार्क प्रभृति प्रदेशोंमें विशेषरूपसे होगा। कर्कका बृहस्पति यद्यपि सुख शान्ति एवं सुभिक्षकारक है तथापि राहुके साथ होनेसे इसका शुभ फल बहुत थोड़ा होगा। ताम्बा, पित्तल, लोहा, सूत, रेशमी वस्त्र और अन्नका भाव विशेष तेज हो। इनके संग्रहसे ६ मास पश्चात् पर्याप्त लाभ हो।

(८) आठवाँ अशुभ योग मङ्गलका मार्ग एवं वक्र गतिसे लगातार सात मास पर्यन्त वृषभ राशिमें रहना। श्रावण शु० १० ता० ११ अगस्त १९४३ से चैत्र कृष्ण ३ ता० १३ मार्च १९४४ ई० पर्यन्त वृषभ राशिमें रहेगा। यह सर्व प्रकारके धान्य (अन्न) रुई, कपास, चन्दन और कुंकुमादि वस्तुओंमें तेजी; भयङ्कर युद्ध, राष्ट्रभङ्ग, अनावृष्टि और दुर्भिक्षकारक है। यह मङ्गल आगामी शीतकालमें रुईमें भयङ्कर तेजी कराने वाला है अतः व्यापारीवर्ग सावधान रहें और इस अवसरसे लाभ उठाएँ।

वृषराशौ यदा भौमः सर्वधान्यमहर्घता।
चन्दनं कुंकुमं वस्त्रं कार्पासादि महर्घता॥
वृषे वक्रगतो भौमो राष्ट्रभङ्गं महाभयम्।
अनावृष्टिश्च दुर्भिक्षं कार्यसिद्धिर्विनश्यति॥

इस अवधिमें मङ्गलका परिभ्रमण एवं दृष्टि आयरलेण्ड, पर्शिया, इटली, फ्रान्स, आस्ट्रेलिया, स्पेन, मोरक्को, ब्राजील आदि प्रदेशों और इनके समीपवर्ती प्रान्तों पर रहेगी अतः इन प्रदेशोंमें अधिक अनिष्ट होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(६) नवाँ अशुभ योग शुक्रका मार्ग एवं वक्रगति से लगातार चार मास पर्यन्त सिंहराशिमें रहना। आषाढ़ कृ० १३ बुधवार ता० ३० जून १९४३ से कार्तिक शु० ५ मङ्गलवार ता० २ नवम्बर पर्यन्त शुक्र सिंहराशिमें रहेगा, यह कहीं अतिवृष्टि और कहीं अनावृष्टिसे कृषिका नाश करेगा। अन्न, सुवर्ण और लाल रङ्गकी प्रत्येक वस्तुमें महँगाई, राजविग्रह, पशु पीड़ा, राजवर्गमें पीड़ाकारक है। मनुष्यगण नक्षत्रमें शुक्र अस्त हो रहा है यह रोमपत्तन (इटली) का अग्निकाण्ड युद्ध विग्रहादि द्वारा पतनका द्योतक है। द्रविड़, मद्रास, बम्बई, बङ्गाल, आसाम, सिन्ध, सीमाप्रान्त और पञ्जाबकी जनताको विशेष कष्ट हो। उक्त प्रान्तोंमें असहयोग, हड़ताल, वा भांति भांतिके हुल्लड़ उत्पन्न हों, प्रत्येक वस्तुकी दुष्प्राप्यता, अर्थसङ्कट और रेजगारीके अभावसे प्रजामें असन्तोषकी वृद्धि हो।

मघा च पूर्वफाल्गुन्यां तथा चोत्तरफाल्गुनी।
महावृष्टिर्धान्यनाशो पशुपीड़ा प्रजायते॥
दैत्यगुरुर्यदा सिंहे हेम रक्तं चतुष्पदः।
धान्यानि च महर्घाणि नाशं याति च वारिदः॥
वक्रगस्वल्पजलजा राजविग्रहकारकाः।
सिंहे पीड़ा भूपवर्गे तथाऽनावृष्टिजं भयम्॥इत्यादि

यद्यपि आरम्भके बताये हुए तीन योग पहले भी आ चुके हैं, तथापि इस वर्षमें आगे पञ्चग्रहयोगादि ६ अशुभ योगोंके आजानेसे इनका अशुभत्व विशेष बढ़ गया है। इस प्रकार इतने अशुभ योगोंके साथ मङ्गल गुरु शुक्र शनि राहुकी उक्त राशियोंमें ऐसी स्थिति सैकड़ों वर्षोंमें नहीं मिलेगी, अस्तु।

सारांश

उक्त अशुभ योगोंका सारांश यह है कि कर्क संक्रान्तिके अनन्तर समस्त संसारमें विशेषकर यूरोप भूमध्यसागर प्रशान्त-महासागर जापान जर्मनी रूस इंगलैंड तथा भारतके दूर-पश्चिम एवं सुदूरपूर्व के राष्ट्रोंमें भयंकर नर-संहार और सम्पत्तिका विनाश होना आरम्भ होगा। इन आनेवाले मासोंमें संसार में अश्रुतपूर्व आश्चर्यकारक घटनाएँ घटित होंगी। रणचण्डीका भीषण अट्टहास होगा। सर्वत्र अशान्ति और असन्तोषकी ज्वाला धधकेगी। दुर्भिक्ष अराजकता और रोग आदि उपद्रवोंके कारण प्रजा में त्राहि-त्राहि मचेगी। संसारमें सैनिक-शासन या व्यक्तितन्त्रकी शोषणनीतिसे प्रजा संत्रस्त होकर संघर्ष क्रान्ति वा आततायीपन पर उतारू होगी। अत्याचार लूटमार रक्तपातकी दुर्घटनाएँ अधिक होंगी।

फ्रांस, जर्मनी, इटली, स्विटजरलैंड, अफगानिस्तान, बलूचिस्तान, जापान, ग्रीस, आस्ट्रिया, अमेरिका, तुर्किस्तान, बंगाल और उत्तर भारतमें भूकम्पादि आधिभौतिक उपद्रव की भी सम्भावना है। मध्य एशिया उत्तर अमेरिका रूस और भारतके किसी भागमें जलप्रलय झंझावातसे बहुत हानि होगी। ऋतु वैपरीत्यके कारण भारतवर्ष यूरोप एशिया तथा रूसमें असामयिक पर्जन्य योग (वर्षा) से कृषिकी हानि होगी तथा सांसर्गिक रोग बढ़ेंगे। जल स्थल नभोमार्गकी दुर्घटनाएँ अधिक होंगी और युद्धमें मृत्यु-संख्या बढ़ेगी। जापान चीन यूरोप एशिया अमेरिकादि प्रदेशोंमें धूमकेतु दर्शन हो। श्रावणके अनन्तर भारतीय प्रजामें भी भांति-भांति की अशांति उत्पन्न होगी। भारतीय राजनीतिमें विचित्र प्रकारका उलटफेर होगा। मिथुनके शनिमें ही एक बार भारतको अनिच्छापूर्वक युद्धक्षेत्र बनना पड़ेगा, इससे देशमें बड़ी अशांति उत्पन्न होगी। राजनैतिक गति-अवरोध भयङ्कर रूप धारण करेगा। अन्न, वस्त्र, रुई, सुवर्ण, चांदी, लोहा, घृत तैलादि पदार्थोंमें अत्यन्त महंगाईके योग बन रहे हैं, जनता सावधान रहे।

ग्रहयोग तो बड़े भयङ्कर विनाशसूचक हैं। यदि भगवत् कृपासे आषाढ़ शु० १५ को वायुका शकुन अच्छा रहा तो इनका अनिष्ट परिणाम बहुत थोड़ा रह जावेगा, अन्यथा घोर विप्लव होगा। लिखा भी है —

यदा श्रेष्ठतमाऽऽषाढ़ी ग्रहयोगातिदारुणा।
तदाऽनावृष्टिर्न दौष्ट्यं व्याधिश्च विग्रहोऽपि वा॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[जिस वर्षमें ग्रहोंका योग बहुत अशुभ हो परन्तु यदि आषाढ़ी पूर्णिमा (वायु बादल आदिसे) श्रेष्ठ हो जावे तो अनावृष्टि दुःख रोग युद्ध विग्रहादि अशुभ फल उस वर्षमें अधिक नहीं होता।] अतः संवत्का शुभाशुभ फल जाननेके लिए आषाढ़ी पूर्णिमाको वायु-परीक्षा भलीभांति करना चाहिए।

वायु परीक्षा

आषाढ़ी पूर्णिमाको वायु देखनेके लिए क्षीर (दूधवाले) वृक्षके दश हाथके दण्ड पर महीन वस्त्र की ५ हाथ लम्बी ध्वजा बांधकर (यदि ऐसा दण्ड और महीन वस्त्र न मिल सके तो लम्बे बांस पर सूत के धागेसे रुईकी पूणी बांधकर) नगरके पूर्व वा उत्तरमें कहीं समतल भूमि पर खड़ी कर (गाड़कर) के इन्द्र वरुण तथा ध्वजाका पूजन करके उसके द्वारा सायंकालको वायु परीक्षा करे। ध्वजाको अभिमंत्रित करनेका मन्त्र यह है।

"ॐ सत्यदेवते ! सत्यवादिनि ! ध्वजरूपधरे ! ह्येहि ॐ ह्रां ह्रीं ह्रः सत्यवादिनि स्वाहा ॥"

आषाढ्यां भास्करास्ते सुरपतिककुभौ वातिवाते सुवृष्टिः।
शस्यध्वंसं प्रकुर्याद्दहनदिशि यदा मन्दवृष्टिर्यमेन ॥
नैर्ऋत्यां शस्यनाशो वरुणबहुजलो वायुना वायुकोपः।
कौबेर्यां शस्यपूर्णा भवति वसुमती तद्वदीशानकोणे ॥

[आषाढ़ी पूर्णिमाके दिन सूर्यास्तके समय यदि वायु पूर्वका हो तो वर्षा श्रेष्ठ, अग्निका हो तो कृषि (खेतियों) की हानि, दक्षिणका हो तो वर्षाकी कमी, नैऋत्यका हो तो खेतियोंका नाश, पश्चिमका हो तो वर्षा अधिक, वायव्यका हो तो वायुका जोर, उत्तर और ईशानका हो तो कृषि (उपज) वृद्धि सुभिक्ष जगत् में आनन्द। वायु जोरका हो तो पूर्ण, साधारण हो तो मध्यम और अल्प हो तो थोड़ा फल जानें। आषाढ़ शु० पूर्णिमाको रात्रिमें चन्द्रमा निर्मल रहे अर्थात् बादल न हो तो दुर्भिक्ष पड़े।

जिन जिन प्रान्त या नगरोंमें आ० शु० १५ को सूर्य अर्धास्तके समय पूर्व उत्तर पश्चिम या ईशान की वायु चलेगी उन उन प्रान्त वा नगरोंमें उपर्युक्त अशुभ ग्रहयोगोंका अनिष्ट फल बहुत न्यून होगा और जहाँ अग्निकोण दक्षिण नैऋत्य और वायव्य कोण की वायु चलेगी वहाँ भयङ्कर विप्लव होगा।

विज्ञ पाठक महानुभाव आ० शु० १५ शनिवार ता० १७ जुलाईको ठीक सूर्यास्तके समय अपने-अपने नगरमें उक्त प्रकारसे वायु परीक्षा अवश्य करें और इसकी सूचना यदि वे हमें भी दे सकें तो उनकी महती कृपा होगी।

शिवमस्तु सर्वजगतः ॥

सूर्यका सायन कर्क राशिमें प्रवेश

[लेखक— गणकभास्कर श्री पं० सखाराम पुरुषोत्तमजी जोशी शास्त्री]

आषाढ़ कृ० ५ मङ्गलवार ता० २२ जूनको मध्याह्न समय सायन तुला लग्नमें सूर्यका सायन कर्कराशिमें प्रवेश हुआ है। स्थानाभावके कारण लग्न कुण्डली और ग्रहोंका गणित न दे कर केवल इसका शुभाशुभ परिणाम ही यहाँ दिया जा रहा है —

लग्नेश शुक्र एकादश स्थानमें और दशम स्थान में कर्कका गुरु है अतः संसारमें किञ्चित् शान्ति तथा समयानुकूल वर्षा हो, जिससे धान्यकी उत्पत्ति अच्छी होती रहे। राजवर्ग तथा अधिकारीवर्गके लिए यह तीन मासका समय बड़े महत्त्वका है। व्यापारीवर्गको पर्याप्त लाभ हो, युद्ध सामग्री प्रचुर परिमाणमें निर्माण हो। सामाजिक शिक्षामें तीव्र मतभेद हो कर जन समाजमें अधिकतर लड़ाई झगड़े होते रहें। घरघर स्त्रियोंमें कलह वृद्धि हो। दशमेश चन्द्रमा निर्बल हो कर कुम्भमें बैठा है अतः राजघराने तथा अधिकारीवर्गको महा आपत्तिन्योंका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान विश्वव्यापी संग्राम और ज्यौतिष

[लेखक— श्री पं० विशुद्धानन्दजी गौड़ ज्यौतिषाचार्य]

सत्वंरजस्तम इति प्रकृतेर्गुणास्तै—
र्युक्तः परः पुरुष एक इहास्य धत्ते।
स्थित्यादये हरिविरञ्चिहरेति संज्ञाः
श्रेयांसि तत्र खलु सत्वतनोर्नृणां स्युः॥

सत्व, रज, तम, ये तीन प्रकृतिके ही गुण हैं, इनसे मिला हुआ एक ही परम-पुरुष भगवान् इस संसारकी उत्पत्ति, स्थिति और नाशके लिए ब्रह्मा, विष्णु और शिव ये तीन रूप धारण करता है। भगवान्ने स्वयं श्रीमद्भगवद्गीतामें—

"विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत्।"

यह कहा भी है कि समग्र भूमण्डलको मैं एक अंश मात्रसे धारण किये हुए स्थित हूं।

"ईश्वरः सर्वभूतानां हृदेशेऽर्जुन तिष्ठति।"

सब प्राणियोंके हृदय देशमें मैं स्वयं विराजमान हूँ। इन उक्तियोंसे यह तो मानना ही पड़ेगा कि उस जगन्नियन्ता भगवान्की इच्छाके विना एक पत्ता भी इधरसे उधर हिल नहीं सकता। भगवान्का प्राकृतिक विधान ही इसमें कारण है। प्रकृति किस रूप में नृत्य करेगी? भगवान् कब कब अपनी प्रकृतिके अनुरूप अपने विधानको किस रूपमें कैसा चलावेंगे? इसका पता किसी अंशमें हुआ है तो ग्रहोंकी गति विद्या तथा "चक्षुष्मत्ता तु शास्त्रेण" इस सिद्धान्तसे शास्त्रज्ञानसे ही चल सकता है। प्रस्तुत शताब्दीके इस विधानकी समालोचना ग्रहोंकी गति-विद्याके विशिष्ट विद्वानोंने 'श्रीस्वाध्याय' में बराबर की है। वराहमिहिर दैवज्ञकी बृहत्संहिताके विचारांशोंके अनुसार शुक्र ग्रहके मघा नक्षत्र पर और बृहस्पतिके पुष्य नक्षत्र पर होनेसे राजा लोग शत्रु रहित होते हैं; प्रजामें निरोगता तथा शान्ति होती है। पुष्य नक्षत्रमें गुरुकी स्थिति और मघा नक्षत्र पर शुक्रका भोग यद्यपि आषाढ़में आजाता है। इस विचारांशसे कुछ समय शान्ति एवं सुधारका प्रतीत होगा। 'हेमन्ताङ्क' के लेखमें यह भी मैंने स्पष्टीकरण किया है कि आगे कार्तिकसे समय कुछ दूषित होगा, उस समय तेरह दिनका पक्ष भी रहेगा और भौम शनिकी युति भी दोषकारक बनेगी। यद्यपि बहुतसे दैवज्ञोंका यह मत भी है कि श्रावणसे कुछ समय सुधारका होगा। तथापि मेरे विचारमें वराहमिहिराचार्यके सिद्धान्तको देखते हुए—

रविरविसुतभोगमागतं क्षितिसुतभेदनवक्रदूषितम्।
ग्रहणगतमथोल्कयाहतं नियतमुषाकर पीडितं च यत्॥
तदुपहतमिति प्रचक्षते प्रकृतिविपर्य्ययपातमेव वा।
निगदितपरिवर्गदूषणं कथित विपर्य्ययगं समृद्धये॥

सामना करना पड़े। सेना और सेनापतियोंमें भयङ्कर मत विरोध हो। परराष्ट्र व्यापार वृद्धि हो। पार्लियामेण्टमें महत्त्वपूर्ण चर्चाएँ चलें। यात्रा सामग्री तथा परदेश जानेवाले लोगोंकी संख्यामें वृद्धि हो और साथ ही यातायात सम्बन्धी कष्ट भी। देशमें स्वास्थ्य सुख शान्तिकी छायामें बैठनेका सर्वजनता मिलकर विचार करे। सामाजिक स्थिति समाधान कारक न हो कर उसमें तीव्र मतभेद होने लगेंगे। अधिक वर्षाके कारण समुद्रोंमें तूफान उत्पन्न हो कर जन धनकी बहुत हानि होगी। अधिकारी वर्गके अधिकारोंमें न्यूनता होगी। राजकीय परिस्थितिमें एकाएक उलटफेर होनेकी सम्भावना है। उच्चवर्ग तथा राजपरिवारमें मृत्युसंख्या अधिक हो। रेलवे दुर्घटनाएं हों। वैमानिक सामग्रीमें वृद्धि हो। आर्थिक स्थितिमें ठगी गुप्त षड्यन्त्र राजद्रोह आदि की दुर्घटनाएँ अधिक हों। भौतिक उत्पातकी भी सम्भावना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नक्षत्र व्यूह विचार विमर्शमें जो नक्षत्र सूर्य और शनिसे भुक्त होवे, मङ्गलके भेदन या वक्रसे दूषित होवे, ग्रहण गत होवे अर्थात् जिस नक्षत्र पर ग्रहण होवे या जो नक्षत्र उल्कासे हत होवे वे नक्षत्र उपहत या प्रकृति-विपर्य्ययगत या वारिवर्गदूषण अथवा विपर्य्ययगत कहलाते हैं। इस वर्षमें धनिष्ठा नक्षत्रके द्वितीय चरणमें ग्रहण है। नक्षत्र व्यूह रचनामें धनिष्ठा नक्षत्रके अधिकारमें —

वसुभे मानोन्मुक्ताः क्लीवाश्चलसौहृदाः स्त्रियांद्वेष्याः।
दानाभिरता बहुवित्तसंयुताः शमपराश्च नराः॥

अर्थात् मान मर्यादा हीन, क्लीव, चञ्चल, सुहृदता वाले, स्त्री द्वेषी, दानरत, धनी मानी व्यक्ति, तथा शान्तिपरायण राजा लोग हैं। ये पदार्थ धनिष्ठा नक्षत्रसे सम्बन्ध रखने वाले हैं। इसका आशय यह है कि वर्षमें समस्त भूमण्डलमें क्रान्ति तो है ही। उसमें कोई भी देश, कोई भी प्रान्त वा कोई भी व्यक्ति ऐसा न बचेगा जिसको उक्त सामयिक दोष जन्य परिस्थितिका अनुभव न करना पड़े। कितना भी कोई शान्तिपरायण हो, निस्पृह हो, परस्पर किसीके भी हानि या लाभसे सम्बन्ध रखने वाला न हो, तो भी स्वभावसे दोषकारक परिस्थितिमें आकर उसे भी क्लेशका— अशान्तिका—अनुभव करना ही पड़ेगा।

अन्य विभिन्न देशोंकी स्थिति विचार चर्चाको छोड़िये।

बहुलास्थे पीड्यन्ते सौरेऽन्युपजीविनश्च भूपाश्च।
रोहिण्यां कौशलमद्रकाः पाञ्चाल शाकटिकाः॥

नक्षत्र व्यूह विचारविमर्शमें रोहिणी नक्षत्रके समस्त मृगशिरा नक्षत्रके प्रथम चरणसे शनिके सम्बन्धित होने पर शनि भौमकी युतिका सम्बन्ध भी उक्त व्यूह रचनासे होनेके कारण कौशल, मद्र, काशी, पाञ्चाल देश तथा शकट (छकड़ों) से जीविका करने वाले पुरुषोंको। मृगशिरामें वत्स देश आर्य-पुरुष तथा मध्य देश वासियोंको विशेष पीड़ा होती है। प्रायः समस्त भारतवर्षमें न्यूनाधिक रूपसे अशान्तिका अनुभव अवश्य होगा। अब समयका विचार शेष रहा। यद्यपि शताब्दीका यह समग्र वर्ष ही सब प्रकारसे अशान्तिमय है, महर्घतासे ही प्रत्येक व्यक्ति कराल कलिकालका असाधारण अनुभव कर ही रहा है। तो भी सब विचारांशोंको देखते हुए हमारे विचारमें श्रावणसे कार्तिक तक का समय देशके लिए साधारण ही रहेगा। और दो अथवा तीन प्रधान राष्ट्रोंमें वराहमिहिरके मतानुसार निर्मत्सरता तथा स्नेह अवश्य हो जाना चाहिये। एवं कार्तिक तक समय ठीक ठीक स्थितिमें रहना चाहिए। वस्तु महर्घतामें भी कुछ अन्तर पड़ना चाहिए और वह भी साधारण ही जानना चाहिए। फिर कार्तिकसे शताब्दी परिवर्तनकाल तक समयकी स्थिति अच्छी नहीं। आगे कई एक नियम प्रमाण तथा विचारांशोंसे समय अनिष्ट है। हमारे भारतके भूभागमें ही अन्न आदिकोंके होते हुए अन्नका दुर्भिक्ष रहेगा। कई एक उक्तियों से १) सेर कनक अर्थात् गेहूं इस वर्षमें हो जावे तो कोई आश्चर्य नहीं। यह स्थिति कार्तिक शुक्लपक्षसे ही जँचती है।

इस समय चन्द्रग्रहणसे पूर्व श्वेत वस्तुएँ चांदी, रुई, कपड़ा, सूत और अन्न संग्रह करने वाले व्यापारी आगे लाभ उठाएँगे। विशेष विचार तथा ऐसे औत्पातिक अवसरोंमें क्या क्या उपादेयता अपेक्षित है यह हम आगामी अङ्कमें लिखेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

[लेखक—श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी, सम्पादक श्रीस्वाध्याय]

आषाढ़	शुक्ल	१०	सोमवार	ता० १२ जुलाई	श्रीस्वाध्यायसदन स्थापना-दिवस
,,	,,	११	मंगलवार	ता० १३ ,,	देवशयनी एकादशी व्रत चतुर्मासारम्भ
,,	,,	१३	गुरुवार	ता० १५ ,,	प्रदोष व्रत
,,	,,	१४	शुक्रवार	ता० १६ ,,	कर्क संक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर
,,	,,	१५	शनिवार	ता० १७ ,,	व्यासपूजा, वायु-परीक्षा, सत्यव्रत
श्रावण	कृष्ण	३	मंगलवार	ता० २० ,,	श्रीगणेश ४ व्रत
,,	,,	११	मंगलवार	ता० २७ ,,	कामिका एकादशी व्रत
,,	,,	१३	गुरुवार	ता० २९ ,,	प्रदोष व्रत
,,	,,	३०	रविवार	ता० १ अगस्त	हरियाली अमावस्या
श्रावण	शुक्ल	१	सोमवार	ता० २ ,,	चन्द्रदर्शन, नक्तव्रतारम्भ
,,	,,	५	शुक्रवार	ता० ६ ,,	उपाकर्म, ऋषितर्पण, नाग ५
,,	,,	६	शनिवार	ता० ७ ,,	श्रीकल्कि जयन्ती
,,	,,	११	गुरुवार	ता० १२ ,,	पुत्रदा एकादशी व्रत
,,	,,	१२	शुक्रवार	ता० १३ ,,	प्रदोष व्रत
,,	,,	१५	रविवार	ता० १५ ,,	चन्द्रग्रहण, रक्षाबन्धन भद्रोपरान्त मध्याह्नोत्तर ३।२७उप०
भाद्रपद	कृष्ण	२	मंगलवार	ता० १७ ,,	सिंह संक्रान्ति मु० १५ पुण्यकाल १२।३ यावत्
,,	,,	३	बुधवार	ता० १८ ,,	श्रीगणेश ४ व्रत कज्जली ३
,,	,,	५	शुक्रवार	ता० २० ,,	चन्दनषष्ठी
,,	,,	७	रविवार	ता० २२ ,,	श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत स्मार्त्तोंके लिए, चन्द्रोदय नवीन स्टे० टा० घं० ११ मि० ५२
,,	,,	८	सोमवार	ता० २३ ,,	जन्माष्टमी व्रत वैष्णवोंका, चन्द्रोदय नवीन स्टे० टा० घं० १२ मि० ४०
,,	,,	९	मंगलवार	ता० २४ ,,	गुग्गानवमी
,,	,,	११	गुरुवार	ता० २६ ,,	अजा एकादशी व्रत
,,	,,	१२	शुक्रवार	ता० २७ ,,	वत्सद्वादशी
,,	,,	१३	शनिवार	ता० २८ ,,	शनिप्रदोष व्रत
,,	,,	३०	सोमवार	ता० ३० ,,	सोमवती अमावस्या, कुशोत्पाटिनी, सतीपूजन
भाद्रपद	शुक्ल	२	बुधवार	ता० १ सितम्बर	चन्द्रदर्शन
,,	,,	३	गुरुवार	ता० २ ,,	हरितालिका ३ मंगला गौरी व्रत, वाराहजयन्ती
,,	,,	४	शुक्रवार	ता० ३ ,,	पत्थर (कलङ्क) चौथ, चन्द्रदर्शन निषिद्ध
,,	,,	५	शनिवार	ता० ४ ,,	ऋषिपञ्चमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाद्रपद शुक्ल ८ मंगलवार ता० ७ सितम्बर श्रीदधीचि जयन्ती, दूर्वाष्टमी, श्रीराधा जयन्ती, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ

" " ११ शुक्रवार ता० १० " पद्मा एकादशी व्रत
" " १२ शनिवार ता० ११ " शनिप्रदोष व्रत, वामन द्वादशी
" " १४ सोमवार ता० १३ " अनन्त चतुर्दशी सत्यव्रत
" " १५ मंगलवार ता० १४ " प्रौष्ठपदी श्राद्ध
आश्विन कृष्ण १ बुधवार ता० १५ " महालया (पितृपक्ष) रम्भः
" " ४ शुक्रवार ता० १७ " कन्या संक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल १४ घ० उप०, श्रीगणेश ४ व्रत
" " ८ मंगलवार ता० २१ " श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्ति, जीवित्पुत्रिका व्रत
" " ९ बुधवार ता० २२ " सौभाग्यवती श्राद्ध
" " ११ शनिवार ता० २५ " इन्दिरा एकादशी व्रत
" " १२ रविवार ता० २६ " प्रदोष व्रत
" " १४ मंगलवार ता० २८ " शस्त्राग्निविषादि हतानां श्राद्धम्
" " ३० बुधवार ता० २९ " महालय समाप्ति, सर्वपितृ विसर्जन
आश्विन शुक्ल १ गुरुवार ता० ३० " शारदीय नवरात्रारम्भ, मातामह श्राद्ध, घट स्थापन
" " २ शुक्रवार ता० १ अक्टूबर चन्द्रदर्शन
" " ५ सोमवार ता० ४ " शान्ति पञ्चमी, ललिता ५
" " ७ बुधवार ता० ६ " श्रीसरस्वती-आवाहन
" " ८ गुरुवार ता० ७ " श्रीसरस्वती पूजन, बलिदान, महाष्टमी
" " ९ शुक्रवार ता० ८ " श्रीसरस्वती विसर्जन, महानवमी, विजयादशमी (दशहरा) राजचिह्न पूजा, शमीवृक्षपूजा, सीमोल्लंघन।

महापुरुषोंकी जयन्तियां, निर्वाणदिन और प्रसिद्ध मेले

श्रावण कृष्ण ५ गुरुवार ता० २२ जुलाई स्व० लोकमान्य तिलक जयन्ती
" शुक्ल ७ रविवार ता० ८ अगस्त श्री० गो० तुलसीदास जयन्ती
" " ८ सोमवार ता० ९ " मेला श्रीनयनादेवी व चिन्तपूर्णी
" " १५ रविवार ता० १५ " काश्मीरमें श्रीअमरनाथ यात्राका मेला
भाद्रपद कृष्ण १४ रविवार ता० २९ " स्व० महाराणी अहल्याबाई पुण्यदिन
" शुक्ल १२ शनिवार ता० ११ सितम्बर वामन १२ मेला अम्बाला पटियाला
" " १० गुरुवार ता० ९ " श्री रामकृष्ण परमहंस पुण्यदिन
" " १४ सोमवार ता० १३ " मेला छपार अनन्त १४, श्री १०५ मान् रावराजा कैप्टेन गिरिधारीशरणसिंह जन्मोत्सव
आश्विन कृष्ण १ बुधवार ता० १५ " श्री १०५ मान् बघाट नरेश जन्मोत्सव
" शुक्ल ३ शनिवार ता० २ अक्टूबर श्री महात्मा गांधी जन्मदिन
" " ६ मंगलवार ता० ५ " मेला माईसरखाना
" " ९ शुक्रवार ता० ८ " मेला दशहरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रैमासिक व्यापार-चन्द्रिका

[लेखक—ज्योतिषरत्न दैवज्ञमणि श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी ज्यौतिषी]

[विद्वान् लेखक मुरार केण्ट (ग्वालियर) के सुप्रसिद्ध ज्यौतिषी हैं। अपनी अनुभूत "त्रैमासिक व्यापार चन्द्रिका' भेजकर जहां आपने हमें सहयोग दिया वहां हमारे व्यापारी पाठकोंको भी पर्याप्त लाभ पहुंचाया और भविष्यमें भी पहुंचाते रहेंगे ऐसी पूर्ण आशा है। व्यापारियोंके सुविधार्थ आपके कुछ प्रचलित अहिन्दी शब्द हमने ज्योंके त्यों रक्खे हैं। ग्रहयोगोंके समयका उत्तरदायित्व पूर्णरूपेण विद्वान् लेखक पर ही है। सम्पादक]

प्राचीन कालसे भारतमें फलित ज्योतिषका प्रचार है। यहींसे अन्य देश वालोंने फलित ज्योतिष में जानकारी प्राप्त की थी। फलितके प्रताप ही से यहाँ वाले त्रिकालज्ञ माने जाते थे। इस विद्याका एक समय इस देशमें पूर्ण प्रचार था, जिसके कारण अब भी करोड़ों मनुष्योंका विश्वास वैसा ही बना है। किन्तु वर्तमान समयमें (तेजीमन्दीके) भविष्यको शत प्रतिशत बतलाने वाली विद्या अनेक कारणोंसे शोचनीय दशाको प्राप्त हो रही है। यह हमारे लिए कुछ कम लज्जाकी बात नहीं है। जब तक हम इसके अवनति होनेके द्वारोंको नहीं रोक देंगे तब तक यह फिर उन्नतिको प्राप्त न होगी और न उस समय तक फलित ज्योतिषको असत्य बतलाने वालों ही के मुख बन्द करनेमें पूर्ण सफल हो सकेंगे। इसके समर्थनमें मुख्य बात यह है कि आजकल देशी पञ्चाङ्गोंकी गणित पर सहसा विश्वास करनेका अवसर नहीं है। कारण यह है कि वे प्रायः स्थूलगणित द्वारा तैयार किये हुए होते हैं और उत्तम ज्योतिर्विदोंका मत है कि ३६० वर्ष के बाद उदय, अस्त, वक्र, मार्ग, राशिचार, ग्रहण आदिमें बहुत अन्तर हो जाता है। अतः देशी पञ्चाङ्गोंके भरोसे पर अमुक योग बना समझ कर उसके आधार तर तेजी मन्दी वा सुभिक्ष दुर्भिक्षका फलादेश लिख दिया जाता है। पर यदि वह योग वास्तवमें आकाशमें बना ही न हो तो उसके ऊपर कहा हुआ फलादेश क्योंकर सही मिल सकता है ? फलितके ज्योतिषियोंको एक सलाह है कि वे केवल अपने देशी स्थूल गणितके पञ्चाङ्गोंके भरोसे पर ही योग बनानेका निश्चय न करें, अपितु नवीन वेधतुल्य सूक्ष्म दृग्गणितानुसार बने हुए पञ्चाङ्गोंकी सहायता लें, जिससे भ्रम न रहे। इसके अनुसार मैं त्रैमासिक व्यापारिक चमत्कारी योगोंका उल्लेख करता हूं।

"कर्कस्थिते चन्द्ररिपौ धातवो दुर्लभो मतः
सुराचार्यः संयोगात् विपणौ हीनदशा भवेत्।"

शास्त्रमें लिखा है कि कर्क राशि पर राहु हो तब सोना, चांदी, तांबा आदि धातु बहुत तेज हो जाते हैं और जब बृहस्पतिसे राहुका संयोग हो जावे तो व्यापारमें भीषण हलचल और कायापलट कर देता है। यह योग भयानक फलको देने वाला है। रुई में २००) टके मन्दी हो कर १००) टके तेज। सूत एक्सचेञ्जमें २१०) मन्दी हो कर १२०) टके तेज। सोना २०) टके मन्दा हो कर ४०) टके तेज। चांदी ३०) टके मन्दी हो कर ४५) टके तेज। अलसी ४) टके मन्दी होकर ८) टके तेज। कपड़ा ½ मन्दा हो कर ⅓ तेज। इस त्रैमासिक व्यापारमें (रुई, सूत, सोना, चांदी, अलसी) ये पांच वस्तुओंके स्टोक रखने वाले फार्मके फार्म फेल हो जावेंगे। यह योग सं० १९५४, सं० १९६०, सं० १९७६ और १९९६ के पौषमें बना था, वहाँ शतप्रतिशत सही उतरा। राहु गुरुका योग विचित्र महत्त्वका फलकारी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेजी मन्दी फलप्रदर्शक ग्रहयोग

ता०	घं० मि०	ग्रहयोग		व्यापारिक-फल
११ जुलाई	६।४७	मं० गु०	केन्द्र	सोना, तांबा और चांदी खास वजहसे मंदीका मुलाहिजा करेगी।
१३ ,,	१।५३	चं० रा०	केन्द्र	मुनाफा मिल रहा है तो रुई और चांदीका स्टाक कम करो।
१६ ,,	१८।३५	मं० श०	द्विर्द्वा०	अलसीके इरादे आगे बढ़नेसे बाज़ आएंगे।
१७ ,,	८।३८	बु० शु०	,,	कपड़ेके स्टोक वाले क्रॉसका आसरा लेंगे।
२० ,,	१८। ५	बु० ने०	तृती०	गल्लेकी तेजी, मंदीका इंतजार करेगी।
२३ ,,	१७। ४	सू० ने०	,,	रुई और सूतमें हलचल पैदा होगी।
२७ ,,	५।४६	मं० बु०	केन्द्र	सफेद वस्तुके भाव कंट्रोलका मुलाहिजा करेंगे।
३१ ,,	२१।३०	सू० श०	द्विर्द्वा०	अफवाहोंके आधार पर तेजीका भरोसा मत करना। रंगीन कपड़े और काले लोहेमें खास तेजी बनी रहेगी।
१ अगस्त	०।२७	मं० श०	केन्द्र	भयानक घटबढ़की पवन ता० १ से प्रारम्भ होगी।
३ ,,	२२।३७	चं० ह०	,,	स्टाक मार्केटकी मजबूती सुस्त बन जावेगी।
४ ,,	७। ६	मं० शु०	त्रिकोण	खांड, सूतके साथ मूंगफली ऊंचाईका इरादा करेगी।
७ ,,	१६।२४	गु० ह०	तृती०	चांदी, सोना, मिलशेअर एक भड़का दिखाना चाहेंगे।
६ ,,	१६।३६	सू० रा०	युतिः	रुई, सूत, अलसीके स्टोक वाले दिवाला आऊट करेंगे।
१० ,,	१६।१३	बु० ह०	केन्द्र	चावलकी तेजी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारकी दलील है।
१८ ,,	३।४६	बु० शु०	युतिः	चांदी और सूत खरीदनेका चांस है। सोने चांदीके नरम भाव फिर उछलनेके उम्मीदवार हैं।
२२ ,,	११।३०	बु० श०	केन्द्र	व्यापारका टोन मंदीका तरफदार बना रहेगा।
२४ ,,	७।३५	सू० मं०	,,	राजाओंके उचित समय पर उचित सहयोग मिलेंगे।
२८ ,,	६। ६	बु० रा०	द्विर्द्वा०	रुईकी तेजी पर भरोसा रखना बालूकी दीवार समझो।
३१ ,,	६।४६	मं० बु०	त्रिकोण	गल्लेके तेज भाव शुक्रिया अदा करेंगे।
२ सितम्बर	८।४७	सू० ह०	केन्द्र	चांदीकी नरमाईको चौकसी लोग नहीं पहचानेंगे।
६ ,,	५।५४	सू० शु०	युतिः	चांदी और सूत खरीदनेके चांस हैं।
८ ,,	४।२७	बु० ह०	त्रिकोण	सोना तांबा गेहूंकी मंदी यहां खतम होगी।
१२ ,,	४। ०	शु० ह०	केन्द्र	आजके नरम रिएक्शन नहीं परन्तु खरीदनेके चांस हैं।
१५ ,,	०।४२	गु० ने०	द्विर्द्वा०	ऊंचे भावोंमें तिलहन बेचना अच्छा है।
२० ,,	८।२७	सू० शनि	केन्द्र	गेहूँ और अलसीमें गर्म वातावरण बना रहेगा।
२२ ,,	२२। ०	बु० गुरु	द्विर्द्वा०	रुईका मंदीका स्टेडीनेश टिका न रहेगा।
२४ ,,	१७।३०	मं० रा०	तृती०	सरसों और अलसी मंदीका साथ छोड़ रहे हैं।
२८ ,,	३।२०	सू० गु०	द्विर्द्वा०	चांदी और सोनेकी गर्म हवा अलसीको साथ लेगी।
३ अक्टूबर	०।४३	सू० ह०	त्रिकोण	राजा प्रजाका आन्दोलन नया रंग लाने वाला है।
५ ,,	६। ५	चं० मं०	प्रति०	कपड़ेकी मन्दी इन्तहाई पैगाम सुना रही है।
६ ,,	६।४६	चं० रा०	,,	कपासिया और मंगफली नरमाईसे नफरत करेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३ „ ०।१४ शु० ह० केन्द्र चावल, सूत, कपड़ा, कोलमें मंदीकी उम्मीद मत रखना।
१५ „ १२।१६ सू० मं० त्रिकोण सफेद वस्तु दबी हुई अचानक उठने वाली है।
१७ „ १०। ० बु० गुरु द्विर्द्वा० गल्लेकी तेजी विकराल रूप धारण करेगी।
२१ „ १।१० सू० श० त्रिकोण चावलोंकी वा सफेद वस्तुकी तेजीको बढ़ावेंगी।
२३ „ १।३० मं० रा० तृती० राहु — खुद तेजीको भड़का रहा है, क्या समझें।
२७ „ २।५६ बु० ह० सा.चतु. खास उछालेमें चांदी सोना खरीदना अच्छा है।
२८ „ २३।५५ बु० श० त्रिकोण लाख, लालमिर्च, सुपारी इकतरफा तेजी होगी।
३१ „ १६।५६ सू० मं० सा.चतु. सूत और रुईकी मजबूती आगे बढ़ रही है।
१ नवम्बर ७।३६ मं० शु० केन्द्र मंदी वाला राहु तेजीमें आनेका विचार करता है।
२ „ २।२३ चं० श० प्रति० तांबे और सोनेके भाव फिर नरम न मिलेंगे।
४ „ ८।४२ मं० बु०सा.चतु. वायदेके भाव भड़क कर खड़े होंगे।
५ „ ७।४७ चं० रा० प्रति० मोती, गेहूं, अलसीकी मांग बढ़ने वाली समझना।
६ „ २१।३० बु० रा० केन्द्र आज राहु भी मूल वस्तुओंकी तेजीकी तरफदारी करता है।
७ „ ४।५४ चं० ह० केन्द्र इन्डस्ट्रियल भी नाज़ो-अदासे नखरा दिखायेंगे।

आषाढ़ सुदीका सारांश

शुक्ल १० से १५ तक रुईमें २० से २५) मंदी, चांदी सोनेमें जोरदार घटाबढ़ी होगी। सम्भल कर व्यापार करो। रुख बाजार देखो। गेहूँ चना बाजरा ज्वार तेज होवे। कपड़ा सूत और रुई पर आफत रहेगी।

श्रावण बदीका सारांश

इस मासमें पांच भौम तथा पांच बुधवार हैं सो प्रजा को कष्ट रोग अशांति रहे। वर्षा श्रेष्ठ होवे। बदी १ से १० तक व्यापारमें भारी हलचल तथा कायापलट। रुईमें ५० से १००) टके मन्दी, चांदी २०) सोना १५) मन्दी आकर तेजी आवे। अलसी सरसोंमें ३) टके मन्दी आकर तेज आवे। गल्ला घृतमें तेजी रहेगी। राजाओंमें उपद्रव, युद्धकी तीव्र गति स्थाई हो कर विचार विमर्श करेगी।

श्रावण सुदीका सारांश

सुदी १ से १० तक—रुईमें १० से २०) टके तेजी। सूत में २), चांदीमें १५), सोनेमें १०) टके तेजी के योग हैं। अलसी १) तेज होकर ।।) मन्दी, सरसोंके भावों में ।।) की तेजी। शु० १० से १५ तक इस अवधिमें रुई १५ टके मन्दी, चांदी ४) टके तेज, सोना ३ टके, अलसी अरहर पर भीषण तेजी आवे। इन पांच दिनोंमें (स्टाक) अलसी बेचनेके चांस हैं। सूत चांदी सोना खरीदना उत्तम है। कपड़ेके (स्टाक) मार्केटों पर कण्ट्रोल होनेके जबर्दस्त योग हैं। व्यापारी बाजार रुख देख स्टाक खत्म करें।

भादों बदीका सारांश

इस मासमें प्रजामें अशांति, चोरोंका भय, युद्धमें भीषण उग्रता, पश्चिममें विग्रह (राष्ट्र भंग हो), बदी १ से ८ तक रुईमें ४०) से ५०) तेजी, सूतमें ३) टके तेजी, चांदीमें १०), सोनेमें ४), अलसीमें २), सरसों में १।।) टकेकी तेजी आवे। कपड़ा और गल्ला कुछ सस्ता होवे।

भादों सुदीका सारांश

इस पक्षमें रोगका भय, कहीं भूकम्प उल्कापात। भारतको भी संकष्ट प्राप्त होनेका योग है। शु० १ से ७ तक चांदीमें १०) टके, सोनेमें ६), रुईमें १५) टके, सूतमें २ टकेकी मंदी आ कर कुछ तेजी होवे। गल्ले पर विशेष वानावरण हो। शु० ८ से १५ तक सरसों पर ।।), अलसी पर ।।), चांदी ६), सोना ५), रुईमें १०) टकेकी तेजी आवे। गल्ला विशेष तेज होगा। चौर व बीमारीसे भय, मनुष्योंमें मतभेद, भाइयोंमें युद्ध तथा अशान्ति। (शेष पृष्ठ ४७ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रैमासिक व्यापार-विमर्श (तेजी मन्दी)

[लेखक— श्री पं० बिहारीलालजी शर्मा दैवज्ञ]

[विद्वान् लेखकने बम्बईमें रह कर सट्टेके व्यापार पर ग्रहोंके प्रभावका विशेष अनुभव प्राप्त किया है; अतः इस लेखमें भी उन्होंने जो विचार या भाव लिखे हैं वे सट्टेके व्यापारसे विशेष सम्बन्ध रखते हैं। परन्तु इस समय भारत सरकार या प्रान्तीय सरकारोंने कई वस्तुओंके सट्टेका व्यापार बन्द कर दिया है, इस कारण निम्न लेखके निर्दिष्ट भावोंमें कुछ साधारण अन्तर पड़ सकता है। प्रेमी पाठक इसका अनुभव करके स्वयं लाभ उठावें और विद्वान् ज्यौतिषीजीके परिश्रम को भी सफल करें। व्यापारियोंके लाभार्थ व सुगमतार्थ हमने लेखकका प्रत्येक शब्द वैसे ही रक्खा है, उसका परिवर्तन करके शुद्ध हिन्दी शब्दका रूप नहीं दिया है। —सम्पादक]

सौर श्रावण मासका व्यौरा

[ता० १६ जुलाई से १६ अगस्त पर्यन्त]

इस मासमें आकाशीय अन्तरालमें गुरुका अस्त होना, वह भी कर्कराशिमें। बुधका पश्चिममें उदय होना, शनिका मिथुनराशिमें पदार्पण और बृहस्पतिका कर्कराशिमें अभ्युदय होना, शुक्रका वक्री होना तथा चन्द्रग्रहण पड़ना इत्यादि महत्त्वके संयोग हुए हैं। इन संयोगोंके परिणामसे रुई १००) ७५), सोना बिनौले ४) ५) टके, चांदी एरण्डा शींगदाण ८) १०), अलसी गेहूं १।) २) टकेकी संख्यामें घट बढ़ होना पाया जाता है। पहले मन्दी फिर तेजी, फिर मन्दी पुनः तेजी और तेजी पर तेजी चलते व्यापारिक मण्डलमें तहलका मच जाय। ऐसे प्रखर योगायोगमें तेजीमन्दी लगा कर ही सौदा करना उत्तम चातुर्यता है। माल खरीद कर बेचनेवालेको अच्छा चान्स मिलेगा अथवा तेजी लगाकर व्यवसाय करना और भी ठीक रहेगा। सबसे बड़ी बात यह है कि सौदामें मिलता हुआ नफा फौरन खा लेना और लगती हुई नुक्सानीका सौदा अधिक खड़ा मत रखना। समय सावधानीका है।

अब हम 'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी व्यापारीवर्गके लाभार्थ अर्ध-साप्ताहिक या साढ़ेतीन तीन दिनकी तेजी मन्दीका विचार लिखते हैं। पाठक इसका अनुभव करें और लाभ उठावें।

ता० १६ जुलाई ११ बजे रातसे (३॥ दिनमें)—

रुई २०) ३०) टके, सोना बिनौले १॥) २), चांदी शींगदाणा एरण्डा ३) ४), अलसी गेहूँ ॥=) ॥।) की तादादमें घटना मालूम देता है। यह योग परीक्षित है।

ता० २० जुलाई ११ बजे दिनसे (३॥ दिनमें)—

ऊपर जिस वस्तुके लिए जितनी तादादमें मन्दीकी सूचना कर आये हैं ठीक उन्हीं वस्तुओंके भावमें यहां उतनी ही तादादमें तेजीका असर जानिये। यह तेजी अचानक वापरेगी अतः व्यापारीका कर्तव्य है कि इस उछालेका समझदारीके साथ सदुपयोग करे।

ता० २३ जुलाई रातके ११ बजेसे (३॥ दिनमें)—

महंगाईकी लाइन चालू है अतएव यहां मन्दी कारक ग्रहोंने मत फेर लिया है ताकि रुई अचानक अच्छी तादादमें तेज हो जावे। जब रुईका भाव बढ़े तब दूसरी वस्तुओंका भी तेजी वापरना स्वाभाविक है। प्रत्येक वस्तुका सौदा तेजीकी आशासे करे।

ता० २७ जुलाई १२ बजे (दिनसे ३॥ दिनमें)—

यहां रुई १५) २०) चान्दी ४) ५) टके, शींगदाणा एरण्डा २॥) ३), सोना बिनौला ।=) ॥), अलसी गेहूं ।) ।=) संख्यामें रपट पड़ना (गिरना) प्रतीत होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ता० ३१ जुलाई ४ बजे प्रातः से (३॥ दिनमें)—

तेजीकारक ग्रहों पर मन्दीकारक ग्रहोंका आक्षेप है। इस वाद-विवादमें तेजीवाले ग्रह दब जाना प्रतीत होता है। तेजीका गैस उतरते बाजारमें मन्दी २ हो जाया करती है। ध्यान रहे यह मंदी टिकाऊ नहीं है सौदा सावधानीसे करें।

ता० ३ अगस्त १२ बजे दिनसे (३॥ दिनमें)—

लड़ाईके समाचार कुछ भलेसे सुनाई देंगे। बाजारमें भावोंकी घट बढ़ भी सन्तोषजनक प्रतीत होती है।

ता० ६ अगस्त ११ बजे रातसे (३॥ दिनमें)—

व्यापार बड़ी सावधानीसे करें। कमसे कम सग-वड़ पड़ती वस्तुका नजराणा (जोटा) लगानेमें चूकना नहीं। तेजी मन्दी लगाकर किया गया व्यापार जल्दीसे सुधारते जाना। चांदीके व्यापारियोंको चाहिए कि सावधान हो जाएँ, घटते भाव डूबते सौदे को सम्हालना बुद्धिमानीका कार्य है।

ता० १० अगस्त १२ बजे दिनसे (३॥ दिनमें)

रुई ४०) ५०), सोना बिनौला ३) ४) टके, चांदी शींगदाणा एरण्डा ८) १०), अलसी गेहूँ १॥) २) टकेकी तादादमें अवश्य घट बढ़ लेंगे। सचेत रहें। खुला सौदा करना जोखमसे खाली नहीं। व्यापार करना है तो तेजी मन्दी लगा कर करिए।

ता० १३ अगस्त १२ बजे रातसे (३॥ दिनमें)

रुई चांदी आदि वस्तु के भावमें तेजी आ लगेगी। माल खरीदना या ४ दिन पहले ही चतुरतासे सुधारे गये सौदेमें अच्छा धन कमाया जा सकेगा।

सौर भाद्रपद मासका व्यौरा

[ता० १७ अगस्तसे १६ सितम्बर तक]

इस महीनेमें अभी २ चन्द्रग्रहण (१॥ दिन पूर्व) पड़ा ही है, शुक्र वक्री चल रहा है और भृगुराजका पश्चिमास्त होना, गुरु राहुकी अंशात्मक युति, दैत्याचार्यका पूर्वमें प्रकट होना, बुध वक्री होते अस्त होना, इन सम्पूर्ण योगोंको देखनेसे विदित होता है कि रुईके भावोंमें ५०) ७५), सोना बिनौला ३) ४) टके, चांदी शींगदाणा एरण्डा ५) ७), अलसी गेहूँ १) १॥) की तादादमें दुतर्फा घटबढ़ लेते अन्तमें असर तेजीका चले।

व्यापारियों! जो भी व्यापार करो बहुत सोच-समझ कर करो। हम इतना ही संकेत किये देते हैं कि माल खरीदना या तेजी लगाना अथवा नजराना लगा कर सौदा करें। सौदाको सुलटनेका पुख्ता प्रयास रक्खें।

ता० १७ अगस्त १० बजे दिन से (३॥ दिन में)—

यहां सिल्वर (चांदी) रेटमें काफी ऊँचाई वापरेगी। बादमें रुई शींगदाणा एरण्डा अलसीके भावोंमें भी बेरंगसा मालूम दे। प्रायः देखा गया है कि ग्रहणके आगे या पीछे बाजारमें बहुत चहल-पहल चला करती है। यहां भी भाव चलेंगे। व्यापार समयका टोन देख कर करना।

ता० २० अगस्त ११ बजे रातसे (३॥ दिनमें)—

प्रत्येक वस्तुके भावकी रफ्तार तेजीमें चालू है। सौदा करने वालोंको घटे भाव लेना चाहिये और उछालेमें नफेके साथ बेचते रहना चाहिये।

ता० २४ अगस्त ६ बजे दिनसे (३॥ दिन में)—

रुई आदि वस्तुके भावोंमें काफी तेजीके भनकारे आयेंगे। रुई २०) ३०) टके, चांदी शींगदाणा एरण्डा ३) ४), बिनौला सोना १॥) २), अलसी गेहूं ॥) ॥) आगे बढ़ते भाव प्रकट होंगे।

ता० २७ अगस्त ६ बजे रातसे (३॥ दिन में)—

शुक्रवारके व्यतीपातमें शुक्रास्त का उत्पात होने जा रहा है, फल घमासान लड़ाई समाचारोंके साथ रुई और चांदी बाजारमें अच्छा क्राईसिसका मौका है। चालू तेजीमें आई हुई मन्दीको देख कर प्रायः सौदागर माल खरीदा करते हैं। आने वाली महंगाई का ख्याल रखना खास हिदायत है। व्यापार नजराना लगा माल खरीदने का आइडिया रक्खें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ता० ३१ अगस्त १० बजे दिन से (३॥ दिन में)—

हम तो बार २ अपना गीत तेजीका गा रहे हैं, सुनने वालोंको चाहिये कि पढ़ी व सुनी गई बात का उपयोग करें। मासिक या साप्ताहिक तेजी लगायें वा नजराणेसे न चूकें। किसी भी तरह मारकीटमें सौदा तेजीकी रूहका कायम रक्खें।

ता० ३ सितम्बर ६ बजे शामसे (३॥ दिन में)—

पहलेके योग चालू हैं और उनका परिणाम भी वही समझें। भावीके संयोग तेजीके हैं। वादविवाद की प्रतिक्रियामें लिहाजकी लियाकत धरी रह जाती है, ऐसे ही यहां चलती तेजीके विवादमें मंदीका लिहाज पुख्ताई हरेगी नहीं, सचेत रहें।

ता० ७ सितम्बर ५ बजे प्रातः (३॥ दिन में)—

हमारी पिछली कलमोंसे साफ मालूम हो रहा है कि तेजीका अरमान बढ़ता जा रहा है। इस बढ़ती में रुई २०) ३०), सोना बिनौला २) ३), चान्दी एरण्डा मूंगफली ५) ७), अलसी गेहूं २) २॥) टकेकी संख्यामें बढ़ जाएँ तो ताज्जुब नहीं।

ता० १० सितम्बर ३ बजे दिनसे (३॥ दिनमें)—

समझदार सौदागर अपनी डायरीमें लिख लें कि भाद्रपद महीना उतरनेके साथ साथ ही तेजीकी रफ्तार भी उतर जाए और उतरेगी सपाटेसे। व्यापारियों! सावधान। सट्टोरियों! सट्टा खेलनेका टाईम आ रहा है तय्यार हो जाइये।

ता० १४ सितम्बर ४ बजे प्रातःसे (३॥ दिनमें)—

रुई १०) १५), सोना बिनौला ॥) ॥=), चान्दी एरण्डा मूंगफली १॥) २), अलसी गेहूँ ।—) ।=) की घटबढ़में समय पूरा करेंगे। दोनों तर्फसे ओछी घट-बढ़ मालूम दें तब सौदा समयकी स्थिति मार्केटका टोन देखकर करें।

सौर आश्विन मासका व्यौरा

[ता० १७ सितम्बरसे १६ अक्टूबर तक]

इस महीनेमें शुक्र मार्गी हुआ है, बुध पश्चिममें अस्त और पूर्वमें उदय होते मार्गी हुआ, शुक्लपक्षकी तिथिक्षय, शनि वक्री, मङ्गलका मन्द गतिसे चलना प्रभृति योगायोग वस्तुओंके भावमें बहुत चढ़ाव उतार करने वाले हैं। अतएव रुई ३०) ४०), सोना बिनौले २) २॥), चान्दी एरण्डा मूंगफली ३) ४), अलसी गेहूं १) ॥) टकेकी तादादमें घटबढ़ लेते पहले मन्दी फिर तेजी और पुनः मन्दी इस प्रकार तिरंगीचालमें रफ्तार रहेगी। शाह सौदागरों! आपका कर्तव्य है कि समयके घट बढ़ अनुसार सौदा करें। अधिकतर नजराणा लगाके व्यापार करना ठीक है।

ता० १७ सितम्बर ११ बजे दिनसे (३॥ दिनमें)—

यहां योगायोग सस्ताईके आए हैं अतः रुई २०) २५), सोना बिनौला १) १॥), चान्दी मूंगफली एरण्डा २॥) ३), अलसी गेहूंके भावमें १) टका निकल जाय तो ताज्जुब नहीं। व्यापार मन्दी लगा कर करना ठीक है।

ता० २० सितम्बर १० बजे रातसे (३॥ दिनमें)—

इस मौके प्रत्येक वस्तुके भावमें सन्निपात पैदा होगा। तेजी खत्म करते मन्दीकी सूचना की है, अतः ऐसी स्थितिमें भाव टिकना भी जायज हो सकता है।

ता० २४ सितम्बर ८ बजे दिनसे (३॥ दिनमें)—

ज्योतिष गणनासे तो समाचार ढिलाई (मन्दी) के मालूम देते हैं। तात्कालिक वातावरणके अनुसार व्यापारका मण्डान मन्दीकी स्कीम (तरकीब) से करना ठीक जँचता है।

ता० २७ सितम्बर ५ बजे शामसे (३॥ दिनमें)—

पहले लगाये गए नजराणेके सौदे पेटे यहाँ आये हुए उछालेमें माल बेचना ठीक है। फिलहाल आगे तेजीके ग्रह विश्रान्तिमें लगे आरामसे घूम रहे हैं। मन्दी वालेसे ही खुलासा करिये।

ता० १ अक्टूबर ४ बजे प्रातः से (३॥ दिनमें)—

युद्ध सम्बन्धी खरी खोटी खबरोंसे टेम्परेरी तेजी आजाय ऐसा अनुमान कंता जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ता० ४ अक्टूबर ११ बजे दिनसे (३॥ दिनमें)—

मन्दीका रियक्शन आते रुई १५) २०) टके, सोना बिनौले ।।) ।।।), चान्दी मूंगफली एरण्डा १।।) २), अलसी गेहूं ।–) ।≥) की तादादमें घटना प्रतीत होता है। नरमाईकी लाईनमें तेजीके उछालेमें बेचान कर नफासे तारुनी सुधारनी चाहिए।

ता० ७ अक्टूबर ८ बजे रातसे (३॥ दिनमें)—

जैसे गत कलममें मन्दीकी सूचना लिखी है वैसे ही यहाँ उतनी ही तेजी वापरते भावमें उछाला आ जाए। आया हुआ तरारा ठहरना प्रतीत नहीं होता।

ता० ११ अक्टूबर ७ बजे प्रातः से (३॥ दिनमें)—

जैसे चढ़ते चौमासे तेजी थी, वैसे ही उतरते आसोज भी मन्दीका मङ्गलाचरण आरम्भ होगा। सस्ताईके समयमें आये हुए तेजीके योगोंका उपयोग करते रहें। सौर सम्वत् आधा निकल चुका। गतार्ध सालके प्रारम्भ व मध्यमें जैसी तेजी आई वैसी ही पिछले अर्द्ध सालके प्रारम्भमें मन्दी जोश मारेगी। व्यापार विचारपूर्वक करें।

ता० १४ अक्टूबर २ बजे दिनसे (३॥ दिनमें)—

पिछली कलमोंमें आप भले ही मन्दी मानें, पर यहां तो अचानक ही तेजी आ धमकेगी और रुई २०) ३०), चान्दी मूंगफली एरण्डा २।।) ३), सोना बिनौला १।।) २), अलसी गेहूं ।।) ।।–) घट बढ़ लेते तेजी होगी। मन्दीकी लाइनमें तेजीका योग आजाए तो माल बेचना अथवा नजराणा लगा पेटेमें रीतसर व्यापार करो।

आश्विन बदीका सारांश

(पृष्ठ ४३ का शेष)

इस मासमें पांच शनिवार होनेसे प्रजामें रोग; अन्नकी भीषण तेजी। अग्निका कहीं पर भय होगा। बदी १ से १० तक रुईमें ४०), चांदीमें १०), सोनेमें ५), अलसीमें १), सूतमें १।), सरसोंमें ।।।), कपड़े पर विशेष तेजी आवे। घृत तैल मंदा होवे। बदी ११ से ३० तक बाजार सम, कुछ साधारण मंदी आनेके योग हैं।

आश्विन सुदीका सारांश

चन्द्रदर्शन मु० १५, तृतीयाका क्षय होनेसे प्रजा में अशान्ति, गल्लेकी भीषण तेजी। रुईमें २५), चांदी में १०), सोनेमें ७), अलसीमें १।।), सरसोंमें १) तेजी आवे। मूंगफली, घृत, खांड, गुड़ मंदा होवे। इस पक्षमें ग्रहयोगोंसे बाजार वायदा चालू होनेका योग बनता है।

नोटः—'श्री स्वाध्याय'के ग्राहकोंसे निवेदन है कि व्यापारी योग और मास पक्ष सारांशको मिला कर चांस सही कर लेवें। जो बात समझमें न आवे वह हमसे पूछ लेवें।

छुट्टियां हाईकोर्ट पंजाब और युक्तप्रान्त

व्यासपूजा—	ता० १७ जुलाई	शनिवार
शबेमिराज—	ता० ३० ,,	शुक्रवार
नागपञ्चमी—	ता० ६ अगस्त	शुक्रवार
चन्द्रग्रहण रक्षाबन्धन—	ता० १५ ,,	रविवार
शब-रात—	ता० १६ ,,	सोमवार
जन्मअष्टमी—	ता० २३ ,,	सोमवार
सोमवती अमावस—	ता० ३० ,,	सोमवार
वामन द्वादशी—	ता० ११ सितम्बर	शनिवार
अनन्त चतुर्दशी—	ता० १३ ,,	सोमवार
महालय अमावस—	ता० २९ ,,	बुधवार
जुमा-अलविदाह—	ता० १ अक्टूबर	शुक्रवार
ईद-उलफितर—	ता० २ ,,	शनिवार
दशहरा—	ता० ६ से ८ अक्टूबर	बुधसे शुक्रवार तक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषूचिका (हैजा)

[लेखक—वैद्यभूषण श्री पं० कन्हैयालाल लक्ष्मीनारायण जी शास्त्री ज्योतिर्विद्]

आज हम 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंके समक्ष विषूचिका (हैजा) पर अपनी अनुभूत चिकित्सा-पद्धति सहित संक्षेपमें कुछ वर्णन करते हैं। आशा है पाठक महोदय अवश्य लाभ उठाएँगे।

सूचीभिरिव गात्राणि तुदन् सन्तिष्ठतेऽनिलः।
यत्राजीर्णेन सा वैद्यैर्विषूचीति निगद्यते॥

अजीर्णके द्वारा जहाँ रोगीके शरीरमें सुई चुभनेके सदृश पीड़ा करती हुई वायु स्थित होती है उसे वैद्य विषूचिका कहते हैं।

"सूचीभिरिव गात्राणि विध्यतीति विषूचिका।"

अर्थात् समस्त शरीरमें सुई चुभनेके समान पीड़ा हो उसे विषूचिका (हैजा) कहते हैं।

कारण और लक्षण

अतिवृष्टि, अतिशय उष्णवायु, वायुकी आर्द्रता या स्थिरता, अपरिष्कृत जल वायु, बिना कारण वायुके बिगाड़से प्लेगके समान यह रोग फैल जाता है। अनियमित आहार विहार याने रेल्वे आदि मुसाफिरीमें ठण्डे बासी कोरे अपक्व सड़े हुए पदार्थोंके भक्षण करने, कच्चे तथा सड़े फल खरबूजा ककड़ी, खीरा आदिका भक्षण, अत्यधिक परिश्रम, भय शोकादि मानसिक पीड़ा, अधिक जन समुदायमें निवास; रात्रि जागरण, दूषित तथा बिना छना जल पीना, अजीर्ण पर भोजन करना इत्यादि अनेक कारणोंसे यह रोग उत्पन्न होता है।

न तां परिमिताहारा लभन्ते विदितागमाः।
मूढास्तामजितात्मानो लभन्तेऽशनलोलुपाः॥

प्रमाण सहित भोजन करने वाले तथा वैद्य विद्याका मर्म समझने वालेको यह रोग नहीं होता। परन्तु जिनकी इन्द्रियां वशमें नहीं तथा अज्ञानी हैं और जो भोजनके लोभी हैं उन्हें ही विषूचिका (हैजा) होता है।

यह संक्रामक रोग (जो रोग छूत और दुर्गन्धसे फैले) विष-दूषित वायुसे अवश्य उत्पन्न होता है। परन्तु स्वच्छता रखने वाले और नियमित आहार-विहार करने वालेको विषूचिका-ग्रसित रोगीके समीप निवास करने पर भी हैजा नहीं होगा।

मूर्च्छातिसारौ वमथुः पिपासा
शूलं भ्रमोद्वेष्टनजृम्भदाहाः।
वैवर्ण्यं कम्पौ हृदये रुजश्च
भवन्ति तस्याशिरसश्च भेदः॥

मूर्च्छा, अतिसार, छर्दि (वमन), तृषा, शूल, भ्रम, हाथ पैरोंमें ऐंठन, जंभाई, दाह, रंगका बिगड़ना, कम्प, हृदयमें पीड़ा, मस्तकमें पीड़ा, ये विषूचिकाके लक्षण हैं। किसीको ज्वर भी हो जाता है, किसीको शौच (दस्त) ज्यादा तो किसीको वमन विशेष होती है। प्रारम्भ में १–२ दस्त भारी होते हैं और उनका रङ्ग पित्तके कारण पीला होता है। जब तक रोगीकी अंतड़ियोंमें पुराना पित्त मिला रहता है तब तक दस्त पीला होता है; उसके अनन्तर ही उनका रूप-रङ्ग परिवर्तित होते हुए दस्त पतले व श्वेत चांवलके मांड जैसे होने लगते हैं। कभी रक्त तथा आंव भी आती है। किसीके दस्त और वमन साथ साथ होती है, कभी कभी वमनके साथ पेट, कलेजा, नाभि व पेडूमें पीड़ा होती है। किसीको वमन (कय) नहीं होता केवल दस्त ही हो कर पिंडलियोंमें ऐंठन आरम्भ हो जाती है। किसीको वमन जोरसे हो कर प्रथम अन्नादि पश्चात् चिकना पानी वा रक्त निकलता है। जिस रोगीको वमन थोड़ी होती है उस पर विषूचिकाके विषका विशेष प्रभाव होता है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोग उग्र रूप धारण करता है। दस्त वमन तथा पीड़ा बढ़नेके साथ साथ ही शरीरकी गर्मी कम होती जाती है और शक्ति भी नष्ट होती चली जाती है। रोगीका शरीर स्पर्श करनेसे ठण्डा भासित होता है। ज्यों ज्यों शरीरकी गर्मी न्यून होती है त्यों त्यों तृषाकी वृद्धि हो कर हाथ तथा पाँवमें ऐंठन आरम्भ हो जाती है। प्रथम पाँवोंकी पिंडलियोंमें अनन्तर हाथों तथा समस्त शरीरमें ऐंठन हो जाती है और स्नायु कठोर तथा गांठों वाले प्रतीत होते हैं, रूप और रङ्ग बदलने लगता है। आंखें गढ़ेमें धँसती जाती हैं। चेहरा बिलकुल फीका चिन्तातुर होना, चिकना स्वेद निकलना, सिरमें चक्कर आना, नाड़ीकी गति मन्द होना, तृषाकी वृद्धि, पेशाव बन्द हो जाना, त्वचाका रंग काला हो जाना, गालों-का बैठ जाना। ओष्ठ, नख, दांत, काले पड़ना, दांतोंका खुले हुए दिखाई देकर उन पर छारसा प्रतीत होना, स्वरका क्षीण होना, अनन्तर सन्धि बन्धन ढीले हो कर शरीरकी गर्मी ९५ से ८८ तक रह कर रोगी-को मूर्च्छा आ जाती है।

हैज़ा चल रहा हो उस समय पालनेके नियम

पाचन-शक्तिको ठीक रक्खो; अल्पाहार करो, अधिक भूखे भी न रहो। कच्चे, गले, सड़े, बासी फल व भाजियां तथा अन्नादि नहीं खाना। बाजारकी मिठाई, तैलके बने पदार्थ नहीं खाना। जल उबाला हुआ ताम्र-पात्रमें छान कर पीओ। दुग्ध उबाल सक्कर डाल पीना। उपवास न करो। मल मूत्रादि वेगोंको मत रोको, विरेचन नहीं लेना, यदि कब्ज हो तो मधुविरेचन लेना, अपने वस्त्रादि तथा घरके आस पास और अन्दरकी जगहको साफ रखना; वायुशोधक धूप घरमें ४-५ बार नित्य देना, शुद्ध वायुका सेवन करना, ठण्डाईके साथ २–४ रत्ती भङ्ग दोनों समय पीना, कर्पूर सूँघना, ग्रीष्म पानक शर्बत २।४ बार दिनमें पीना। भोजनके साथ पलाण्डु (प्याज) का सेवन करना, देशी चाय दिनमें २-३ बार पीना। प्रातः २५-३० निम्ब पत्रोंका नित्य भक्षण करना। रात्रिको भोजनके पश्चात् पलाण्डु स्वरस १ तोला, शुद्ध उत्तम हींग २ रत्ती, सौंफ १॥ माशा, धनिया १॥ माशा मिला कर सेवन करो। अथवा निम्ब पत्र ४०, देशी कपूर व शुद्ध हींग १-१ रत्ती, पुराना गुड़ ६ माशा मिला गुटिका बना सेवन करना लाभदायक है।

विषूचिका नाशक अनुभूत प्रयोग

उत्तम श्वेत चन्दन, जायफल, पीपरमेन्ट क्रिस्टल्स, देशी कपूर, सबको पृथक २ खूब महीन पीस कर फिर खरलमें एकत्र कर घोटो, बिना जल डाले गोली बन जावेगी। ४-४ रत्तीकी गोली बना प्रातः मध्याह्न सायं सेवन करते रहने पर चाहे शवों (मुर्दों) में घुसे पड़े रहो हैजा कभी भी नहीं होगा। इसी औषधिको बारबार सूंघते रहने पर भी अच्छा लाभ होता है। बच्चे भी सरलतासे सूंघते हैं। प्रत्येक व्यक्तिको कॉलेरा सीजनमें इसे अवश्य बना कर लाभ उठाना चाहिये। इसे मजबूत डाटदार शीशियोंमें भरना चाहिये, अन्यथा औषधि न्यून गुण हो जावेगी। यह प्रयोग हमारा सैंकड़ों बारका अनुभूत है।

चिकित्सा

रोगीको सूखी खुली वायु तथा प्रकाशवाले कमरेमें रखना। जल उबाल कर ताम्रपात्रमें छान प्रति पांच सेर जलमें ५ तोला सैन्धव नमक डाल कर थोड़ा-थोड़ा पीनेको देना, वा तुलसीपत्रको एक स्वच्छ वस्त्रमें पोटली बांध जलमें डाल कर वही जल पिलाना। रोगीके वस्त्र तथा बिस्तर २-३ बार दिन में बदलते रहना अथवा मूत्रादिसे खराब हो जावे तो बारबार बदलते रहना चाहिये। मल मूत्रादि पर अधिक मात्रामें राख डाल कर तुरन्त साफ कर देना चाहिये। प्रारम्भमें एकदम दस्त बन्द करने वाली दवाइयाँ नहीं देना चाहिये, पाचक औषधियोंका प्रयोग करना चाहिये, पश्चात् शनैः शनैः दस्त बन्द करना चाहिये। उल्टी बन्द करनेके लिये पेटके ऊपर राईकी पट्टी लगाना, जब जलन होने लगे तब पट्टी निकाल देना चाहिये। हैजेमें लंघन (उपवास) ही महान् पथ्य है। जब तक रोगका जोर रहे खाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को नहीं देना चाहिये। केवल उबाला हुआ जल सैंधव मिश्रित ही पिलाते रहना चाहिये। जल प्रति १२ घण्टे बाद नूतन तैयार करते रहना चाहिये।

विषूचिकालान्तक रस

उत्तम स्वर्ण सिन्दूर २ तोला, उत्तम रस सिन्दूर २ तोला, सहस्रपुटी अभ्रक भस्म १॥ तो०, शुद्ध वत्सनाभ १ तोला, शुद्ध सुहागा, चित्रकमूलछाल, चोक, निर्गुण्डीबीज, शुद्ध धत्तूर बीज, पीपलामूल उत्तम, सज्जीलोटा, संचर नमक, उत्तम यवक्षार, अपामार्गक्षार, कालीमिर्च, अजमोद, शुद्ध हींग, शंख-भस्म, बच मीठी, नागरमोथा, प्रत्येक ६-६ माशा महीन पीस अद्रक, नींबू, नागरबेलके पानके रसकी १-१ भावना देकर (यानि २-२ प्रहर तीनोंके रसमें घोटना) चणक समान बटी (चणेके बराबर गोली) बना आधा आधा घण्टेसे दो-दो गोली और लवण भास्कर या अग्निमुख चूर्ण ३-३ रत्ती मिला जलके साथ सेवन कराना चाहिये।

२—मुस्तादि बटी १५-१५ मिनिटमें नमक मिश्रित उपरोक्त जलसे देना।

३—कर्पूरासव तथा अहिफेनासव दोनोंको समान मिला कर २५ से ५० बूंद तक १५-१५ या ३०-३० मिनिटमें पलाण्डु स्वरस १॥-१॥ तोलेके साथ पिलाना। यह ६५ प्रतिशत लाभदायक है।

४—कर्पूररसकी एक-एक बटी ३०-३० मिनिट से देना चाहिये। जब दस्तोंका जोर ज्यादा होता है—तब २-३ मात्रा इसकी भी मिश्रण नं० ३ के साथ सेवन कराते हैं। अर्थात् प्रथम कर्पूररसकी गोली निगला कर ऊपरसे अहिफेनासव व कर्पूरासव तथा पलाण्डु स्वरस पिलाते रहते हैं।

विषूचिकान्तक रस

५—पूर्ण चन्द्रोदय, टंकण शु०, शुद्ध वत्सनाभ, सोंठ, स्वर्ण माक्षिक भस्म, शुद्ध श्वेत संखिया १-१ तो०, रस सिंदूर ६ तो०, सबको जम्बीरी रसमें खरल कर सरसोंके समान गोली बना आर्द्रक रस से १-१ गोली प्रति आधा या एक घण्टेसे पूर्ण लाभ होने तक देवे। जब नाड़ी क्षीण होती हो तथा रोगी का तापमान बहुत ही नष्ट हो चुका हो उस समय भी अत्युत्तम लाभ करती है।

६—विडंग, सोंठ, सतवा, पीपल, हरड़का छिलका, बहेड़ाका छिलका, आंवलाका छिलका, बच मीठी, गुड़वेलका सत्व, शुद्ध भिलावाँ, वत्सनाभ शुद्ध, समान भाग बारीक पीस कर गोमूत्रमें घोट घुंघुंची के बराबर गोली बना आर्द्रक रसमें द्विगुण मिश्री मिला पाक कर १-२ गोली समयानुसार देना चाहिये। इसकी २-४ मात्राओंमें ही वमन दस्त बन्द हो कर पेशाब भी खुल कर हो जाता है।

७—रैक्टी फाईड् स्प्रीट Rectifide Sprt. १२ औंस, देशी कर्पूर ६। तोला, आयल मिन्थल पिपेरेटा Oil Menthl Pepp. १ औंस।

प्रथम कर्पूरको स्प्रीटमें डालो, जब कर्पूर गल जावे तब नं० ३ वाली दवा डाल सुरक्षित रक्खो। दस्त या क़य आरम्भ होते ही १०-१० बूंद बताशेमें डाल कर आधा २ या एक २ घण्टेसे देते रहो, इसकी मात्रा २ से १० बूंद तककी है। अवस्थानुसार देवें। इसे अर्क कर्पूर कहते हैं।

मुस्तादि बटी

नागरमोथा, देशी कपूर, पीपल १-१ तो०, उत्तम शुद्ध हींग ६ माशा, सबको खूब पीस जल डाल ३-३ रत्तीकी गोली बना उपरोक्त नियमानुसार उपयोग करो।

कर्पूरासव

रैक्टी फाइड स्प्रीट Rectified Spt. ५० तोला, देशीकर्पूर ४तो०, छोटी इलायचीके बीज, नागरमोथा, सोंठसत्व, अजवायन, कालीमिर्च, ६-६ माशा सब बारीक पीस लो, प्रथम कपूरको स्प्रीटमें डाल दो, जब गल जावे तब सम्पूर्ण वस्तुएँ डाल दो, १ मास या १५ दिन बाद छान कर बोतलमें भर मजबूत डाट लगा सुरक्षित रक्खो।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहिफेनासव

महुवेकी शराब ऽ१। सेर, उत्तमशुद्ध अफीम ४ तो०, नागरमोथा, जायफल, इन्द्रयव, बड़ी इलायची बीज १-१ तो० सबको पीस एकत्रित करो और शराबमें डाल एक मास तक डाट लगा रख छोड़ो, पश्चात् वस्त्रमें छान कर बोतलोंमें भर रख छोड़ो। यह पुराने व बहुत अधिक बढ़े हुए दस्त तथा भयंकर हैजेको दूर करता है।

वायुशोधक धूप

गूगल, कुष्ट, वच, कपूरकचरी, खस, मोथा, पनड़ी, चिरायता, निम्बपत्र, अगर, राल, देवदारु, तैलिया, चन्दन, कर्पूर देशी, सब समान भाग। इनमें षोडशांश गोघृत मिश्रित धूप बनाना।

लवण-भास्कार-चूर्ण

समुद्र नमक ८ तोला, संचर ५ तो०, सूखा अनारदाना ४ तो०, छोटी इलायचीके बीज, दालचीनी ६-६ माशा, विड़ नमक, सैंधव नमक, धणिया, पीपल, पीपलामूल, काला जीरा, तेजपात, नागकेशर, तालीसपत्र उत्तम, अम्लवेत, कालीमिर्च, श्वेत जीरा, सोंठसत्व, प्रत्येक २-२ तोला ले सबको पीस कर रख छोड़ो, समय पर उपयोगमें लाओ। हम इसमें शुद्ध धुली हुई भंग २॥ तोला मिलाते हैं और विषूचिकाके समय इसी चूर्णका उपयोग करते हैं।

ग्रीष्म पानक शर्बत

शुद्ध भंग १ तोला, गुलाब पुष्प १० तो०, खसखस १ तो०, बादामकी मींगी १० तो०, इलायची छोटी ४ तो०, कालीमिर्च १॥ तो०, सौंफ ५ तो० शीतलचीनी २ तो०, गंगेरनमूल छाल २॥ तो०, पिस्ता ५ तो०, चन्दन श्वेत ५ तो०, सबको पीस कर ऽ१ सेर शुद्ध जल, गुलाब अर्क ऽ२ सेर, अर्क केवड़ा ऽ॥ सेर, सबको एकत्रित कर क्वाथ करें। जब जल तीन साढ़ेतीन पाव शेष रहे तब उतार छान लो, ऽ१ सेर शक्कर डाल शर्बत तैयार करो। शीतल होने पर उत्तम गुलाबका इत्र ६ माशा डाल बोतलोंमें भर मजबूत डाट लगा दो। समय पर १०तोले जलमें ४ तो० शर्बत मिला हिला कर पिलाएँ।

देशी चाय

सौंठ, दालचीनी, २-२ तोले, कालीमिर्च, लौंग १-१ तो०, लेंडी पीपल ६ माशा, चोपचीनी, तुलसीकी मंजरी ४-४ तो०, तुलसीपत्र छायामें सुखाये हुए, हरी चाय छायामें सुखाई हुई १०-१० तो०, सबको पीस आधा सेर जलमें ६ माशा यह चाय डाल कर दुग्ध मिश्री डाल सेवन करो। यदि प्रत्येक समय इसमें चाय बनाते हुए ३ माशा तुलसीके हरे पत्ते डाल दिया करेंगे तो अत्युत्तम होगा।

उपद्रव शांतिके उपाय

प्यास—अर्क सौंफ १० तो०, अर्क गुलाब ५ तो०, अर्क पुदीना ५ तो०, पानीकी बर्फ़ १० तो०, सबको मिट्टीके कोरे बर्तनमें रख छोड़ो, रोगीके पानी मांगने पर यही अर्क १-२ तोले पिलाते रहो।

२—जायफलका टुकड़ा रोगीके मुंहमें रख चूसनेको कहो।

३—अर्क पोदीना व सौंफके अर्कमें थोड़ासा सैंधव नमक मिला कर पिलाते रहो।

शरीरकी ऐंठन—विषगर्भ तैल ५ तो०, तारपीन तैल ५ तो०, कर्पूर १ तो०, तीनोंकी मालिश करो, जबतक उपद्रव शांति न होवे।

२—तारपीनके तैलमें ५ तोलेमें १ माशा अफीम मिला मलते रहो।

३—शीशेकी बोतलमें गरम जल भर करके सेक करो।

हिचकी—सक्कर (खण्ड) १ तो०, लाल मिर्चका चूर्ण ४ रत्ती मिला चटाओ।

२—श्वास कुठार रस ४-४ रत्ती मधुसे चटाना लाभदायक है।

मूत्रावरोध—साफ साबुन, कलमीशोरा ६-६ माशा, कपूर २ माशा, १० तोले जलमें खूब फेंट कर पिचकारी द्वारा इन्द्रीके मुँहमें लगा कर छोड़ दो, ऐसा ३-४ वार करनेमें पेशाब अवश्य होगा।

(शेष पृष्ठ ५५ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यास्क और पाणिनिका समय

[लेखक—श्री पं० बलजिन्नाथजी शास्त्री बी० ए०]

ऐतिहासिक लोग संस्कृत-साहित्य पर तथा भारतवर्ष पर जितना अन्याय करते हैं उतना स्यात् ही किसी औरके साथ करते होंगे। यूरोपियन ऐतिहासिक इतिहास लिखते समय इस बातका बड़ा विचार रखते हैं कि सब प्रकारसे यूरोपकी यवन (ग्रीक) सभ्यता पूर्वीय सभ्यताओंसे प्राचीन सिद्ध हो जाए और इसकी सिद्धिके लिए वे अनेक प्रकार प्रयत्न करते हैं। भारतवासियोंको भी यूरोपके सिद्धान्तोंके ही अनुसार शिक्षा मिलती है इस कारण उनकी बुद्धिमें बाल्य कालसे ही यूरोपके विद्वानोंके सिद्धान्तोंके संस्कार पड़ जाते हैं, इस कारण प्रायः इतिहास क्षेत्रमें भारतीय भी यूरोपियनों का ही अनुसरण करते हैं। इस कारण वे भी प्रायः संस्कृत साहित्य पर अन्याय ही करते हैं। संस्कृत साहित्यका प्रसिद्ध इतिहास लेखक अंग्रेज मि० कीथ (Keith) तो ई० पू० चौथी शताब्दी पाणिनिका तथा ई० पू० पांचवीं शताब्दी यास्कका सयय मानता है। अन्य लोग तो इससे कुछ पूर्व ही मानते हैं। इस समय प्राधान्येन ऐतिहासिकोंका यही सिद्धान्त है कि पाणिनि ईसासे पूर्व पांचवीं शताब्दीमें तथा यास्क उससे भी सौ दौसौ वर्ष पहले थे। इस सिद्धान्तको माननेके लिए ऐतिहासिकोंके पास कोई दृढ़ प्रमाण नहीं है। उनका यह सिद्धान्त केवल कल्पना मात्रसे ही सिद्ध होता है। परन्तु युक्तिशून्य कल्पना प्रमाण नहीं हो सकती है। उसी कल्पनाको माना जा सकता है जो दृढ़ युक्तियों पर स्थित हो। कल्पना मात्रसे ब्राह्मणोंको ई० पू० ८०० से ६०० मानकर, तथा पाणिनिको ब्राह्मण कालसे अर्वाचीन मानकर हम कभी भी उसको ई० पू० ५०० का नहीं मान सकते। क्योंकि यहां एक कल्पना नहीं, यहां तो अनेक कल्पनाओंकी एक श्रृङ्खला सी है। परन्तु सभी कल्पनाएं निर्मूल हैं। क्योंकि इनकी मूल कल्पना अर्थात् ऋग्वेदके समयकी कल्पना ही प्रमाण रहित होनेके कारण निर्मूल है। ऋग्वेदके समयके आधार पर ही ब्राह्मण, उपनिषद्, आरण्यक, और सूत्र आदि शास्त्रोंके समयकी कल्पना आधुनिक ऐतिहासिक करते हैं। परन्तु जब मूल कल्पना ही निर्मूल सिद्ध होती है तो उसकी आश्रित सारी कल्पनाओंकी श्रृङ्खला ही निर्मूल सिद्ध हो कर खण्डित हो जाती है।

पाणिनि और यास्कके समयके विषयमें हमारे पास भी कोई दृष्ट अथवा श्रुत प्रमाण नहीं है, इस कारण हमें भी इस विषयमें अनुमानका ही आश्रय लेना पड़ता है। परन्तु हमारा अनुमान कीथकी भांति कल्पना मात्र नहीं होगा। आप पाणिनिकी अष्टाध्यायीको पढ़िए तो आपको यह ज्ञात होगा कि इसमें दो भाषाओंके नियम विद्यमान हैं। सं० १ वैदिक भाषाके, सं० २ लौकिक संस्कृत भाषाके। वैदिक नियमोंके लिए पाणिनिने 'छंदसि' और लौकिक नियमोंके लिए 'भाषायाम्' ऐसे निर्देश किए हैं। आज उस लौकिक भाषाको संस्कृत कहा जाता है। परन्तु पाणिनिके समयमें उसे संस्कृत नहीं कहते थे। उसका नाम उस समय 'भाषा' था। आजकल हम उन भाषाओंको भाषा कहते हैं जो आजकल बोली जाती हैं। इसी प्रकारसे संस्कृत भाषा पाणिनि और यास्कके समय बोली जाती थी, इसी कारण दोनोंने इसका नाम 'भाषा' ही कहा है, संस्कृत नहीं। क्योंकि 'संस्कृत' यह नाम इस भाषाका उस समय पड़ा, जिस समय लोकव्यवहारमें इसका स्थान प्राकृत भाषाओंने ले लिया। तभी तो उन प्राकृत भाषाओंकी अपेक्षासे इसको लोग संस्कृत कहने लगे। क्योंकि प्राकृत भाषाएं असंस्कृत थीं। अर्थात् उनका संस्कार नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ था। केवल इसी संस्कृत भाषाका ही संस्कार हुआ था और संस्कृत लोग इसीको बोलते थे। केवल प्राकृत (साधारण) लोग ही प्राकृत भाषाओंको बोलते थे। इस भाषाका 'संस्कृत' यह नाम सबसे पहिले वाल्मीकिने रामायणमें कहा है। उससे पूर्व सभी आचार्य इसको 'भाषा' नामसे ही निर्देश करते हैं। इस से यह सिद्ध होता है कि पाणिनिके समयमें संस्कृत भाषा 'भाष्यते इति भाषा' इस निर्वचनके अनुसार जन साधारणकी भाषा थी। सभी लोग उस समय इसी भाषाको बोलते थे। इस सिद्धान्तकी सिद्धिके और भी प्रमाण हमें पाणिनि तथा यास्कसे ही मिलते हैं। पाणिनिने कई नियमोंके लिए 'प्राचाम्' तथा 'उदीचाम्' आदि निर्देश किए हैं। जो एक बड़े विशाल देशके लोगोंकी भाषा हो, उसमें तो प्रदेश-भेदके कारण शब्द प्रयोगमें भी भेद होना अनिवार्य है, इसी कारण पाणिनि और यास्कने उत्तरके लोगों की तथा पूर्व आदिके लोगोंकी संस्कृत भाषाके पृथक् पृथक् नियम बनाए हैं। इस प्रकारके अनेक प्रमाणोंसे यह सिद्ध हो सकता है कि पाणिनिके समयमें संस्कृत भाषा ही जन साधारणकी भाषा थी। इस बातको तो ऐतिहासिक भी अब मान चुके हैं, इस कारण यहां अधिक प्रमाण देनेकी कोई आवश्यकता नहीं।

अब जरा विचारिये कि भगवान् बुद्धके समय में जनसाधारणकी भाषा कौन थी? सभी यही कहेंगे कि उस समय अति प्राचीन प्राकृत भाषाएं ही जनसाधारणकी भाषाएं थीं। संस्कृत केवल विद्वानोंकी भाषा थी। इसी कारण भगवान् बुद्धने जनसाधारणके उपकारके लिये संस्कृत भाषाको छोड़ कर प्राकृत भाषाओंमें ही अपने उपदेश किये। बहुत समय तक बौद्ध आचार्य भी इन्हीं भाषाओंमें लिखते रहे। बुद्ध भगवान्से पूर्व भगवान् पार्श्वनाथ (जैन धर्मके आदि प्रवर्तक) के समयमें भी लोगोंकी भाषा परिवर्तित होकर संस्कृतसे प्राकृत हो चुकी थी। लोगोंकी भाषा तो सदा परिवर्तित होती ही रहती है। परन्तु कभी शीघ्र गतिसे परिवर्तित होती है और कभी मन्द गतिसे। जब कभी किसी देशमें विजातीय लोग आक्रमण करके आ जाते हैं, जब कभी किसी देश पर दूसरे देशके विजातीय लोग शासन करते हैं और जब कभी किसी देशमें विजातीय सभ्यताका प्रचार हो जाता है तभी उस देश की भाषा शीघ्र गतिसे परिवर्तित होने लगती है और उसके परिवर्तनमें थोड़ा समय लगता है। साधारणतया भाषाके परिवर्तन होनेमें बहुत समय लगता है। हमारी काश्मीरी भाषाको ही देखिये, जितना परिवर्तन पिछले सौ वर्षोंमें हुआ था उससे कई गुणा परिवर्तन पिछले दश बीस वर्षोंमें हो गया है। क्योंकि इन्हीं वर्षोंमें विजातीय (अंग्रेजी) सभ्यताका अधिक प्रचार काश्मीरमें हुआ। हमारे पितामहके समयके लोगों और हमारे पिताके समय के लोगोंकी भाषामें जितना अन्तर है उससे कहीं बीस गुणा अन्तर हम लोगोंकी भाषासे उनकी भाषा का है। बुद्ध भगवान्से कई शताब्दियां पूर्व भारतवर्षमें कोई भी विजातीय प्रभाव नहीं पसरा। न ही कोई विजातीय लोग भारतवर्षमें आए। शक कुशान आदि तो बुद्ध भगवान्के बहुत समय अनन्तर यहां आए हैं। इस कारण उस समय भाषाको शीघ्र परिवर्तन कराने वाले किसी भी हेतुकी सिद्धि नहीं हो सकती है। अतः उन शताब्दियोंमें बहुत ही मन्द गतिसे संस्कृत भाषामें परिवर्तन आने लगे और अनेकों शताब्दियां बीतने पर इस भाषाने बुद्ध भगवान् की भाषाका रूप धारण किया, यह बात निर्विवाद स्पष्ट है। संस्कृत भाषा प्राकृत भाषाओंसे बहुत प्राचीन है इस बातका कौन खण्डन कर सकता है। इस कारण पाणिनिका समय (जोकि संस्कृत भाषाका समय है) बुद्ध भगवान्के समयसे (जो कि प्राचीन प्राकृतोंका समय है) बहुत ही प्राचीन होना चाहिए। बुद्ध भगवान्का समय तो निर्विवाद ई० पूर्व छठी शताब्दी है, इस कारण इस बातमें कोई सन्देह नहीं हो सकता है कि पाणिनि छठी शताब्दी ईसा पूर्वसे भी बहुत प्राचीन है। ऊपर बताई हुई विधिके अनुसार संस्कृत भाषाको धीरे-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धीरे प्राचीन प्राकृतका रूप धारण करनेमें थोड़ेसे थोड़े तीन चारसौ वर्ष लगे होंगे। इस कारण पाणिनि का समय न्यूनातिन्यून नववीं अथवा दशवीं शताब्दी ईसा पूर्व होना चाहिए। यदि समयको इतना पीछे ले चलनेका अभी किसीको साहस न हो तो थोड़ेसे थोड़ा आठवीं शताब्दी ई० पू० तो पाणिनिका समय तब तक अवश्य मानना चाहिए, जब तक पाणिनिके वास्तविक समयको सिद्ध करनेके दृढ़तर प्रमाण मिल जाएँ। सम्भव है कि ८०० क्या १००० वर्षसे भी कहीं अधिक समय पाणिनि और ईसाका अन्तर हो। इतनी बात तो हम दृढ़ प्रमाणसे सिद्ध कर सकते हैं कि पाणिनि छठी शताब्दी ई० पूर्वसे छः सौ वर्ष पुराना है। इन सब स्पष्ट बातोंकी ओर गर्दभनिमीलिका करके ही कीथ (Keith) आदि ऐतिहासिकोंने पाणिनिको भगवान् बुद्धसे प्राचीन न मानकर उनका समकालीन भी नहीं माना, उल्टा उनसे अर्वाचीन माना है।

इस प्रकारसे पाणिनिको पञ्चम शताब्दीका मान कर यास्कको उससे २०० वर्ष पूर्वका माना गया है। कीथ (Keith) तो षष्ठ छोड़कर पञ्चम शताब्दी ही यास्कका समय मानता है। परन्तु उसका यह मत सर्वथा त्याज्य है। और ऐतिहासिकोंका मत भी इस विषयमें त्याज्य ही है। यास्क पाणिनिसे भी बहुत प्राचीन समय का है यह बात उसके निरुक्तसे स्पष्ट होती है। पाणिनिने व्याकरणको पूर्ण बनाया परन्तु यास्कके समयमें व्याकरण अकृत्स्न अर्थात् अपूर्ण था। उसकी कृत्स्नता अर्थात् पूर्णता निरुक्त द्वारा ही हुई ऐसा यास्क "व्याकरणस्य कार्त्स्न्यम्" इस उपदेशसे ध्वनित करता है। वैयाकरणोंके उल्लेखके समय कहीं भी यास्कने पाणिनि का नाम नहीं लिया है। शाकटायन गार्ग्यादि पाणिनि से पूर्व वैयाकरणोंका उल्लेख अनेक स्थानों पर यास्क ने किया है। यदि पाणिनि यास्कसे पूर्व होता तो वैयाकरणोंका उल्लेख करते समय वैयाकरण-केसरीको कैसे भूलता? यास्कने एक स्थान पर संहिताका लक्षण "परः सन्निकर्षः संहिता" ऐसा लिखा है। परन्तु यह तो घुणाक्षरन्यायसे यास्क और पाणिनिके शब्दोंमें समानता आई है, एक दूसरेसे ये शब्द उद्धृत नहीं किये गये हैं। उद्धृत किये होते तो आचार्य अवश्य वास्तविक प्रणेताके नामका भी निर्देश करते, जैसा कि उन्होंने अनेक स्थानों पर किया है। पाणिनिके सूत्र "य स्कादिभ्यो गोत्रे" में भी निरुक्त निर्माता यास्कका ही निर्देश है। यहां निरुक्त निर्माता यास्कका पूर्वज कोई और यस्क गोत्रोत्पन्न मुनि निर्दिष्ट नहीं है, क्योंकि यास्ककी पाणिनिसे प्राचीनताके कई और प्रमाण भी मिलते हैं और इस प्रकारकी कल्पनामें कोई प्रमाण भी नहीं है। पाणिनिकी भाषा वैदिकसंस्कृतसे इतनी नहीं मिलती है जितनी कि यास्ककी। इस कारण यास्क अवश्य प्राचीनतर होना चाहिए। यास्क वेदका निर्देश "छन्दसि" न करके 'अन्वध्यायम्' ऐसा करता है। वेदका यह नाम भी पाणिनिसे बहुत पुराना है। पाणिनिके अनन्तर सभी आचार्योंने शब्दशास्त्रोंमें पाणिनी निर्मित संज्ञाओंका प्रयोग किया है, परन्तु यास्क 'ण्यन्तं' के स्थान पर 'कारितम्' का और 'यङ्लुगन्तम्' के स्थान पर 'चर्करीतवृत्तम्' का प्रयोग करता है। ऐसी ऐसी वैयाकरण संज्ञाएं बहुत ही प्राचीन हैं। इन बातोंसे यह स्पष्ट होता है कि यास्क पाणिनिसे भी सौ दो-सौ वर्ष अवश्य पुराना है। इस कारण यास्कको बारहवीं शताब्दी ई० पू० का माननेमें कोई अनुपपत्ति नहीं। सम्भव है वह इससे भी अधिक प्राचीन हो। परन्तु यदि इतना प्राचीन समय यास्कको देनेका साहस न हो तो न्यूनातिन्यून दशवीं शताब्दी ई० पू० तो यास्कका समय अवश्य मानना चाहिए। यास्कके समयमें भी लोगोंकी भाषा संस्कृत ही थी। परन्तु पाणिनिके समय तक उस भाषामें बहुत कुछ अन्तर आ गया था। कात्यायनके समयमें तो पाणिनिकी भाषामें भी अन्तर आ गया था। इसी कारण अनेक नियमोंमें कात्यायनने विकल्प आदि परिवर्तन किये हैं। ये नियमोंके परिवर्तन भाषाके परिवर्तनोंके ही कारण किये गये हैं, स्पर्धाके कारण नहीं। स्पर्धाकी कथा तो दन्त-कथा मात्र है। पतञ्जलिके समयमें तो संस्कृत शब्दोंसे कई गुणे अधिक अपभ्रंशके अपशब्द लोकमें प्रयुक्त होते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राहकोंसे—

बहुतसे ग्राहक वार्षिक मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम पता और ग्राहक संख्या नहीं लिखते और कई उर्दूमें अस्पष्ट अक्षरोंमें लिखते हैं, इससे हमें बड़ी दुविधा होती और अङ्क भेजनेमें भी विलम्ब हो जाता है। अतः पुराने ग्राहकोंको अपनी ग्राहक संख्या और नये ग्राहकोंको अपना पूरा पता कूपन पर स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिये।

ग्राहकोंको उपहार पुस्तकें एक ही बार मिलती हैं, प्रतिवर्ष वही पुस्तकें दुबारा नहीं भेजीं जातीं।

"सं० २००० वि० के दैनिक ग्रह" नामक पुस्तककी सब प्रतियाँ अब समाप्त हैं, अतः अब किसी भी ग्राहकको यह उपहार रूपमें नहीं मिल सकेगी। 'श्रीराष्ट्रालोक' भी समाप्त है। द्वितीय संस्करण छपने पर 'श्रीस्वाध्याय' में सूचना प्रकाशित होगी।

नये ग्राहकोंको ही वार्षिक मूल्यके साथ मार्ग-व्ययके तीन आने अधिक आने पर तीनों उपहार पुस्तकें भेजी जा सकेंगी। पुराने ग्राहक उपहार पुस्तकोंके लिए न लिखें। जो ग्राहक अपने वार्षिक मूल्यके साथ ≡) तीन आने अधिक भेजेंगे उन्हें विशेषाङ्क रजिस्ट्री द्वारा भेजा जायगा।

व्यवस्थापक श्रीस्वाध्यायसदन
सोलन (शिमला)

(पृष्ठ ५१ का शेष)

२—जरासा कपूर मूत्र-इन्द्रीके मुँह पर रक्खो और राईका पलस्तर कमर पर लगाओ तथा संजीवनी आर्द्रक मिश्रीके साथ सेवन कराओ।

३—टेसूके फूल, कलमीशोरा २॥-२॥ तो० जलमें पीस रोगीके पेडू पर बार बार रक्खो।

४—शोराकलमी ३ माशा, नवसादर १ माशा, ५ तोले जलमें गला कपड़ा तर करके बार बार पेडू पर रखते रहो।

५—शीतलचीनी, बड़े गोखरू ५-५ माशा ले कर १० तोले जलमें क्वाथ करें, आधा शेष रहने पर उतार छान ४ रत्ती कलमीशोरा मिला कर पिलाएँ।

लेखकोंसे—

कागजकी अत्यधिक महर्घता एवं दुष्प्राप्यता, मुद्रणव्यवस्थाकी अस्त-व्यस्तता, महायुद्धके कारण राजकीय शासननियमोंकी कठोरता, प्रेसमें अन्य आवश्यक कार्योंकी अधिकता और समयाभाव आदि आदि अनेकों अपरिहार्य कारणोंसे बाध्य होकर इस अङ्कको भी हम ८० पृष्ठका नहीं कर सके। इस कारण हमारे कई मान्य विद्वानोंकी मौलिक रचनाएँ समय पर प्रकाशित नहीं हो सकीं। इसका हमें महान् खेद है। आचार्य चूरणजी के 'जीवनकी झांकी' प्रहयोग-प्रतियोग चमत्कार, राशिफल और मुहूर्त्तादि विचार जैसे हमारे अपने कई आवश्यक लेख भी स्थानाभावके कारण हमें रोकने पड़े हैं। आगामी अङ्क (नववर्षाङ्क) से इसकी पूरी पूरी ठीक व्यवस्था की जावेगी। श्री अवनीन्द्रकुमारजी विद्यालङ्कार, श्रीभूपेन्द्रनाथजी वन्द्योपाध्याय एम. ए. आदि सुप्रसिद्ध मान्य विद्वानों की मौलिक रचनाएँ जो इन अङ्कोंमें प्रकाशित न हो सकीं वे आगामी विशेषाङ्कमें अवश्य प्रकाशित होंगी। जहाँ तक हो सके लेखक महानुभाव अपना लेख परिमार्जित भाषामें सारगर्भित मौलिक और संक्षिप्त रूपमें लिखनेका प्रयत्न करें। संशोधनके लिए दोनों ओर कुछ तट (हाशिया) छोड़ना भी आवश्यक है। कागजके दोनों ओर लिखा हुआ लेख प्रकाशित न हो सकेगा। जो मौलिक लेख श्रावण शु० १५ ता० १६ अगस्त तक हमारे पास पहुँच जाएँगे वे ही विशेषाङ्क में स्थान पा सकेंगे।

सम्पादक—"श्रीस्वाध्याय" सोलन (शिमला)

सूचना

श्रीस्वाध्यायसदन हिन्दी विद्यालयमें पं० रामेश्वर जी शास्त्री पाण्डेय 'अरुण' ने कुछ समय अध्यापन कार्य किया था। परन्तु अब पं० रामेश्वरजी शास्त्रीका श्रीस्वाध्यायसदन संस्थासे किसी प्रकारका कोई सम्बन्ध नहीं है, अतः स्वाध्यायसदन वा विद्यालयके विषयमें किसी भी प्रकारकी बातचीत अथवा लेनदेन उनके साथ न किया जावे।

—प्रधानाध्यक्ष श्रीस्वाध्यायसदन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीस्वाध्यायके गतांक

'श्रीस्वाध्याय' के प्रथम वर्षके चारों अंक और वर्तमान वर्षके विगत तीन अङ्कोंकी भारतके गण्य मान्य धुरन्धर विद्वानों एवं सुप्रसिद्ध समाचारपत्रोंने भूरि-भूरि प्रशंसाकी है। इनमें सभी लेख सारगर्भित मौलिक और ठोस सामग्री लिए हुए हैं। साथ ही प्रत्येक अङ्ककी भविष्यवाणियां ६५ प्रतिशत ठीक मिली हैं। इस सम्बन्धमें कुछ प्रसिद्ध पत्रों और विशिष्ट विद्वानोंकी विस्तृत सम्मतियोंमेंसे कतिपय सम्मतियोंका कुछ भाग गताङ्कोंमें प्रकाशित किया जा चुका और अब भी कुछ विशेष २ नई सम्मतियां प्रत्येक अङ्कमें (दो पृष्ठोंमें) प्रकाशित की जाती हैं। इतने पर भी कई सहृदय विद्वानोंकी सम्मतियां रह ही जाती हैं। यदि उन सबको अक्षरशः प्रकाशित की जावे तो एक बड़ी पुस्तक बन सकती है। इसीसे आप अनुमान लगा सकते हैं कि ये अङ्क कितने ठोस और उपादेय होंगे। प्रथम वर्षके चारों अङ्कोंकी प्रतियां अब बहुत थोड़ी शेष हैं, अतः इसका (प्रथम वर्षकी फाइलका) मूल्य अब ३॥) रु० निर्धारित किया गया है।

नवीन ग्राहकोंको विशेष लाभ

'श्रीस्वाध्याय' के स्थाई ग्राहक वर्षारम्भसे ही बनाये जाते हैं, अर्थात् जिस वर्षमें जो ग्राहक हो उसको आश्विनके प्रथमाङ्कसे आषाढ़ तकके चारों अङ्क लेने आवश्यक हैं। किन्तु अब हमारे पास वर्तमान द्वितीय वर्षका प्रथमाङ्क (शरदङ्क) सब समाप्त है, अतः अब इस द्वितीय वर्षमें जो नये ग्राहक होंगे उनको (यदि वे चाहेंगे तो) प्रथम वर्षकी फाईल ३) रु० में दे दी जावेगी और तीनों उपहार पुस्तकें (श्रीपञ्चस्तवी, श्री परशुराम स्तोत्र, श्रीसप्तपदीहृदय) बिना मूल्य भेजी जा सकेंगी। इसके लिए उनको शरदङ्कका मूल्य ॥) काट कर वर्तमान द्वितीय वर्षका शेष मूल्य १॥-) और ३) प्रथम वर्षकी फाइलके तथा =) तीनों उपहार पुस्तकोंका मार्गव्यय कुल ४॥) मनीआर्डर द्वारा भेजना होगा।

कई ग्राहक वर्षके बीचके किसी अङ्कसे (पौष, चैत्र या आषाढ़से) ही ग्राहक बनानेके लिए लिख कर हमें बाध्य करते हैं, किन्तु हमारा नियम वर्षारम्भसे (आश्विन माससे) ही वर्षभरके लिए स्थाई ग्राहक बनानेका है। जो सज्जन आश्विनके पहले या पीछेके एक दो अङ्क लेना चाहें उनको मार्गव्यय (डाक खर्च) सहित ॥-) तेरह आने प्रति अङ्कके हिसाबसे पहले मनीआर्डर द्वारा भेजना चाहिए। लिफाफेमें टिकट भेजना उचित नहीं है। 'श्रीराष्ट्रालोक' अब समाप्त है, द्वितीय संस्करण छपने पर सूचना दी जायगी।

आवश्यक सूचना

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको भी नहीं भेजा जाता है, अतः कोई सज्जन नमूनेके लिए बाध्य न करें। यदि एक प्रति (नमूनार्थ) मँगवानी हो तो उसके लिए ॥-) तेरह आने भेजने आवश्यक हैं। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको संस्थाकी ओरसे उत्तर दिया जायगा। पुराने ग्राहकोंको रुपया भेजते समय कूपन पर अपना ग्राहक नम्बर लिखना आवश्यक है। 'श्रीस्वाध्याय' का प्रत्येक अङ्क प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ल दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास न पहुंचे तो पहले अपने स्थानीय पोस्टआफिस (डाकघर) में पूछताछ करके पोस्टमास्टरके उत्तरके साथ १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिये।

पत्र व्यवहारका पता—व्यवस्थापक 'श्रीस्वाध्यायसदन' सोलन (शिमला)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

079810

श्रीदुर्गा भवन

यह जानकर हमारे भारतीय सम्पूर्ण नर-नारियों को परम हर्ष होगा कि "श्रीदुर्गा-भवन" की स्थापना हो गई है। इसमें श्रीदुर्गाभगवतीके सम्बन्धमें जितना भी वाङ्मय होगा उस सबका संग्रह किया जायगा। अच्छे २ योग्य विद्वानोंसे अन्वेषण कराया जाएगा, तथा क्रम-बद्ध सुचारु रूपसे उसका विवरण भी प्रकाशित होगा। इस समय दुर्गासप्तशतीकी सात आठ टीकाएं तथा छः सात प्रकारकी भिन्न २ रूपोंमें मुद्रित पुस्तकें इसमें संगृहीत हो चुकी हैं। अतः "श्रीस्वाध्याय" के पाठकों एवं अन्य सज्जनोंसे भी प्रार्थना है कि जिन-जिन लोगोंको सप्तशतीके सम्बन्धमें जो भी कुछ विशेष ज्ञान हो वह लेखबद्ध कर नीचे लिखे पते पर भेजनेकी कृपा करें। जितनी प्रकारकी पुस्तकें, टीकाएं, भाष्य, अनुवाद, निबन्ध आदि जो भी कुछ हों एक-एक प्रति भेज कर अनुगृहीत करें। यह संस्था लोकोपकारक है इस कारण विशेषतः अमूल्य ही भेज कर इस शुभ कार्यमें सहयोग प्रदान करें। जो महानुभाव मूल्य लेकर भेजना चाहें, वे अपनी पुस्तकोंके विवरण तथा मूल्यकी पृथक् सूची बनाकर हमारे पास भेजें।

श्रीस्वाध्यायसदन

श्रीस्वाध्यायसदन एक ऐसी संस्था होने जा रही है जो भारतमें एक सर्वोच्च अन्वेषकका कार्य करेगी। अपने लोकोपकारी कार्योंसे राष्ट्र तथा धर्मकी भली-भांति सेवा करती हुई उनकी उन्नतिका प्रयत्न करेगी। इसमें संस्कृत तथा हिन्दीके सब विषयोंके ग्रन्थ संगृहीत होंगे और वाङ्मयका अन्वेषण, अनुशीलन तथा उसका स्वाध्याय होगा। उसके सक्रिय प्रचारका भी प्रयत्न किया जायगा। इस संस्थाके द्वारा अच्छे २ विद्वान् तथा कार्यकर्ता पुरस्कृत होंगे।

सर्व प्रथम इस संस्थाने, "श्रीस्वाध्याय" नामक त्रैमासिक पत्र प्रकाशित करना प्रारम्भ किया है, जिसके द्वितीय वर्षका चतुर्थांङ्क "ग्रीष्मांङ्क" के रूपमें आपके हाथोंमें ही है। इसे शीघ्र ही मासिक करनेका आयोजन किया जा रहा है। अतः राष्ट्र, धर्म, जाति तथा स्वातन्त्र्यसे प्रेम रखने वाले सभी भारतीय सज्जन तन-मन-धनसे इस संस्थाको उन्नत एवं अखिल भारतमें आदर्श बनानेके लिए हाथ बटानेमें सङ्कोच न करते हुए सबका हित करेंगे।

पत्र व्यवहार का पता—व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

श्रीस्वाध्यायसदनका ज्यौतिष-विभाग

इस विभागमें ज्योतिष सम्बन्धी प्रत्येक कार्य शास्त्रानुसार सन्तोष-जनक रीतिसे किये जाते हैं। जन्मपत्र वर्षफलमें आयुः, सन्तान, स्त्री, धन, व्यापार, नौकरी, शरीरका सुख दुःख, भाग्योदयादिका पूरा पूरा विचार शास्त्रप्रमाणानुसार लिखा जाता है। प्राचीन तथा नवीन दोनों पद्धतिसे गणित होता है, दोनों पद्धतियोंका पारिश्रमिक (फीस) भिन्न २ है। जन्मपत्रकी फीस ११) रु० से १०००) रुपये तक। वर्षफल ५) से १००) रु० तक। एक भावका सूक्ष्म विचार (यथार्थ निर्णय) के ११) रु०। आयुर्विचार (अंशायुर्गणित, मारकेश विचार मृत्यु-समय-स्थान-रोग-मोहादि निर्णय सहित) राजा महाराजा एवं सेठ साहुकारोंसे १००) रु०, सर्वसाधारणसे २५) रु०। टेवा बनानेकी फीस २) रु०, भारतसे बाहर अन्य देशोंमें उत्पन्न हुए बालकोंके शुद्ध इष्ट और केवल लग्न कुण्डली बनानेकी फीस ५) रु०, विवादास्पद प्रश्न पर शास्त्रानुसार व्यवस्था बतलाने की फीस ५) रु०, शुद्ध विवाह मुहूर्त्त और ग्रहमेलापक (कुण्डली मिलान) की २) रु०, सामान्य प्रश्न १।) रु०।

प्रत्येक कार्यकी आधी फीस पेशगी मनीआर्डर द्वारा पत्रके साथ ही भेजना आवश्यक है। बिना प्रारम्भिक (एडवांस) प्राप्त हुए कार्य-आरम्भ नहीं किया जाएगा। उत्तर प्राप्त करनेके लिए जवाबी कार्ड अथवा टिकिट भेजना आवश्यक है।

पता—व्यवस्थापक श्रीस्वाध्यायसदन [ज्यौतिषविभाग] सोलन (पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Registered No. L.
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीग्रन्थमालाका प्रथम पुष्प

श्रीपञ्चस्तवी

(श्रीमद्धर्माचार्य भगवत्पाद प्रणीत)

यह एक अत्यन्त प्राचीन तथा भक्तोंके सम्पूर्ण मनोरथों को पूर्ण करने वाला श्रीमहामायाका स्तोत्ररत्न है। लाखों भक्तोंने अनुभव किया है और आगे भी करेंगे कि यह स्तोत्र-रत्न संसारमें अद्वितीय है।

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम श्रीमदमृतवाग्भवाचार्य प्रणीत कुछ प्रकाशित तथा अप्रकाशित-ग्रन्थरत्न

श्रीपरशुरामस्तोत्र

यह एक अत्यन्त ओजस्विनी भाषामें लिखा हुआ भगवान् श्रीपरशुरामका स्तोत्र है। पुस्तके अनेकों पत्र पत्रिकाओंने तथा विद्वानोंने इसकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। राष्ट्रभाषानुवाद सहित सचित्र द्वितीय संस्करण छपकर तैयार है।

श्रीराष्ट्रालोक

अत्यन्त सरल तथा सरस संस्कृतभाषामय इस ग्रन्थके अध्ययनसे नस २ में राष्ट्रप्रेम व उत्साह भर जाता है। राष्ट्रिय व्यक्तियोंके सम्पूर्ण कर्तव्य, राष्ट्रको स्वतन्त्र व उन्नत करनेके उपाय, राष्ट्र किसे कहते हैं ? उस पर किसका अधिकार होता है ? इत्यादि विभिन्न राष्ट्रिय विषयोंका सम्पूर्ण ज्ञान होजाता है। बड़े २ राष्ट्रिय नेताओंने इसकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। अधिक क्या, गागरमें सागर है। राष्ट्रभाषानुवाद सहित द्वितीय संस्करण प्रकाशित करनेका प्रयत्न हो रहा है। मूल प्रथम संस्करण समाप्त है।

श्रीसप्तपदीहृदय

(राष्ट्रभाषानुवाद सहित)

भारतीय आर्यविवाह-संस्कारमें सप्तपदी नामक क्रिया कितनी सुन्दर एवं महत्त्वपूर्ण है यह तो पाठकोंको विदित ही है। किन्तु इस सप्तपदीका वास्तविक रहस्य आज तक किसी भी विद्वान्ने खोल कर नहीं लिखा। "एकमिषे" इत्यादि सूत्रोंके यथार्थ रहस्यको खोल कर भारतीय आदर्शके राष्ट्रिय रूपमें यह श्रीसप्तपदीहृदय नामक ग्रन्थ लिखा गया है। विशेष क्या आदर्श-दाम्पत्य-जीवनका तत्त्व इस पुस्तकमें भरा पड़ा है।

श्रीआत्मविलास

(सुन्दरी राष्ट्रभाषा व्याख्या सहित)

मनुष्यमात्रके लिए परम कल्याणकारी व सन्मार्ग-प्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थरत्न है, जिसके प्रकाशित होते ही दार्शनिक जगतमें हलचलसी मच गई और सैकड़ों प्रतियां हाथोंहाथ लग गईं। इस ग्रन्थको पढ़नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शान्त होता है, संसार बाहर भीतर सम्पूर्णरूपसे आनन्दमय प्रतीत होता है। अतः यदि आप भी आत्मा क्या है ? परमात्मा क्या है ? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है ? हम क्या हैं ? और हमें क्या करना चाहिए ? दर्शन किसे कहते हैं ? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहां होता है ? उनकी उपपत्ति क्या है ? आदि २ आध्यात्मिक गूढ़ रहस्योंसे भी भांति परिचित हो कर आत्म-साक्षात्कार करना चाहते हैं तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजिये। आपके सभी सन्देह दूर हो कर अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा। मूल्य २) रु० मात्र।

शीघ्र प्रकाशित होनेवाला

श्रीराष्ट्रालोकका

श्रीराष्ट्रसञ्जीवन संस्कृतभाष्य

इसके विषयमें संक्षेपसे ही हम पाठकोंको सूचित करते हैं कि यह ग्रन्थरत्न सम्पूर्ण साहित्यसागरका सार है। इसके जोड़का ग्रन्थ आज तक संसार भरके किसी भाषाके साहित्यमें नहीं लिखा गया। ग्रन्थ क्या है, सम्पूर्ण राष्ट्रिय विषयोंका हृदय है। ग्रन्थमें प्रणेताने स्वाभाविक पूर्ण विज्ञान के आधार पर सम्पूर्ण मानव-कर्तव्य तथा स्वभावका उस विशेषतासे प्रतिपादन किया है कि जो एक अत्यन्त नवीन, सुललित स्वभाव-शुद्ध तथा प्रकृति-सिद्ध हो सकता है। इस ग्रन्थका स्वाध्याय प्रत्येक राष्ट्रहितैषीका परम प्रधान कर्तव्य है। न पढ़ने वाले आजन्म पछतायेंगे। कईसौ पृष्ठोंमें यह ग्रन्थ समाप्त हुआ है।

सूचना—श्रीआत्मविलासको छोड़ कर शेष सभी मुद्रित पुस्तकें मार्गव्यय (दो आने) प्राप्त होनेपर "श्रीस्वाध्याय" के ग्राहकोंको बिना मूल्य दी जावेंगी।

पता— श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)।

पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस देहलीमें छप कर श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (शिमला) प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

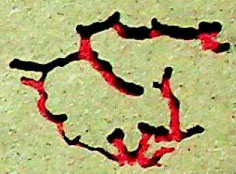

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar